फाग साहित्य

मध्यप्रदेश के जनपदों की फागें

फाग साहित्य

मध्यप्रदेश के जनपदों की फागें

सम्पादक
कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाण गंगा, भोपाल–462003
मध्यप्रदेश, भारत
फोन – 0755–2551878, 2760668

प्रकाशन वर्ष – वर्ष 2005 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण –

मुद्रण – प्रियंका आफसेट, भोपाल

मूल्य – 200/– रूपये दो सौ केवल

- पुस्तक से सम्बन्धित विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।
- पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की हैं, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

Faag Sahitiya

EDITOR : DR. KAPIL TIWARI

वाचिक परम्परा के संकलन के क्रम में जहाँ एक ओर अकादमी ने पारम्परिक संस्कार और बारहमासा गीतों, कथाओं, लम्बी गाथाओं, चरित नायकों के आख्यानों का संकलन आरंभ किया, वहीं लोक की मौखिक परम्परा में, विशेष रूप से मध्यप्रदेश के चारों लोकांचलों में, विपुल फाग साहित्य के संकलन भी करवाये। लोकांचलों में स्थानीय स्तर पर फाग गायिकी के समारोह एवं चयन शिविर आयोजित किये, जिनमें फाग गायक कलाकारों ने ही उन फागों के लिखित संकलन दिये, जिन्हें वे पारम्परिक रूप से गा रहे थे। पिछले पाँच वर्षों में इस प्रकार मध्यप्रदेश के जनपदों की फाग परम्परा का एक विशाल संग्रह संकलित हो गया। अकादेमी ने बोलियों की इन फागों का हिन्दी में अनुवाद भी कराया।

कुछ वर्षों पहिले अकादमी ने बुन्देली अध्येता श्री श्यामसुन्दर बादल की पुस्तक 'बुन्देली का फाग साहित्य' का पुनर्प्रकाशन किया था, इसी क्रम में श्री लोकेन्द्र सिंह नागर द्वारा संकलित बुन्देली के शीर्ष लोक कवि 'ईसुरी' की फागों का एक संकलन जिसमें लगभग एक सौ फागों का संग्रह था, उसे प्रकाशित किया। इस वर्ष श्री नागर द्वारा ही संकलित ईसुरी की लगभग पाँच सौ फागों का वृहद संग्रह अकादमी ने प्रकाशित किया है। ईसुरी, गंगाधर और ख्यालीराम जैसे रचनाकारों की फागों के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड में लोक परम्परा में भी हजारों फागें प्रचलित हैं, जिन्हें वसंत ऋतु में और विशेष रूप से होली के पर्व के समय गाया जाता है। प्रस्तुत संकलन इन्हीं लोक प्रचलित फागों का है, इसमें बुन्देली के अतिरिक्त मालवी, निमाड़ी और बघेली जनपदों में प्रचलित फाग रचना भी संकलित हैं। इस संग्रह में लगभग एक हजार फागों का संकलन है। अकादमी पिछले दो वर्षों से मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में भी फाग गीतों के संकलन का कार्य कर रही है, इसका एक संग्रह भी हम अगले वर्ष प्रकाशित करेंगे।

बारहमासा लोकगीतों की परम्परा में सिर्फ 'फाग' के संग्रह का ही काम कितना विशाल हो सकता है, यह देखकर आश्चर्य होता है। विभिन्न ऋतुएँ रचना की कितनी बड़ी प्रेरणा रहीं हैं

और किस प्रकार इनमें प्रकृति और ऋतुएँ, उनके रंग और छवियाँ हजारों रूपों में व्यक्त हुए हैं, हमारे लोक जीवन के कितने रूपों की झलक इनमें व्यक्त होती है, और इसमें हमारी पारम्परिक काव्य शक्ति का कितना सुन्दर और परिष्कृत रूप व्यक्त होता है, ये उसका विलक्षण साक्ष्य हैं। यद्यपि यह संग्रह फाग की शब्द परम्परा का ही है, अभी फाग के पारम्परिक संगीत का संकलन और दस्तावेजीकरण शेष है, वास्तव में गीत सुनने में पूर्ण होता है, वह पढ़ने की चीज़, उतना नहीं है। संगीत और पारम्परिक धुनों की संरक्षा इसलिए भी आवश्यक है कि हमारे समय में संगीत का विशाल बाजार, लोकसंगीत को विकृत कर रहा है, और उसमें मनमाने तथा अश्लील और फूहड़ तत्वों का समावेश करके प्रस्तुत किया जा रहा है। हम लोक संस्कृति और परम्परा में 'शुद्धतावाद' के हामी नहीं है लेकिन पारम्परिक रूपों की 'प्रमाणिकता' पर हमारा बल है और हर स्थिति में उसकी रक्षा का संकल्प भी। आगामी कुछ वर्षों में हम अकादमी की ओर से फाग संगीत के संकलन का भी कार्य आरम्भ करेंगे। संरक्षा के इस कार्य को आरंभ करने अकादमी इस वर्ष से 'लोकगीतों' के गायन पर केन्द्रित एक समारोह 'श्रुति' की स्थापना और आरम्भ कर रही है जिसमें मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, पंजाब और गुजरात राज्यों के लोकगायक पारम्परिक गीतों को प्रस्तुत करेंगे। इसका दस्तावेजीकरण भी किया जायेगा ताकि प्रामाणिक लोकसंगीत पर आधारित कैसेट और ऑडियो सीडी तैयार की जा सके।

पुस्तक में प्रकाशित फाग गीतों के संकलन एवं अनुवाद के लिए सर्वश्री महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', डॉ. ओमप्रकाश चौबे, सन्तोष कुमार तिवारी, डॉ. श्रीराम परिहार तथा श्रीमती कृष्णा वर्मा की अकादमी आभारी है।

आशा है फाग साहित्य में जिज्ञासु अध्येताओं और पाठकों को यह पुस्तक उपयोगी होगी।

–कपिल तिवारी

अनुक्रम

बुन्देली फाग / महेश कुमार मिश्र 'मधुकर' / 9

बुन्देली फाग / डॉ. ओमप्रकाश चौबे / 57

बघेली फाग / संतोष कुमार तिवारी / 209

मालवी फाग / श्रीमती कृष्णा वर्मा / 347

निमाड़ी फाग / डॉ. श्रीराम परिहार / 425

बुन्देली फाग

महेश कुमार मिश्र 'मधुकर'

यह संग्रह फाग प्रसंग के आयोजन के संदर्भ में किया था। लक्ष्य था कि इस बहाने हमारे पास उन फागों का संग्रह हो जाये, जिन्हें ग्रामीण जन परंपरागत रूप से गाते हैं और जो लिखित रूप में सुरक्षित नहीं है। अत: प्रत्येक फाग मंडली से दस-दस भिन्न प्रकार की फागें माँगी गई और लगभग दस मंडलियों ने उन्हें लिखित रून में सौंपा। इस प्रकार सौ परंपरागत फागों की हमें प्राप्ति हुई। इन फागों में अनेक ऐसी हैं जो एक दूसरे से मेल खाती हैं। कुछ ऐसी हैं जिनकी टेक (या प्रथम पंक्ति) तो भिन्न है लेकिन शेष पंक्ति या अन्य फागों से ज्यों की त्यों ली गई प्रतीत होती हैं। ऐसा इस कारण हुआ है क्योंकि फागों के संबंध में लेखकों-शोधकर्त्ताओं की अवधारणा और लोक गायकों की अवधारणा में पूर्व-पश्चिम का अंतर है। लेखक लोग किसी परंपरागत गीत के छंद, साहित्य और शब्दों का संकलन करके ही यह मान लेते हैं कि हमने लोक गीतों का संग्रह कर लिया और किसी लोक गीत का वास्तविक स्वरूप मात्र वही है जो हमने अपनी कलम से लिपिबद्ध किया है।

इस प्रकार एक अधूरी जानकारी प्राप्त करके हम फूले नहीं समाते और शिक्षित वर्ग की दृष्टि में बड़े लेखक या शोधकर्त्ता के रूप में स्थापित हो जाते हैं। इस प्रकार लोकगीतों का संग्रह तो छप जाता है, किन्तु उनका वास्तविक स्वरूप आँखों के सामने से ओझल सा ही रहता है।

दरअसल बात यह है किसी भी लोकगीत के शब्द, भाषा और साहित्य, काल परिवर्तन के समानांतर बदलते रहते हैं और उनके स्थानापन्न होकर नये शब्द, नई भाषा और नया साहित्य उन गीतों का विकल्प बन जाता है।

लेकिन लोकगीतों में प्रयोज्य स्वर, स्वरसंदर्भ और स्वर संनिवेश, शताब्दियों तक नहीं बदलते और यदि बदलते भी हैं, तो तब, जबकि कोई उनमें जबरदस्ती परिवर्तन करना चाहे(जैसा कि वर्तमान युग के आकाशवाणी-दूरदर्शन के लोकगायकों अथवा व्यावसायिक लोक गायकों द्वारा बड़ी ही बेशर्मी के साथ किया जा रहा है) दुर्भाग्य की बात तो यह है कि गाँव

के भोले-भाले अशिक्षित लोक गायक भी इन प्रसिद्ध कलाकारों का बिना सोचे समझे अंधानुकरण कर रहे हैं।

इन फागों का संकलन करते समय एक ही फाग को उसकी बदली हुई टेक के साथ जब मैंने अलग-अलग लिखा देखा तो प्रश्न उत्पन्न हुआ कि ऐसा क्यों है, तो फाग से संबंधित गायक का उत्तर था कि आपको देखने में ही दोनों फागें एक जैसी लग रही हैं अन्यथा तो वे अलग-अलग हैं। मैंने उससे दोनों फागें गवायी तो प्रश्न का उत्तर तत्काल मिल गया। वस्तुत: दोनों की ही धुनें, लय और ताल तथा गान शैली एकदम अलग-अलग थी।

वास्तविकता यह है कि जब किसी उत्सव त्यौहार या संस्कार के अवसर पर कोई गीत गाया जायेगा तो उसकी शब्दावली की निश्चित ही पुनरावृत्ति होगी। लोकगीत किसी धुरंधर कवि की रचना तो है नहीं कि वह ऊँचे दर्जे के साहित्य से ओत-प्रोत हो। वह तो एक सहज और सरल हृदयोद्‌गार है जो गायक के कण्ठ से स्वयमेव निकलता है। अत: लोकगीतों में जो सहज समानता पायी जाती है, वह उनका स्वाभाविक गुण है।

फाग शब्द को हमने एक समुच्चय के रूप में ग्रहण किया है। अत: इस संग्रह में संकलित चौकड़ियाऊ, नगड़ियाऊ, छंदयाऊ लेद, होरी, रसिया इत्यादि सभी प्रकारों को केवल फाग नाम दिया है। वैसे भी बुंदेलखंड में फाग शब्द समुच्चय बोधक रूप में प्रचलित है। जब किसी के घर या मंदिर में फागों का उत्सव आयोजित होता है तो यही कहा जाता है कि अमुक के यहाँ फाग है या आज फला मंदिर में ठाकुर जी की फाग है। अत: हमने भी फाग शब्द इसी अर्थ में ग्रहण किया है।

इस फाग संग्रह के संकलन में हमारे सामने एक कठिनाई और आयी। हमें आशा थी कि किस प्रकार संस्कार गीत समूचे बुंदेलखंड में लगभग एक समान रूप में प्रचलित है, वैसे ही ये फागें भी होगी। किंतु इस प्रकार की फागें बहुत ही कम संख्या में सुनने को मिली। अधिकतर वे फागें प्रचलित मिली जिनकी धुनें और गान शैली तो एक जैसी थी किंतु जिनमें प्रयुक्त गीत या शब्द अलग-अलग थे। दूसरे शब्दों में एक ही तर्ज या धुन पर अनेक फाग-गीत सुनने को मिले। उनमें भी अधिकांश वे गीत थे जिन्हें ग्रामीण जन अपनी आवश्यकता के अनुसार स्वयं ही गढ़ लेते हैं। मैंने जब एक गायक से इसका कारण पूछा तो उसका उत्तर था कि फाग की रचना जरूर हमने (या किसी अन्य ने) की है लेकिन है परम्परागत अर्थात् स्पष्ट था कि वह किसी गीत के शब्दों को नहीं, बल्कि जिस धुन के आधार पर वह गीत गाया जाता है, उसे ही परंपरा समझता है। और एक दृष्टि से उसका यह समझना ठीक भी है, क्योंकि वह बचपन से ही देखता भी रहा है कि एक ही तर्ज या धुन पर लोग नाना प्रकार के गीत गाते चले आ रहे हैं।

उदाहरण के लिए जब माता की फाग गायी जाती है तो उसमें परंपरागत माता के भजनों की तर्ज पर ही गाया जाता है। इसी प्रकार लेद, होरी, रसिया इत्यादि की परम्परागत तर्जे अलग-

अलग है। इन तर्जों के आधार पर ही तत्संबंधी गीत गाये जाते हैं।

थोड़ा सा निवेदन इस संग्रह की फागों के अनुवाद के संबंध में भी कर दिया जाये। वह यह कि लोक में प्रचलित ये फागें कोई साहित्यिक रचनायें नहीं हैं- ये तो वे हृदयोद्गार हैं जो फाग की उमंग से लबालब जनमानस के ओंठों से बिना सोचे समझे निकलते हैं। अतः पहली बात तो यह कि इन्हें शिल्प की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता(उचित भी नहीं है)। दूसरे इस मदनोत्सव के मादक वातावरण से ओतप्रोत जनमानस के द्वारा जो भी कल्पना की जाती है, वह केवल भाव प्रधान होती है। उसे गाया तो जा सकता है लेकिन उसका काव्यगत मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। यदि करते भी हैं तो वह एक प्रकार का अन्याय ही होता है।

इस संग्रह की कोई-कोई फाग तो केवल एक डेढ़ पंक्ति में ही पूरी हो गई है। उसका कारण है। फाग एक काव्य विधा नहीं हैं, बल्कि गायिकी है। इसका संबंध स्वर लय और भाव से अधिक है, काव्य से कम। मैंने देखा है कि कभी-कभी तो एक ही पंक्ति को नाना प्रकार से सैकड़ों बार गाया जाता है। अतः किसी भी फाग को किसी कवि की कविता या छंद से जोड़कर नहीं देखा जा सकता। इन सभी फागों का रस, भाव और लक्ष्य लगभग समान है। अतः प्रत्येक फाग का अनुवाद भी अलग-अलग नहीं किया जा सकता। ये फागें रसभरी हैं जो खट्टा-मीठा चिरपरा सभी प्रकार का स्वाद देती हैं।

इन सारी बातों पर विचार करते हुए हमनें वे सभी फागें ग्रहण की जो हमें फाग मंडलियों से प्राप्त हुई हैं। इस संबंध में दतिया जिले कि जिन मंडलियों से हमें फागें मिली उनके नाम निम्नानुसार हैं-

राजेश जोशी(ग्राम -लोई छोटी बड़ौनी दतिया), महेंद्रसिंह कुशवाहा (ग्राम-ककरौआ,दतिया), लक्ष्मीनारायण कुशवाहा (ग्राम-ककरौआ,दतिया), नारायण सिंह कुशवाहा (झिर का बाग,दतिया), केशव किशोर यादव (उलाव,दतिया), तुलसीराम कुशवाहा (तहसील-भांडेर,दतिया), हरीराम साहू हरि (ग्राम-रावरी,दतिया), ओमप्रकाश कुशवाहा (राधा सागर,दतिया), रामेश्वर यादव (ग्राम-दरयावपुर,दतिया), नारायण कुशवाहा (ग्राम-भड़ौल,दतिया)।

कुछ फागें हमने दतिया नगर में परंपरागत रूप से गायी जाने वाली अपनी ओर से भी सम्मिलित की हैं।

चूँकि इन फाग मंडलियों के फाग गाने की शैली में भी कुछ भिन्नता है, अतः इस संग्रह में फागों को उन्हीं के नाम से दिया गया है उन्हें लेद- रसिया-इत्यादि के नाम से वर्गीकृत नहीं किया गया।

दतिया जिला, यद्यपि बुंदेलखंड का ही एक भाग है। तथापि अन्य भागों से उसकी परंपरागत भिन्नता है।

इस संग्रह की प्रेरणा का सारा श्रेय डॉ. कपिल तिवारी के खाते में जाता है क्योंकि प्रेरणा के मूलस्त्रोत वहीं है। इस कार्य में उनके सहयोगी अशोक मिश्र और महेश शांडिल्य ने भी पर्याप्त सहयोग दिया है। अत: ये सभी साधुवाद के पात्र हैं।

यह फाग संग्रह दतिया की फाग गान शैली का मात्र स्थूल रूप है, जिसमें केवल शब्द और उनके अर्थ पर विचार किया गया है। वास्तविक स्वरूप तो तब स्पष्ट होगा जब इन फागों का संगीत शास्त्रीय विवेचन किया जायेगा।

कहरवा

स्थायी– *शंकर खेलें होली पार्वती के संग।*
पार्वती बोली भोले से, करो न हम को तंग॥

अंतरा– *अबीर गुलाल परस्पर लेपत खेल प्रीत कौ जंग।*
गिरजा सनमुख मारत शिवजी, भर पिचकारी रंग॥

लाल गुलल भयौ मुखमंडल, जटा और सिर गंग।
भाल चंद्र और हाथ में डमरू, शोभित गले भुजंग॥

मस्त भये जब भोले बाबा, पीकर गांजा भंग।
झटक चुनरिया पार्वती की, हेरत दोई अंग॥

शंकर–पार्वती जी के साथ होली खेलते हैं। पार्वती–शिवजी से बोली– हमें तंग मत करो। दोनों एक दूसरे पर अबीर और गुलाल का लेपन करते हुए एक प्रकार से प्रेमयुद्ध छेड़ते हैं। शिवजी पिचकारी में रंग भर गिरिजा की ओर मारते हैं। शिवजी का मुखमंडल गुलाल की तरह लाल हो गया। उनके सिर पर जटा, गंगाजी, माथे पर चंद्रमा, हाथ में डमरू और गले में भुजंग शोभित हो रहे हैं।

जब भोले बाबा गांजा और भांग पीकर मस्त हो गये तो पार्वती जी की चुनरिया को झटक कर उनके दोनों अंगों(ऊरोजों) को देखने लग गये।

स्थायी– *रंग में होरी कैसी खेलूं री, जा सामरिया के संग।*

अंतरा– *कोरे कोरे कलश मंगाये, जिनमें धोरो रंग।*
भर पिचकारी मेरे सनमुख मारी, चोली हो गई तंग। रंग में......
तबला बाजे सारंगी बाजै, और बाजे मौचंग।
कृष्ण चंद्र की मुरली बाजे, राधे जी के संग।
रंग में होरी कैसे........

अरी! मैं इस रंग भरी होली को सांवरिया के साथ कैसे खेलूँ? बिल्कुल कोरे कलश (मटके) मंगाकर उनमें रंग घोला गया। फिर जब पिचकारी में रंग भरकर मेरे सामने की ओर मारा गया, तो रंग से भींगकर मेरी चोली तंग हो गई।

तबला,सारंगी और मौचंग बजाये जा रहे हैं। श्री कृष्ण जी राधे जू के गले में हाथ डालकर मुरली बजा रहे हैं।

दादरा (उंघाई)

स्थायी–*गुन सुन लो लाल के नंदरानी।*
छोड़ी तुम्हारी रजधानी॥

अंतरा–*जो हम जावें, तां वो जावै। करत फिरे सैनाकानी॥ गुन....... ॥1॥*
घर और द्वार कुआ पनघट पै। भरन न दैवे मोकौं पानी ॥ गुन...... ॥2॥

नंदरानी अपने सपूत के गुन सुन लो, उसके इन गुणों के कारण मुझे तुम्हारी यह राजधानी छोड़नी पड़ सकती है।

हम जहाँ भी जाती हैं, वह वहीं पहुँच जाता है और नाना प्रकार की छेड़खानी करता है। उसके कारण मैं तंग आ गई हूँ। वह न तो घर पर छोड़ता है, न द्वार पर। यहाँ तक की पानी भरने के लिये कुँआ या पनघट पर जाती हूँ तो वहाँ भी तंग करता है और पानी तक नहीं भरने देता।

दादरा

स्थायी– *रंग चुअत रजउ के नैनन में*

अंतरा– *टूटौ छटा, अटा के ऊपर,*
बदन निहारत सैनन में। रंग चुअत....... ॥ 1 ॥
झूमत झुकत फिरत गलियन में,
जैसे करिया टैनन में। रंग चुअत...... ॥ 2 ॥

छैला की आँखों से रंग मानो चू सा रहा है। जब मैं अटारी पर थी तो उसकी हरकतों से

मेरा छटा टूट गया। अब वह तिरछी नजर से मेरे मुँह को देख रहा है। वह नशे जैसी हालत में झूमता हुआ, झुकता हुआ, गलियों में इस प्रकार से फिर रहा है, मानों की बीच कोई काला नाग सरक रहा हो।

स्थायी– *देखी नहीं रजऊ की शानी*
ऐसी नहीं दिखानी॥

अंतरा– *बादशाह घर बेगम नइया, ना राजा घर रानी। देखी नहीं....... ॥ 1 ॥*
इस और चार भुवन चौड़ा में, इंद्र लोक तक छानी। देखी नहीं....... ॥ 2 ॥
ईसुर यार लखी गोकुल में, श्री वृषराज भवानी। देखी नहीं....... ॥ 3 ॥

मेरी प्रेयसी की कोई तुलना नहीं है। मुझे उस जैसी कोई भी नहीं दिखी। बादशाह की बेगमों में से एक भी कोई, मेरी प्रेयसी के तुल्य नहीं है। न किसी राजा की कोई रानी ही उसके समान है। मैंने एक-एक करके चौदहों लोकों को देख डाला, इंद्रलोक को छान मारा, किंतु मेरी प्रेयसी जैसी वहाँ भी कोई नहीं है।

ईसुरी कहते हैं- जब मैं गोकुल गया तो वह मुझे वहाँ दिख गई, वह श्रीवृषभानु की राजपुत्री राधा रानी है।

स्थायी– *नैना भये प्रान के भूँके घूंघट में से ढूंके॥*

अंतरा– *ढूंकत चोट करी जै नैना, मन पापी कौ लूटे॥ 1 ॥*
नहीं मिलत हैं ज्ञान भरत कौ, आ गये वैद कहूँ के॥ 2 ॥
जंत्र तंत्र कई मंत्र उचारे, झार फूंक भये झूंठे॥ 3 ॥
मधुकर अंजन कौ गंजन तौ, है वश राधा जू के॥ 4 ॥

गोरी ने जब घूँघट की ओट से मेरी ओर देखा, तो मैं अधमरा सा हो गया। उसके नैन मानों मेरे प्राणों के भूखे बन गये। मेरी आँखों में झांकते ही गोरी के नैनों ने ऐसी चोट की कि मेरा पापी मन लुट सा गया। जहाँ-तहाँ के वैद्य आये, लेकिन उन्हें मेरे मर्ज का ज्ञान नहीं हो पाया। नाना प्रकार के जंत्रों और तंत्रों का प्रयोग कराया, मगर सब के सब झूठे साबित हुए। सच बात यह है कि मुझे जो रोग लग गया है, उसका इलाज तो सिर्फ राधा रानी के ही वश की बात है।

कहरवा

स्थायी– *खेलन फगुआ जा रही हो माँ, कर -कर सोलह सिंगार राधिका।*
अंतरा– *कौन गांव में फाग मची है, बरसत रंग गुलाल राधिका। खेलन फगुआ....... ॥1 ॥*

बरसाने में फाग मची है,
खेलत गोपी ग्वाल राधिका। खेलन फगुआ........ ॥ 2 ॥
श्याम के हाथन रंग पिचकारी, राधा के हाथ गुलाल राधिका। खेलन फगुआ........ ॥ 3 ॥
धानी चूनर चीरा धानी, हो गई, रंग में लाल राधिका। खेलन फगुआ.......... ॥ 4 ॥
जो सखिया ने चाल चली है, पकर लये नंदलाल राधिका। खेलन फगुआ........ ॥ 5 ॥

राधिका सोलह श्रृँगार करके फाग खेलने जा रही हैं और रंग गुलाल की वर्षा हो रही है। वह गाँव बरसाना है जिसमें गोपियाँ और ग्वाल परस्पर फाग खेल रहे हैं। श्याम के हाथों में रंग भरी पिचकारी हैं और राधा अपने हाथों में गुलाल लिये हुये है। राधा की चीर और चूनर धानी रंग की थी, लेकिन गुलाल के कारण लाल रंग हो गये। यहाँ तक की राधा भी लाल हो गई। सखियों ने ऐसी चाल चली कि नंद के लाल उनकी पकड़ में आ गये।

दादरा

स्थायी- *शिव शंकर शंभू खेलें होरी, देखों पार्वती के संग में गोरी।*
अंतरा- *अंग विभूति बदन मृगछाला, अबीर गुलाल भरें झोरी॥ 1 ॥*
भाल चंद्र त्रिपुंड विराजत, तूमरिया केसर घोरी॥ 2 ॥
शीश जटा बिच गंग बहत है, रंग केसरिया उड़ें रोरी॥ 3 ॥
गले भुजंग बगल त्रिशूला, डमरू धुनि पड़े चहुं ओरी॥ 4 ॥
बिच्छू ततैयन संग नाचत गावत, ठुमुक ठुमुक थोरी-थोरी॥ 5 ॥
गांजा भांग पिये डोलत हैं, गौरा संग करें बर जोरी॥ 6 ॥
मानत नहीं फाग बिन खेलें, गिरजा करी रंगन सरबोरी॥ 7 ॥
मुझ दुखिया की टेर सुनो प्रभु, मैं शरण खड़ो लिये कर जोरी॥ 8 ॥
कैलाश वासी अलख अविनासी, पार करो नईया मोरी॥ 9 ॥

महादेव जी पार्वती के साथ होली खेल रहे हैं। उनके शरीर पर भस्म मली हुई है। वे मृगछाला धारण किये हुए हैं। अपनी झोली में अबीर और गुलाल भरे हुये हैं। उनके माथे पर त्रिपुण्ड और चंद्रमा शोभित हो रहा है। वे अपनी तुंबरी में केसर का घोल भरे हुये हैं। उनके शीश की जटाओं से गंगाजी बह रही हैं। केसरिया रंग और रोली उड़ रही है। उनके गले में नाग तथा बगल में त्रिशूल है। जब वे डमरू बजाते हैं तो उसकी ध्वनि चारों दिशाओं में सुनाई देती है। वे बिच्छू और ततैयों के साथ नाचते हैं। गांजा भांग के नशे में गौरा पार्वती से जबरदस्ती भी करते हैं। वे किसी भी तरह नहीं मानते और गिरिजा को रंग देते हैं। हे प्रभु! मेरी पुकार सुन लो, मैं आपकी शरण में हूँ। हे कैलाशपति! मेरी जीवन नईया को पार लगा दो।

सिया खेंले राम संग फाग, अवध में आनंद मंगल हो रहे।
अरे, कै मन घोली केसरी, और कै मन उड़त गुलाल। अवध में........ ॥ 1 ॥
अरे,नौ मन घोरी केसरी, और दस मन उड़त गुलाल। अवध में........ ॥ 2 ॥
अरे, कौना की भींजी चूनरी, और कौना की पचरंग पाग। अवध में......... ॥ 3 ॥
अरे, सीता की भींजी चूनरी, और राम की पचरंग पाग। अवध में .... ॥ 4 ॥

सीता जी रामचंद्र जी के साथ फाग खेल रही हैं। अयोध्या में आनंद मंगल हो रहा है। अरे! केसर कितने मन घोली गई। गुलाल कितने मन उड़ रहा है। अरे! नौ मन केसर घोली गई और दस मन गुलाल उड़ रहा है। किसकी चूनरी भींगती है और किसकी पचरंगी पाग भींगती है, सीताजी की तो चूनरी भीगती है और राम की पचरंगी पाग भींग रही है।

गुदना लगत गाल पे प्यारौ। हमखाँ रजउ तुम्हारौ॥
गोरो बदन गाल के ऊपर, बन बैठो रखवारौ॥ 1 ॥
देखन देव नजर भर हमखां, घूंघट पट न डारो॥ 2 ॥
ठाड़ी होओ देखले चित सें, जी ललचात हमारौ॥ 3 ॥
गंगाधर की तड़प देखकें, दे दो तनक इसारौ॥ 4 ॥

अरे प्यारी! तुम्हारे गाल पर जो गुदना गुदा हुआ है, वह बहुत ही प्यारा लग रहा है। तुम्हारे गोरे मुख पर (गाल के ऊपर) गुदना ऐसा लग रहा है मानो कोई रखवाली कर रहा है। अरे! मुझे एक नजर देख तो लेने दो। मुख पर घूँघट पट क्यों डाल रही हो। अरे! थोड़ी सी खड़ी तो हो जाओ तुम्हें एक चित होकर देख लूँ मेरा जी ललचा रहा है। गंगाधर कवि कहते हैं मेरी तड़प का ख्याल तो करो।

उरझो जिन श्याम कही मानो, फट जैहैं चुनरिया जिन तानो॥
मैं बेटी वृषभान राजा की, मोहे गुजरिया जिन जानो॥ 1 ॥
कंस राजा कौ राज बुरऔ है, बरसाने में हे थानों॥ 2 ॥

श्याम, मेरी कही मानो मुझसे मत उलझो। मेरी चुनरिया को मत तानों, वह फट जायेगी। मैं राजा वृषभान की बेटी हूँ। मुझे मामूली गूजरी मत समझ लेना। देश पर राजा कंस का राज्य है जो बहुत ही कठोर है। दूसरी ओर बरसाने में उसका थाना है। अतः मुझसे मत उलझो।

कजरा लगौ नयन में गहरौ, घूँघट कौ है पहरौ॥
गोल कपोल, बोल कोकला, अंग कौ रंग सुनहरौ॥ 1 ॥

पग धरतन झनकत है पायल, चौक परत है बहरौ ॥ 2 ॥
झांकत छैल झरोकन झांकी, लेत परौसी ऐरौ ॥ 3 ॥
ईसुर होत भुंसरा बोली, आज कितै तुम ठहरौ ॥ 4 ॥

काजल आँखों में बहुत गहरा लगा है। ऊपर से घूँघट पहरा सा दे रहा है। कपोल गोलाई लिये हुये हैं। बोली कोयल जैसी है। शरीर का रंग सुनहरा है। गोरी जब पग रखती है तो पायलें झनकने लगती हैं, जिनकी ध्वनि सुनकर बहरा भी चौंक जाता है। उसके रूप की मात्र एक झलक पाने के लिए छैला झरोखों से झाँकते हैं और पड़ोसी उसकी आहट पर कान लगाये रहते हैं। ईसुरी कहते हैं कि– पौ फटते ही गोरी कहने लगी– आज तुम कहाँ ठहरोगे।

मोरी पतरी कलइया जबर कंगना, पिया कैसे डुलाउ रस के बिजना।
बैंदी के भार मेरौ माथो दूखत, माहुर के मार चलै पगना ॥ 1 ॥
लंहगा के भार मोरी कम्मर दूखत, चोली के भार दबें जुबना ॥ 2 ॥
ईसुर काजर कौ भार हैं भारी, लगै लगाये ना दोऊ नैना ॥ 3 ॥

प्रियतम! मेरी कलाई पतली है और उनमें जो कंगना मैं पहने हुए हूँ, वे वजनदार हैं। ऐसी हालत में तुम्हीं बताओ मैं तुम्हें पंखा कैसे झल सकती हूँ। बैंदी इतनी भारी है कि मेरा माथा दुखने लगता हैं। पैरों में जो महावर लगा हुआ है, उसके कारण पैर तक नहीं उठा पाती। भारी भरकम लंहगे के कारण मेरी कमर दुखने लगती है। चोली भी इतनी भारी है कि मेरा यौवन दबने लगता है। ईसुर कहते है कि आँखों में जो काजल लगा है वह इतना भारी है कि मैं अपनी आँखें भी बंद नहीं कर पाती।

वारे की यार झूला नीम जिन डारो
झूला नीम जिन डारो ॥

झूला टूटो भौं गिरी राजा,
जाके सैयां ने लई है उठाय,
पौछ पुचकार, छाती से लगाय,
पलका पै डार, झूला नीम जिन डारो ॥ 1 ॥

मैं तोये देखूँ झूला झूलंती
को तैरौ लगवार,
झूला नीम पर जिन डारो ॥ 2 ॥

अरे अवयस्क पति की पत्नी! नीम पर झूला मत डालो। झूला टूटा तो मैं धरती पर जा

गिरी, तब मेरे घरवाले ने आकर मुझे उठाया। मेरे कपड़ों से धूल झाड़ी, मेरे शरीर को पोंछा और छाती से लगा लिया, फिर पलंग पर लिटा दिया। मैं तुझे झूला झूलते हुए देखना चाहता हूँ। बता तो तेरा यार कौन है?

श्यामलिया तुम लइयो ढुंड़ाय, राधा हिरा गई कुंजन में॥
गलियन बीच करीलन कांटे, सारी हमारी उरझ न जाय।
राधा हिरा गइ कुंजन में॥ 1॥

डर लागत वृषभान राजा कौ, सांझ भइ घर पहुंचा जाय।
राधा हिरा गई कुंजन में॥ 2॥

हमसें नहीं कछु बनत बिहारी,
तुम जानत हों लाख उपाय।
राधा हिरा गई कुंजन में॥ 3॥

सांवरे तुम ढूंढ लेना, कुंजों में राधा खो गई है। गलियों में करील के कांटे हैं। कहीं उनमें मेरी साड़ी न उलझ जाये। मुझे वृषभान राजा का डर लग रहा है। सांझ हो गई है। अब तो घर चला जाये। अरे बिहारी! मुझसे तो कुछ होता भी नहीं है, जो कुछ भी हो इसका उपाय तुम्हीं को करना है।

सारद सखी हिंडोरा डारें, मनमथ खों बैठारे।
अलख बगीचा नजर न आवे, लै रओ फूल बहारे॥ 1॥
बिन पंखन के पंछी उड़ गए, मीठे सबद उचारें॥ 2॥
देवकी नंदन रंग के रसिया, रंग को भेद निकारे॥ 3॥

शारद की सखी ने हिंडोला डाल रखा है। मन्मथ(कामदेव) को साथ में बैठाये हुये है। अलक्ष्य(परमेश्वर) का उपवन दिखाई नहीं दे रहा है, फिर भी उसमें बसंत ऋतु आ गई हैं। बिना पंखों वाले पक्षी उड़ रहे हैं। वे मीठी बोली बोल रहे हैं। देवकीनंदन(श्रीकृष्ण) रास रंग के प्रेमी हैं। इस रंग का भेद वे ही बता सकते हैं।

लेद

अरे हाँ, बिरज में ठाड़ो भीजे सांवरो, केसर के उड़े फुआर।
कै मन केसर घोरियो, कै मन उड़त गुलाल।
नौ मन केसर घोरियो, दस मन उड़ै गुलाल॥ 1॥
कौना के भीगे रंग चूनरी, कौना के सैला पाग।

राधा की भीगे रंग चूनरी, कृष्णा के सैला पाग॥ 2॥
काँ पे सूखे रंग चूनरी, काँ पे सैला पाग रे
घुल्लन सूखे रंग चूनरी, छाजन सैला पाग॥ 3॥

ब्रज में केसरिया रंग की फुहार उड़ रही है। उस फुहार से श्रीकृष्ण खड़े-खड़े भीग रहे हैं। अरे! केसर कितने मन घोली गई है और गुलाल कितने मन उड़ रहा है? अरे! नौ मन केसर घोली गई है व दस मन गुलाल उड़ रहा है। अरे! यह चूनरी किसकी भीग रही है, सैला पाग किसके भीग रहे हैं? श्रीराधा की चूनरी भीग रही है व श्रीकृष्ण की सैला पाग भीग रही है। रस चूनरी कहाँ सूखेंगे व सैला पाग कहाँ सूखेंगे? खूंटियों पर तो चूनरी सूखेगी व छजरी पर सैला पाग सुखायी जायेगी।

दोहा- *धनुष चढ़ाये राम ने, थकत भए सब भूप।*
मगन भई सिया जानकी, देख राम के रूप॥

टेक- *टोर डारे,मरोर डारे रामा ने धनुष बान टोर डारे*

अंतरा- *कोना के उपजे बेटी, जानकी बेटी*
कोना के उपजे गोरा रे। टोर डारे...... ॥ 1॥

राजा जनक के, बेटी जानकी
हिमांचल के गोरा रे। टोर डारे........ ॥ 2॥

कोने ब्याह दईं, बेटी जानकी
कोने ब्याह दईं गोरा रे। टोर डारे......... ॥ 3॥

राम ब्याह दई बेटी जानकी
शिवशंकर खों गोरा रे। टोर डारे.......... ॥ 4॥

श्री राम ने धनुष चढ़ाया तो सारे राजा महाराजा निराश होकर रह गये। सीता जी राम का पुरुषोचित सौंदर्य देखकर मुग्ध रह गई। श्रीराम ने धनुष को तोड़-मरोड़ कर रख दिया। अरे जानकी! किसकी बेटी है? गौरा पार्वती किसके घर पैदा हुई हैं? राजा जनक के यहाँ जानकी जन्मी हैं और राजा हिमांचल के पार्वती जन्मी। बेटी जानकी किसको ब्याही गई हैं? पार्वती किसके साथ ब्याही गई? श्रीराम को तो जानकी ब्याही गई और शिवशंकर के साथ पार्वती का विवाह हुआ।

राधा उठ चल होरी खेलिये, राजा बल के द्वार॥
कै मन केसर घोरियो, कै मन उड़त गुलाल?
नौ मन केसर घोरियो, दस मन उड़त गुलाल॥ 1॥

कौना की भींगे रंग चूनरी, कौना के सैला पाग?
राधा की भींगे रंग चूनरी, श्री कृष्ण के सैला पाग॥ 2॥
कां पे सुखे रंग चुनरी, कां पे सैला पाग?
घुल्ला पे सूखे रंग चुनरी, छाजन पे सैला पाग॥ 3॥

राधे! चलो उठो, चलकर राजा बलि के द्वार होली खेलें। केसर कितने मन घोली जाएगी? गुलाल कितने मन उड़ेगा? केसर नौ मन घोलना और दस मन गुलाल उड़ेगा। चुनरी किसकी भीगेगी? सैला पाग किसके भीगेंगे? राधाजी की चूनरी भीगेगी और श्रीकृष्ण के सैला पाग भीगेंगे। चूनरी कहाँ सूखेगी और सैला पाग कहाँ सूखेंगे? चूनरी खूँटियों पर सूखेगी और सैला पाग छज्जे पर सूखेंगे।

चौकड़िया

मारे गये यार पर नारी के संग में, हते ने कौनउ रंग में। मारे गये यार.......

अंतरा– *मेघनाथ रावन कौ बेटा, दई शक्ति लछमन ने, मारे गये यार......... ॥ 1॥*
कट–कट शीश गिरे धरनी में भुजा गिरी आंगन में, मारे गये यार......... ॥ 2॥
मेघनाथ की सुलोचना नारी पहुंची रामादल में, मारे गये यार......... ॥ 3॥
मेरे पति के शीश बता दो कहां धरे लछमन ने, मारे गये यार......... ॥ 4॥
कंडी–कंडी ढेर कर लीनों, जल गई नार अगन में, मारे गये यार......... ॥ 5॥

हम भले–बुरे किसी भी रंग में नहीं थे लेकिन परायी स्त्री के चक्कर में अपना सर्वनाश कर बैठे। राक्षसों का राजा रावण एक विद्वान और बलवान व्यक्ति था। किंतु वह पर नारी के चक्कर में पड़ा तो अपना सर्वनाश कर बैठा। श्रीराम के भाई लक्ष्मण ने युद्ध में रावण के बेटे मेघनाद को शक्ति मारी। मेघनाद का सिर कट गया और वह धरती पर गिर पड़ा। उसकी एक भुजा कटकर उड़ी और उसकी पत्नी सुलोचना के महल के आँगन में जा गिरी। पति के शोक में विह्वल सुलोचना श्रीराम के शिविर में जा पहुँची। कहने लगी– मेरे पति का शीश मुझे दिलवा दो, लक्ष्मण ने कहीं रखवा दिया है। सिर लेकर सुलोचना ने चिता सजवायी और पति का सिर गोद में रखकर सती हो गई।

होतव कहा होत तरकाया
मिलने नइयां मानस रूपी काया, बिन बालापन पांय। होतव कहा........ ॥ 1॥
ईसुर लिखी करम की लेखा, अवनई मिटत मिटायं। होतव कहा........ ॥ 2॥
कौआ मांस हंस कौ मोती, विधना जोड़ मिलांय। होतव कहा........ ॥ 3॥

कितना ही प्रयत्न क्यों न करो, होनी होकर ही रहती है। यह मनुष्य रूपी काया तभी मिल पाती है जब बचपन को पार कर लेता है। ईश्वर ने लिलार में जो लिख दिया है सो लिख दिया है–

वह मिटाया नहीं जा सकता। विधाता ने कैसा जोड़ मिलाया है कि कौआ तो मांस खाता है, हंस मोती चुगता है।

मनुआ चेत भजन कर हर खों, तन माया को करको
न्यारे न्यारे पंथ छोड़ जा, हो जा एकई घर कों।

अरे मन! अब भी संभल जा। हरि का भजन कर। माया की निकटता का त्याग कर दे। अलग-अलग रास्तों पर चलना छोड़ और अपना एक ही लक्ष्य निर्धारित कर ले। समय रहते चेत जा।

तन के तनक भरोसे नइयां, राखै लाज गुसइयां। तन के तनक......
ना काउ के भैया भौजी, कोउ काउ को नइयां । तन के तनक......
मुट्ठी बांधके आये हैं, हाथ पसारे जायें।
हम खों पार दयेभौ मइयां॥

इस शरीर का तनक भी भरोसा नहीं है। ईश्वर लाज रखे। न तो कोई किसी का भाई है और न कोई किसी की भाभी। इस संसार में मुट्ठी बाँधे हुए जन्म लिया था और जब मरने लगे तो हाथ पसर गये। कितनी विचित्र बात है कि जिस शरीर को जीवन काल में सभी चाहते थे, उसे मरते ही धरती पर तुरंत लिटा दिया।

रसिया

लेइ ना पाये हर को नाम, जनम धोखे में गये।
पैलो रे रसिया आओ बालापन,पलनन में झूले दूध पियाये मुस्काये रसिया।
लेइ ना पाये.......... ।
दूंजो रे रसिया आई है जवानी,
अलिन गलिन इठियानें रसिया।
लेइ ना पाये.......... ॥ 1 ॥

तीजो रे रसिया आई सुपेती,
ले लठिया झुरमानौ रसिया।
लेइ ना पाये.......... ॥ 2 ॥

चौथे रे रसिया आओ बुढापा,
परे रे पौर में कल्हारे रे रसिया।
लेइ ना पाये......... ॥ 3 ॥

कितने खेद की बात है कि पूरा जीवन एक झूठे विश्वास में चला गया और भगवान का नाम तक नहीं ले पाये। अरे रसिया! सबसे पहले बचपन शुरू हुआ, पलना में झूले, माँ का दूध पिया और हँसे खेले। फिर यौवन आया तो अपने ऊपर घमंड किया और गली-गली भटके। तीसरे पन में प्रौढ़ावस्था शुरू हो गई तो लाठी का सहारा ले लिया। चौथे पन में बुढ़ापा आ गया तो असहाय अवस्था में पड़े-पड़े कूलते कराहते रहे। हाय-हाय में तो लगे रहे लेकिन हरि का नाम फिर भी नहीं ले पाये।

लेद

मथुरा में श्याम खेले होरी, संगे सखा राधा गोरी। मथुरा में ....
कौना के हातन झांझ मंजीरा, कौना के हातन घपल जोरी। मथुरा में .... ॥ 1 ॥
राधा के हातन झांझ मंजीरा, कृस्ना के हातन घपल जोरी। मथुरा में .... ॥ 2 ॥

मथुरा में श्री कृष्ण होली खेल रहे हैं। उनके साथ गौर वर्ण राधिका और सखा भी है। अरे! झांझ मंजीरा किसके हाथ में है और किसके हाथ में ढप की जोड़ी है? अरे! राधा के हाथ में झांझ मंजीरा है और कृष्ण जी के हाथ में ढप की जोड़ी है।

चौकड़िया

लैन चले हनुमाना बूटी लैन चले हनुमाना,
सो हो गये पवन समाना।
मूर संजीवन चीनत नइया, सैयम परवत ले आना।
जगमग बूटी भये उजियारे, भरत छोर दये बाना

श्री हनुमान जी संजीवनी बूटी लेने के लिये चल पड़े और अपनी तेज गति के कारण पवन जैसे वेग वाले हो गये। जब वे पर्वत पर पहुँचे तो बूटी को पहिचान नहीं पाये तब समूचा पर्वत उठाकर चल पड़े। पर्वत पर बूटी जगमगा रही थी यह देखकर भरत जी ने अपना बाण छोड़ दिया।

नगड़ियाऊ फाग

ऐसे अलबेली कै नैना ऐसे अलबेली कै नैना
ब्रम्हा जी ने रची सिरस्टी, जापे कोउ रहे ना॥
एक चीर फिर दो कर दीनी, जासे कोउ बचैना॥
ब्रम्हलोक में सतीरूप लै, इमरत पान करो ना॥
मोहनी रूप के घड़ा ले लीनो, विधना जोर भयो ना॥

इस अलबेली के नयन ऐसे हैं कि कुछ मत पूछो। ब्रम्हाजी ने सृष्टि रची लेकिन वह आगे नहीं बढ़ी। जब एक ही व्यक्ति को दो भागों में विभक्त कर दिया तो नारी-पुरुष बन गये। इस माया से कोई नहीं बच पाया। यह ब्रम्हलोक सती रूप में है। बिना अमृत का पान किये ही अमर है। इस मोहनी रूप के कारण देव और दैत्य दोनों ही मोहित हो गये।

चौकड़िया

आई ढोल बजावत होरी, ब्रज में शोर मचौ री
एक पाली में मोहन ठाढ़े, दूजे राधा गोरी।
पाल बनकें फाग होत है, अपनी-अपनी जोरी।
कहत ईसुरी सुन लौ प्यारे, घन घन है जा जोरी।

होली आयी तो ढोल नगाढ़े बजने लगे। पूरे ब्रज मंडल में शोर मच गया। गोपी ग्वालों की दो पालियाँ बन गई। एक पाली में श्रीकृष्ण अपने सखा लेकर खड़े हो गये तो दूसरी पाली में राधा और उनकी सहेली। दोनों पालियों के सदस्यों ने एक दूसरे की पाली से अपनी-अपनी जोड़ी चुन ली और एक दूसरे पर फाग खेलने लगे। ईसुरी कहते हैं-श्रीकृष्ण और राधा की जोड़ी के दर्शन कर हम धन्य हो गये हैं।

ख्याल

ढुलकी में गनेस,ढुलकी में गनेस,
गुमकी बोले देवी सारदा।

ढुलकी में श्री गणेशजी का और उसकी गुमकी(गूंज) में सदैव देवी शारदा का निवास रहता है।

दोहा- *मात सरस्सुती सारदा, कंठ विराजो आन।*
आज सभा के बीच में,सौ लज्जा राखो आन॥

माँ सरस्वती, माता शारदा मेरे कंठ में विराजमान हो जाओ, आज इस सभा में मेरी लाज बनाये रखना।

भज लो सीता राम,
तुलसी की माला ले लो हाथ में।

तुलसी की माला हाथ में ले लो और सीताराम मंत्र का जप करो।

पैलें सिमर लेब जगदम्बा, फिर गाढ़ो रन खम्भा॥
खम्भा दल में गाढ़ दओ है, तोरे बाल से अम्मा॥
अम्मा कंठ विराजौ आके, ना कर मात विलम्बा॥
लम्भा दल है कहत ईसुरी, मात सुनो अर दम्भा

सर्वप्रथम जगदम्बा का स्मरण करें तब फिर रणक्षेत्र में जाने की तैयारी करें। हे माँ! तेरे दिये हुये बल के भरोसे मैंने शत्रु के दल में अपना विजय स्तंभ गाड़ दिया है। हे माँ! विलम्ब मत कर। मेरे कंठ में शीघ्र आकर बैठ जा। ईसुरी कहते है। हे माता! शत्रु का दल बहुत बड़ा है। मेरी विनय पर तुरंत ध्यान दें।

माया मोह विसारो मइया, माया मोह विसारो, सुत नहे न्यारो॥
आरो खेच पुत्र को चीरो, सिंग खों भोजन डारो॥
मुनी जुआ के धरम राख लो, फेर मिलेगो बारो॥
कहते ईसुरी भजन खों कर लयो, हाथ उठाल्यौ आरो।

इस चौकड़िया में राजा मोरध्वज का प्रसंग आया है। राजा मोरध्वज ने गाय की रक्षा के लिये अपने मोह का त्याग कर दिया और आरे से अपने पुत्र को चीरकर सिंह के आगे डाल दिया। ईसुरी कहते हैं- भगवान के भजन में चित्त लगाओ। मोरध्वज की तरह मोह माया का त्याग कर दो।

लेद

सांवरिया रे नैक बनसी बजाओ,
राधा हिरा गई बाग में।
काहिर की वंशी बनी, काहिर की बनी बीना
हरे बांस बनसी बनी, सोने की बनी सुर बीना॥

सांवरे, तनक(अपनी) वंशी तो बजाओ, बाग में राधा लापता हो गई है। वंशी किस वस्तु की बनी है? स्वर वीणा किस चीज की बनी है? वंशी हरे बाँस की बनी है, स्वर वीणा सोने की बनी हुई है।

छंदयाऊ फाग

साखी- *हंस लिबउआ आ गये, कालबली बलवान।*
बाँह पकर कैहन लगे, करो कछू अब ध्यान॥

टेक– *हंसा काल बली सें केहओ, बइयाँ काय पकर रऔ।*

छंद– *मेरी काय पकर रऔ बइयाँ, तैने खबर करी है नइया*
लैंके आ गऔ डोर गिरइयाँ, मेरे लानें।
मेरी कटबे खड़ी उनारी, हारै कड़ गये लरका नारी।
मोखो करनै अबै बिआरी, नइं वे मानें।

सैर– *नए ताल ऊपर मोरवो, अब कुआ खुदाने।*
कोहर पराऔ लेके, पिसिआ खो बुँआन।
तीन बीगा लैके, सो बइ में मिलानें।
मौड़ा को सोधन आ गऔ, सो व्याव करानें॥

उड़ान– *इतने काम कराके भइया, सोइ संग में चलरऔ।*
आठ रोज की मोहलत दे दो, लांच कछू में दैरओ॥ 1॥

दोहा– *काल बली हंस के कहै, सुन हंसा की बात।*
तिल घटै न राई बढ़ै, जो हे सई स्यात॥

टेक– *चिट्ठी चार आप खो भेजी, तुमखों आज गिनारऔ॥*

हंस रूपी जीव के प्राण लेने के लिए बलवान काल आ गया और हंस की बाँह पकड़ कर कहने लगा– कहाँ खो गये हो, चलो अब चलने की तैयारी करो। हंस कालबली से कहने लगा– मेरी बाँह क्यों पकड़ ली? मेरी बात तो सुनो। तुमने मेरी बाँह क्यों पकड़ ली? क्या तुमने अपने आने की मुझे सूचना दी थी? जो मेरे प्राणों को लेने के लिए ऐसे आ गये जैसे कोई किसी ढोर को पकड़ने के लिए डोर और गिरमा लेकर आ जाता है। मेरी रबी की फसल कटने के लिए तैयार खड़ी है। मेरी पत्नी और पुत्र हार के लिए रवाना हो चुके हैं और मुझे अभी रात का खाना भी खाना है। कोई मानेगा नहीं।

मुझे अपने नये खेत में कुँआ खुदवाना है। किसी से कुहुर माँगकर खेत में सिंचाई करना है, और पिसी (गेहूँ) की बुवाई कराना है। मेरा खेत छोटा है। उसमें तीन बीघा का खेत खरीदकर मिलाना है। मेरे पुत्र का विवाह शोधन आ गया है। अतः उसका विवाह भी कराना है। सुनो भाई! मैं इतने काम निबटा लूँ, तब ही तुम्हारे साथ चलता हूँ। मैं तुम्हें कुछ रिश्वत भी दे सकता हूँ। मेरी बात मानकर मुझे आठ दिन की मोहलत दे दो।

कालबली हँस पड़ा। कहने लगा– अरे! कोई सुनो, इस हंस की बात, क्या कह रहा है। जबकि सभी को ज्ञात है कि मेरे निश्चय में न तो तिल जितनी कमी आती है और न राई जितनी बढ़ती ही होती है ।अरे सुन! मैंने तो तुझे चार-चार बार पत्र भेजकर सूचित किया है। मैं गिनाये दे रहा हूँ कि वे पत्र मैंने कब-कब भेजे।

छंद– *भेजी हमनें पैली पाती, तुमरे सिर पै आइ सुपेती,*
तुमरी तोइ समज नई आती नइं ध्यान करौ।
पाती दूजी हम पौचाई, जा पे पक्की सील लगाई,
तुमरे दांत गिरे जब भाई, नई कूत परौ।

सैर– *तीजी तो पाती भेजी, जब आँख बनी है,*
चश्मा तो लगाकर के, जब बात करी है।
चौथी तो पाती भेजी, जब कमर झुकी है,
लठिया तो लेके तुमने, जब गैल निगी है।

उड़ान– *पाती कौ नइं ध्यान करो तुम काल अरारे आगऔ, नई बहानौ चलरऔ।*

दोहा– *कालबली और हंस की, काया सुन रइ बात।*
रो-रो कें कहने लगी, करम ठोक रह हात।

टेक– *अब की बलम छोड़ दो लाला नइं सिंगार बिगर रऔ॥2॥*

कालबली बोला– मैंने पहली चिट्ठी भेजी तो तुम्हारे सिर के बाल सफेद हो गये। दूसरी चिट्ठी पक्की सील लगाकर भेजी तो तुम्हारे दाँत गिर गये और तुम्हें पता भी नहीं चला । तीसरी चिट्ठी भेजने पर तुम्हारी आँखें खराब हो गई और तुम चश्मा लगाकर बात करने लगे। चौथी चिट्ठी भेजने पर तुम्हारी कमर झुक गई और तुमने लाठी के सहारे आना जाना शुरू कर दिया। अब तुम्हारा काल तुम्हारे निकट आ गया है। कोई बहाना मत बनाओ और न किसी चिट्ठी-विट्ठी की बात करो।

कालबली और हंस की बातचीत काया (शरीर) सुन रही थी। सुनकर वह अपना करम ठोंकने लगी। फिर काल से बोली- अरे देवरजी! इस बार मेरे स्वामी को छोड़ दो, नहीं तो मेरा सारा सिंगार उतर जायेगा।(मैं विधवा हो जाऊँगी।)

छंद– *हा हा खाऊं परौं मैं पइयां, लाला छोड़देव तुम सइयां,*
जिन संग डारत मैं गलबइयां, रंगती रंग में।
जिनखों फूल सेज लगवाऊँ, बालम छाती से चिपकाऊँ,
बालम आज कड़न नइं पाऊं, मेरे मन में॥

सैर– *लांच दऊँ लाला कुछ टैम बड़ा दे,*
बालम की सजा काटो, चाय हमे करा दो।
कानून होवै कौनऊं, और राय बता दो,
अब की तौ बलम छोड़ो और लाज बचा दो॥

उड़ान– *कालबली अब सच्ची मानो, कंत कलेवा कर रऔ।*
बिन बालम के कोऊ नइं पूंछै, संग कोऊ नई दै रऔ॥

दोहा– *कालबली हँसकें कहे, सुनकाय चित लाय।*
बलम तुम्हारे पाउने, आज न रोके जायं॥

टेक– *खास दिना बालम को आ गओ , सच्ची तोय बता रऔ॥ 3॥*

काया कालबली से कहती है– मैं हा–हा खाती हूँ, तुम्हारे पैर पड़ती हूँ। लाला, मेरे पति को आज मत ले जाओ। मैं इनके साथ गलबहियाँ डालती हूँ और जीवन के रंग का आनंद लेती हूँ। इनके लिए फूलों की सेज सजाती हूँ और इन्हें अपने सीने से लगाये रखती हूँ। मेरी विनती है कि आज मेरे पति मुझसे अलग न हों।

लाला, मैं तुम्हें लांच (रिश्वत) दूँगी। इन्हें कुछ मोहलत दे दो। इन्हें सजा मत दो, चाहे इनके बजाय मुझे सजा दे दो लेकिन इस बार मेरे स्वामी को न ले जाओ। मेरी लाज रख दो। हे कालबली! तुम सच मानो, मेरा पति अभी कलेवा कर रहा है। पति के बिना एक स्त्री को कोई नहीं पूछता है और न कोई साथ ही देता है।

कालबली हँस कर कहता है–सुन काया, ध्यान देकर सुन। तुम्हारा पति एक मेहमान की तरह है, उसे और अधिक नहीं रूकने दिया जा सकता । मैं सत्य कह रहा हूँ। अब और अधिक मोहलत नहीं दी जा सकती।

छंद– *भोजन दूद भात के करा दो,*
बल में अपने हात खबा दो,
संगे धरम पुन्न करा दो,नइं अबजा रये।
बाँदी कालबली ने मुसकें
जिनके तनक न नैनइ फरकें,
ठांड़े कुटुम कबीला फुसकें, मन पछता रये।

सैर– *भर दुफरै बालम कड़ गये नईं चली काऊ की,*
काया तो विलख रइ है बिना हंस की।
चिता बीच धर दई अब काया मांस की,
जुर मिलकें अगन दे दई, जब भई खाक की॥

उड़ान– *ऐसे वे आय लिबहुआ सबके कोउ कभउँ नईं बचरऔ।*
कहें ईसुरी कालबली कौ सब पै फंदा गिर रऔ॥ 4॥

अत: अपने पति को दूध भात के भोजन करा दो और अपने हाथों से खिला दो। साथ ही कुछ दान पुण्य भी करवा दो क्योंकि इनका जाना अब निश्चित है। इतना कहकर कालबली ने

हंस की मुसकें बांधी उसकी आँखें पथरा गई यह दशा देखकर कुटुम्बीजन रोने लग गये और पछताने लगे। ठीक दोपहर के समय हंस के प्राण निकल गये। किसी का भी कोई उपाय कारगर नहीं हुआ। प्राणहीन काया बिलखती सी पड़ी रह गई। लोगों ने हाड़ मांस की काया को चिता पर रख दिया और मुख में अग्नि दे दी, काया खाक बनकर रह गई। ईसुरी कहते हैं सबके इसी प्रकार से लिबउआ आते हैं। काल के फंदे से कोई नहीं बच सकता।

खेलत गेंद नंद के लाला, संग गोकुल के ग्वाला।
खेलत-खेलत गेंद उचक गइ, जहां नाग है काला।
कालिंदी के जीव उरानें, उगलत करिया ज्वाला।
अधर रंग से कहत ईसुरी, नाथौ नाग दयाला।

नंद के लाड़ले श्रीकृष्ण गेंद खेलते हैं। उनके साथ गोकुल के ग्वाले भी खेल रहे हैं। खेल-खेल में अचानक गेंद उचकी(उछली) और वहाँ जा गिरी, जहाँ कालिया नाग रहता था। इस घटना से कालिंदी में(यमुना में) रहने वाले जीव-जंतु डर गये और कालिया नाग विष की ज्वाला सी उगलने लगा। ईसुरी कहते हैं कि जीवों पर दयालु श्रीकृष्ण तुरंत ही यमुना में कूद पड़े और उन्होंने कालिया नाग को नाथकर (परास्त करके) यमुना के जल को सदैव के लिए विषरहित और निर्मल कर दिया।

भइया माया मोह बिसारो, सुतखो नहीं निहारो।
आरौ खेंच पुत्र खों चीरो, सिंघ खो भोजन डारो॥
मुनी जुआकें धरम राखलो, फेरे मिले गौ वारो।
कहत ईसुरी हर खों भजकें, हात उठालो आरौ॥

इस चौकड़िया में राजा मोरध्वज की कथा का प्रसंग आया है। भइया माया और मोह को भूल जाओ, यह सोचो ही मत कि सामने तुम्हारा पुत्र बैठा है। आरे को खींचकर पुत्र को चीरो और सिंह के आगे डाल दो ताकि वह अपना पेट भर ले। मुनि को जिवा कर(मुनि की रक्षा करके) अपने धर्म की रक्षा कर लो। लड़का तो फिर मिल जायेगा (दूसरा पुत्र हो जायेगा)। ईसुरी कहते हैं- हरि का स्मरण करो और हाथों में आरा उठा लो।

तैं तिरिया रंग रस भरी, बैदइ विस की बेल।
बैरी मारत दाव सें, तैं मारत हँस-खेल॥

अरी नारी! तू देखने में तो रंग-रस भरी (कमनीय और लुभावनी) प्रतीत होती है किंतु तूने विष की बेल बो दी है। शत्रु तो दांव से मारता है, लेकिन तू हंसा को खिलाकर मारती है।

सइयाँ बोली बोलत मारे, ऐसे नेहा डारे।
बोली बोलत सुत दै काड़े, सब सिंगार सतारे॥
बोली बोलत बिधवा हो गई नैनन अंसुवा ढ़ारे।
कहत ईसुरी बचकें, रइयो, रामचंद्र तक हारे॥

इस चौकड़िया में कुटिला नारी के स्वभाव को दर्शाया गया है। कैकेई ने अपने पति राजा दशरथ को अपने प्रेमजाल में ऐसा फांसा कि वे केवल कैकेई की बोली(हठपूर्ण वचनों) के कारण मारे गये। उसने सारा सिंगार उतार दिया और कोप भवन में जा बैठी। फिर राजा दशरथ से ऐसी बात कही कि वे रामचंद्र जी को वनवास देने के लिए विवश हो गये। कैकेई ने विधवा होकर रोते रहना तो स्वीकार किया किंतु अपनी बोली नहीं त्यागी। ईसुरी कहते हैं- किसी की बातों में न आना। देखो रामचंद्र जी जैसे महापुरुष भी इस बोली के कारण हार मानने को मजबूर हो गये।

बिचली बैठी नार महल में, दशरथ डरे धरन में।
होसवास दसरथ खो नइयाँ, कहा लिखौ करमन में॥
काली रूप बनो कैकई को, रक्त चुबै नैनन में।
कहत ईसुरी दशरथ कै रये, राम जायेंगे बन में।

कैकेई महल में मचली हुई बैठी हैं। राजा दशरथ भूमि पर पड़े हैं। दशरथ को तनिक भी होश नहीं है। भाग्य में क्या लिखा है, कोई नहीं जान सकता। कैकेई काली जैसा रूप बनाये बैठी है। उसकी आँखें रोष से लाल हो रही हैं। ईसुरी कहते हैं- दशरथ ने विवश होकर कह दिया कि राम को वन जाना पड़ेगा।

प्यारी कुल कौ दिया बुजारई, मत फेरी तेई खा रई।
चौथेपन में बालक जनमे, तौइ समज नइँ आ रई॥
बन को नाव छौड़ दो प्यारी, छाती फटी सी जा रई॥
कहत ईसुरी गिरे धरन में, मुर्छा दसरथ छा रई॥

दशरथ कैकेई से कह रहे हैं- प्यारी, क्या तेरी मति बिगड़ गई है जो तू अपनी हठ के कारण इस कुल का दिया बुझाने पर उतारू हो गई है? मेरे चौथेपन में तो पुत्र जन्मा, फिर भी तेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। राम को वनवास की हठ छोड़ दो। मेरी छाती फटी जा रही है। ईसुरी कहते हैं- यह कहते-कहते दशरथ भूमि पर गिर पड़े और उन्हें मूर्छा आ गई।

मानो हित की सीख हमारी, बिगरी अकल तुमारी।
बनकें छुरी करे जौ छेदत , घाव लगत है भारी॥

नागिन बनकें डसै करेजौ, देह परै सब कारी।
कहत ईसुरी दशरथ कै रये, बिस की पुरिया नारी॥

अरे! तुम्हारी अक्ल मारी गई है। मेरी हितभरी बात मानो। यह नारी छुरी बनकर दिल पर वार करती है और गंभीर घाव कर देती है। यह नागिन जैसी डसती है, तो सारा शरीर काला पड़ जाता है। ईसुरी कहते हैं- दशरथ जी सीख देते हुए कह रहे हैं कि नारी से बचो, यह विष भरी पुड़िया है।

हमखों लेव यार ओली में, प्रान बसे बोली में।
एक हात सें हमें समारो, एक हात झोली में॥
दवा हकीम बैद सब हारे, रस नइयाँ गोली में।
कहत ईसुरी भोर के पारे, डार देव डोली में॥

इस चौकड़िया में मरणासन्न जीव के अंतिम वचन उद्धृत किये जा रहे हैं। अरे भाई! हमें तनिक अपनी गोदी में ले लो। मेरे प्राण मुँह तक आकर अटक गये हैं। अपने एक हाथ से मेरे मृतप्राय शरीर को संभालो। और एक हाथ से मेरी झोली को टटोल लो कि उसमें कुछ है या नहीं। मेरी चिकित्सा में दवा व्यर्थ हो गई और हकीम तथा वैद्य सभी प्रकार की चिकित्सा करने वाले हार मान गये। किसी भी गोली(दवा)में इतनी शक्ति प्रमाणित नहीं हुई जो मुझे बचा पाती। ईसुरी कहते हैं- मैं सवेरे से मरा पड़ा हूँ। मुझे अर्थी में लिटा दो।

करनी सुनो जीभ की भाई, जीभ रही समजाई।
मान-पान जी वई से होवें, बड़तइ प्रीत सबाई॥
झगरौ होतन सुनौ जीव सें, जीव देत समझाई।
जीव जीव की फागें ईसुर, रहौ जीव से गाई॥

अरे भाई! तनक इस जीभ की करतूत सुन लो। इस बात को जीभ ही समझा रही है। इस संसार में मान-प्रतिष्ठा जीभ ही के कारण होती है। इस जीभ के कारण ही आपस का प्रेम सवाया हो जाता है। आपस में झगड़ा भी केवल जीभ के कारण होता है और जीभ के ही कारण झगड़ा समाप्त भी हो जाता है। ईसुरी कहते हैं- इस जीव(प्राणी) की जीभ के गुणों का बखान करने वाली फागें भी, मैं अपनी जीभ से ही गा रहा हूँ।

पैले सुमिर सारदा माई, कंठ बिराजो आई।
दूजें सुमिरों गौरी गनपत, दीजो ग्यान बताई॥
तीजे सुमिरों तीनऊँ देवा, जिनने सृष्टि रचाई।
देवी दास अब है निरज्ञानी, दीजो ग्यान बताई॥

सर्वप्रथम माता सरस्वती का स्मरण करता हूँ। हे माता! मेरे कंठ में विराजमान हो जाओ। दूसरी बार श्री गणेश जी और उनकी माता पार्वती का स्मरण करता हूँ। हे गणेशजी! मुझे ज्ञान का दर्शन कराइए। तीसरी बार ब्रम्हा, विष्णु और महेश इन तीनों देवताओं का स्मरण करता हूँ। क्योंकि समग्र सृष्टि की रचना पालन और संहार इन्हीं के द्वारा होता है। देवीदास कवि ज्ञान हीन हैं- उन्हें ज्ञानवान बनाइए।

बन आये महादेव बैरागी, बन आये महादेव बैरागी।
अटा-अटारी मने न भावे, टूटी टपरिया में भए राजी।
साल दुसाला मने न भावे, अंग भभूत पै भए राजी।
हलवा पूड़ी मने न भावे, भांग धतूरे में भए राजी।

महादेव जी बैरागी बनकर आ गये। उन्हें महल और अट्टालिकाएँ अच्छी नहीं लगती। वे तो टूटी टपरियो (झोपड़ी) में ही रहना पसंद करते हैं। उन्हें शाल-दुशाला अच्छा नहीं लगता। वे तो अपने सर्वांग पर भभूत मलना ही पसंद करते हैं। हलवा पूड़ी के भोजन उन्हें नहीं भाते, उन्हें तो बस भांग धतूरे का सेवन ही अच्छा लगता है।

श्री राधे बारंबार होरी खेलत बृंदावन में।
कोरे-कोरे कलस मंगाये, उनमें रंग घुरवाये।
भर पिचकारी सनमुख मारी, चोली भींजी रंग में।
उड़े गुलाल लाल भये बादर, लाली छा गई तन में।

श्री राधा जी वृंदावन में बार-बार होरी खेलती हैं। कोरे कलश मंगाये गये। उनमें नाना प्रकार के रंग धोले गये। फिर जब होली के समय श्री कृष्ण ने पिचकारी में रंग भरकर सामने की तरफ मारी तो चोली सराबोर हो गई। गुलाल इतना उड़ा कि पूरा आकाश लाल दिखने लगा और पूरा शरीर ही लाल हो गया।

हमखों पार देव भौमइयाँ, तनक उठाकें कइयाँ।
चार हात जाँगा लिपवा दो, गऊ के गोबर मइयाँ॥
तन के ऊपर कुसुम बिछा दो, तान दुपट्टा छइयाँ।
कहत ईसुरी सुन लो प्यारी, उड़ गइ राय मुनइयाँ॥

इस चौकड़िया में मरणासन्न व्यक्ति के ह्रदयोद्गार प्रकट किये गये हैं। अरे! मुझे अपनी बाहों में उठाकर धरती पर लिटा दो। लेकिन पहले गाय के गोबर से चार हाथ लम्बाई में भूमि को लिपवा देना। मुझे लिटाकर मेरे शरीर पर लाल फूल बिछा दो और कफन ओढ़ाकर मेरे शरीर पर

छांह सी कर दो। ईसुरी कहते हैं–अरे प्यारी! अब तुम ध्यान से सुन लो। इस तन रूपी पिंजड़े में रहने वाली 'राय मुनइयाँ' (एक विशेष पक्षी, दूसरी अर्थ में 'जीवात्मा') तो अब उड़ चुकी है, सिर्फ खाली पिंजड़ा शेष रह गया है।

होरी की फाग

महादेव मड़ी बना लो झाड़ी में,
हट पर गई गौरा नार॥
महादेव काहिर की मड़िया बनी, काहे के लगे किवार।
महादेव चूना ईंट की मड़िया बनी, चंदन के लगे किवार॥

पार्वती जी भगवान शंकर से हठ करती हैं कि बाग में ही मड़िया बना लो जिससे कि रहने का कोई ठिकाना हो जाये। फिर वे शंकर जी से पूछती हैं कि मड़िया किससे बनेगी, उसमें किवाड़ किस चीज के लगेंगे? तब भगवान शंकर जी कहते हैं कि मड़िया चूना ईंट की ही बनेगी लेकिन उसमें किवाड़ चंदन की लकड़ी के लगेंगे।

कजली बन वारे भौरा रे।
कौन की कैये बेरी जानकी, कौन की कइऐ गौरा।
राजा जनक की बेटी जानकी, हेमांचल की गौरा।
कौने विहा दई बेटी जानकी, कौने विहा दई गौरा
रामै विहा दई बेटी जानकी, शिव शंकर खों गौरा।

कजली वन के भौरा श्री जानकी जी किसकी बेटी हैं? श्री पार्वती जी किसकी पुत्री हैं। श्री जानकी जी राजा जनक की बेटी हैं और श्री पार्वती जी राजा हिमांचल की पुत्री हैं। श्री जानकी जी का विवाह किसके साथ हुआ? और श्री पार्वती जी का विवाह किसके साथ हुआ? श्री जानकी जी का विवाह श्री राम के साथ हुआ और श्री पार्वतीजी का विवाह भगवान शंकर के साथ हुआ था।

छंदयाऊ फाग

गैलो सूद हार की प्यारे
बन जइयो कदियारे, हरे गैलो सूद......
हरे गैलो सूद हार की प्यारेलाल।
कांदी खोदे गुनत लगावे, भूँके बैल हमारे
कांदी खोदे कारे जरियाँ

हा-हा खाने लगी ऊंगरियाँ
चूकी जात कलेऊ की बिरियाँ, सोच मन में।

अरे भाई! अपने खेत की तरफ रवाना हो जाओ और कांदी खोदने वाले बन जाओ। कांदी खोदते समय स्मरण आया कि हमारे बैल भूँखे हैं। कांदी खोदते समय कंटीली झाड़ियों को खोदना पड़ा जिससे उँगलियाँ इतनी थक गई कि हा-हा सी खाने लगी।

रसिया रसिक

डोरी डार दो मैहल चढ़ आवै रसिया।
जब रसिया द्वारे पै आओ, भूँक परी बैरिन कुतिया।
जब रसिया बखरी में आओ, सासो ने ओर दई चकिया।
जब रसिया महलन में आओ, बिछ गइ खाट लगी तकिया।

छत के नीचे डोर डाल दो ताकि रसिया महल पर ऊपर आ जाय। जब रसिया द्वार पर आया तो बैरिन कुतिया भौंकने लगी। जब रसिया आँगन में आया तो सास ने चक्की पीसना शुरु कर दिया। जब रसिया शयन कक्ष में पहुँचा तो तत्काल पलंग बिछ गया और तकिया लगा दिया गया।

बरसा रसिया

हँस के बोली कबहुं ना गली घाट रे, उमरिया सारी गुजर गई।
जब तुम जाती पनियां भरन खो रे, गैलन लखे तोरी बाट रे।
चली जात चितवत ना पाछे रे, सोइ एसो भरो है गुमान रे।
तुमसे मिलन खों जी ज्यों तरसे रे,सोइ लागी बरसन से आस रे।
उमरिया सारी गुजर गई॥

सारी उम्र बीत गई लेकिन कभी भी गली या घाट पर मिलने पर तुमने मुझसे बात नहीं की। जब तुम पानी भरने के लिए कुएँ पर जाती हो तो मैं रास्ते में तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूँ। तुम्हें शायद अपने ऊपर बहुत अभिमान हो गया है तुम मेरी तरफ पीछे मुड़कर भी नहीं देखती। तुमसे मिलने के लिये मेरा जी तड़पता रहता है। मैं बरसों से तुमसे मिलने की आस लगाये बैठा हूँ।

क्वार कौ रसिया

बटुवा सी खो हरन चलों रसिया
कौना के सज गये ढोला रे पालकी

ए रे कौना के सज गये नौ टटुवा
विआवता के सज गये ढोला रे पालकी
ए रे सोइ छैला के सज गये नौ टटुवा
बटुवा सी खों...................

रसिया, चलो उसका अपहरण बटुवा की तरह कर लें। अरे! ये डोला पालकी किसके लिए सजा दिये गये हैं? अरे! ये नौ घोड़े किसके लिये तैयार खड़े हैं? अरे! विवाहिता के लिये तो ये डोला पालकी सजायी गई है और उसके छैल के लिये ये घोड़े सजाये गये हैं।

लेद

औरछे राम सिया खेलें होरी, पन्ना के जुगल किशोर। औरछे राम......
औरछे कै किरिया केसर बई, कै मै उड़त गुलाल। औरछे राम...... ॥ 1 ॥
औरछे नौ किरियाँ बई, दसमन उड़त गुलाल। औरछे राम...... ॥ 2 ॥
औरछे कौना की भींजे चूनरी, कौना की सैला पाग। औरछे राम....... ॥ 3 ॥
औरछे सीता की भींजे चूनरी, श्री लछमन की सैला पाग। औरछें राम.... ॥ 4 ॥

ओरछा में श्रीराम और सीता होली खेल रहे हैं। पन्ना में श्री जुगलकिशोर होरी खेलते हैं। ओरछे में कितनी क्यारियों में केसर बोई गई और कितनी क्यारियों में गुलाल उड़ रहा है। ओरछे में नौ क्यारियों में केसर बोई गई है और दस मन गुलाल उड़ रहा है। ओरछे में किसकी चूनरी भीग रही है और किसके सैला पाग भीग गये है। अरे! ओरछे में सीता जी की चूनरी भीग गयी है और लछमन के सैला पाग भीग गये है।

केसर के उड़े गुआर, अवध में फूलन वर्षा हो रही।
अवध में कै किरियां केसर बई, कै मन उड़े गुलाला।
अवध में फूलन......
अवध में कौना पे केसर गारियो, अवध में कौना पै उड़े गुलाल।
अवध में फूलन ....
अवध में राधा पे केसर गारियो, कृष्णा पे उड़े गुलाल।
अवध में फूलन..........

केसरिया रंग के गुबार से उड़ रहे हैं। अयोध्या में फूलों की वर्षा हो रही है। केसर कितनी क्यारियों में बोई गई है। गुलाल कितने मन उड़ रहा है। केसर नौ मन घोलना, गुलाल दस मन उड़ाना। केसर किसपर छिड़की जायेगी, गुलाल किसपर डाला जायेगा? राधा पर केसर छिड़कना, कृष्ण पर गुलाल डालना।

भौंरा-भौंरा-भौंरा रे, कजली बन कारे भौंरा रे।
कौन की कइयें बेटी जानकी, कौन की कइयें गौरा रे।
राजा जनक की बेटी जानकी, हिमांचल की गौरा रे।
कौने ब्याह दई बेटी जानकी, कौने ब्याह दई गौरा रे।
राम व्याह दई बेटी जानकी, शिवशंकर खों गौरा रे॥

अरे! कजली वन के भौंर जानकी(सीता) किसकी पुत्री थीं और गौरा किसकी बेटी थी? भौंरा कहता है- जानकी राजा जनक की और गौरा रानी हिमांचल की पुत्री थीं। अरे भौंरा! ये बता कि जानकी जी का व्याह किसके साथ हुआ था और गौरा को किसके साथ व्याहा गया था? भौंरा कहता है- जानकी जी का व्याह भगवान श्रीराम के साथ हुआ था और गौरा रानी को शिवशंकर के साथ व्याहा गया था।

पुरानी लेद (खिर्र)

मोहन नंदलाला बरसाने कब आहौ।
जसोदा के लाल बरसाने कब आहौ॥
मोहन नंदलाल मोहन नंदलाल, मची बिरज में फागें।
रंग उड़े गुलाल, रंग गये अटा अटारी, रंग गई चौपार, रंग गये कुंअर कन्हैया।
मोहन नंदलाल बरसाने की गुजरिया, दूध बेंचन जाये, बीच मिले गुजरिया।
दधि लयौ छुड़ाय, मोय करी बेहाल, मोहन नंदलाल बरसने कब आहो

नंदलाल बरसाने कब आओगे? हे जशोदा के लाल! बरसाने कब आओगे? हे मोहन! ब्रज में फाग की धूम मच रही है, रंग और गुलाल उड़ रहा है। अटा अटारी तक रंग गये हैं, चौपाल भी रंग गई है, कुंअर कन्हैया भी रंग में सराबोर हो गये हैं। बरसाने की गुजरियाँ दधि बेचने जब निकली तो रास्ते में उन्हें श्रीकृष्ण मिल गये उन्होंने उनका दहि छीन लिया और मुझे बेहाल कर दिया।

गिरधारी लाल, गिरधारी लाल
तैरो भरोसो भारी।
यशोदा के लाल, तैरो भरोसो भारी।
गिरधारी लाल, ठाड़े कदम की छइयां,
मुख मुरली बजाये मो लये ब्रज के बसैया।
गिरधारी लाल, गिरधारी लाल, गिरधारी लाल,
भई ब्रज में बरसा, परी मूसर धार।
वै गये ब्रज के बसैया,

धरनी के नाग, धरनी के नाग, तैरो भरोसो भारी।
गिरधारी लाल गिरधारी लाल..... ।
हरे बांस की सुअना, उड़ जाय आकाश,
सीता तपै रसुइयां, जैबे भगवान। तैरो भरोसो भारी...... ।

हे गिरधारी लाल! मुझे तुम्हारा ही भरोसा है। हे यशोदा के लाल! मुझे तुम्हारे ऊपर पूर्ण विश्वास है। गिरधारी कदम के वृक्ष की छांव में खड़े होकर मुरली बजा रहे हैं। उन्होंने अपनी मुरली की धुन से सारे ब्रजवासियों को मोहित कर लिया है, इतने में भारी वर्षा होने लगती है। ब्रज के निवासी यहाँ तक की धरती के नाग भी उसमें बह जाते हैं। और हरे रंग के तोता आकाश में उड़ गये। सीता जी रसोई पका रहीं है और भगवान राम बैठकर उसे ग्रहण कर रहे हैं।

लेद

नइया में श्याम खेलें होरी नइया में श्याम खेलें होरी।
राधा कन्हैया की झोरी।
कौना के हाथ कंचन पिचकारी, कौना के हाथ अनी डोरी।
मोहन के हाथ कंचन पिचकारी, राधा के हाथ अनी डोरी।
मोहन फाग अदब से खेलो, घर सास लड़हैं मोरी।
भीतर भगे बचो नहीं मोहन, बाहर कब खेलो होरी।

नाव में श्याम होरी खेल रहे हैं। राधा श्रीकृष्ण की जोड़ी बड़ी सुहानी लग रही है। किसके हाथ कंचन पिचकारी है और किसके हाथ अनी डोरी है? मोहन के हाथ कंचन पिचकारी है और राधा के हाथ अनी डोरी है। देखो मोहन! फाग तनिक शिष्टाचार से खेलो, अगर मेरी सास को पता चल गया तो वह घर में बहुत झगड़ा करेगी। देखो मोहन! तुम घर के अंदर मत भागो, यदि होरी खेलना हो तो बाहर आकर खेलो, पता नहीं तुम बाहर कब निकलोगे और कब बाहर होली खेलोगे।

हमारौ खेलत मोती गिर गयौ,
राधे जू तू म्हारे द्वार। हमारौ खेलत........
हमारौ कहे कौ मोती बनो,
काहे को गले कौ हार। हमारौ खेलत...... ॥ 1 ॥

हमारौ सोने कौ मोती बनौ,
रूपै कौ गले कौ हार। हमारौ खेलत....... ॥ 2 ॥

हमारौ कै मासे मोती बनौ।
कै मासे गले को हार। हमारौ........ ॥ 3 ॥

हमारौ नौ मासे को मोती बनो,
दस मासे गले कौ हार। हमारौ खेलत....... ॥ 4 ॥

राधे जू! तुम्हारे द्वार पर हमारा मोती खेलते समय गिर गया है। मोती किसका बना था और हार कैसा था? मोती तो सोने का बना हुआ था और चाँदी का हार था। मोती कितने तौल का था व हार की क्या तौल थी? मोती नौ मासे का था और हार दस मासे का था।

लेद चेतावनी

उमरिया थोरे दिनन की पाउनी, जिन करियो मान गुमान। उमरिया.....
अरे हाँ उमरिया जैसे बूंदा ओस कौ, पवन लगे ढुर जाये। उमरिया.......
अरे हाँ उमरिया जैसे पूरा घास कौ, आग लगे जर जाय। उमरिया.......
अरे हाँ उमरिया लीप पोत भौ में धरे, घर के लोग डरायं। उमरिया......
कहत कबीर सुनो भई साधो, राम नाम संग जाय। उमरिया......

यह उम्र थोड़े ही दिन की मेहमान है। इसलिए इस पर गर्व मत करो। अरे! जैसे ओस की बूँदे हवा चलते ही ढलकर बह जाती हैं वैसे ही उम्र के साथ होता है। उम्र घास के पूरा के समान है, जो जरा सी आग लगते ही जलकर खाक हो जाती है। अरे! जब प्राण निकल जाते हैं तो घर के लोग लीप-पोत कर तुरंत लिटा देते है और लोग मृत शरीर से डरने लगते हैं। फिर बाँस और काठ की अर्थी बनाकर उसपर लिटाकर मरघट पर ले जाते हैं तो आगे आग वाली जलती हुई हांडी चलती है । कबीर कहते हैं- अरे सज्जनों! मरने के बाद केवल राम का नाम ही साथ में जाता है और कुछ नहीं।

चौकड़िया

भये ब्रजराज खिलौना
ब्रज में भये ब्रजराज खिलौना।
बाबा नंद के छौना। ब्रज में..... ॥
चुरा चुरा के दहिया खा रये, बना-बना के दोना। ब्रज में....... ॥
बीच डगर में सखियां छेड़े, मारे जादू टोना। ब्रज में..... ॥
कहत ईसुरी सुन लो प्यारे, बाबा नंद के छौना। ब्रज में..... ॥

बाबा नंद के लाड़ले ब्रज में एक खिलौने के समान हो गये हैं। जिनसे हर कोई खेलना

पसंद करता है। वे चुरा-चुरा के दही खाते हैं। उन्हें बीच डगर में सखियाँ छेड़ती हैं, उन्हें लुभाने के लिये तरह-तरह के टोटका करती हैं। ईसुरी कवि कहते हैं कि इस प्रकार बाबा नंद के दुलारे अनेक लीलाएँ करते हैं।

अबे झूलन गई राधे बागों में,
केवड़ा तोरी अजब बहार।
बाग में काहे के पलना बने, काहिर के जोता चार। अबे झूलन....
बाग में चदन के पलना बने, रेसम के जोता चार। अबे झूलन.... ॥
बाग में को जो पलना झूलियो, कोन्हे झुलावन हार। अबे झूलन... ॥
बाग में राधे पलना झूलियो, श्री कृष्ण झुलावन हार। अबै झूलन...... ॥

अभी-अभी राधा रानी बाग में गई हैं। हे केवड़ा के वृक्ष! तेरी बड़ी अजीब महक आती है। बाग में किस लकड़ी के पलना डले हैं और उसमें किस चीज की रस्सी बंधी हुई हैं? बाग में चंदन की लकड़ी के तो पलना हैं और रस्सी रेशम की बंधी हुई है। बाग में पलना कौन झूल रहा है और उसे झुला कौन रहा है? बाग में राधे रानी तो पलना झूल रहीं है और श्रीकृष्ण झुला रहे हैं।

बीरा हनुमान चले मार किलकारी,
कौना के तुम पठये जो आये, कौना आज्ञाकारी।
कौना ने तुमखों हुकुम दये सो, टोड़ारी फुलवारी।
रामा के हम पठये जो आये, लछमन आज्ञाकारी।
सीतामाता हुकुम जो दये, टोड़ारी फुलवारी।

महावीर हनुमान ने जोर से किलकारी मारी और अशोक वाटिका को उजाड़ने के लिए चल पड़े। रावण के सैनिकों ने पूछा- तुम यहाँ किसके भेजे आये हो? तुमने किसकी आज्ञा से ये फुलवारी उजाड़ दी है। हनुमान ने गर्वपूर्वक कहा- मैं श्रीराम जी के द्वारा भेजा गया हूँ। लक्ष्मण जी का आज्ञानुवर्ती हूँ और माता सीता की आज्ञा से मैंने यह फुलवारी उजाड़ी है।

रातै सखी छैल धंस आये, सोवत हमें जगाये।
देत रहे पकना खो फेटी, घात लगा नहीं पाये।
ओली लै गलबइयां डारी, हातन दये उठाये
भर अकबारी धरनी दै पारे, काम करे मन चाहे
गोधन बलम जरा रहे ठाड़े, बेइ बचा न पाये।

अरी सखी! रात में मेरे कमरे में अचानक छैल(प्रियतम) आ गये। उन्होंने मुझे सोते से जगा दिया। वे काफी देर तक मेरे लिए चक्कर लगाते रहे, किंतु सफल नहीं हुए। अचानक उन्होंने गलबहियाँ डालकर मुझे गोदी में ले लिया। फिर दोनों हाथों पर उठाकर मुझे आलिंगन में लेकर धरती पर लिटा दिया। वे अपनी मनमानी करते रहे। और जरा देखो तो, मेरा घरवाला मेरे पास खड़ा देखता रहा। वह मुझे बचा भी नहीं पाया।

चलती काय गई तुम करके, ठसक कौन की भरके।
जवानी जोर जुलम जिन ढाओ, रहबू करे समर कें।
जिदिना बलम लिबाबे आजें, जै हौ बिते तिघर कें।

तुम मेरे निकट क्यों आती चली गई? तुम्हें किसकी ठसक थी? अपने यौवन से प्रभावित करके मुझपर इतना जुल्म मत करो। जरा संभल कर रहा करो। जिस दिन भी तुम्हारा पति तुम्हें लिवाने आ गया, उसी दिन तुम्हारी सारी शेखी निकल जायेगी।

छलबल आज लली के छूटे, बलम लिवावे रूठे।
करत हतीं उतपात पुराने, लैकें टर्र बबूटे।
दै दै गंगा करे बहाने, मजा मायके लूटे।
हौजे मौन पिया के संग में, आज चली बिन खूंटे।

आज लाड़ली के सारे छल बल धरे के धरे रह गये। पतिदेव लिवाने जाने के लिए मचले बैठे हैं। नाना प्रकार के नाज-नखरे करती थी और अपनी वही पुरानी चालें चला करती थी। गंगाजी की सौगंधें खा-खाकर खूब बहाने बनाती थीं और उनकी आड़ में मायके में मजे लूटती थी। अब कुछ करते नहीं बना। खसम के साथ चली जा रही हैं। जैसे रस्सी से बँधी कोई गाय या बकरी चुपचाप चली जा रही हो।

गुइयां पत जाने कित छा रये, की के आम रखा रये।
पुरा गली के रोपत आखे, ले पथरा सुधया रये॥

अरी सखी! मेरे पतिदेव न जाने किसके पास रम कर रह गये हैं? पता नहीं किस पेड़ के आम खा रहे हैं। उन्हें शायद पता नहीं है कि पुरा पड़ोसी उनपर अपनी दृष्टि लगाये हुए हैं और उनपर अपना निशाना साध रहे हैं।

गुइयां हो रहे आम पकइयां, जाने कित गये सइयां।
भर गयो रस इनमें दुबअन में, कसर कितऊ रयी नइयां॥

अरी सखी! ये आम अब पकने ही वाले हैं(मेरे उरोज यौवन भार से व्याकुल हो रहे हैं) न जाने मेरे पति कहाँ रह गये। इन दोनों में यौवन रस लबालब भर गया है। अब किसी भी प्रकार की कोई कसर नहीं रह गई हैं।

गौरा तेरे जैसो सइयां, इन दसऊ दिसन में नइयां।
चउदा भुवन में नइयां।
जटा जूट कौ मुकुट सीस पै, माथे चंद्र उजइयां।
गंगा शीष धरे गंगाधर, भनना रई ततैया॥

पार्वती जी! तुम्हारे पति शिव जैसा तो इन दसों दिशाओं में कोई भी नहीं हैं। यहाँ तक कि चौदह भुवनों में भी नहीं है। वह सिर पर जटाजूट का तो मुकुट बाँधे है और माथे पर चंद्रमा शोभित हो रहा है। जटाओं के बीच में गंगा जी धारण किये हैं और आसपास बर्र-ततइयाँ भन्ना रहीं हैं।

लाला हरदौल, लाला हरदौल, तुमखों बुलउआ दुर्गा के।
सुमरूं माता सरसुती, कंठ बिराजो आय ।
किए तुम्हारे आसरे, अक्षर दियो मिलाए।

लाला हरदौल, लाला हरदौल! तुम्हें माता दुर्गा की तरफ से बुलावा है। माँ सरस्वती! मैं तुम्हारा स्मरण कर रहा हूँ। मेरे कण्ठ में विराजमान हो जाओ। मैं तुम्हारे ही आसरे पर हूँ। मेरे इन अक्षरों में रस और भाव भर देना।

ख्याल

जौ तन हो गऔ सूख छुआरौ।
ऊसै हतौ इकारौ॥

(यह कवि ईसुरी की चौकड़िया की प्रथम पंक्ति है)- एक तो वैसे भी यह शरीर इकहरे बदन का था। उस पर प्रियतम के वियोग के कारण यह तन सूखकर छुहारे जैसा लगने लगा है।

गुदना अजब गुदो गोरी कौ, गूजर की छोरी कौ।
तुम तो भरे बदन की सुंदर, लटके केस भुजन के ऊपर।
दयें टीका रोरी कौ॥

इस छैल छबीली गोरी के शरीर पर गुदे हुए गुदना कितने विचित्र लग रहे हैं। मालूम नहीं

यह गूजर की बेटी है। तुम्हारा भरा हुआ शरीर कितना सुंदर है फिर भी काम चोरी करती हो(अर्थात् मेरा दिल चुराये लेती हो) । बाहों पर छहरे हुए सुंदर बाल और माथे पर लगा हुआ रोली का टीका कितना अच्छा लग रहा है।

छंदयाऊ फाग

सतयुग त्रेता में भई, कामदापुर बीच।
हे जी छा रही कलयुग में, जो पम्पन की कीच

सत्ययुग और त्रेतायुग में कामदपुर के बीच उत्पन्न होने वाली इस धरती पर देखो तो इस कलयुग में कितने पाप बढ़ गये है कि चारों तरफ पापों की कीचड़ ही कीचड़ फैली हुई है।

भौरी कुसुम रंग, रंग डारी, होरी खेल तन सारी।
पंचरंग सारी सारी के संग, सारी देह बिगारी।
भींजत रंग निचुर गऔ तन से, बदन चिपक रही सारी।
पक्का रंग दयौ सारी पै, कर से कुंज बिहारी,
हम आज देखन न जैहें, फजियत हुये हमारी॥

होरी खेलते-खेलते मेरी साड़ी पर इतना रंग फेंका कि वह रंगकर 'कुसुम' के फूल जैसी लाल हो गई। मेरी साड़ी तो पंचरंग कर ही दी, मेरी सारी देह भी बिगाड़ कर रख दी। वस्त्र इतने भीग गये, तन से रंग पानी की तरह बहने लग गया। साड़ी बदन पर चिपक कर रह गई। कुंज बिहारी ने अपने हाथों से इस कदर रंग दिया है कि रंग छूट भी नहीं सकता। अब मैं किस मुँह से होली देखने जाऊँ, मेरी क्या इज्जत रहेगी?

होली गीत

पिचकारी समरिया ने भरमारी, राधा रंग रस कर डारी।
भर पिचकारी तक कें मारी, नइ चुनरिया रंग डारी।
मोहन लये कनक पिचकारी, डारत रंग बारी-बारी।
सांचो रंग श्याम ने डारौ, अपुने रंग में रंग डारी।
छाँड़े से छूटत ना यारी, हरे रंग की है बारी।

सांवरे श्रीकृष्ण ने पिचकारी भरकर मारी तो राधा स्वयं ही रंग और रस का स्वरूप बन गई। निशाना साध-साधकर पिचकारी से रंग मारा गया है। मोहन सोने की पिचकारी लिये हैं। वे सभी पर बारी-बारी से रंग डालते हैं। श्याम ऐसा रंग डाला है कि मैं उन जैसी ही श्यामल दिखने

लगी हूँ।(अर्थात् श्याम रंग में रंग गई हूँ।) मेरी उससे जो आत्मीयता स्थापित हो गई है, वह अब किसी भी दशा में टूटने वाली नहीं है।

होरी खेलत हैं गिरधारी, है राधा से यारी।
नैना बन गये रंग रसीले, मधुवन की पिचकारी
देखत अगल बगल में उनकौं, जिननें जा लत पारी।
मौका पाय आये वे छिपकें, बांके कुंज बिहारी।
पक्कौ रंग रंगों मोहन ने, ना छूटत है सारी,
कौनऊँ आंग बचौ न बांकी, सारी देह जा रंग डारी॥

गिरधारी श्रीकृष्ण होली खेलते हैं। राधा से उनके प्रेम सम्बंध हैं। उनके नयन रंगरूप हो गये हैं। मधुवन पिचकारी बन गया है। मैं उन्हें अगल-बगल खोज रही हूँ। उनके कारण मुझे यह लत पड़ गई है। मौका मिलते ही बांके कुंज बिहारी मुझसे आकर चिपक गये। उन्होंने मुझे ऐसे रंग में रंग दिया है जो कभी छूट भी नहीं सकता। मेरे शरीर का ऐसा एक भी अंग नहीं बचा, जिसे उन्होंने किसी रंग से न रंग दिया हो।

गलियन करें खुलासा यारी, यारी राधा और बनवारी।
बिगर जात तनक न रोकत, सनमुख दइ पिचकारी।
कोरे मटकन रंग धुरवाये,भींजी अंगिया सारी।
मन मुस्काये बृज गलियन में, रूप धरे गिरधारी।
कौनऊ बात छिपाइ न छिपती, उनको लगत पियारी॥

राधा और कृष्ण ब्रज की गलियों में (खुल्लम-खुल्ला) निर्भीक होकर प्रेम करते फिर रहे हैं। वे बिगड़ने की चिंता किये बगैर सामने की ओर पिचकारी मारते हैं। कोरी मटकियों में रंग घुलवाया गया। अंगिया और साड़ी सराबोर हो गई। मन में मुस्काते हुए ब्रज की गलियों में घूम रहे हैं। वे नाना प्रकार के रूप बना लेते हैं। कोई भी बात छिपाये नहीं छुपती। उन्हें वह भी प्यारी लगती है।

होरी में कर दइ बरजोरी, मोरी बिगर गइ सारी कोरी।
रंग की भरी कनक पिचकारी, मोरी देह रंगी जा सारी।
जात्सात रंग में रंग डारी, केसर घोर मदन रंग छाये।
संग में खूब गुलाल उड़ाये, हैं चूनरिया जर तारी।
होरी में हौवे बरजोरी, चूनर रंगी हती जा कोरी।

अब फजियत मोरी कर डारी, सखियां अपने घरन से निकरी,
गलियां एक बची न सकरी, रंग रंगी फिरै बृज की गोरी॥

होली खेलते-खेलते, इतनी जबरदस्ती की कि मेरी कोरी साड़ी ही बिगड़ कर रह गई। रंग से भरी सोने की पिचकारी ने मेरी सारी देह बिगाड़ कर रख दी। सातों रंग में रंग डाली। केसर घोली तो मदन रंग(कामेच्छा जागृत हो गई) छा गया। साथ ही गुलाल भी खूब उड़ाया। जरतारी की चूनरिया बिगाड़ दी। अरे भाई! होली में तो जबरदस्ती होती ही है। मेरी चूनर बिल्कुल कोरी थी(मुझे किसी ने भी नहीं छुआ था) मेरी इतनी फजिहत कर दी कि मैं कहीं की न रही। होली के लिए सखियाँ अपने घरों से निकली तो सकरी(तंग)गलियाँ भीड़ से भर गई। ब्रज की गोरी रंग-रंगी घूमती फिर रही है।

ब्रज में धूम मची होरी की, चूनर रंगी गोरी की।
केसर रंग गुलाल उड़त है, गलियन होरी धूम मचत है।
कहा कहे जोरी की।
तनमन रंगौ रंगे मन रंग में, बात नहीं चोरी की।
बाजत ढोल झांझ ढप झीका, कुछ मत पूछो उनके जी का।
होड़ लगत होरी की।

ब्रज में होली की धूम मची है। गोरी की चुनरिया रंग गई हैं। केसरिया रंग और गुलाल उड़ रहा है। गली-गली होली का हो-हल्ला हो रहा है। इस जोड़ी की क्या कहें? तन और मन दोनों ही मनरंग(कामदेव के रंग) में रंगे हुए हैं। जैसे राधाकृष्ण हैं वैसे ही हम भी हो रहे हैं। यह कोई छिपाने लायक बात नहीं है। ढोल, झांझ,ढप और झीका बज रहे हैं। उनके जी (मन) का हाल मत पूछो, उनके मन में तो होरी खेलने की होड़ सी लगी हुई है।

अटकी प्रीत पिया प्यारे से, पीरे पट बारे से।
ठाड़ी रात दरस के लाने, अड़ी पौर द्वारे से।
कैसे हेत बड़े भये छूटत, संग खेली बारे से,
ईसुर मोहन मिलत भाग से, पूरब तन गारे से॥

मेरी लगन पीले पट वाले श्रीकृष्ण से लगी हुई है। मैं केवल दर्शन की लालसा से पौर के द्वारे में अड़ी हुई रातभर से प्रतीक्षा कर रही हूँ। मैं जो कि बचपन से ही उसके साथ खेलती रही हूँ। अब इस उम्र में उससे सम्बन्ध कैसे तोड़ सकती हूँ? ईसुरी कहते हैं- पूर्वजन्म में अपने जीवन का बलिदान करने पर ही बड़े भाग्य से मोहन से मिलन हो पाता है।

बूँदा दये बंदी के नीचें, प्रान लेत है खीचें।
नीचे आड़ लगी सेंदुर की, दमकत भोंए दुबीचें,
गुड़ी तीन माथे पे परतीं, बैठे दाव रंगीचे।
कहें ईसुरी बीधन बीदी, पल भर पलक न मींचे॥

माथे पर बैंदी है और उसके नीचे बूँदा (लाल टिकुली) लगी हुई है, जिसकी शोभा से मेरे तो प्राण से निकले जा रहे हैं। बूंदा के नीचे सिंदूर की आड़ी रेखा खिंची है जो दोनों भौंहों के बीचों बीच दमक रही है। माथे की तीनों सिकुड़ने रंग भरी रेखाओं जैसी लग रही हैं। ईसुरी कहते हैं- इस छवि को देखते रहने की ललक इतनी बढ़ गई है कि पलकें झपकाने का भी मन नहीं होता हैं।

आज बिरज में होरी है रे रसिया, होरी रे रसिया , बरजोरी रे रसिया।
कौन के हाथ कनक पिचकारी। कौन के हाथ कमोरी रे रसिया॥
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कमोरी रे रसिया,
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में घोरी रे रसिया।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप, और नगारे की जोरी रे रसिया।
कै मन लाल गुलाल मंगाये, कै मन केसर घोरि रे रसिया।
नौ मन लाल गुलाल मंगाये, दस मन केसर घोरी रे रसिया।
चंद्रमुखी भज बालकृष्ण छवि, जुग जुग जिये यह जोरी रे रसिया॥

अरे रसिया! आज ब्रज में होली है। होली के साथ-साथ बरजोरी भी हो रही है। सोने की पिचकारी किसके हाथ में है? गुलाल की पोटली किसके हाथ में है। श्रीकृष्ण के हाथों में कनक पिचकारी है। राधा कमोरी लिये हैं। गुलाल इतना उड़ा कि बादल तक लाल हो गये। केसर रंग ने सबको सराबोर कर दिया है। खड़ताल,मृदंग,झांझ और ढप बज रहे हैं। नगाड़े की जोड़ी पर चोवें चलायी जा रही हैं। लाल रंग का गुलाल कितने मन मंगाया गया है? केसर कितनी घोली गई है? नौ मन तो गुलाल मंगाया गया और दस मन केसर घोली गई। चंद्रसखी कहती है- बालकृष्ण की इस छबि का ध्यान करो। राधाकृष्ण की यह जोड़ी युग-युगान्तर तक बनी रहे।

पार्वती के व्याह की फाग

दोहा- *नगर निकट जब पहुँच गई शिव की आन बरात।*
पुरवासी बर देख कर बोले नृप से बात।

टेक- *ऐसे पार्वती के सैंया तीन लोक में नैया*

छंद– *राजन सुनो हमारी बानी, जाने तुमको कहा दिखानी,*
हमनें पहले से न जानी सुनिये स्वामी
जो हम पहले से सुन लेते, शादी हरगिज होन देते,
राजा तुम आगो नहि चेते भई बदनामी
अपनो खुद को नाम निकारो, पार्वती के जनम बिगारो
एसौ कीकौ मंत्र विचारौ, बृद्धापन में कीनो बिना बिचारे काम,
जग में भओ बदनाम, भूपत हंस है लोग तमाम
सोचो मन में

शेर– *ऐसे हैं संग साथ गिरिजा के नाथ के*
कोइ बिना पांव डोले
कोइ बिना हाथ के कोइ है बिना धड़के
कोइ बिना माथ के, ऐसे बरात वाले दूल्हा के साथ के

उड़ान–*पृथ्वी और आकाश रसतल तीन लोक भईया ऐसे पति हैं।*
पारवती के हमने देखे नैयां

दोहा– *काहू के मुख चार हैं, काहू के मुख तीन*
कोउ है बिन नाम के, कोउ आँखन हीन

टेक– *भूतप्रेत बेताल हजारन घेरे चौड़ और छईयां*

छंद– *दूल्हा रइ नशा में चंग निशदिन खाये धतूरो भंग*
इनके कारे पर गये अंग, सुनो नृप राई
धर में और दूसरो कौन उनखौ देह सिखा बन तौन
बैठे रह राते दिन मौन
अति सुख पाई
उनके बहन न दूजौ भइया,
इनके भैस न बूड़ी गैया, कैसे रहे गोरा मैया
इनके घर में राजन हो गई धीक बाजी
घर में भुंजी भांग न भांजी, इनपे बिल्कुल भौताश्री
हम कत सर में–

शेर– *है घर न द्वार इनके न बनी, हवेली गिरजा के संग का*
जै न कोइ सहेली वारे से उमा अपनी सखियन संग
खेलीं बन बीच कहो कैसे अब रहे अकेली

उड़ान–*पर्वत पर रहने परे वट वृक्षन की छइयां।*

भूतप्रीत बेताल हजारन घरें चौड़ कोउ छइयां॥

दोहा– *जटा जूट सिर पर लसे, चंद्रा सोहत भाल।*
भस्म माये अंग में गल मुंडन की माल॥

टेक– *हमे कतन में लाज लगत हैं, जादा हम कत नैया*

छंद– *मरजी होय तुम्हारी भूप, तो हम बरनै इनको रूप*
जैसे सुंदरन बने सरूप, दूल्हा आये सुनलो अब
उनको सिंगार, सिर पर बह रई जल की धार
डुड़ा बैला पर अशवार वे हो आये,
तन पर शाला नहीं दुशाला, बैठे ओढ़े कम्बल काला
बगलन दवी एक मृगछाला।
ऐसे रसिया इत उत लटके, सर्प हजारन बिच्छू लटके
वारन–वारन ऐसे भेस धरे हैं धीरन गिरजा के पिया

शेर– *हेम महाराज तुमने सोची न कछु विचारी*
जुगियन के घरे ब्याही गिर राजकुमारी
विश्राम भवन न इनके न अटारी
सूरत शकल से देखत में जंचत भिखारी

उड़ान– *कर कानन में देख लो लिपड़े सर्प ततैया।*
हमें कतन में लाज लगत हैं जादा हम कतनैया।

दोहा– *पुरवासिन के सुन वचन हंस बोले नृप के वेन।*
त्रिलोकी नाथ है त्रिपुरारी त्रेय नैन॥

टेक– *अपने जन की माजधार से पकड़ लैत है बैया*

छंद– *है दीनन के दीन दयाल, उनसे थर थर कांपे काल,*
शोभा देत चंद्रमा भाल, सिर पर गंगा निरमल।
गंगाजी की लहरें, सुंदर जटाजूट में छहरै,
बैठे व्याल कौचिया पहरै।
ओठ झगा मेंटत लिखें भाल के अंक,
छिन में करत राव के रंक।
कर दये रंकन को निर संक ओगढ़ दानी,
सोहत कर कमलन त्रैयशुल।
डमरू है मगन की मूल,
गांजो भांग धतूरौ पूल, है मनमानी।

शेर- *भओ सिंधु मथन जबही कई रतन दिखाने।*
सब यथायोग्य लुटे निज मन के माने॥
एक समय हलाहल को धर उगलौ वाने।
तब तीन लोक कंपे सब देख डराने॥

उड़ान- *सुरनर मुनि घबड़ा गये हैं विधि कहां करइयां,*
शिवशंकर दूजौ जग में कोउ जौधा नैया॥

राजा हिमांचल के नगर के निकट जब शिवजी की बारात आ पहुँची तो उसे देखकर पुरवासी राजा से बोले- पार्वती के दूल्हा जैसा तो तीनों लोकों में किसी का भी नहीं होगा। राजन! हमारी बात सुनो। तुम्हें यह क्या सूझी। हमें अगर मालूम होता तो हे स्वामी! यह विवाह कभी न होने देते। राजा, यदि तुम अभी नहीं चेते तो तुम्हारी भारी बदनामी होगी। सारे जग में तुम्हारे नाम की चर्चा हो रही है। तुमने पार्वती का जीवन बिगाड़ दिया है। यह सलाह तुम्हें किसने दी थी? जो इस बुढ़ापे में तुमने यह काम बिना सोचे समझे किया? सारे संसार में बदनाम हुए और हे राजा! सारे लोग तुम्हारे नाम पर हँस रहे हैं। जरा सोचो तो कि गिरिजा के पति के सभी साथी कैसे हैं? किसी के तो पैर नहीं हैं, किसी के हाथ नहीं है किसी का केवल सिर है तो किसी के मस्तक ही नहीं है। इस दूल्हा के ऐसे तो बराती है।

हमने पृथ्वी,आकाश और पाताल तीनों ही लोकों में ऐसा किसी का पति नहीं देखा जैसा कि पार्वती का है। कोई चार मुखवाला है, किसी के तीन मुख हैं। किसी की नाक नहीं है, किसी के आँखें नहीं है। भूत, प्रेत और बेताल उसे घेरे हुए हैं और चँवर-छत्र लगाये हुए हैं।

यह दूल्हा हमेशा नशे में धुत रहता है और भांग तथा धतूरा खाता है जिससे शरीर काला पड़ गया है। उसके घर में उसके अलावा और कोई नहीं है जो उसे कुछ शिक्षा देता। वह दिन रात मौन बैठा रहता है और इसी में सुख पाता है।

इस दूल्हे की न तो कोई बहिन है और न कोई भाई। एकाध भैंस या बूढ़ी गाय भी नहीं है। ऐसी स्थिति में पार्वती कैसे रहेगी? इसके घर में हे राजन! कुछ भी नहीं है। यह हर चीज के लिए मोहताज रहता है। हम साँची कह रहे हैं- न इनके घर है, न द्वार। न रहने के लिए कोई हवेली ही है। गिरिजा के संग साथ के लिए कोई सहेली भी नहीं है। वह अकेली कैसे रहेगी?

उसे पर्वत पर रहना पड़ेगा। बरगद कि छांह में बैठना पड़ेगा। भूत-प्रेत और बेताल ही उसकी सेवा के लिए रहेंगे। इसके सिर पर जटा का जूड़ा है माथे पर चंद्रमा है। सारे शरीर में भस्म लगाता है। गले में मुंडमाल धारण करता है।

हमें तो कहने में भी शर्म लगती है। हम इससे अधिक कुछ नहीं कहना चाहते। अगर आप की इच्छा हो तो हम इनका और भी वर्णन करें कि कैसा इनका सुंदर स्वरूप है। इस दूल्हे का सिंगार भी सुन लो।

इनके सिर पर जल की धार बह रही है। ये बिना सींगों वाले बैल पर सवार हैं। तन पर शाल दुशाला नहीं है काला कम्बल ओढ़े हुए हैं। बगल में मृगछाल दबाये हुए हैं। ऐसे उलटी प्रकृति के हैं कि हजारों सांप और बिच्छू इनके शरीर पर इधर-उधर लटके हुए हैं। तुम्हारी गिरिजा का दूल्हा ऐसा विचित्र वेष बनाये हुए हैं।

हे महाराज! तुमने न सोचा न बिचारा जोगियों के घर अपनी राजकुमारी का विवाह तय कर दिया। इनके पास सोने तक के लिए कोई जगह नहीं है, अटारी की बात छोड़िये। ये सूरत शक्ल से बिल्कुल भिखारी जैसे लगते हैं। हाथों और कानों में सांप तथा ततइयाँ लिपटे से हुए हैं। हम अधिक कुछ नहीं कहना चाहते, हमें तो कहने में भी शर्म लगती हैं।

प्रजा जनों की बातें सुनकर राजा हिमांचल हँस पड़े। और बोले – तुम लोग भ्रम में हो। ये तो तीन नयन वाले, तीनों लोकों के स्वामी महादेव जी हैं। जिन्होंने त्रिपुरासुर का नाश किया था। इनकी यह विशेषता है कि अपने भक्तों को कभी दुखी नहीं देख सकते, तुरंत उसकी मदद करते हैं।

ये तो दीनों पर दया करने वाले दीनदयाल हैं। इनके नाम से तो काल भी थर-थर काँपता है। इसके माथे पर चंद्रमा शोभित होता है। सिर से गंगाजी की धार निकल रही है। गंगाजी की लहरें इनके जटाजूट पर बहती हैं। इनके हाथों में साँपों की कांची है। ये झांगा ओढ़कर मनुष्य की किस्मत ही बदल देते हैं। क्षण भर में राजा से रंक बना देते हैं। ये औघड़दानी हैं। इनके कारण इनके भक्त किसी से डरते नहीं। एक हाथ में त्रिशूल शोभित है। दूसरे हाथ में डमरू है, जो सुख का मूल है। गांजा, भांग और धतूरा तो इनके लिए फूल हैं। जब समुंद्र मंथन हुआ तो चौदह रत्न निकले। सभी ने अपनी-अपनी पसंद के रतन चुन लिए। वासुकी नाग ने भीषण विष वमन किया, जिससे त्रिलोकी कांप उठी। तब एक मात्र शिव ही थे जिन्होंने उस विष को पिया। सुर,नर और मुनि सभी घबड़ा गये थे कि विधाता क्या करने वाले हैं। तब ब्रह्माजी ने कहा कि शिव ही एकमात्र ऐसे देवता हैं जो इस विष को पी सकते हैं।

गूदो गुदनन की गुदनारी, सारी देह हमारी।
गालन पै गोबिंद गूद दो, कर में कुंज बिहारी,
बइयन पौत भरो बनमारी, गरे धरे गिरधारी।
आनंद कंद लैन अंगिया में, मांग में भरो मुरारी।
करया कोद कन्हैया ईसुर, गोद मुखन मन हारी॥

अरी गुदना गोदने वाली! हमारे पूरे शरीर पर गुदना गोद दो। गालों पर गोविंद, करों में कुंजबिहारी, बाहों पर बनवारी, गले में गिरधारी अंगिया के भीतर आनंद कंद, मांग में मुरारी और कमर में कन्हैया का नाम गोद दो। ईसुरी कहते हैं कि मेरे मुख पर मनहारी शब्द गोद दो।

चौकड़िया

टेक- *होरी खेले कृष्ण मुरारी संग में राधे प्यारी।*
एक हाथ में मुरली लये हैं, एक हाथ में रंग पिचकारी॥
ऐसी होरी मोहन खेली राधा की भींजी सारी।
मोहन अब नहीं सताओ में तो तुमसे हारी॥

श्रीकृष्ण मुरारी होली खेल रहे हैं। साथ में प्यारी राधिका जी हैं। श्रीकृष्ण एक हाथ में मुरली और दूसरे में रंगभरी पिचकारी लिये हैं। मोहन ने ऐसी होली खेली कि राधा की साड़ी भीग गई। अरे मोहन! मुझे अब और तंग न करो, मैं तुमसे हार मानती हूँ।

चौकड़िया

राधा होरी की हट ठाने अजिऔ बरसाने।
दूध दही और माखन मोहन धरे तुम्हारे लाने॥
इतनी बात सुनी है मोहन मन में सोइ लुभाने।
प्यारे है मोहन छल बलिया, हमरे जाने माने॥

बरसाने में श्री राधिका होली खेलने की हठ पकड़े हुए हैं। वे मोहन से कहती हैं- तुम्हारे लिए मैंने दूध, दही और मक्खन रख छोड़ा है। मोहन ने यह बात सुनी तो लालच में पड़ गये। हमारे मोहन छल बलिया जरूर हैं लेकिन हैं अत्यंत प्यारे, वे हमारे लिए कोई नये नहीं हैं।

मोहन ऐसी प्रीति लगाई राधाजी से भाई।
मेरे दिल में ऐसे चुभ गई जा तसबीर तुमाई॥
एक घड़ी बिछड़ कऊँ मोहन आंख लगे न हमाई।
प्यारी राधा जू की बिनती सोनओ अरे बनाई॥

मोहन तुमने राधाजी से जैसी प्रीत लगाई वह छबि मेरे दिल में बसकर रह गई है । मोहन मैं एक घड़ी भी अगर तुमसे बिछड़ जाती हूँ तो मेरी आँख नहीं लग पाती । मैं प्यारी राधाजी की इस विनती को फाग बनाकर सुना रहा हूँ।

मोहन चुनरी तुम ना तानो कही हमारी मानो।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, देख रओ बरसानो।
अगर बात नई माने बृंदावन में थानो।
जा से अमरसिंह समझा रये कही हमारी मानो॥

मोहन मेरी चूनरी मत तानो, मेरा कहा मान जाओ। इधर मथुरा है, उधर गोकुल है और

सारा बरसाना देख रहा है। अगर नहीं मानोगे तो समझ लो कि वृंदावन में थाना है, तुम्हारी शिकायत कर दूँगी । अमरसिंह कहते हैं– मेरी कहा मान जाओ, अभी तो मैं समझा रहा हूँ फिर मैं भी नहीं मानूँगा।

होरी

भर भर पिचकारी चलाउ रे, गलियन में कीचा मचाउ रे।
राधा संग होरी खूबई खेले मोहन, राधा खों खूबई भिंजाउ रे। गलियन में........
खूबई नाचे ब्रज में ये राधा, जब मोहन बंशी बजाउ रे। गलियन में........
मुरली की तान मधुर वे बजाके, राधा खों मोहन लुभाउ रे। गलियन में.........
संग सखन संग वे खेलत हैं, होरी रंग गुलाल खूबई उड़ाउ रे। गलियन में.........

पिचकारी भर–भर कर चलाओ। गलियों में रंग की कीचड़ मचा दो। मोहन ने राधा के साथ खूब होली खेली, उसे खूब भिगोया। जब मोहन वंशी बजाते हैं तो ब्रज में राधा खूब नाचती है। मोहन मुरली की तान सुनाकर राधा को लुभाते हैं। अपने सखा साथियों के साथ वे होली खेलते हैं और खूब रंग गुलाल उड़ाते हैं। चलो हम भी खूब गुलाल उड़ायें।

सूको रूप राधिका जी को,श्याम बिसर गओ ऊको।
जबसे पुरी द्वारिका पहुँचे, फिर नहीं मथुरा ढूको।
जी के धर को दूध बगर गओ बोई खावे ऊको।
हिल्ले काउ ने लगत न देखी बंदर डार को चूको॥

राधा का रूप मलिन पड़ गया है क्योंकि श्याम ने उसे बिसार दिया है। जब से श्याम द्वारकापुरी पहुँचे, उन्होंने मथुरा की ओर झांककर भी नहीं देखा। जिसके घर का दूध फैल जाता है, उसे रूखा भोजन करना पड़ता है। जैसे डाल का चूका बंदर नीचे गिर पड़ता है, ठीक वैसे ही मेरे पल्ले भी कुछ नहीं पड़ा।

भींजी फिरत राधिका रंग में, मनमोहन के संग में।
उड़त गुलाल लाल भए बादर, लाली छा गई तन में।
भर पिचकारी मोहन मारे, राधा के गोरे तन में।
ईसुर कहे सुनो मन प्यारी, फिर मिले कुंजन में॥

राधिका मोहन के साथ रंग में सराबोर घूम रही है। गुलाल इतना उड़ा कि बादल तक लाल हो गये और तन में लाली सी छा गई। मोहन ने राधा के गोरे शरीर पर रंग की पिचकारी मार दी। ईसुरी कहते हैं– सुनो प्यारी! हम कुंजों में फिर मिलेंगे।

लेद

बरसाने मची है फाग राधा
संग मोहन खेलत हैं होरी।
के मन केसर घोरियो, कै मन उड़त गुलाल
राधा संग मोहन खेलत हैं होरी.......
नौ मन केसर घोरियो, दस मन उड़त गुलाल
राधा संग...........
अरे कौना की भींगे रंग चूनरी
सोइ कोना की पंचरंग पाग
राधा संग.........
राधा की भींगे अंग चुनरी
मोहन के पंचरंग पाग
राधा संग मोहन खेलत हैं होरी

बरसाने में फाग हो रही है। श्रीकृष्ण राधा के साथ होली खेल रहे हैं। केसरिया रंग कितना घोलोगे, गुलाल कितने मन उड़ाया जायेगा? नौ मन केसरिया रंग घुलेगा और दस मन गुलाल उड़ाया जायेगा। अरे! किसकी चूनरी भीगेगी? राधा की चूनरी भीगेगी और पाग श्रीकृष्ण की भिगोयी जायेगी।

दगा दे गये चित चोर सखीरी, नैनन से विसरत नैया।
अरे भरी उमरिया है बारी, बनवारी से बांधी डोर......
किते पाती पठाउ प्रीतम खों, मिले उनकौ कितउन छोर।
सखी कीने स्याम खौं बिलमायै, काउ सौतन ने करलय बिमौर।

अरी सखी! मेरा चित्त चुराने वाला ही मुझे धोखा दे गया है। उसकी छवि मेरी आँखों में से नहीं जा रही है। अरे! मेरी बालापन की तो उम्र है और इसी उम्र में मैंने बनवारी से प्रीत लगा ली। समझ में नहीं आता पत्र भी भेजूँ। उनका तो कहीं पता भी नहीं लग रहा। सखी! तू ही बता श्याम को किसने रोक लिया होगा? ऐसी कौन सी वह सौत है जिसने श्याम को मोह लिया है?

चौकड़िया

बृज में धूम मची है भारी, होरी खेले राधा प्यारी।
भर-भर के मोहन में मारे, राधा जू पिचकारी।
रंग गुलाल खूबई उड़ रओ, रंग गये कृष्ण मुरारी।
उनके संग में खेल रईं है, ब्रज की परजा सारी॥

ब्रज में होली की भारी धूम मची है। राधा प्यारी होली खेल रही हैं। वे पिचकारी भर-भरकर मोहन पर मारती हैं। रंग गुलाल इतना उड़ा कि कृष्ण मुरारी रंग में सराबोर हो गये। उनके साथ-साथ सारे ब्रजवासी भी होली खेल रहे हैं।

मनुआ सो रओ पलंग बिछाके, रंग महखों पाके।
इस काया के दस दरवाजे,खिरकी लेओ लगाकें।
मनुआ सो रओ...... ।
पहरेदार बने रओ चौकस, नहिं चोर घंसे फिर आके।
मनुआ सो रओ........ ।
भोर भयें अब कहें बुंदेली, न रे जेहो मौ वाके।
मनुआ सो रओ..... ।

अरे मन! तू रंगमहल में पलंग बिछाकर इतनी बेफिक्री से सो रहा है। तुझे पता नहीं, इस शरीर के दस दरवाजे हैं। कम से कम एकाध तो बंद कर ले। सावधानी से अपनी रक्षा कर, नहीं तो कोई चोर घुस आयेगा। अरे मूर्ख! सावधान रह, नहीं तो बाद में तेरा मुँह खुला का खुला रह जायेगा।

तन के तनक भरेसे नइयां, जानेराम गुसइयां।
तरूवर से इक पत्ता टूटो, फिर न डार लगइयां।
जमना तट पे बनौ चेटका, डलियां शीश धरइयां।
जर बर खाक धरन में मिल गई, फिर न चुनन मुनइयां।
ईसुर कहत सुनो मन प्यारे, कोउ कोउ को नइयां॥

इस शरीर का कोई भरोसा नहीं है। इसका तो बस राम ही मालिक है। पेड़ से जब कोई पत्ता टूट जाता है तो दुबारा उससे नहीं जुड़ता। यमुना के किनारे श्मसान है, वहाँ चिता सजायी गई। फिर मुख में आग लगायी गई। जब शरीर जलकर खाक हो गया तो वह खाक धरती में मिल गई। किसी को चिंता भी न रही कि तुम्हारे प्राण रूपी पंछी कहाँ चले गये। ईसुरी कहते हैं-अरे मन मूरख! सुन, इस संसार में कोई किसी का नहीं है।

मुनिया सपरन जात तला में,धुतिया धरें डला में।
कबहु तो मुनिया जात अकेली,कबहुं जात झला में।
छूटे केश भुजन पे रूरके, उड़ उड़ जात हवा में।
पतरी कलाई में चुरियां रंगीली, वेंदी धरें हवा में।
ईसुर कहें सुनो मन प्यारे, देखो इन्हें कला में॥

गोरी तालाब पर नहाने जा रही है। वह डलिया में धोती रखे हुए है। कभी तो वह अकेली जाती है और कभी उसके साथ उसकी सहेलियाँ रहती हैं। उसके खुले केश हवा में उड़-उड़ कर उसकी बाजुओं पर फहरा रहे हैं। उसकी पतली कलाइयों में रंग-बिरंगी चूड़िया हैं। वह डब्बे में अपनी बेंदी रखे हुए है। ईसुरी कहते हैं- अरे मनमौजी! इनकी अदायें तो देखो।

रजउ ने पैरे गाने जबसे, हीरा ठगे बिराने।
चुरियां चार दसक बिल्लोरी, भरे रहत गरदाने।
कैयक छैल लिखे कागद में, केइ घिरा दये थाने।
ईसुर कहत सुनो मन प्यारे, दूध सिमइयां खाने॥

गोरी ने जबसे आभूषण पहिने हैं, हीरा ठगे हुए से लगने लगे हैं। वह कांच की चूड़ियों से अपनी कलाइयों को भरे हुए है। उसके गले में कई प्रकार के जेवर हैं। उसने अपनी चतुराईयों से कई छैलाओं की तो रिपोर्ट करा दी है और कइओं को थाने में बंद करवा दिया है। ईसुरी कहते हैं। सुनो मनमौजी! हमें क्या, हमें तो दूध और सिमइयाँ खाना है, हमें किसी की चालों से क्या लेना देना।

बुन्देली फाग

डॉ. ओमप्रकाश चौबे

मों पै रंग न डारो साँवरिया
मै तो ऊंसई अतर में डूबी लला।
काहे के रस रंगा बनाये, काहे कीं पिचकारी लला।
केसर के रस रंगा बनाये, हरे बाँस पिचकारी लला।
जो सुन लैहे सुसरा हमारे, चढ़न न दैहें मोहे द्वारे लला।
जो सुन पैहे सैयां हमारों, चढ़न न दैहे सिजरिया लला।
मों पै रंग न डारो श्याम लला.... ।

(श्री विक्रमदेव तैलंग-टीकमगढ़)

हे कान्हा! मेरे ऊपर रंग मत डालो, मैं तो वैसे ही आपके रंग में रंगी हुई हूँ। होली का रंग काहे का बनाया गया, पिचकारी कैसी बनी? केशर घोलकर रंग बनाया तथा हरे बाँस को काटकर पिचकारी बनाई गई। यदि मेरे पति ने सुन लिया, तो मुझे सेज पर नहीं आने देंगे। इसलिए हे श्याम! तुम मेरे ऊपर रंग न डालना।

डर लागत रैन अंधेरी है, डर लागत रैन अंधेरी है।
घर लागी नजरिया मोरी है।
छलिया गांव सत्य कौ परवो, खिड़की से खिड़की बैरी है........
पिया परदेश अवैलो न मुरके,
बात अबै तक कोरी है............ ।
ईसुर कात मान प्यारी का, विपता नें घेरी है।
डर लागत रैन अंधेरी है॥

इस अंधेरी रात में मैं अकेली हूँ इसलिए बहुत डर लग रहा है। घर का अड़ौस-पड़ौस है लेकिन उनसे दुश्मनी है। दूसरे मेरे स्वामी भी घर अब तक क्यों नहीं आये। ईसुरी कहते हैं कि मेरी बात मानो तुम निश्चिंत होकर रहो, कोई मुसीबत थोड़ी आई है जिससे इतना चिंतित हो रही हो।

हीरा सी देईरा बिगारी रे,
दो जोवन मारी।
हाय हाय रे भरकें पिचकारी।

मैं बड़े साफ स्वच्छ वस्त्र पहनकर घर से निकली थी लेकिन किसी छैल ने मेरे ऊपर रंग से भरी पिचकारी चला दी, जिससे कि मैं रंग में भीग गई।

राधका नच रई रे,
सेमलिया के संग
राधका......

वृषभान दुलारी राधा अपने श्याम के संग नृत्य कर रही है।

गोरी हो अरे खेलन गईती फाग
खेलन गई ती फाग
अरे छैला रे उचक रंग डार रये हाँ
अरे छैला रे.......

एक युवती फाग खेलने गई थी तो वहाँ पर एक मनचले ने उसके ऊपर रंग डाल दिया।

करहैंया लचक गई रे,
होरी खेलत में

होली खेलने में मेरी कमर में लचक आ गई।

श्याम बने फगवारी बिरज में
श्याम बने फगवारी
कतकै काहे के तोरे रंग बने हैं
काहे की पिचकारी
अबीर गुलाल तोरे रंग बने हैं,

पीतर की पिचकारी। बिरज में....... ।
कतकें पीतर की पिचकारी
भर पिचकारी सनमुख मारी, भींजी चोली सारी।
बिरज में श्याम बने फगुवारी

(श्री बाला प्रसाद जी शर्मा- टीकमगढ़)

आज ब्रज में बसंतोत्सव, फागोत्सव मनाया जा रहा है। ब्रज के नायक श्री कृष्ण अपने सखाओं को साथ लेकर होली खेलने का नेतृत्व कर रहे हैं। कौन सा रंग घोला गया और कौन सी पिचकारी चलाई गई? अबीर गुलाल के रंग बने हैं, पीतल की पिचकारी है। पिचकारी को रंग से भरकर श्रीकृष्ण ने ब्रजबालाओं के ऊपर डाल दिया, जिससे उनकी चूनर और चोली रंग से भीग गई।

बरसत बड़ी-बड़ी बूँद, बिजरी चमक जीरा डर लागे।
कौना दिसा बदरा भये, कौना बरस गये मेव।
बिजरी चमक जीरा डर लागे।

आज बिजली की चमक के साथ पानी की बड़ी-बड़ी बूँदे गिरती हैं। बादल की गरज तथा बिजली की चमक से बड़ा डर लग रहा है। किस दिशा से बादल आये और किस दिशा में आकर बरसे? मुझे तो बड़ा डर लग रहा है।

गरजे बरसे रे बादरवा, बिजली चमके चारऊ ओर।
साहुन गरजे भदवा बरसे, पवन चले चहुँओर।
नानी नानी बुदियाँ में नेहा बरसे, दादुर मचाये शोर।
गरजे बरसे रे बादरवा, बिजरी चमके चारऊ ओर।

(फाग पार्टी-पलेरा)

बादल गर्जना के साथ बड़े जोरों की वर्षा कर रहे हैं। सावन में तो मेघों ने गर्जना की, भाद्रपक्ष में बरसने लगे। चारों तरफ हवा चल रही है। पानी छोटी-छोटी बूँदों में गिर रहा है चारों तरफ मेंढक शोर कर रहे हैं।

राधा खेलें फाग,
मोहन भरें रे पिचकारी।

राधा ब्रज में कृष्ण के संग फाग खेल रही हैं तथा कृष्ण रंग से भरी पिचकारी लिये हैं।

चुनरिया भीज गई रे,
लाला न मारो पिचकारी।

मेरी चूनर रंग से सराबोर हो गई है, तुम मुझे रंग से भरी पिचकारी न मारो।

जा पाटी अर बा पाटी,
सब रात बलम ने दम चाटी।

आज की रात मेरे पति ने मुझे बहुत परेशान किया।

गोकल में हो रयी फाग,
अवध में बेला भरे रंग केशर के।

ब्रज के गोकुल गाँव में फाग का त्यौहार मनाया जा रहा है और यहाँ अवध में भी रंग अबीर के बर्तन भरे हैं अर्थात् यहाँ भी होली का त्यौहार मनाया जा रहा है।

बम भोला चले कैलाश, बुदियाँ परन लगी।
बम भोला........ ।
कौना सी भीजी सुरंग चुनरिया,
कौना की पचरंग पाग।
बुदियाँ परन लगी........ ।
कैसे सूकी सुरंग चुनरिया,
कैसे सूकी पाग।
बुदियाँ परन लगी........ ।
बम भोला चले कैलाश,
बुदियाँ परन लगी........ ।

(ग्राम- उबोरा फाग पार्टी)

आज देवाधिदेव महादेव माता पार्वती तथा अपने नंदी सहित कैलाश पर्वत की ओर रवाना हो रहे हैं। लेकिन उनके चलते ही पानी बरसने लगा है। पानी में किसकी रंग-बिरंगी चूनर भीगी तथा किसकी पगड़ी भीगी? माता पार्वती की चूनर भीगी तथा बाबा महादेव की पाग भीग गई। किस तरह से भीगी चूनर सूखेगी तथा पगड़ी कैसे सूखेगी? हवा के झोकों से चूनर तथा पगड़ी सूखेगी।

फाग-झूला की

हमपै रहो शारदा दायनी, अरे हां हम पै रहो शारदा।
जा तोरे बाने की लाज......... ।
अरे हां दुरगा संकट की काटनहारी, सब देवन की सरदार....... ।
दुरगा सात दीप नवखंडा में, तोरी जोत जले दिन रात........ ।
जा तोरे बाने की लाज
अरे हां दुरगा संकट की हारनी, तुम राखों मोरी लाज।
हमपै रहो शारदा दायनी, जा तोरे बाने की लाज

हे माँ शारदे! आप हमारी दाहिनी ओर रहें और हमारी रक्षा करें, हमें आपके बाने का आसरा है। हम भक्त गणों पर कृपा बनायें रखें। हे माँ! आप विघ्न विनाशनी तथा संकटहारिणी हैं। समस्त देवता आपको स्मरण करते हैं, देवताओं में आप श्रेष्ठ है। समस्त ब्रह्माण्ड सप्त दीप नौ खंडों में आपके नाम की ज्योति जलाती हैं। हम भक्त गण आपके गुणों का बखान कर रहे हैं, आप हम सबकी समस्त बाधाओं को दूर करें।

अबकी फागुन होरी खेलूँगी डटकें,
श्याम नहीं नाये ब्रज से पलटकें।
अबकी फागुन होरी....... ।
जो बंसी बारो मौसे रार करेगो,
गाली में दउगी घुंघटा पलटकें।
अबकी फागुन होरी........ ।
एक कुमकुमा ऐसो री मारन,
जा वंशी बारे के नैनन खटकें।
श्याम नहीं आये काना नहीं आये ब्रज से पलट के......... ।

(श्री गौर- टीकमगढ़)

इस फाल्गुन पर तो मैं जमकें होली खेलूँगी। कृष्ण को होली के रंगों में सराबोर कर दूँगी। कृष्ण गये तो फिर पलट के नहीं आये। यदि मुरलीधर ने हमसे कोई छेड़छाड़ की तो मैं उनकी पिटाई कर दूँगी, लेकिन इस वर्ष तो खूब होली खेलूँगी।

किसे समझायें सब जग अंधा।
एक कोई होय उन्हें समजावें, सबई भुलाने प्रीत के धंदा।
किसे समझाये सब जग अंधा।
पानी का धेगा पवन असुवखा, बरस पड़े जैसे ओस का बुंदा।
किसे समझायें............ ।

लागी आग सब वन बर गयो, बिन गुरू ज्ञान घटक गयो बंगा।
किसे समझायें............. ।
कहत कबीर सुनो भाई संतों
एक दिन जाये लंगूर छोड़ बंदर। किसे समझायें सब जग अंधा

(श्री गौर)

किस-किस को समझाया जाये यहाँ तो सभी नासमझ हैं। अरे! एक हो तो उसे समझा सकते हैं, यहाँ तो सब अपने-अपने में भूले हैं। इनको समझाने के लिए कोई गुरू हो तभी इनकी समझ में कुछ आ सकेगा। बिना गुरू के ही सब अज्ञान हो रहे हैं। कबीरदास जी कहते हैं कि इन नासमझों का एक दिन ऐसा आवेगा कि जिस तरह बिना पूँछ का बंदर हो वैसे ही नासमझी का परिणाम होगा।

पिया के संग अब खेलूँगी होरी
पिया जी संग आज...
काहे कों रस रंगा बनायो, सो काहे की पिचकारी।
पिया संग........
भर पिचकारी मोरे मुखई पै मारी, सो भींज गई गुलसारी।
पिया संग..........

(श्री गौर)

मैं अपने साजन के साथ होली खेलूँगी। रंग किसका बना है पिचकारी किसकी है? कच्ची कलियों का रंग तथा कच्चे बाँस की पिचकारी बनी है। उन्होंने पिचकारी को रंग से भरकर मेरे मुँह पर चला दी, जिससे मैं साड़ी समेत सराबोर हो गई।

अरे हां देवा सेवा तुमारी ने जानो, कऊँ मोरे गरीब निवाज।
अरे हाँ देवा........... ।
अरे हां देवा काहे के गनपत करें, कहां दऊ पौड़ाय।
देवा सेवा.......... ।
काहे के अक्षत करो, काहा की जोत जरांव।
देवा सेवा........... ।
अरे हां देवा चंदन फुलन अक्षत करे, निरमल जोत जरांय।
देवा सेवा.......... ।
अरे हाँ देवा सेवा तुमारी ना जानो...

हे पार्वती पुत्र विघ्नविनायक गणपति देव! मैं आपकी सेवा सुश्रूषा नहीं जानता, न ही

आपकी पूजन विधि ही जानता। गणपति जी काहे के बनायें उन्हें कहाँ स्थापित करें? गऊ के गोबर के गणेश जी बनायें उन्हें दौना में बैठा दें। गणेश पूजन में अक्षत काहे के चढेंगे तथा कैसी ज्योति जलायें? चंदन तथा पुष्प के अक्षत और पवित्र ज्योति जलायें।

कदम तरें ठांड़ो भींजे शामलिया,
पीताम्बर उड़-उड़ जाय..... ।
कदम तरें........

कदम्ब के वृक्ष के नीचे कृष्ण खड़े हैं। हवा के झोंकों से उनका पीताम्बर उड़ रहा है।

झूला की फाग

का मिलत तुमें रंग बोरे में, फट जेहें चूनर निचोड़े में।
का मिलत.......... ।
गोरों गात बिगारो ना मोरों,
श्याम रहो तुम दोरे में।
का मिलत......... ।
तें मोरे मैं तोरे में, का मिलें तुमें रंग बोरे में।

अरे कन्हाई! तुम होली खेल रहे हो, सारी ब्रजबालाओं को रंग में डुबो रहे हो। तुम्हें इसमें क्या मिल जाता है जो इस तरह का काम करते हो? तुम मुझे ही रंग-डुबोना चाहते हो, लेकिन क्या फायदा? अरे! मेरी चूनर को यदि निचोड़ा गया तो वह फट जायेगी। मेरे शरीर का रंग गोरा है, रंग लगने से वह बिगड़ जायेगा। तुम तो एक तरफ बैठो। राधिका जी भी रंग में डूब गई। अब तो कृष्ण और राधा एकाकार हो गये।

मुंज

कहीं गई मैं जमना जल, भरन जाती,
सिर पर घड़ा धरा था।
आफत परी कहो किससे तुझे,
पानी बरस रहा था।
रस्ता पांव कदम की छैयां, जहां नंदलाल खड़ा था।
रक्खत खुदा सलामत जिसको, आखर कष्ट कहां था।
ता गड़ाम ता॥

मैं यमुना जी में पानी भरने गई थी, मेरे सिर पर घड़ा था तो रास्ते में नंदबाबा का लाड़ला

कदम्ब के पेड़ के नीचे खड़ा था। बड़ी मुसीबत आई। मैं किसे बताऊँ, उसी समय पानी बरसने लगा।

सिर पर अट्टा पर दुपट्टा, लहे बस गम्बर भट्टा हे।
सौ सौ जट्टा उड़े लपट्टा, पिये धतूरा गट्टा हे।
राख लपट्टा मुंड कपट्टा, दम कौ दयें सरपट्टा हे।
दुरगादास भजो भगवाना, शिव सरूप अरे पट्टा हे।
ता गड़ाम ता।

फाल्गुन में कृष्ण के आने का समाचार सुना है, यह जानकार सारी सखियाँ बरसाने की तरफ जा रही हैं। वे होली खेलने आये हैं। कृष्ण की बड़ी मनोहारी छबि है। वे अपने शरीर में सुन्दर आभूषण पहने हैं। उनके घुँघराले बाल उनकी सुन्दरता में चार चाँद लगाते हैं। कवि कहता है कि ऐसी मोहनी सूरत देखकर तो उनके चरण पकड़ने का मन करता है।

फागुन में आगुन सुनत, कि लाला नंदकिशोर।
सकल सखाला निंग चलीं, सो बरसाने की ओर।
लाला जी कैसे कीरत रे, ललता की
डोकर डोरी।
आये है बैजनाथ खेलन होरी।
अंग अंग भूषन और विशन विशाला,
करन लगी फाग सार डुलमुल वाला।
घुघराली जुल्फें और उलकें आंछें,
अलन मलन भौरा करती हैं बातें।
कहते कब लाल पकड़ गहले तरूवा,
राजी करलो के ओर धर दो फरूवा।
हता हता......हता......... ।
राजन हता हता......... ।

फाल्गुन में कृष्ण के आने की खबर सुनकर सारी सखियाँ बरसाने की तरफ जाने लगती हैं। कृष्ण होली के समय आये हैं तो सब मिलकर होली खेलेंगे। उनके अंग-अंग में आभूषण शोभायमान हो रहे हैं। उनकी घुँघराली केशराशि सुन्दरता को और ज्यादा बढ़ा रही है। कवि कहता है कि ऐसी मोहनी सूरत के दर्शन कर लो, पैरों पड़कर उन्हें फाग के लिए राजी कर लो।

लाली तेरे लाल की, जित देखत तित लाल।
लाली देखन मैं चली, सो हो गई लाल गुलाल।

लालजी कैसे....... ।
क्या वे क्या वे भाल के ऊपर,
लाल बला लग मांग ये लाल फूल रे।
लाल की आल गले में प्यारी,
जिन छाप सी मुख पर लागे रे।
और लाल के हार सिंगार,
सो गैदा की हाथ पर लागे रे।
नंदलाल के संग ब्रजवाल सो रहती,
लाल ही लाल श्रृँगार रे।
निकदो हता हता......... ।
राजन हता हता.......... ।

कृष्ण के साथ ब्रजबालायें होली का त्यौहार मना रही हैं, सब ओर लाल-लाल रंग बिखरा है। लाल रंग की लाली चहुँ ओर अपनी छटा बिखेर रही है। हे यशोदा! मैं तेरे कान्हा की लाली देखने गई तो क्या देखती हूँ कि समस्त वातावरण ही लाल है। मैंने देखा तो कुछ समय पश्चात् मैं भी लाल रंग में रंग गई।

बूंदा में ककरा हरो, हरो हिये को हार।
हरी आड़ प्यारी करें,सो हरो करें सिंगार।
लाल जी कैसे
क्या वे हरी ओढ़नी है,
हरी नाक बेसर।
हरी लीलत अंग में चित्त चोली,
हरा कंठ कंठा हरी ही विचोली,
हरी चंद्रा भारी मानतोरी।
हरी बांह चूड़ी हरी थी अंगूठी,
हरी रोरू मान लये अंगूरी।
पंथी हरी नैन की सेन मारी,
कौनऊ बीच आशिक पै देत खोरी।
नित्तो हता हता....... ।
साजन हता हता....... ।

उक्त फाग में अनुप्रास का प्रयोग किया गया है। श्रृँगार का बड़ा सजीव चित्रण है। एक सुन्दरी माथे पर बिन्दी लगाये है। उसका कंकड़ हरे रंग का है। गले में हार हरे रंग का पहने है। समस्त श्रृँगार हरे रंग का है। हरे रंग की चूनर हरे रंग की नथ (बेसर), हरी चोली, हरा कंठहार,

हरी बिचौली, यहाँ तक कि कलाइयों में पहनी चूड़ी भी हरे रंग की है। वह बाला हरा शृँगार करके इशारा करती है तो उसमें भी हरे रंग की भ्राँति होती है।

छोड़ कपट जनजाल कौ
भजली सीताराम अंतकाल की गत पै
परत राम सें काम
लालजी कैसे
क्या वे क्या वे
छोड़ कपट जंजाल
बिना सीताराम का नाम हमेशा
और
अंतकाल की गत कठन है
वे जमदूत प्रान लगे
सपना
जबतो
निकलो हता हता...... ।
राजन हता हता......... ।

हे मनुष्य! तू सारे अवगुणों को छोड़कर श्रीराम को स्मरण कर। अंत समय में वे ही तेरे काम आवेंगे। क्योंकि जब यमराज तेरे प्राण लेंगे। तो तू उनके नाम के सहारे ही भवसागर से पार जा सकेगा। यह उनके नाम की शक्ति है।

पैलऊ देवी शारदा गाइये
अरे हाँ पैलऊ देवी शारदा गाइये
फिर लिये राम के नाम
पैलऊ देवी शारदा

(सब्बीर खान और साथी ग्राम डूडा टौरा)

पहले मैं संगीत की अधिष्ठात्री देवी शारदा का स्मरण करता हूँ, तत्पश्चात् मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का स्मरण करूँगा। माता शारदा मेरे कंठ में विराजें, जिससे मेरा गायन सफल हो, प्रभु राम मेरी रक्षा करें।

जिन रोवो मोरी प्यारी पुतरिया
असुवन भीजें चीर
मोरे रंजन भौरा

हो गई बिटिया आज परायी
मैंने बड़ी मुसीबत पाई
सातक मास गरभ में राखो
तवलौ भई मोय पीर
मोरे रंजन भौरा

मेरी प्राणों से भी प्यारी बेटी आज तू परायी हो गई। तुझे ससुराल जाना है, इसलिए तू वहाँ खुशी-खुशी जा। मैंने तुझे गर्भ में रखा, उसके लिए बड़े कष्ट उठाये। आज तू परायी हो गई। अब मेरा तुझ पर कोई अधिकार नहीं रहा।

सीता रे बैठीं रे मन ध्यान
बन्सा भिरे की छांयरे में हो....... ।

माता सीता अपने मन में कुछ सोच-विचार कर रही हैं। वे बाँस की झाड़ी के नीचे बैठी विचारमग्न हैं।

अंजनी के कुमार अंजनी के कुमार
तुमने गजब कर डारो

हे अंजनी पुत्र हनुमान! तुमने तो लंका दहन करके बड़ा गजब कर दिया।

हिरदै नइयां राम, हिरदै नईंया राम
का होवै माला जपें से

जिसके हृदय में प्रभु का स्थान नहीं तो फिर माला जपकर ढोंग करने से क्या फायदा।

कान्हा अनहोनो हुरयारो
ये रोके ठांड़ों द्वारो, कान्हा अनहोनो हुरयारो
न अबीर न कर पिचकारी, न गुलाल यह डारो
कान्हा....
न कऊँ तनक लगो तनक रंग ऊपर
ना कऊ बसन बिगारो
कान्हा...
कहें अवधेश बड़ो अचरज भओ
मन मिठुवई ललकारो

कान्हा...
अनहोनो हुरयारो, रोकें ठांड़ों द्वारो..

ये कृष्ण तो बड़ा अनोखा होली खेलने वाला है। ये होली में हम बालाओं के द्वार पर रास्ता रोककर खड़ा है। न तो उनके हाथ में पिचकारी है, न अबीर रंग है, न ही उनके ऊपर रंग लगा है, न ही वस्त्रों पर। ये तो बड़े आश्चर्य की बात है।

रैयत है भारे की बखरी
रैयत है भारे की लाल
दई पिया प्यारे की
बखरी रैयत है भारे की लाल

ये जो हमारा शरीर रुपी खजाना है यह तो किराये का है जिसे उस परब्रह्म परमात्मा ने दिया है, ये तो उसकी धरोहर है।

चार हाँत चौका लिपवा दो
गऊँ के गोबर मंगवा दो लाला
पार देव भू मैयां हमखां
बलम उठाकें कइयां हमखां
पार देव भू मैयां

(श्री वी.एल. शर्मा)

अब तो चलने का समय आ गया है इसलिए लोकरीतानुसार मेरे क्रिया कर्म करा दो। शरीर मृत पड़ा है, कोई गाय के गोबर से जमीन को लीपकर मेरे मृत शरीर को उसपर लिटा दो।

खबर शारदा लईया मोरी
खबर शारदा लईया लाल
कंठ विराजी रइया मोरी
खबर शारदा लईयो लाल
मै अपड़ा अक्षर ना जानो
भूली कड़ी मिलइयो मोरी...
तोरे डेरा हिंगलाज में
थानों पैरों दइयो मोरी...
ईसुर कात शत्रु के बाने,

छीनके हमखां दइयो मोरी
खबर शारदा लइयो लाल

(श्री राजेश जैन और साथी बड़ा गाँव)

हे माँ शारदे! तू मेरे गायन को सफल बनाने में मेरे साथ रहना, बिना तेरी कृपा के मेरा गायन सफल नहीं हो सकता। तू मेरे गले में बैठकर गायन को सफल बनाना। मैं तो अनपढ़ भूखा हूँ, मैं गायन भी नहीं जानता यदि मैं कोई शब्द भूल जाऊँ तो तू उन कड़ियों को मिला देना। तू तो हिंगलाज में निवास करती है लेकिन इस समय मेरे हृदय में विराजकर मेरी रक्षा करना। ईसुरी कहते हैं कि मेरे शत्रुओं के शस्त्रों को छीनकर तू मुझे प्रदान करना।

मथुरा रे मोय लगत उदास,
मधुवन लगत सुहावने हौ।

मथुरा तो कृष्ण जी के लिए सूनी-सूनी लगती है क्योंकि वहाँ उनके संगी साथी नहीं है, लेकिन मधुवन में उन्हें बहुत अच्छा लगता है वहाँ उनके सखा जो हैं।

हनुमान बलवाना गरजे
हनुमान बलवाना लाल।
हनुमान बलवाना गरजे,
समदा पै मेले पवनपुत्र हनुमान
लिपड़ा लेत लंगूड़ आपनो लेके चले परवाना
गरजो हनुमान बलवाना लाल
अरे बागे गमेते वन फल खाये
गरसो सिंग समाना,
गहू रे गरब जब डार देत है
सो किलो कोट हरलाना
किलो कोट हरलाना गरजो
हनुमान बलवाना लाल।

अंजनी पुत्र पवनकुमार लंका को प्रस्थान करते समय गर्जना करते हैं। समुद्र पर पहुँचकर उन्होंने गर्जना की, अपनी पूँछ बढ़ाई और लंका की तरफ उड़ चले। लंका में अशोक वाटिका जहाँ पर माता सीता थीं जाकर फल खाये, वृक्ष उखाड़े तथा सिंह के समान गर्जना की। उनकी गर्जना सुनकर गायें भी अपने गर्भ डाल देती हैं। लंका के किले में आग लगा दी। वहाँ खलबली मच गई।

बन्सी दैदें राधा मोरी रे
बन्सी दे....... ।
बन्सी दैदे राधा मोरी रे...
तोरी काहे की जजा बनी बांसरी
अरे काहे की लागी डोरी रे..
तोरी हरे बांस की जा बनी है बांसरी
सो रेशम लागी डोरी रे
बन्सी दे....... ।
बन्सी दैदे राधा मोरी रे......

(फाग पार्टी छानवीला)

अरी राधा! मेरी बाँसुरी दे दो। तुमने उसे चुरा ली है। कृष्ण की बाँसुरी कैसी बनी है, उसमें कौन सी डोरी लगती है। बाँसुरी हरे बाँस की बनी है उसमें रेशम की डोर लगी है।

ढुड़वा दियो राजा अमान
हमारी खेलत में हों, हों रे हमारी
खेलत बेंदी गिर गई
हां हां अरे हाँ मुतियारी कौना शहर की जा बिंदिया
भला कौना धरी है खार, हमारी खेलत में, अरे हाँ
हमारी खेलत बेंदी गिर गई
हाँ हाँ मुतियारी झांसी शहर की जा बिंदिया
भला पन्ना की धरी खार, हमारी...... ।
ढुड़वा दियो राजा अमान, हमारी खेलत बेंदी गिर गई॥

(पं. बाला प्रसाद शर्मा उबोरा)

हे महाराज अमान जू! मेरी माथे के बिंदिया जो मोतियों से जड़ी थी खेलते समय जाने कहाँ गिर गई है, उसे ढुढ़वा दीजिये। वह मोतियों वाली बेंदी कहाँ बनवायी गई थी? कहाँ उसमें जड़ाव हुआ था? बेंदी झाँसी शहर में बनवायी थी तथा पन्ना में मोती हीरा जड़वाये थे। हे राजन! उसे ढुढ़वा देना।

अरी ये मुरऊ के सूने में आ गये पावने
मुरऊ के सूने में..
कत के मुरऊ के सूने में आ गये पावने
घर नइयां मतारी बाप

मुरऊ के सूने में आ गये पावने
घर नइयां मतारी बाप

बेटी के लिवाने के लिए पांहुने आ गये हैं, उसके माँ–बाप घर में नहीं हैं लेकिन पांहुने तो आ ही गये हैं।

लाल रंग डारो, हरीरो रंग डारो
और रंग डारो केसरिया
मथरा नगर की गूजरिया

होली में लाल रंग डाला गया, हरा रंग डाला गया तत्पश्चात् केसरिया रंग भी डाला गया। उसे रंग से सराबोर कर दी। वह बाला मथुरा की थी तथा कृष्ण ने होली खेलकर उसे रंगों में डुबो दी।

कहरवा

बालाजी बराबर देव नइयां ,
बालाजी बराबर देव नइयां,
देव नईया देवता नइयां।
बाला जी बराबर.....
बड़े-बड़े ऊँचे गुरजा बने है, नेंचे से बैठे पवन गुईंयां।

बालाजी से बड़े कोई देवता नहीं हैं। उनके मंदिर में बड़े ऊँचे–ऊँचे परकोटे बने हैं, नीचे सुहावनी हवा चल रही है।

भर मारी पिचकारी तककें
भर मारी पिचकारी लाल
तिन्री तर कर डारी कसकें
भर मारी........।
नेवरी भौंत भुमाओ करया, हांत लगाकें हारी।
तककें भर मारी पिचकारी
सरावोर हो गई रंग में, ब्रज बनता बेचारी।
तककें भर मारी पिचकारी
ईसुर फाग नंद के दोरें, देख हंसे दै तारी
तककें भर मारी पिचकारी

आज कृष्ण ने गजब कर दिया, उन्होंने रंग से भरी पिचकारी इस तरह से मारी कि मैं ऊपर से नीचे तक रंग में भीग गई। मैंने बचने की बहुतेरी कोशिश की, लेकिन सब व्यर्थ हुआ। ईसुरी कहते हैं कि फाग नंद बाला के द्वार पर हो रही थी। मुझे भीगा हुआ देखकर लोग मेरे ऊपर हँस रहे थे।

फागुन के मईना रंगीलों रे
राजा घर नइयां ये दईया
राजा घर नईयां.......

यह फाल्गुन का मास बड़ा रंग-रंगीला होता है, इस होली के समय मेरे पति घर में नहीं है। मैं भला किसके साथ होली खेलूँगी।

श्याम बने मनहारी ब्रज में
श्याम बने मनहारी लाल
पैरें चुनरिया प्यारी ब्रज में
श्याम बने मनहारी लाल

(श्री रमजू और साथी)

ब्रज में आज कृष्ण मनिहारी बनकर आये हुए हैं। वे अपने हाथों में चूड़ी पहने हैं तथा चूड़ी बेचने वाली स्त्री का रूप बनाकर चूड़ी पहना रहे हैं।

ऐसी होरी में पिया परदेश बसे, ऐसी होरी में
काली कोयलिया जियारा जलावैं
ऐसा लगे आम कटा दाऊँ जरसें
बैरन फागुन की रित आई, निकरों ने जावे मोखों घर सें... ।
सब सखियां मिल खेलें होरी, मोरी कोरी चूनर रंगखों तरसे।
तुम बिन मोय सब गांव बिहूनों, मोरे भर आवें नैना तरसें।

इस होली में मेरे पति प्रवासी हैं। मैं किसके साथ होली खेलूँ? वसंत ऋतु तो वैसे ही विरही जनों की बैरिन होती है, उसपर यह कोयल कूक-कूक कर मेरे मन के दाह को और ज्यादा बढ़ा रही है। कोयल आम की डाली पर बैठी है उसे बोलता देख ऐसे लगता है कि मैं समूचे आम को ही कटवा दूँ। अब ये फागुन भी आ गया, मुझसे तो अपने घर से नहीं निकला जायेगा। मेरी सारी सखी सहेलियाँ होली खेलती हैं लेकिन मैं तो पति के बिना होली नहीं खेल

रही। सबके वस्त्र रंगों में सराबोर हैं लेकिन मेरी चूनर तो उनके रंग के लिए तरस रही है। उनके वियोग में मुझे सारा गाँव पराया सा प्रतीत हो रहा है उनकी याद में मेरे आँसू निकल रहे हैं।

भादो घना घन छाये रे, हमारे श्याम अबलौ ने आये।
हमारे श्याम अब लौ ने आये॥

भादों के माह में मेघ पूरे आसमान पर आच्छादित हो रहे हैं लेकिन कृष्ण अभी तक नहीं आये, मुझे बड़ी चिन्ता लगी है।

अरी ये पैलऊ देवी शारदा गाइये,
फिर लिये राम के नाव। पैलऊ.....

सर्वप्रथम माता शारदा को स्मरण कर गायन में उनका नाम लूँगा, तत्पश्चात् श्रीराम का स्मरण करूँगा। गायन का प्रारंभ देवस्मरण करने से सफल होता है।

गोदत में रो दवतो अरे गुदना
गोदत में रो दवतो लाल
सो दुख सहोने गवतो, गुदना गोदत में रो दवतो
ठांड़ी भई पौर के दोरे, भावी ने गै लबतों...

गुदना गोदने में रो दिया था, गुदना गोदने का दु:ख सहन नहीं हुआ था। उसे रोता हुआ देखकर भाभी ने उसे थाम लिया था, सांन्त्वना दी थी।

आज रात कहाँ जागे मोहन,
आज रात कहाँ जागे लाल।
ऐड़े पेड़े पेच बंधे पगिया के,
ये सो गालन काजर लागे मोहन
आज रात.... ।

हे केशव! आज की रात कहाँ जागकर व्यतीत की है। जरा हमें भी तो बतलाओ? आपकी पगड़ी की हालत बता रही है। आपके चेहरे से, आपकी आँखों से सब स्पष्ट हो रहा है कि आप रात में जागते रहे हैं लेकिन हमें भी तो बताओ की कहाँ थे।

राम रतन धन पायो ये हमने,
राम रतन धन पायो लाल।

मैंने तो राम रूपी रत्न पा लिया है अब मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है।

दे दो जात झकैया ये हमखों
दे दो जात झकैया लाल
सो बलदाऊ के भैया हमखों....

बलराम के अनुज कृष्ण हमें बार–बार चकमा देकर कहीं भी भागते रहते हैं।

जाये बसे कासी में भोला, जाय बसे कासी में।
पार्वती के सैंया भोला, जाय बसे कासी में लाल।

शिवजी काशी में जाकर रहने लगे। वे माता पार्वती के पति हैं। भोलानाथ काशी में निवास करने लगे।

सखी शिवजी के धनुष कैंसे टूटें
मैंने पिता वचन दये हार
अच्छे–अच्छे वीर धनुष से पार ने पाई
रावन और वानासुर थाके
खाई धनुष सें हार
कठन वचन के बोलतें
बोले लक्षमन वीर
बात समारें बोलियो
फिर मन में राखो धीर,
हुकम भैया के पावैं
पृथ्वी सेंत उठाये कहो सरगे ले जावैं
करके घसटम फोरकें कर डारू खेमान
इते हमारी शक्ति नैंया, जहाँ बैठे हैं भगवान
बैठे हैं भगवान मनैं में गये मुसकाई
गये धनुष के पास
बायीं अंगुली पै धनुवां लियो उठाय
तुलसी सोच विचार कें,
फिर सीता ने सुख पाये
सखी शिव जी....

वैदेही सीता ने देखा कि शिव धनुष को तोड़ने बड़े-बड़े वीर आये लेकिन किसी से भी धनुष नहीं हिला। सभा में रावण जैसे बलशाली कुंभकर्ण और न जाने कितनों ने अपने प्रयास किये, लेकिन सब असफल रहे। इसलिये यह सब देख सीता मन में चिंतित हैं वे अपनी सखी से कहती हैं- हे सखी! यह शिवजी का धनुष अब कैसे टूटेगा? अरी! जब रावण, बाणासुर ने अपनी हार स्वीकार कर ली तो फिर किसकी विसात जो इसे तोड़ देगा? सीता के वचन सुनकर लक्ष्मण जी बोले कि-आप इस तरह की बातें न करें, हम क्षत्रियों के सामने कोई इस तरह की बात होगी तो क्रोध आता है। आप पृथ्वी को वीरों से खाली हो गई मान बैठी हैं। अरे! यदि मेरे अग्रज मुझे आज्ञा दे दें तो धनुष की तो बात ही क्या है, इस पृथ्वी को उठाकर स्वर्ग को ले जा सकता हूँ, लेकिन मैं बड़ों के सामने कुछ कह नहीं सकता। कृपया आप सोच समझकर बात करें। श्रीराम ने लक्ष्मण और सीता का वार्तालाप सुना तो वे मुस्कुराये, तत्पाश्चात् उठकर धनुष के समीप पहुँचे। अपने पैर की अंगुली से धनुष उठाया और तोड़ दिया। तुलसीदास जी कहते हैं कि धनुष के टूटते ही सीता प्रसन्न हो गई।

कारे पानी ने पियो, कारे भटा ने खाय
कारे बलम की संगत ने करो
मोरे कारे बदन पर जाय...

मैं काला पानी नहीं पियूँगी, न ही काले रंग के भटे खाऊँगी। अपना पति भी काले रंग का नहीं ढूढूँगी, वरना उनके साथ ये मेरा गौरवर्ण काला हो जायेगा।

आम फरे अमियां लगी, अर पकके हो गई लाल।
जा कइयों उन ढोल गमांर सें, अपनी बगिया लयें रखाय
मुफत में सांय मुसाफर खा रये, ये फिरे बगिया लेव रखाय।
मुफत में सांय मुसाफर खा रये......... ।

आम के वृक्षों में फल लग गये, वे बड़े होकर पकने लगे। उस बगीचे के मालिक से जाकर कह दो कि अपने बगीचों की रखवाली कर ले। वरना पके आम तो कोई भी आने-जाने वाले खायेंगे, बगीचा उजड़ जायेगा।

जनक ने पाँव पखारे रामा के
रामा के फिर ले लये कन्यादान........
देश-देश खों पाती भेजी
ऊपर लिखी निशानी

हम जाने कौनऊ क्षत्री आहै
सौ पेज धनुष की ठानी
जनक ने...

बिदेहराज जनक ने सीताजी का कन्यादान किया और सीता तथा सीतापति प्रभु श्रीराम के पाँव पखारे। महाराज जनक ने सीता स्वयंवर के लिए देश विदेशों में पत्र लिखकर सारी पृथ्वी के राजे-महाराजाओं को आमंत्रित किया तथा शर्त यह थी कि जो भी वीर शिवधनुष तोड़ेगा, वैदेही उसका वरण करेगी।

अबै परना में होरी को खेले
घर नैया राजा अमान
जुरी कचेरी दरबार में
सबै जुरे सरदार
बंदे मसौदा राजा के
फिर चलो हमारे साथ
कनसापुर की डांग में
राजा हाँका दओं लगवाये
लम्मी दुफेरी जेठ मास की
सिपाही गये मुरझाय
सिपाही जब बोल उठे
राजा जल के करो इन्तजाम
कोऊ ढूढें लाल तलैंयां
राजा अमान ने कंसापुर की डांग में
दये कुँआ खुदवाये
सामने जल पी लये
गंगा करे अस्नान
राजा पानी पीबे पिड़ गये
दुशमन ने मार दई सांग
अबे परना में होरी को खेले
घर नैंया राजा अमान

महाराज अमान सिंह अपने राज्य में नहीं है अब कौन होली खेलेगा अर्थात् बिना राजा के होली का त्यौहार नहीं होगा। हुआ यह था कि महाराज के दरबारियों की सभा हुई उसमें यह प्रस्ताव रखा कि शिकार खेलने जाये। राजा ने समर्थन किया तथा अपने साथ कुछ सरदारों को

लेकर कंसापुर नामक जंगल में शिकार हेतु चल पड़े। चलते-चलते सारे सैनिकों को बड़ी जोर की प्यास लगी, तो वे महाराज सहित पानी की तलाश में भटकने लगे। अंत में राजा ने पानी के लिए कुँआ खुदवा दिया, सबने पानी दिया लेकिन जैसे ही राजा अमान पानी पीने गया तो पीछे से किसी ने उन्हें सांग मार दी। अब राजा इस दुनियाँ में नहीं है और जब राजा नहीं होंगे तो होली का त्यौहार कैसे मनाया जायेगा?

अबै परना में होरी को खेले, मारे गये राजा अमान।
लीली बछेरी राजा की, टाप रही बजवाय।
बैठो राजा होदों पै, पोंचा दे कचेरो माझ।
कुँआ परत पनहारी रोवे, गोबर करत गुबरार।
को चाबे लोंजिया पान, अबे परनामे होरी को खेले।

(श्री हरदास अहिरवार, बम्होरीबीका)

अब पन्ना में होली कौन खेलेगा क्योंकि इस समय अर्थात् होली के समय महाराज अमानसिंह को दुश्मनों ने मार डाला था, इसलिए यह होली तो मातम की होली है। कोई भी राज्य में होली नहीं खेलेगा। महाराज अपनी घोड़ी पर बैठे आ रहे थे। घोड़ी बड़ी मतवाली चाल से चलती हुई आ रही थी। राजा उसपर बैठे थे वे अपनी कचहरी तक आये उसी समय किसी दुश्मन ने धोखे से उन्हें मार दिया। उनके मरने पर सारे राज्य में मातम छाया है। कुँआ की पनिहारी, गोबर करने वाली सभी रो रही हैं। कौन पान खावेगा? अब होली भी नहीं खेली जायेगी।

हुरयाऊ फाग

दयें है जानकी माई ये बूँदा,
दये है जानकी माई लाल........ ।

माता जानकी अपने माथे पर बड़ा सा बूँदा लगाये हैं।

झगड़ो

पति हर ल्याये जानकी रघवर की
लंका के सूर सिरदार
नार कहे सुनो कंथ हमारे
तुमें बड़े ऐभान राजा लंकापत वारे
जिनकी जानकी हर ल्याये हो

तुमें बड़ी हे फूल
एक बान के मारतो सब लंका जेहे टूट
सखी हर...
लंका जेहे टूट कुंवर दसरथ के बारे
धरे वीर अवतार जाये भसमासुर मारे
ऐ धरनी की पींठ में नैंया काऊ की जोड़
नैंया काऊ की जोड़ हमारी मानो
उनकी जानकी दे दे राख सको परवार
जो ने दे हो जानकी डूब जेहे परवार
पति हर ल्याये.......

मंदोदरी अपने पति रावण के नीच कृत्य पर हैरान है कि वे सीता का अपहरण करके लाये हैं। ये तो बड़े शूरवीर हैं तथा वीरों के शिरोमणि हैं, लेकिन फिर भी कायरों का काम किया है।

मंदोदरी अपने पति को समझाती है कि आपने कार्य ठीक नहीं किया। अरे! उनकी पत्नी को धोखे से हरण करके ले आये, वे अपने बाण से ही लंका को पाताल पहुँचा सकते है। आपने बिना सोचे समझे यह कार्य किया है। इससे आपका सर्वनाश हो जायेगा। हे स्वामी! मेरा कहना मानिये, श्रीराम की पत्नि को उन्हें लौटा दीजिये। यदि मेरी बात नहीं मानते तो आपका यह राज्य, घर-परिवार सब कुछ नष्ट हो जायेगा।

तज दई रे घनश्याम
जाकें रे बसे हरि द्वारका
जाकें रे बसे हरि द्वारका हाँ

श्याम ने मुझे तो त्याग ही दिया, वे मुझे छोड़कर द्वारिका में चले गये।

मथरा में भये
रात न बसे गोकल जात रखे

श्री कृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया, वे एक रात भी वहाँ न रह सके। उनके पिता वासुदेव उन्हें गोकुल नंदबाबा के यहाँ पहुँचा आये थे।

हमारे पिया बदरिया हो गये रे
बरसे ने एकऊ बेर..

असढ़ा में आगी लगी, के जल गये सकल शरीर।
प्रेम बूँद बरसे नहीं, मोरो जिया धरे ने धीर।
साहुन में सुख होत ते, सखी पिया मिलन की आस।
पिया मिलाये ने मिले, दे गये करेजों घाव।
भादो रात भियादी सखी, नित अधियारी रात।
मन भौरा मोरे जा कहे, के चलो पिया के देश।
क्वांर कमंडल छाये ते, के अगन में ओड़ी फगोर।
शीश जटा रखवाय कें, फिर नीरे बसों के दूर।
कातक मास जब लगे सखी री, काम किसानी के।
मैं का कहूँ मोरी सखी, मोरे कंथा घरे ने आयें।
अगन में आशा लग रही, के पिया मिलन की आस।
पिया मिलायें ने मिलें, दे गये करेजे घाव.... ।
पूस में रजाई भराऊती, के और गदेला साथ।
लाल पलंग पे पोड़ती, फिर उड़ती अजब बहार।
माव महत्तम में तपे, के तपी किरन तोरी आस।
शीश जटा रखवायकें, फिर नीरे बसों के दूर।
फाग मास जब लगे सखी मोरी, घर घर अतर अवीर।
मैं का करहों मोरी सखी, मोरे कंता घरें ने आयें।
चैत चरीलो घाम सखी री, जीरा जो अकुलाये।
सुध आवै छाती फटे, फिर पात्ती लिखी ने जाये।
हमरे पिया बदरिया हो गये, बरसे नें एकऊ बेर.... ।

मेरे पति प्रवासी है वे उस बदली के समान हो गये जो कि गरजती तो है लेकिन बरसती नहीं, इसी तरह से मेरे पति प्रवासी हो गए हैं, मैं विरहाग्नि में जल रही हूँ। असाढ़ के महीने में तेज धूप है मेरा शरीर जल रहा है लेकिन यदि प्रेम रूपी बूँद बरस जाती तो मन शीतल हो जाता। मेरा मन बेचैन है। श्रावण में वे होते तो बड़ा सुख मिलता, लेकिन वे तो मेरे कलेजे को शीतलता पहुँचाने की जगह विरह रूपी बाण और छोड़ गये। मेरा कलेजा घायल कर दिया। भादों की अंधेरी रात में मेरा मन रूपी भौंरा उन्हें मिलने के लिए बेचैन है। क्वाँर मास में भी नहीं आये, मैं प्रतीक्षारत रही। कार्तिक में किसान अपनी खेती का कार्य करते हैं लेकिन मैं क्या करूँ? मेरे पति मेरे पास नही हैं। अगहन में मुझे आस थी कि वे आयेंगे लेकिन नहीं आये। पूष में ठंड पड़ने लगी, वे होते तो मैं रजाई भरवा कर उनके साथ शयन करती। तब बड़ा अच्छा होता। माघ में भी नहीं आये। अब यह फागुन आ गया। इस समय तो रंग अबीर की धूम है लेकिन मैं विरहन विरहाग्नि में जल रही हूँ। चैत्र के माह में तेज धूप होती है, मैं उन्हें पत्र लिखने का सोचती हूँ लेकिन नहीं लिखा जाता।

भादों घना रे घन छाये रे,
हमारे श्याम अबलौ ने आये।

भादों के महीने में मेघ उमड़-घुमड़कर बरसते हैं लेकिन कृष्ण तो अभी तक नहीं आये।

सब कारे अजमाये ऊधो, सब कारे अजमाये।
कोहल के घर कागा पाले, रूच रूच दूध पिलाये।
रूच के दूध पिलाये...
बड़े भये सो उड़हन लागे, कुल अपने को धाये।
अरे अपने को धाये ऊधो, सब कारे अजमाये।
कारे नाग रहत बागी में, काचे दूध पिलाये।
काचे दूध पिलाये ऊधो, सब कारे अजमाये।
कारन की कछु परतत नैंया, छिगरन ने डस खाये। ऊधो......
कारे भौरा गये बागन पै, कलन कलन रस ल्याये।
कलन कलन रस ल्याये, ऊधो.....
टूटी कली धरन में गिर गई, भौरा लौट घर आये।
भौरा लौट घर आये, ऊधो......
कारे कारे बादल कैये, साहुन भादों छाये।
साहुन भादों छाये, ऊधो.......
कारे कृष्ण कनैया कइये, कुब्जा ने भरमाये........ ।
कुब्जा ने भरमाये ऊधो, सब कारे अजमाये

(विनोद कुँज, तिगेजा पार्टी)

उद्धव कृष्ण का संदेश लेकर आये और वे ब्रजबालाओं को समझाते हैं लेकिन वे उल्टा उद्धव को ही कृष्ण की करतूतों के बारे में बखान कर देती हैं।

वे कहती हैं- उद्धव! आप कृष्ण के बड़े पक्षधर बनते हैं। अरे! हमने तो सारे काले रंग वालों को देख लिया। ये काले रंग के किसी के मीत नहीं होते। कोयल ने काले कौवे के बच्चों को पाल पोसकर बड़ा किया, लेकिन बड़े होने पर वे अपने कुटुम्ब में जा मिले। कोयल को ही भूल गये। काले नाग बामी में रहते हैं उन्हें भौरा कलियों का रस लेते हैं। रस लेने में कली बिखर जाती है, तो भौरा वहाँ से अन्यत्र उड़ जाता है। काले बादल भी होते हैं वे कहाँ बरसते हैं? कृष्ण भी तो काले ही हैं, उन्होंने यहाँ सबके साथ धोखा किया और आप जाकर हमारी सौत कुब्जा के पास रहने लगे तथा हमें ज्ञान सिखा रहे हैं...। अर्थात् हे उद्धव! हमें तो काले रंग वालों का कोई भरोसा नहीं होता।

तला तोरी पार सरमन मारे,
तला तोरी पार सरमन मारे...

पितृभक्त श्रवण कुमार को तालाब के किनारे महाराज दशराथ ने अनजाने में बाण मारा था।

विन्द्रावन की गेल में, एक मौवा एक आम।
ओई तरे ठाड़े दो जने सो, एक लछमन एक राम
भरत उठ मिल लो राम से हो
आ अरे हो
फिर आ गये लछमन राम
भरत भैया से मिल लो

वृन्दावन के रास्ते में दो पेड़ एक आम तथा एक महुए का है, उस पेड़ के नीचे श्रीराम और लक्ष्मण बैठे हैं। हे भरत जी! आप जाकर उनसे मिल लें।

भैया भैया से होय,
जैसे भरत भैया राम के।

भाई तो भरत जैसे ही होना चाहिए, अपने भाई राम के लिए राज्य का त्याग कर दिया था।

ठाड़े रे जसरथ के दोर,
अब रामा लखन हमे दे दिया हां

मुनि विश्वामित्र महाराज दशरथ के द्वार पर आये हैं, वे राम-लक्ष्मण को लेने आये हैं।

मैया तोरे लाला ने मानें, के सुन लइयो मोरे उराने।
मैया तोरो...
जब हम जावै दईया बेचन, कुंज गलन की रस्ता छँके।
कर देवे हाल बे हालन
मईया तोरो लाला ने मानें, के सुन लइयो मोरे उराने।

माता यशोदा मेरा उलाहना सुन लो, तुम्हारा लल्ला हमें परेशान करता है। हम जब दही बेचने जाती हैं, तो वह हमारा रास्ता रोक लेता है तथा जबरन हमारा दही छीन लेता है।

हनुमान की हूपैं सुनके, हनुमान की हूपैं
रावण के मों सूके सुनके....
रावन के मों सूके सुनके हनुमान की हूपैं
बड़े-बड़े जोधा हते लंका में, मड़िया में से ढूकें
मढ़िया में से ढूकें सुनकें..
बे तो मन अपने में सूकें, सुनकें हनुमान की हूपैं।

(श्री माते कुशवाहा, तिगैला)

वीर हनुमान की हुँकारी सुनकर रावण भयभीत हो रहा है। रावण की लंका में बड़े-बड़े योद्धा है लेकिन वे भी छिपकर देख रहे हैं। कोई बाहर निकलने का साहस नहीं कर पाता। वे सब इतने भयभीत हैं कि उनके प्राण ही सूखे जा रहे हैं।

बरिया पे बैठो चिराबे री
मोरी भेंनी हो
लाल मों को बंदरा
ऐसा बंदरा मैंने कबऊँ नें देखो
मोरी भैनी हो, लाल मों को बंदरा
सबरो ई बाग उजारों री
मोरी भैनी हो लाल माँ को बंदरा
ऐसा बंदरा मैंने कबऊं ने देखो
लंका में घुस आयो री
मोरी भेंनी हो लाल मों को बंदरा

(श्री महराज सिंह यादव)

हनुमान जी जब लंकापुरी में गये तो वे राक्षसों को देखकर उन्हें चिढ़ाते हैं। राक्षस पत्नियाँ उन्हें देखकर बड़ा अचंभा मानती हैं। वे कहती हैं कि इस तरह ललमुँहा बंदर तो हमने कभी नहीं देखा। अरे! वह तो सीता की खोज में लंकापुरी आया। रावण की अशोक वाटिका ही उजाड़ दी। लंका दहन कर दिया। यह बड़ा अजीव वानर है।

तुलसी बिरवा बाग के सींचत में कुमलायें
राम भरोसे जें रहे परबत पे हरयायें
सुमरों बारंबार
जल केसे में याद किया है
नैया डरी मजधार

अरे माला जोर पहर ओई नैया
बेड़ा लगा दे उस पार भवानी तोय...
चंदन चौकी पाट डराओं
दुरगा के अस्नान कराओं हओ
अरे पाँच लरें मोतन की माला
और फुलन के हार...
भवानी तोय...
घरी पहर हरि नौबद बाजे हओ
अरे पांच पहर बे करत आरती
हो रयी जै जै कार
भवानी तोय...
सुमरों बारंबार भवानी तोय...

(फाग पार्टी, तिलेगा)

तुलसी का वृक्ष जो कि घर के आँगन में लगा होता है वह इतना कोमल होता है कि जरा सी धूप में कुम्हला जाता है लेकिन उन वृक्षों को तो देखिये जो कि भगवान के सहारे पहाड़ों पर लगे होते है जिन्हें न कोई पानी सींचता है न ही कोई देखभाल करता है फिर भी वे हरे-भरे दिखते हैं। अर्थात् ईश्वर सबका रक्षक है।

हे माँ भवानी! हम भक्तगण तेरा स्मरण करते हैं कि हमें तू इस भवसागर से उस पार उतार दे, वरन् हमारी नाव तो अभी सागर के मध्य ही है। तेरे सहारे बिना कोई उस पार नहीं लगा सकता। दुर्गा देवी के स्नान हेतु चंदन की चौकी डलवा दो, स्नान के उपरांत उनके गले में पाँच लड़ी की मोतियों की माला पहनाओ और फिर पुष्पों का हार उन्हें पहना दो। पूजन के उपरांत भक्तगण घंटा बजाते हैं उनकी आरती उतारकर उनके भक्तगण उनका गुणगान करते हैं। देवी की जय-जयकार करते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि दुर्गाजी की लीला का कोई पार नहीं है, उनकी लीला अपार है।

शारदा रे हिरदे में समा जा
अरी शारदा रे हिरदे में समा जा...

हे माँ शारदा! आप मेरे हृदय में निवास करें, मेरे ऊपर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखें।

जान न देबू होय, पिया हो इनखों।
जान न देबू होय..
जमना तट पै तीन मूरती, जिनमें तपसी दो।

जिनमें तपसी दो
कौन तुमारे जे वर लागे, को पद लागों हो।
अरे भजले रामा को पद लागे हो
पिया हो इनखों...
गोरे बदन पै कजरा सोहे, जो वर लागे हों।
अरे सिर पै मुकट श्याम के सोहे, जे पत लागे होय।
पिया हो इनखों.........
जान न देहों होय
संग सहेली जाय जा बोली, तुम बड़भागन होय।
तीन लोक के अंतर जामी, बेई पत लागें हो।
पिया हो इनखों, जान न देबू हो।
तुलसीदास भुलो भगवाना
जान न देबू हो...

इनको हम जाने न देंगे। यमुना के किनारे तीन जन दिखते हैं जिनमें दो तपस्वी हैं। उन दो में कौन तुम्हारे पति है? जिनके चरण स्पर्श तुम्हें करना है। जिनका गौर वर्ण है आँखों में काजल लगा है। वे ही मेरे स्वामी हैं। कृष्ण के सिर पर मोर का मुकुट है, वे ही मेरे स्वामी हैं। इनको हम न जाने देंगी। राधा की सखियाँ बोली कि तुम बड़ी भाग्यवान हो जो तीन लोक के स्वामी की प्रेयसी हो। भक्त तुलसीदास को तो प्रभु के भजन से ही काम है। हम इन्हें न जाने देंगे।

बारामासी

श्यामा बिन कौन हरे जा हो पीर
कौन हरे जा हो पीर, श्याम बिन
असढ़ा रे घन गरजन लागे, साहुन गैर गंभीर
चहुं दिस बरसत मेव
क्वांर मास बरसा भई थोरी
कातक मच गई काच
अरे अगन मास हर पाती भेजी
और लिख पठाये संदेश
अरे भजले रामा उनने पठाये संदेश
हाँ पूष मास में जाड़े पड़त हैं
माव में तपत शरीर
अरे फागुन मास में होली अनायी

कौना पै डारों अबीर
अरे भजले रामा कौना पै डारों अबीर
चैत मास फूलन की वर्षा, वैशाखे भई धूर
अरे सूरश्याम जा कानो बरनो
जेठ मिलत रगवीर
श्याम बिन कोन हरे जा पीर...

(माते, मजबूत यादव और साथी)

कृष्ण तो द्वारिका में जा बसे अब हम विरहिणियों की विरह रूपी पीड़ा दूसरा कौन दूर कर सकता है? कोई नहीं। असाढ़ मास में बादल गरजते रहे, श्रावण में भी गरज के साथ बरसते रहे। क्वांर में कम वर्षा हुई लेकिन कार्तिक में तो वर्षा के कारण चारों ओर कीचड़ व्याप्त रहा। अगहन मास में कृष्ण ने उद्धव के हाथों संदेशा भेजा। पूष में ठंड पड़ने लगी, माघ में धूप पड़ती रही। अब यह फाल्गुन आ गया, इस समय किस पर रंग अबीर डाला जाये। कृष्ण तो हैं नहीं, अब किसके संग होली खेंले? चैत्र में फूल चहुंओर फूले हैं, वैशाख में धूल उड़ती है। भक्त सूरदास कहते हैं कि ज्येष्ठ मास में कृष्ण आकर मिले, तो सबको अपार हर्ष हुआ।

माई ये नैया लगादो बेड़ापार
चंदन चौकी बैठका डारो
दुरगा के अस्नान कराओ हओ
पांच पान को कलश घराओं और फूलन के हार
भुवानी तोय सुमरो बारंबार
घरी रे पार को घन नौबद बाजे
अरे पांच पंडवा करत आरती
हो रयी जै जै कार
देवी को दरबार लगो है
और भरो दरबार
तुलसीदास भजो भगवाना
लीला है अपरंपार, भुवानी तोय.....
लीला है अपरंपार
भुवानी तोय सुमरो बारंबार भुवानी तोय.......

(श्री मुलू कुशवाहा, टीकमगढ़)

हे माँ भवानी! आप हमारी भवसागर के बीच में अटकी नाव को उस पार लगा दो। हम आपका स्मरण बार-बार करते हैं। माता के बैठने हेतु चंदन की चौकी डलवाओ, उनको स्नान

करवा दो। तपश्चात् कलश स्थापित करके उनका पूजन करें। उन्हें पुष्पहार पहना दो। आपकी पूजन में नौबत बज रही है, पाँच पांडव आपकी आरती करते हैं। देवी का दरबार लगा है। सब भक्तगण उनका जयकारा लगाते हैं। भक्त तुलसी कहते हैं कि माता की लीला का कोई पार नहीं है। हम भक्तगण तो आपका स्मरण ही कर सकते हैं।

सुर को दे दो ज्ञान, हमें रे तुम दै राखो
दै राखो रे मोरी माय, हमें रे तुम दै राखो
तनकई नइयां ज्ञान, हमें के तुम दै राखो
गोदी में के लाल, हमें रे तुम पै राखो

हे माता! स्वर की अधिष्ठात्री हमें मधुर स्वर प्रदान कर दो, जिससे हम भक्तगण आपके यशोगान गा सकें, हम अज्ञानी हैं हमारे ऊपर आप कृपा करें, हमें एक पुत्र प्रदान करें।

भादों घना घन छाये रे
हमारे श्याम अकलै नें आये

(श्री मुलू कुशवाहा, टीकमगढ़)

भाद्रपक्ष में मेघ चहुँओर आच्छादित है। बिजली चमक रही है। मूसलाधार जल वृष्टि हो रही है। लेकिन मुरलीधर श्याम अभी तक नहीं आये।

जोगन हो गई बरसाने में बसकें
मथरा ढूंढ़ी विन्द्रावन ढूंढ़ी
और गोकुल ढूंढ़ी कसकें
नंदगांव बरसानों ढूंढ़ो
अरे किते गये श्याम बिरजवा हो तजकें..
जा ऊधो माधों से कइयें
मोरी विन्ती करसें
सूरश्याम भज राधे वर खों
मोय छोड़ी रे बैरागन करकें
जोगन हो गई बरसाने में बसकें

मैं तो कृष्ण के बिना जोगन बन गई हूँ। वे हमें छोड़कर न जाने कहाँ चले गये हैं। मैंने उन्हें मथुरा-वृन्दावन-नंदगांव-बरसाना सभी जगह ढूँढ लिया लेकिन वे ब्रज को छोड़ कहाँ चले गये? पता ही नहीं चलता।

हे उद्धव! आप जाकर उन माधव से इतना कह देना, मेरी आपसे विनती है कि आपने मुझे छोड़कर बैरागन ही बना दिया। सूरदास तो राधा कृष्ण का ही स्मरण करते हैं वे कहते है कि कृष्ण के जाने के उपरांत ब्रज में सब उनके वियोग में तड़प रहे हैं।

मोरे नाग राजा
कबसें परे ही बेहाला।

नाग पत्नी अपने पति नाग राज से कहती है कि आप कबसे बेसुध पड़े हैं। अरे! हमें भी तो कुछ बताओ।

पैलऊ सुमरों सरसुती, दूजें गौर गनेश
फिर सुमरों माई शारदा, कऊ दै दियो सुर मोय
अरे सुमरों बारंबार भुवानी तोय
सुमरो बारंबार...
एसो सुमरों सुमरन तोरो, नैया डरी मजधार
अरे मैं तो तुमरो सुमरन कीनो, नैया डरी मजधार
नैया लगा दो बेड़ापार...

पहले सुर की देवी सरस्वती का स्मरण करूँगा, फिर गौरा जी के पुत्र गणेश को, तत्पश्चात् माता शारदा के गुण गाऊँगा, वे हमें स्वर प्रदान करें। मैं आपका ध्यान करता हूँ मेरी भवसागर में डूबी नाव को पार लगा दें।

केसरिया पाग पचरंग पाग
रामचंद्र रे दूला बने हो
अरे मोरे रामचंद्र दूला बने हो।

प्रभु श्रीराम दूल्हा बने हैं, वे अपने माथे पर केसरिया रंग की पगड़ी बाँधे हुए हैं।

राम दूला बने,
जानकी दुलैया लक्ष्मन देवरा।
राम चले लक्ष्मन चले भैया
भरत खड़े पछताँय
लौटो भरत घर जाइयो सो
अरे रइयो सहदेव समान।

श्रीराम दूल्हा बने हैं जनकनंदिनी सीता दुल्हन बनी हैं साथ में उनके देवर लक्ष्मण भी हैं। श्रीराम लक्ष्मण और सीता सहित वन को जा रहे हैं भरत खड़े-खड़े अफसोस कर रहे हैं। हे भरत! घर लौट जाओ और अपना राज्य पाठ संभालना।

अंगद हनुमान अरे
लंका में खलबल सी पार दई।

बालि पुत्र अंगद और पवनपुत्र हनुमान ने जाकर लंका में बड़ी खलबली मचा दी।

ठांड़े रे टेरे नंदलाल,
ग्वालन तनक दईरा डार दईयो हो।

नंदराय के पुत्र कृष्ण किसी ग्वालिन के समक्ष खड़े हैं, उससे दही मांग रहे हैं। कहते हैं कि हमें थोड़ा सा दही दे दो।

सुमरो आज भवानी तोरी,
माथे में शेष रे तुमें जड़े है।
अरे मोरे रामा मेला लगो महाराज
अरे ओ मोरे रामा मेला लगो महाराज
जगत के कंडेसुर महाराज
निर्मल नीर बहत कुंडी में
अरे मोरे रामा कंडेसुर महाराज
जैसे रे जेने दर्शन मांगे हव
सो ओ मोरे रामा जैसई दइयो महाराज
जगत के कुंडेसुर महाराज हो जगत के

हे जगदम्बे! आज मैं आपका स्मरण कर रहा हूँ आपके द्वार पर भक्तों का मेला लगा हुआ है। महाराज कुंडेसुर सारे संसार के पालक हैं उनके भक्तगण बड़ी श्रद्धा के साथ उनका पूजन करते हैं। जलहरी में जल की धारा प्रवाहित होती रहती है जिसने जो मनोकामना की, उसे उसी रूप में दर्शन दिये।

सखी री तुमने देखो नइयां
कुंडेसुर कौ मेला
साइकल चल रयी मोटर चल रयी
और चल रव है ठेला

हांती चल रये घोड़ा चल रये
और चल रयो है मेला
भाजी बिक रयी कुमड़ा बिक रये
और बिक रये हैं भेड़ा...
आलू बिक रये घुइयां बिक रई
और बिक रये है केरा
सखी री तुमने देखों नैयां
कुंडेसुर कौ मेला

अरी सखी! तुमने कुंडेसुर भगवान का मेला नहीं देखा? उनका बड़ा भारी मेला लगा है। मेले में भक्तगण अलग-अलग वाहनों से जाते हैं उनके आवश्यकता की सामग्री मेले में मिल जाती है। कुंडेसुर के मेले में दूर से श्रद्धालु आते हैं और वे भक्तों की मनोकामना पूरी करते हैं।

लंका के मैदान में अंगद रोपै जाँग
जाँग हलायी न हले सो धरनी हल हल जाय
सो अंगद जांग रोपै ठांड़े हो
अरे धरनी हल हल जाय
अंगद............. ।

लंकापुरी में रावण के दरबार में अंगद ने अपनी जांघ रोप दी। रावण के बहुतेरे योद्धा आये, लेकिन किसी से भी जांघ नहीं हिली। रावण ने भी अपनी पूरी शक्ति लगा दी लेकिन उससे भी पैर नहीं हिल पाया। अंत में अंगद ने कहा कि मेरे पैरों पड़ने के बजाय तुम प्रभु श्रीराम की शरण में जाओ तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा।

कैना मानो मोरे पिया, दै राखों हर की जनकसिया
कैना मानो मोरे पिया
आठ शंख और पदम अठारा, कौना गहै जो भार पिया
दै राखों हर की जनक सिया
एक बंदरवा राम दलन में, लै गव मूंछ उखारे पिया,
दै राखों......
भरी सभा रावन की बैठी, खूव लगो दरबार पिया।
सबरे बैठे गाल बजावै, करैयी मंदोदरी नार पिया........ ।
जैसई राजा जैसई मंत्री, खूबई लगो दरबार पिया...
एक बंदरवा राम दलन में, लै गव मुकट उखार पिया।
दै राखो हर की जनक सिया।

लंकापति रावण की महारानी मंदोदरी अपने पति को समझाती है कि- हे प्राणनाथ! आप मेरा कहना मानें। श्रीराम की पत्नि सीता उन्हें लौटा दें, क्योंकि आप यदि सीता को नहीं देते तो आपके सिर पर काल मंडरा रहा है जिससे आपके परिवार का, आपके राज्य का विनाश निश्चित रूप से जानिये। इसलिए मैं बारंबार आपसे विनती कर रही हूँ। उन श्रीराम का दूत आया, लंका जला दी दूसरा आया उसने आपका मुकुट ही सिर से उतार दिया। जब उनके सेवक इतने बलशाली हैं जिनसे आप और आपके बड़े-बड़े वीर हार मान गये तो जब वे आवेंगे तो फिर क्या होगा। अतः आप मेरा कहना मानिये। इसी में हमारी भलाई है।

गोकल में ठांड़े दिखांय,
मुकट की छाया पड़ी जमना में।
ये हाँ मुकट की छाया पड़ी जमना में।

कृष्ण तो गोकुल में खड़े हैं और उनके मुकुट की छाया यमुना जी में पड़ रही है।

छेड़त जात जटायु रथ खौ
छेड़त जात जटायु
कौना की बहू कौन की बेटी
हरें कौन लै जाई रथ खों
छेड़त जात जटायु
दशरथ बहू जनक की बेटी, रावण हरें लै जाई-रथ खों.........

रावण जब माता सीता का अपहरण करके ले जा रहा था, तो जटायु ने उसके रथ को रोक लिया। रावण के रथ में किसकी बहू किसकी बेटी है तथा कौन उनका अपहरण करके लिये जा रहा है? रथ में महाराज दशरथ की पुत्रवधू, महाराज जनक की बेटी है, जिसे रावण अपहरण करके ले जा रहा है।

सुमरनी-1

चौसठ जोगन दुरगा गाइये, फिर विघन विनाशन हार।
फिर विघन विनाशन हार, ऊहै तेरी शक्ति।
रक्षा करो सहाय, जगत में तेरी भक्ति।
सिर पै रइयो शारदा, मै तेरो आधार।
नैनों में नौ दुर्गा, फिर रइयो सदा सवार।
अरे दूजें गौरी के नंदन गाइये, हो विद्या के भंडार।

विद्या के भंडार, कलकत्ता काली।
नैनन में है अष्टभुजी, हिंगलाज में बास।
कंठ कालका सरसुती, जिभिया में जयनती नार।
जप होत तुम्हारे द्वारे में, होजा सिंहा पै असवार।
सिंघा पै असवार, रहे आसन असमानी।
लये खप्पर तरवार, बाँय में विन्ध्यवासनी।
चरन मै बंदो खप्पर वाली के,
तेरो नाम जपै संसार।
नाव जपै सिंसार, जग में जोगन मैया।
मोरी पार लगाव, बीच में डोले नैया।
अगन बचैयो फाग में, विंती सौ सौ दार।
कहें फकीरे लाल जी, ने आवै दिल में हार।
रे खेरे की खेर गा लैये, फिर तो पै है सबभार।

(पं. गोपी दुबे, नेंगुवाँ)

फाग गाने में सर्वप्रथम मैं आदिशक्ति दुर्गा जिनकी चौसठ योगनियाँ है उनका स्मरण गाकर करूँगा। वे समस्त विघ्न बाधाओं का नाश करने वाली हैं। उनकी शक्ति ऊँ है। हे माँ! आप हम सबकी रक्षा करें। सारा संसार आपकी भक्ति करता है। माँ शारदे! आपका हाथ सदैव मेरे सिर पर आशीष देता रहे, मुझे तो आपका ही आसरा है। मेरे नेत्रों में नवदुर्गा रहे। दूसरे स्थान पर मैं गौरीपुत्र विनायक गणेशजी का स्मरण करता हूँ। वे अनंत विद्या के अधिष्ठाता हैं। कलकत्ते वाली काली देवी मेरी रक्षा करें। माँ अष्टभुजी जिनका निवास हिंगलाज में है, ऐसी देवी माँ! मेरे नेत्रों के समक्ष रहें। मेरे कंठ में सरस्वती तथा जीभ पर जयंती देवी रहें। आपका मैं स्मरण करता हूँ। आप सिंह पर सवारी करें। आप अपने हाथों में खप्पर तथा खड्ग धारण करती हैं। मैं आपके चरणों की वंदना करता हूँ। हे माँ! सारा संसार आपके गुणगान करता है। भवसागर में मेरी कस्ती डावाँडोल हो रही है, आप उसे आश्रय देकर किनारे लगा दें। मैं फाग में आपका स्मरण करता हूँ कि आप यहाँ भी मौजूद रहें, जिसमें मेरी जीत हो। जब आप हैं तो फिर संसार में मुझे कोई भी पराजित नहीं कर सकता। फकीरेलाल जी कहते हैं कि ग्राम रक्षिणी खेड़ापति माँ का स्मरण कर लूँ, वे समस्त जीव जगत का भार हर लेंगी।

फाग चौकड़िया

वन खाँ पठा दये दोऊ भैया, काये कैकई मैया।
संगे जनकलली पठवा दई, वन में दैन तथैया।
कौसल्या उर हती सुमित्रा, एकई एक डरैया।

पिता पठाये सुरघाम, डूब गई रघुवंशी नैया।
ईसुरी परी अवध में कारी, को पत भांत रखैया॥

(पं. गोपी दुबे, नेंगुवाँ)

प्रभु श्रीराम को कैकेयी ने चौदह वर्ष का वनवास दिलवाया। वनगमन के पश्चात् अयोध्या पति महाराज दशरथ ने पुत्र वियोग में अपने प्राण त्यागे। भरत को जब यह सब विदित हुआ तो वे कैकेयी से बोले– अरी दुष्टा! तूने मेरे दोनों भाइयों को वनवास दे दिया तथा साथ में माता सीता भी वनवासी हो गई। वे जनकनंदिनी सीता जंगल में कष्ट उठायेंगी। यह तूने बहुत बड़ा अपराध कर डाला। अरे! थोड़ा सोचा तो होता कि माँ कौशल्या तथा माँ सुमित्रा के तो एक-एक ही सहारे थे, उनके वनगमन के पश्चात् पिता महाराज स्वर्गवासी हो गये। अब इस रघुकुल की नैया तो डूब गई शायद उसका श्रेय तुमको ही जाता है। ईसुरी कवि कहते हैं कि श्रीराम, लक्ष्मण, सीता के वन जाते ही महाराज के स्वर्गवासी होने पर अयोध्या नगरी में सन्नाटा छा गया है। यहाँ की खुशियाँ मातम में परिवर्तित हो गई। सारे नगर में अंधकार व्याप्त हो गया। अब कौन इसे संभालेगा?

फाग चौकड़िया

कृपा करहू कृष्ण की प्यारी, श्री वृषभान दुलारी।
कीरत अटल तीन लोकन में, फैली मात तिहारी।
करत मान तज मान मनावत, श्री वैकुण्ठ बिहारी।
नंदीचरण कमल की सेवा, चहत सदा सुखकारी।

(श्री विश्वनाथ दुबे, अमरमऊ)

हे श्री कृष्ण की प्रेयसी! हे वृषभान राजा की लाड़ली! आप हम पर कृपा दृष्टि रखें। हे माँ! आपका तीनों लोकों में यश फैला है। आपका ध्यान मान-सम्मान वैकुण्ठ में निवास करने वाले त्रिलोकीनाथ भी करते है। नंदी आपके चरणों में आश्रय चाहता है, आप उसे अपना दास जान उसकी रक्षा करें।

अब तो जागो नंद दुलारे, भोर भये भुनसारे।
दीपक जोत मलीन भई है, छिपे गगन के तारे।
पनहारी पानी खाँ निकरी, चलन लगे गैलारे।
दौआ आश करत दार्शन की, हरदम खड़े द्वारे॥

(श्री विश्वनाथ दुबे, अमरमऊ)

हे नंदबाबा के प्रिय पुत्र! माँ यशोदा के दुलारे आप अब जागिये। आपके दर्शन हेतु हम

आपके द्वार पर खड़े हैं। अब भोर हो गई है। रात्रि में जलाये गये दीपकों की लौ मद्धिम हो गई है तथा तारागण नभ में छिप गये हैं। ब्रज की पनिहारियाँ, आपकी सखियाँ पानी भरने को निकल पड़ी हैं। यहाँ के रास्तों, पगडंडियों पर पथिकों का आवागमन भी शुरू हो गया है। कवि दौआ कहते हैं कि वे आपके दर्शनों की आशा लगाये हुए हैं और हर समय आपके द्वार पर दर्शनार्थ खड़े रहते हैं।

झगड़े की फाग

टेक- घर नईयां राज अमान अबे परनों में होरी
को खेले घर नईयां........................

1. राजा चले शिकार खों, संग सिपहिरा लोग
हंसापुर की डांग में, हाँका दओ लगाय। अबे....

2. हांकत हांकत दुफर भये, लौट गई छकवार
हंसापुर की डांग में, राजा खो लगी प्यास। अबे....

3. कौनऊ ढूंढे ताल तलैया, कौनऊ तला की पार
हंसापुर की डांग में, हिंदु ने खुदा दये ताल। अबे....

4. इड़ियां बनी छिंड़िया, बनी तला बनो गुलजार।
राजा घुसे पानी पियन, दुश्मन ने मार दई सांग। अबे....

(पं. विश्वनाथ दुबे, अमरमऊ)

महाराजा अमान सिंह घर पर नहीं है अब बिना राजा के उनके राज्य में होली कौन खेलेगा? उनके बिना सब सूना-सूना लगता है।

एक समय राजा शिकार खेलने गये, साथ में सैनिक भी गये। हंसापुर नामक जंगल में शिकार करने हेतु हांका लगवाया गया। लेकिन सारा दिन बीत गया। शिकार नहीं मिला। राजा को बड़े जोर की प्यास लगी। सारे सैनिक उस पहाड़ में पानी की तालाश में कुआँ-बावड़ी-तालाब आदि देखने लगे। उसी पहाड़ में हिंदुओं ने तलाब खुदवाये थे, वह तालाब बड़ा सुंदर था। चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी थी। राजा जैसे ही पानी पीने सीढ़ियों से उतरने लगे तो किसी दुश्मन ने उनपर भाले का वार कर दिया। राजा को धोखे से मार डाला था, अब उनके बिना उनका राज्य सूना हो गया। होली का त्यौहार है लेकिन समस्त राज्य में शोक व्याप्त है, कौन मनायेगा ऐसे में त्यौहार को?

ललामी अरे छा रयी नदिया बेतवा पै,
लाखन की चली तरवार॥ ललामी.......

लाखन की चली तरवार, उमर को है अलबेला।
दोई दलों के बीच, मचा दओ ठेलम ठेला।
भूरी सांकर फेरती, जोहर रयी दिखाय।
कनवज बारे के सामने, फिर बिरलो सूर खटाय।
बिरलो सूर खटाय, सामना करे ने कोऊ।
दांत उगरिया दाँव, रहे दिल्ली पति सोऊ।
मोहन माला गरे में, दई तुरत पैराय।
बोले हैं फिर प्रेम सें, मधुर मधुर मुस्काय।
मधुर मधुर मुस्काय, सुनो तुम लाखन राना।
शूरवीर सरदार तुमें, हमने पहचाना।
अटकी का है आपकी, जो नाहक करो तकरार।
चलो महोबा लूटिये, फिर दोनों मिलकें यार॥
दोनों मिलकें यार, तुम्हे पारस देवेंगे।
राजपाट धन धाम, और हम सब ले लेंगे।
पृथ्वीराज की बात सुन, लाखन नहीं सुनाय।
ऐसी बातें करत में, फिर तुमें शरम न आय।
तुमें शरम न आय, जान लई सब चौहानी।
तुमने समजी हती नहीं, कोऊ अपनी सानी।
धरम क्षत्रियन के नहीं, जो चढ़ घूंसे खाय।
दुश्मन का मुँह तोड़ते, वे क्षत्री हम आँय।
वे छत्री हम आँय, सामने से नहीं डरते।
जो मौका पर जाय, सूर के सन्मुख लड़ते।
लाखन की ये बात सुन, पृथ्वी कहीं ललकार।
कबसें तरबरिया हो गये, फिर बाँधन खों तरवार।
ललामी छा रयी बेतवा नदिया पैं॥

(फाग पार्टी, सुरजपुरा खुर्द)

नदी बेतवा के तट पर युद्ध हुआ, इतनी ज्यादा मार काट हुई कि बेतवा के जल में रक्त मिल जाने से जल का रंग भी रक्त वर्ण हो गया। राजकुमार लाखन राना की तलवार ने तो दुश्मन फौज का सफाया ही कर दिया। लाखन की अभी बहुत थोड़ी उम्र है लेकिन वह तलवार के धनी हैं, रण में उन्हें बड़ा कौशल प्राप्त है। उनकी हथनी सांकल घुमाकर सैनिकों को मारती है, लाखन के सामने बड़े-बड़े शूरवीर नहीं टिकते। उनकी वीरता पर दिल्लीपति पृथ्वीराज भी अपनी दाँतों तले अँगुलियाँ दबाते हैं। पृथ्वीराज ने लाखन के गले में मोहनमाला पहना दी तथा बड़े सहज भाव में मुस्कराते हुए बोले-राजकुमार तुम बड़े शूरवीर हो। मैंने तुम्हें जान लिया।

लेकिन आपको क्या पड़ी जो व्यर्थ में हैरान हो रहे हो। अरे! हमसे संधि कर लो फिर हम दोनों मिलकर महोबे पर चढ़ाई कर देंगे। तुम्हें महोबा विजय के पश्चात् पारस पथरी दे देंगे और हम लूट का माल खजाना ले लेंगे। पृथ्वीराज की बात सुन लाखन बोले कि यह वीरोचित बात नहीं है, हम क्षत्री होकर किसी से धोखा करें। अरे! हम तो तेग के बल पर छीनना जाते हैं। मैंने अपने मन में तुम्हारी चौहानी रजपूती को जान लिया। अरे! आप कायरों की तरह बात करते हैं, हिम्मत हो तो सामना करो। अरे! हम तो वे क्षत्री हैं जो दुश्मन के सामने लड़ते हैं। लाखन की बात सुन पृथ्वीराज क्रोधित हो गये, बोले कि ज्यादा बड़बोलापन अच्छा नहीं, तुम कब से शूरवीर हो गये, कब से तलवार चलाने लगे? उन्होंने लाखन को युद्ध के लिए ललकार लगाई।

फाग चौकड़िया

मोरो अब गौनो नियरानों, करबी कौन बहानो।
आउन लगे पिया के घर के, टिया टारिये काँनों।
छूटे जात साथ सबही को, मन मतंग पछतानो।
इक दिन होने विदा ईसुरी, आगमन आन दिखानो।

(मोहन सिंह, इमलाखेड़ा)

मेरे गौने का समय नजदीक आ गया है अब कौन सा बहाना करें। मुझे लेने हेतु ससुराल वाले आने लगे हैं। कब तक क्या-क्या बहाने करूँ? मेरा मन घबरा रहा है कि सब संगी साथी छूटे जाते हैं। ईसुरी कहते हैं कि एक न एक दिन तो जाना ही पड़ेगा, भविष्य दिखने लगा है। जिसने इस संसार में जन्म लिया है, उसे एक न एक दिन तो विदा होना पड़ता है, उसके सामने कोई बहाना नहीं चलता। इस संसार से विदा होते ही सारे रिश्ते नाते छूट जाते हैं। यही सबसे बड़ा सत्य है।

खड़ी फाग

घर आये न बालम काँ छाये, कौन सौत ने विलमाये।
जबसे गये खबर न भेजी, नहीं संदेश पठाये।
सोचत रैन होत भुनसारें, मग हेरत दिन नित जाये।
कौन उपाय करें का मथुरा, कंत बसंत बिना आये॥

मेरे पति अभी तक घर नहीं आये, पता नहीं उन्हें किस सौतन ने रोक लिया? जब से गये हैं न तो कोई खबर दी न कोई संदेश पहुँचाया। ये सोचते-सोचते सारी रात बीत गई और सबेरा भी हो गया। हर रोज रास्ता देखती हूँ। कवि मथुरा कहते हैं कि क्या करें, मेरे पति बिना बसंत के नहीं आयेंगे।

श्यामलिया रूप निहारो रे, श्यामलिया........ ।
मोय प्यारो रंग वारो रे, श्यामलिया
मोय प्यारो लगे रंगवारो रे,
पाँच मुहर के मोरे पचलगिया
ककना धरो है न्यारो रे, श्यामलिया.......
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल,
लिसे डिठौना कारो रे, श्यामलिया
चंद्रसखी भज राधा माधव,
हरि चरनन बलहारो रे, श्यामलिया
श्यामलिया रूप निहारो रे।

मुझे श्रीकृष्ण का रूप रंग ऐसा भा गया है कि उसके अलावा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मेरे पचलगिया पाँच मुहरों के हैं तथा मेरे कंगना भी तो अद्‌भुत हैं। लेकिन मुझे तो श्यामरंग ही अच्छा लगता है। कान्हा ही मेरे मन में बसा है। उनके सिर पर क्रीट मुकुट शोभायमान हो रहा है। कानों में कुंडल लटक रहे हैं तथा माथे पर काले रंग का टीका लगा है। चंद्रसखी तो श्रीकृष्ण तथा राधा का ही भजन करते हैं। वे उनके हृदय में बसे हैं वे प्रभु के चरणों में अपना सिर रखते हैं।

कूंदे कनैया जमना में,
मिस कर लब गैदा को नाव।
कूंदे कनैया ....
ग्वाल बाल सब ठांड़े पहर में,
दौरों रे कोऊ लैयो गुहार।
कूंदे कनैया ....
जमना के नीरे पीरे डोल जशोदा,
काँ गव री मोरो प्राण अंधार।
कूंदे कनैया ....
सूर श्याम के परम सनेही,
नंद बाबा के परम आधार।
कूंदे कनैया जमना में।

श्रीकृष्ण यमुना के कालियादह में कूद पड़े। उन्हें तो नाग को नाथना था लेकिन सबके सामने गेंद लाने का बहाना किया था। उनके सखा ग्वाल बाल भी यमुना किनारे खड़े हैं। वे सब घबरा जाते हैं, कान्हा को बचाने के लिए गुहार मचा रहे हैं।

माता यशोदा आ जाती हैं वे अपने पुत्र के लिए तड़फ रही हैं। अरे! मेरे लाल को कोई बचा ले, इसमें तो मेरे प्राण बसते हैं। सूरदास तो श्रीकृष्ण के भक्त हैं वे कहते हैं कि नंद बाबा तो अपने पुत्र को प्राणों से भी ज्यादा चाहते हैं, उनका क्या होगा?

डिढ़खुरयाऊ फाग

जुर आये सखिन के झुंड
कनैया झूमर खेंले राधा सें,
अरे हां, कनैया झूमर खेलें राधा सें॥

कृष्ण और राधा झूमर खेल रहे हैं, उन्हें देख सखियों का झुंड एकत्रित हो गया।

फाग लाल की

ऊदल हैं बरदानी जग में,
ऊदल हैं बरदानी लाल।
उनकी नई कोई सानी जग में, ऊदल है वरदानी लाल।
सौं कुंजन बल उनके कहिये, सबकी है जा जानी॥
हाँती पछारें ब्रह्मा व्याहे, पृथ्वी को लय पानी॥
पथरीगढ़ मलखाने ब्याहे, गजमोतन ल्याये रानी॥
कामसाह बंगाले जीते, ल्याये कुसमा रानी॥
कहें फकिरे आला ब्याहे, ल्याये सुनमा रानी॥
जग में ऊदल हैं वरदानी लाल॥

ऊदल इस संसार में जब जन्में थे तो उन्हें देवी ने वरदान दिया था। ऊदल का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। ऊदल में सौ-सौ हाथियों का बल था। ऊदल ने युद्ध में कई बार हाथियों को पछाड़ा था। ब्रह्मानंद का ब्याह किया पृथ्वीराज की पुत्री बेला से। पृथ्वीराज को पराजित किया। अपने भाई मलखान का ब्याह पथरीगढ़ की राजकुमारी गजमोतिन से किया तथा स्वयं कामशाह तथा बंगाल को जीतकर कुसमा से ब्याह किया। अपने बड़े भाई आल्हा का विवाह सुनमा रानी से कराया। ऊदल इस संसार में बड़े वरदानी योद्धा थे।

मोरी खबर शारदा लइयो, कंठ विराजी रइयो।
मै अपढ़ा अक्षर न जानों, भूली कड़ी मिलइयो।
तोरे डेरा हिंगलाज में, इते लौ फेरा दइयो।
ईसुर कात शत्रु के वानें, छीन कें हमखाँ दइयो।

हे माँ शारदा! मेरी खबर सदैव लिये रहना। मेरे कंठ में विराजकर मेरा गायन संभालिये।

मैं तो अनपढ़ हूँ, कुछ भी नहीं जानता। मेरे भूले अक्षरों का मुझे ज्ञान करवा देना। आप हिंग्लाज में निवास करती हैं लेकिन आप यहाँ भी ध्यान रखिये। ईसुरी कहते हैं कि शत्रु के बाण छीनकर मुझे दे देना।

जो तुम छैला छला बन जाते, परे ऊंगरियन राते।
मों पौंछत गालन खाँ लगते, कजरा देत दिखाते।
घरी-घरी घूँघट खोलत में, नजर के सामें राते।
मैं चाहत ती लख में बिदते, हात जाई खाँ जाते।
ईसुर दूर दरस के लाने, ऐसे काये ललाते॥

(श्रीमती उर्मिला पाण्डेय, छतरपुर)

हे प्रिय! अगर तुम छला(मुंदरी) होते तो कितना अच्छा रहता। हमेशा मेरी उँगलियों में ही रहते। मैं जब मुँह पोंछती तो तुम गालों का स्पर्श करते तथा आँखों में काजल आँजते ही दिखाई दे जाते। हर क्षण घूँघट खोलते, सदा नजरों के सामने रहते। ईसुरी कहते हैं कि उनके दर्शन के लिये हम इतने तो न तरसते।

नई चुनरी के छोर, राजा करोंदा में बीद गये।

मैंने नई चूनर पहनी थी, उसे पहनकर मैं बाहर निकली कि उसका छोर करोंदे की झाड़ी से उलझ गया।

बगिया कितनी दूर, आ रई बास बेला की।

बाग पता नहीं कितनी दूर होगा लेकिन उसमें फूले बेला की सुगंध आ रही है।

विरथा भटके यार, डारकें बिछौना घरे सोऊते।

हम व्यर्थ ही परेशान हुए इससे अच्छा तो यह था कि घर पर ही विस्तर में सोते।

कोमल मोरी बाँय, राजा गरये हो गये काकना।

मेरी बाँह बहुत नाजुक है, आपने मुझे जो कंगन लाकर दिये थे वे वजनदार हैं। मुझसे नहीं पहने जाते।

फूले रइयो गुलाब, नइयां गरज भौंरा खों।

गुलाब तुम कितने ही फूले रहना लेकिन भौंरे को उससे कोई मतलब नहीं है।

डोरा सात लरके, रातके मरोरा डोरा टूट गये।

मेरी कमर का करधन सात लड़ी का था लेकिन रात्रि की उठा-पटक में वह टूट गया।

गलगलिया छिनार, कबसे पतिविरता हो गई।

गलगल तो बड़ी शैतान होती है वह कब एक की हो गई, यह तो असंभव है।

बन जाने हते, कैकई खें दोष लगाये।

प्रभु श्रीराम जी को वनवास करना था क्योंकि अगर वे वन को नहीं जाते तो रावण नहीं मारा जाता, फिर कैकेई को क्यों दोष दिया गया?

बूंदा चमके लिलार, जैसे तरा भुनसरियां।

एक सुंदरी के माथे का बूँदा इस तरह से दिखाई दे रहा है जैसे कि भोर होने से पूर्व एक तारा सा चमक रहा हो।

गोरी नैना नें मार, भरके दुनाली चाय मारदे।

तुम नैन बाण क्यों चलाती हो, इससे अच्छा तो यह होगा कि दोनाली बंदूक ही मेरे ऊपर दाग दो।

नैया डूबी जाय, पार को लगैया नैयां कोऊ रे।

मेरी जीवन रूपी नाव डूबने ही जा रही है, इसे पार लगाने वाला कोई नहीं है।

पंछी करले किलोर, जाने कबैं मर जाने।

अरे पंछी! तू इस जीवन के रहते मौज मस्ती कर ले, पता नहीं कब तेरा बुलावा आ जाये।

कुचबंदिया नवाव, डारैं भटरियों पै डेरा।

कुंचबंदिया तो स्वच्छंद होते हैं वे पहाड़ों-पठारों पर निवास करते हैं।

(किशनलाल पांडे, सुरेश मालवीय)

कंठ से टारी टरों नें जगदम्बा,
हो विघन विनाशन हार॥

हो विघन विनाशन हार, आप जग की महारानी।
विन्ध्याचल में जोत जरे, जा अखण्ड भवानी।
नाश करो तो कंश कौ, लै बृज में अवतार।
जेके डर सें नाथ खों, गोकल में दये ते पार॥
गोकल में दये ते पार, जगत जय पालन हारी।
लय खप्पर तरवार, विनाशन मारन वारी।
त्रेता में जब आपने, रूप करो विस्तार।
तुमने रावन को हनों, जब भय माने करतार॥
भयमाने करतार, भवानी कंठ विराजो।
कर जिविया में वास,
गानें वालों पै सदा, रहियो मात सवार।
कंठ से टारी टरों ने जगदम्बा....... ॥

(श्री बाबूलाल शुक्ला, रेंगवा)

हे जगत जननी जगदम्बे माँ! आप मेरे गले में विराजमान हों, आप विघ्न को मिटाने वाली हैं, आप जगत जननी हैं। विंध्याचल पर्वत जो आपका निवास स्थान है, वहाँ अखण्ड ज्योति जलती है। आपने ब्रज में अवतरित होकर कंस का विनाश किया था। कंस के डर से श्रीकृष्ण को गोकुल पहुँचा दिया था। आप जगत का पालन करने वाली हैं। आप अपने हाथ में खप्पर तथा तलवार लिये रहती हैं। आप अपने भक्तों के सारे विघ्न हर लेती हैं। त्रेता में आपने अपना रूप विस्तार किया फिर रावण को मारा। आपसे सदैव लोग डरते हैं। हे माँ! आप मेरे हृदय में, मेरे गले में निवास करें।

नैना बान काये मारे प्यारी,
नैना बान काये मारे लाल॥
छैला भये अधमरे प्यारी, नैना बान...........
खाना पीना सबई छूट गव, ठांड़े रूप निहारें।
नैन लगनियां प्यारी तुमारे, उनई में काजल डारें।
कहें फकीरे बचना चइये, पर नारी के द्वारे लाल॥
नैना बान काये मारे प्यारी।
नैना बान काये मारे लाल॥

(श्री शत्रुघ्न तिवारी, छतरपुर)

अरी बावली! तूने नैना रूपी बाण क्यों चला दिये। तेरे नयनबाण की चपेट से रसिक लोग अधमरे हो गये। उनका खाना पीना छूट गया, वे तो तेरी ओर टकटकी लगाकर देख रहे हैं। एक

तो तेरे नैन वैसे ही तीखे थे, उस पर तुमने काजल लगाकर और ज्यादा तीक्ष्ण बना लिये। फकीरे लाल जी कहते हैं कि पर स्त्री से हमेशा बचना चाहिए।

सभा में बैठे आज हम गाते हैं,
बिगड़ी तो लेत बनाय॥
बिगड़ी तो लेव बनाय, आप सबहई हो सियाने।
किनपै कितनी अकल, बात जा हम नें जाने॥
हमपैं जितनी बनत है, गाते हैं धर ध्यान।
भूल चूक हो जाये तो, आप बड़े गुणवान॥
आप बड़े गुणवान
चार जनों के बीच में, जबाव देते तुरतई।
मेंफिल में बैठे हुए, जात और परजात॥
गलती में सांची कहो, जाऊ सरम की बात।
जाऊ सरम की बात, समझ ले अपने मन में।
हमखाँ देव जबाव, कहत हों गल्ती तुमसे।
जिनमें धीरज है नहीं, वे ही हैं बेकार।
बिगरी जो न बनाउते, ओई बड़े हुशयार।
बेई हैं हुशयार, अकल के नहीं ठिकाने।
जिनमें धीरज होय, बेई हैं बड़े सयाने।
आज सभा में आये हो, छोटे बड़े सुजान।
चौतरफा से फाग में, मचा देव घमसान॥

(श्री राजेश, सूरजपुरा खुर्द)

हम फाग गाना शुरू कर रहे हैं आप सब दर्शक श्रोता हमसे जो चूक हो जाये उस पर ध्यान न देना, आप सब समझदार हैं। जो हमे आता है वह आपको ध्यान से गाकर सुनाते हैं। हमसे जो भी भूल चूक हो जाय उसे भुला देना। इस महफिल में छोटे-बड़े सब, सजातीय तथा विजातीय बैठे हैं, जिनमें धैर्य नहीं वे सब तो ठीक नहीं। हाँ समझदार वें है जो सबकी बिगड़ी भी बना देते हैं। उनमें बहुत बुद्धि है आप सब हमारा साथ दो तो आज फाग में घमासान हो जायेगा।

फूल लेने को चले दोनों भाई, श्री रामचंद्र भगवान।
श्रीरामचंद्र भगवान, गुरू की आज्ञा पाई।
फूल लेन को गये, राम लछमन दोई भाई।
जनकपुरी अनुपम सुखद, बगिया बनी महान।

बनो बाग के बीच में, फिर गिरजा को अस्थान।
गिरजा को अस्थान, लगी फूलन फुलवारी।
बेला जुही गुलाब, और केशर है न्यारी।
गुलतरंग गुल लायची, गैदा गैदी जान।
कुंद चमेली केतकी, सदासुहागन मान।
सदा सुहागन मान, मालती चम्पो न्यारी।
दातों और जासोन, दुपहरी केवड़ा क्यारी।
अजब गुलाब गुलदावरी, तिवरैया कई लान।
गुलवंसा उर मोगरा, है कनेर गुणवान।
है कनेर गुणवान, रातरानी गुलखेरा।
बैजंती चाँदनी, सूर्यमुखी केली केला।
आक धतूरो कई किसम, तुलसी करो बखान।
बिटप ओट सीता खड़ी, अनुपम रूप महान॥
अनुपम रूप महान, हैं जनक दुलारी।
मिल गए राजाराम, लखन लाला हितकारी॥
राम लखन लख जानकी, चातुर सिया सुजान।
जनकराज महराज ने, जो रचो स्वयंवर ठान॥
रचो स्वयंवर ठान, भयो जब नजर मिलोना।
मूरत मन मंदिर में बसी, सखी रघुवीर सलोना॥
बलीराम कथकें कहें, कैसे करूँ बखान।
जगत भवानी जानकी, श्री रामरमण भगवान।
फूल लेने को चले दोनों भाई...... ॥

(श्री राकेश असाटी, बड़ा मलहरा)

उक्त फाग में जनक जी की पुष्पवाटिका में प्रभु श्रीराम एवं सीता माता की पहली भेंट वर्णन हैं–

गुरू विश्वामित्र की आज्ञा पाकर दोनों भाई श्रीराम और लक्ष्मण विदेहराज की पुष्पवाटिका में पुष्प लेने जाते हैं। जनकपुरी की वह वाटिका बड़ी अनुपम है, बगिया को देख ऐसा लगता है जैसे कि सारे संसार की सुंदरता इसमें सिमट आई हो। बगिया के बीचो-बीच माँ गिरजा का मंदिर बना है। फुलवारी में बेला, जूही, गुलाब, केशर आदि पुष्प हैं। इसके अलावा गुलतरंग, गुललायची, गैंदा, गैंदी, चमेली, केतकी, सदासुहागन, मालती, चम्पा, गुलाब, गुलदावरी, तिवरैया, गुलचंपा, मोंगरा, कनेर, रातरानी, गुलखेरा, चाँदनी, सूर्यमुखी, केली, केला, धतूरा , आम, तुलसी आदि के पेड़ पौधे सुशोभित हैं। जनकनंदिनी सीता अपनी सखियों सहित गिरजा पूजन को आई हैं, वे बाग में ही खड़ी थीं कि उसी समय श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ पर आते हैं। जैसे ही उनकी

नजर राम लक्ष्मण पर पड़ी तो सकुचा गई। वे एक नजर देखकर अपनी निगाह नीचे कर लेती हैं। लेकिन उनके मन रूपी मंदिर में प्रभु की छवि अंकित हो गई। बलीराम कहते हैं कि मैं उनके रूप के वर्णन का बखान करने में अपने को समर्थ नहीं पाता। जनक जी ने स्वयंवर रचा था उसी के लिए दोनों भाई मुनि के साथ आये थे। यहाँ से श्रीराम अब सीता राम कहलावेंगे। जानकी जी तो जगत जननी हैं, प्रभु श्रीराम भी जगत पिता हैं।

पेड़ बसत पक्षी नहीं, दूध देत नहीं गाय।
तीन नेत्र शंकर नहीं, जाको अर्थ बताव॥
देव अर्थ समजाके, ये रजुआ अलग अलग समजाके लाल।
तुम हो फागन के सरदार, ईमें बने बड़े हुशयार।
उत्तर देदो आज हमार, पूछो तुम ही।
जो हम उत्तर पावें, फिर हम दूसर फाग उठावैं।
हम तो ऐसी फाग उठावें, सुनलो अब ही दोहा।
हमरी तुमरी बरनी हो गई, आज सभा में।
गाय लेव तुम अपने मन में, हमखें देव बताय।
कैसे राम गये वनवासे, प्राण गये दशरथ के।
किसने स्वर्ण मृगा बन आओ, सीता की कुटिया को धाओ।
किसने साधू रूप बनाया, विपदा दूनी।
किसने रथ को रोका जाई, सीता कहां करत बिलखाई।
प्रभु को किसने पता बताई, कुटिया सूनी।
कैसे मिलन भये हनुमत सें बाली मारे जाँय।
किसने पता बताया सिया का, पंपापुर में भाय॥
कैसे राम लड़े रावण से, कैसे बाण लगे लछमन कें।
रावण जोधा हैं कै भाई, उनके पुत्र कौन है भाई।
रहते कौन जंगल में जाई।
तुम बतलाओं रावण है, किसका बरदानी।
इसके कौन बराबर सानी, जिसका जबाब देव तुम ज्ञानी।
अब समझाव।
की विद अहिरावन हर ल्याये, राम लखन खें जाय।
कौन बीर था रामादल में, ल्याये उनें छुड़ाय।
कैसे वीर हते लंका में, तुमतो हमें बताओ गाकें।
अब तुम सोच लेव निज मन में, हमखें जबावदेव छंदन में।
तब तो शान रहे मूंछन में, कहता काकें।

कड़ी कड़ी से जबाव सुनाओं,
हमखें देव बताय।

(फाग पार्टी, चौका)

पेड़ पर बसने वाला पक्षी नहीं है। दूध देने वाली गाय नहीं, तीन नेत्र जिनके हैं वे शिव नहीं? इसका अर्थ अलग-अलग समझाकर कहो? तुम तो फागों के बड़े ज्ञाता हो इसका अर्थ बताओगे तो मैं दूसरी फाग गाऊँगा। आज इस सभा में हम तुम प्रतियोगी हैं।

प्रभु श्रीराम कैसे वनवासी हुए? महाराज दशरथ ने क्यों प्राण त्यागे? स्वर्ण मृग कौन बना जो माता सीता की कुटिया के समक्ष आया? फिर पंचवटी में साधू वेशधारी कौन आया? रावण के पुष्पक विमान को किसने रोका? सीता माता कहाँ विलाप कर रहीं थी? सूनी कुटिया को देखने के पश्चात् किसने श्रीराम को सीता का पता बताया? ऋषिमूक पर्वत पर प्रभु की हनुमान से भेंट कैसे हुई? बाली कैसे मारा गया? श्रीराम रावण युद्ध कैसे हुआ? लक्ष्मण को बाण कैसे लगा? रावण कितने भाई थे? रावण के कौन-कौन पुत्र थे? वे कहाँ रहते थे? रावण को किसने वरदान दिया था? कौन रावण के इष्टदेव थे? रावण की बराबरी का कौन था? यह सब अलग-अलग समझाकर कहो।

अहिरावण, राम लक्ष्मण को किस तरह अपहरण करके ले गया? रामदल में ऐसा कौन शूरवीर था जो राम लक्ष्मण को अहिरावण से मुक्त कराकर लाया था? लंका में कैसे-कैसे वीर योद्धा थे, तुम अपने मन में यह सब सोच लो तथा छंद में ही जबाव देना। जिस तरह से मैं गाकर कह रहा हूँ। उसी तरह से तुम भी गाकर सारे जबाव क्रमवार देना।

फाग चौकड़िया

फन पै निरत करत वनमाली, नटखट नंद ख्याली।
पं पं पं पं पटकत विं विं विं विनती करत नाग पुतोहू आली।
सं सं सं सं सनद काद नं नं नं नारदाद सवै बजावैं ताली।
गं गं गंधर्व सभी भाखें गोपाल अमी कृष्ण मोहनी डाली॥

(श्री कन्हैया लाल पाठक, लौड़ी)

यदुनंदन भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं में नाग नाथने की लीला बड़ी महत्त्वपूर्ण रही है। यहाँ कुछ इस तरह की लीला हो रही है। काली नाग के फन के ऊपर कृष्ण नृत्य करते हैं। वे तो नटखट हैं ही। नाग के ऊपर साक्षात् परमेश्वर नृत्य करेंगे तो उनका बोझ उठाने वाले का क्या होगा? नाग पत्नी प्रभु से विनती करती है कि नाग लहूलुहान हो रहा है। आकाश में देवतागण आनंद करते हैं, नारद आदि ताली बजाते हैं। लगता है कि जैसे सारी सृष्टि नृत्यमय हो गयी हो। कृष्ण की मोहनी छवि सबके हृदय में अंकित हो गई है।

अजगर तन तन तन सरकत, सरकत सरकत टबकत।
टरकत टरकत टरकत टरकत, जन जन जन जन हरकत।
हरकत हरकत चलत चलत चल- हर हर घर तक डरकत।
हरकत हरकत गं गं गंधर, गं गं गंजल तरसत।

(श्री कन्हैयालाल पाठक, लौड़ी)

अजगर तो तिल-तिल करके सरकता है। सर-सर ध्वनि के साथ आगे बढ़ता है उसके सरकने को लोग देखते हैं उसके आकार रंग आदि को सब बड़ी हसरत से देखने लगते हैं।

फाग छंदयाऊ

सबसे अब्बल अजब गुड़ानो देश।
कौना काम को मालवा, हमखौं लगत विदेश।
बिटिया बोली बाप से, भलो आपने चाव।
देश गुंड़ाने में पिता, करियों मोरो ब्याव॥

टेक- *शादी कर देव देश गुड़ाने, जहाँ मजा मन आने।*

छंद- *बाबुल बड़ा रंगीला देश, जां पर नैयां कोई कलेश।*
जहां के कइयक लोग लगे।
नित काम करें॥
भाई आव भाव पहिचानें, इज्जतदार की इज्जत जानें।
आदर करके पूरे जाने।
अति धरम करे॥

उड़ान- *विन्ध्याचल में तीरथ भारी, भीमकुंड जग जाने।*
जाहिर जगत जटाशंकर है, पन्ना रतन खदानें॥

दोहा- *देश गुड़ाने में पिता, पैदा होत अचार।*
चली मालवा देश के, माँगत हाँत पसार॥

टेक- *होत चिरौंजी अति अनमोली, भोग लगे भगवानें।*

छंद- *कुंदवा-समा बाजरा राली, कुटकी चीना चिराली।*
मै भई कुदई चाँवर बिना खाली॥
गई जान मरम॥
गईती एक बेर मम्मन कें, चीजें देखी सब नैनन कें।
गईती नहीं रात व दिनकें।
सो भई।

उड़ान– *वर्षा ऋतु में पैदा होवे, तरह तरह की धानें।*
परसे थार भात के देखत, परमेश्वर लुभयान॥

दो– *खीर खाँड़ खाई जहां, निरवर भैस के दूध।*
अरी सखी मुंह भूल गई, माता पिता की सूध।

टेक– *आवै खबर नजर में भूले, हूले तीर कमानें।*

छंद– *ससुरा उस देश के पाऊ, जब मैं कभी मायके आऊ।*
तुम खाँसोई कछू लिआऊ।
नामी चीजें॥
जुंडी जवा चना इत खानें कटिया करत रातदिन जाने।
असुवा चुवत शरीर ससानें।
कपड़ा भींजे

उड़ान– *एई गेहूँ उन्नत लत्तन खाँ, एई तिलई लाने।*
खरचा कात बचे रहे जो, कुछ धरे बीज के लाने॥

दोहा– *देश गुड़ाने में पिता, है सुविधा की बात।*
महुबा तेंदू गुली में, सबरन खर्च समात।

टेक– *इतनी चीजें उतै धरी हैं, का का जात बढ़ाने।*

छंद– *होवे सागौना और बाँस, जावै देश देश में खास।*
जिसकी तूमहू तलाश।
कीमत लेना॥
हो गव देश गुड़ानो नामी, मईके ढूंढो हमखाँ स्वामी।
ईमें तुमें हूहे आरामी।
मानों कहना॥

उड़ान– *ब्यावं होय ता देश गुड़ाने, बिटिया जो प्रण ठाने।*
दंगल सींग छोड़के मालक, चल भये देश गुड़ाने॥

(श्री कन्हैयालाल पाठक, लौड़ी)

हमारा गोंडवाना प्रदेश तो सबसे अच्छा है, यह सर्वोपरि है, उसकी तुलना में मालवा भी कहीं नहीं है, वह तो विदेश जैसा है। एक बेटी अपने पिता से कहती है कि–हे पिता महाराज! यदि मेरा भविष्य अच्छा चाहो तो मेरा विवाह गुड़ाने में ही करना। अगर मेरा विवाह यहाँ होगा तो मैं बड़ी खुश रहूँगी। यह प्रदेश बड़ा रंग बिरंगा है। यहाँ कोई दुख नहीं है। यहाँ के लोग एक दूसरे से भाईचारा बनाये रखते हैं। मिलजुलकर काम करते हैं। सबकी इज्जत करते हैं। धर्मपरायण हैं यहाँ के निवासी। विंध्याचल में भीमकुंड नामक तीर्थ क्षेत्र हैं। जटाशंकर महादेव का मंदिर यहाँ

है। पन्ना में हीरे की खदानें हैं। इसके अलावा यहाँ वनोपज में अचार होता है जिसकी चिरौंजी तो सभी खाते हैं। चिरौजी बड़ा अनमोल मेवा है जिसका भोग भगवान को लगता है। कृषि उपज में कोदो, समा, बजरा, राली, कुटकी, चीना, चिराली प्रमुख हैं, जिनके चावल बनते हैं। मैं एक समय मामा के घर गई थी तो यह सब देखा तो उन्हें नहीं भूल पाती। वर्षा ऋतु में धान होता है थाली में जब चावल परोसा जाता है तो भगवान को भी चावल खाने का लोभ आ जाता होगा, मैंने तो वहाँ की खीर खाई, जो निखालस भैंस के दूध की बनी थी। उस स्वाद को चखकर सब कुछ भूल गई। यहाँ तक कि अपने माता पिता को भी। यदि मैं उस देश के स्वसुर को पाऊँ तो मायके की सुध ही न करूँ, कभी जाऊँ भी तो पठौनी में वहाँ की कई चीजें मायके लाऊँगी। इनके अलावा ज्वार, जवा ,चना होते है तथा हरे पौधों की कटिया करके(पशुओं को डालने हेतु) सारा दिन तो वैसे ही व्यतीत हो जायेगा। यहाँ की फसलों की उपज से सारा घर खर्च चलता है, इसके अलावा एक फसल और है जिसमें सारा घर खर्च निकल आता है, वह है महुआ। महुआ से महुआ तथा गुली होता है। लकड़ी में सागौन, बाँस जो कि बड़े काम की है। यहाँ की सागौन बाहर जाती है। सो हे पिता! मैंने तो अपने मन में प्रण कर लिया है कि मेरा ब्याह होगा तो गुड़ाने में ही होगा, जिससे सारा जीवन आराम से कट जायेगा। दंगल सींग अन्य जगह को छोड़कर वे भी गुड़ाने को चल दिये।

श्यामलिया खाँ घेरे राधा, श्यामलिया खाँ घेरे। लाल
रोजई होत सबेरे राधा.......
एक सखी अतर रंग डारे, एके केशर घोरें। राधा.......
एक सखी कमर लिपटयानी, एक पीताम्बर छोरे। राधा.....
ईसुर फाग मची गोकुल में, नंद बाबा के दोरे। राधा......
श्यामलिया खाँ घेरे राधा
श्यामलियां खाँ घेरे लाल॥

(श्रीमती उर्मिला पाण्डे, छतरपुर)

होली का समय है, ब्रज में होली की धूम मची है। कृष्ण तो सदैव ब्रज बालाओं के साथ छेड़छाड़ करते ही थे लेकिन इस बार कृष्ण के साथ उल्टा हो गया। उन्हें राधा तथा उनकी सहेलियों ने मिलकर घेर लिया। एक सखी ने तो रंग में इत्र मिलाकर घोला तथा दूसरी ने केसर मिलाकर रंग बनाया। एक सखी कान्हा की कमर से लिपट गई, दूसरी ने पीतांबर खींच लिया। ईसुरी कहते हैं कि आज गोकुल में फाग की धूम है वह भी नंद बाबा के द्वारे पर ही फाग हो रही है।

ऐसी होरी में पिया परदेश बसे, ऐसी होरी में।
बैरन फागुन की रित आई,

निकरो ने जावे मोखों घर से॥ ऐसी....
सब सखियां मिल खेलें होरी।
मोरी कोरी चूनर रंग खों तरसे॥ ऐसी....
तुम बिन मोय सब गांव बिहूने,
मोरे भर भर आवें नैना तरसें॥ ऐसी....
कारी कोयलिया जियरा जरावै,
ऐसो लगे आम कटा देव जड़ सें। ऐसी....
ऐसी होरी में पिया परदेश बसे॥

(श्रीमती उर्मिला पाण्डे, छतरपुर)

एक स्त्री का पति होली के समय ही परदेश चला गया। वह बिल्कुल नव व्याहता है। पहली होली वह भी पति के बिना? वह बाला सोचती है कि इसी समय इस बैरन फाग को आना था। मुझसे तो इस समय घर से नहीं निकला जाता। मेरी सारी सखी सहेलियाँ होली खेल रही हैं। लेकिन मेरी नई चुनरी जिसे होली के लिए ही मंगाया था, वह कोरी की कोरी रखी है। वह तो पिया के रंग के लिए ही तरस रही है । लेकिन मैं कैसे होली खेलूँ? हे प्रियतम! अकेले तुम्हारे न रहने से मुझे भरा पूरा गाँव भी सूना लग रहा है। मेरी आँखों में आपके वियोग के आँसू निकल आते हैं तथा मेरे नयन आपके दर्शनों को तरस गये, तुम नहीं आये। एक तो वसंत होली दूजी यह काली कोयल जो बार-बार कूकती है, वह मेरे मन की प्यास को और भी भड़का रही है। उसकी बोली सुनकर मेरा जी जलता है। अब तो ऐसे लगता है कि जिस आम की डाल पर बैठकर कोयल बोलती है, मैं उस आम को जड़ से कटवा दूँ।

ब्रज में खेलत फाग कनैया। ब्रज में........
खेलत फाग कनैया लाल।
बलदाऊ के भैया। ब्रज में....
भर पिचकारिन रंग अनेकन,
घाले जगत बसैया। ब्रज में.....
उड़त गुलाल लाल भये वादर,
छिप छिप जात जुदैयां। ब्रज में....
ये मनमोहन पार लगा दे,
विजयसिंह की नैया। ब्रज में....
खेलत फाग कनैया लाल..... ॥

(श्रीमती उर्मिला पाण्डे, छतरपुर)

ब्रज में होली का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। कान्हा अपने सखाओं सहित होली खेल रहे हैं। कृष्ण बलदाऊ के छोटे भाई हैं। अरे! इस जगत के स्वामी की लीला देखो जो

अपनी पिचकारियों में रंग भरकर ब्रजबालाओं के ऊपर डालते हैं। रंग के साथ-साथ अबीर भी इतनी ज्यादा मात्रा में डाला गया कि आसमान में बादल भी लाल हो गये। कान्हा की होली बड़े वेग पर चल रही है। बादलों का रंग अब होली का रंग हो गया। इसके कारण सूर्य भी उस रंग बिरंगे बादलों में छिप-छिप जाता है। विजयसिंह जी कहते हैं कि हे मुरली मनोहर! हे माधव! मेरी जीवन रूपी नाव को भवसागर से पार करा दो।

मोपै रंगा न डारो श्यामलिया,
मैं तो ऊंसई अतर में डूबी लला। मोपै.......
काहे के रस रंगा बनाये, काहे की पिचकारी लला॥ मोपै.....
केसर को रस रंगा बनाये, हरे बाँस पिचकारी लला॥
भर पिचकारी सन्मुख मारी, भीज गई तन सारी लला॥
जो सुन पाहें ससुरा हमारे, आउन न देंहे बखरिया लला॥
जो सुन पाहें सासो हमारी, आऊन न देंहे रसुइया लला॥
जो सुन पाहें सैंया हमारे, आउन न देंहे सिजरिया लला॥
वृंदावन में फाग मची है, राधा कनैया की जोड़ी लला॥
मोपै रंगा न डारो श्यामलिया,
मैं तो ऊंसई अतर में डूबी लला।

(श्रीमती उर्मिला पाण्डे, छतरपुर)

हे कान्हा! मेरे ऊपर रंग मत डालो। अरे! मैं तो वैसे ही तुम्हारे रंग में रंगी हूँ फिर क्यों दूसरा रंग डालते हो? कृष्ण ने रंग किसका बनाया तथा उनकी पिचकारी काहे की बनी है? कृष्ण ने केसर का रंग बनाया है तथा हरे बाँस की पिचकारी बनाई गई। कन्हाई ने पिचकारी में रंग भरा और मेरे सन्मुख डाल दिया, उनके रंग से मेरी साड़ी सराबोर हो गई। अब अगर मेरे ससुर ने सुन लिया तो वे मुझे अपनी बखरी में नहीं आने देंगे। यदि मेरी सासु ने सुन लिया, तो वे मुझे रसोई में जाने को रोक देंगी और अगर मेरे पति ने सुना तो वे मुझे अपनी सेज पर नहीं सुलावेंगे। वृंदावन में तो होली की धूम मची है यहाँ राधा और कन्हैया की जोड़ी बनी है, वह जोड़ी तो सर्वविदित है।

रसिया खाँ नार बनाओं री, रसिया खाँ......
काहू ने बैदी, काहू ने बेसर, काहू ने चुरियां पैरायी री।
काहू ने लहंगा, काहू ने सारी, काहू ने अंगिया पैरायी री॥
काहू ने माहुर, काहू ने मेंहदी, काहू ने बिरियां रूचवायी री।
रसिया खाँ, रसिया खाँ नार बनाओ री॥

(श्रीमती उर्मिला पाण्डे, छतरपुर)

एक बार सारी ब्रजबालाओं ने सलाह की कि यह कृष्ण हमें तो हमेशा तंग करते हैं, आज हम सब मिलकर कृष्ण को स्त्री बनायेंगी। उन्होंने सोचा और कृष्ण के आने पर अपनी सोची हुई बात को कार्य रूप देने लग गई। किसी ने उन्हें बेंदी पहनाई तो किसी ने बेसर पहना दी। एक ने तो चूड़ी पहना दी। किसी ने उन्हें लहंगा तो किसी ने साड़ी और एक ने चोली पहना दी। एक सखी ने कृष्ण के पैरों में महावर लगाया तो एक ने मेंहदी रचा दी। फिर अंत में एक सखी ने पान का बीड़ा कृष्ण को खिला दिया। इस तरह से सब सखियों ने कान्हा को स्त्री बना दिया।

माता शारदा सरसुती, सुमरो शारद तोय।
भूल चूक संकट परे, गुरू के चरनों नांव।
खबर शारदा लइयो मोरी, खबर शारदा लइयो।
सो कंठ विराजी रैयो माता, खबर.....
मैं अपढ़ा कछू जानत नैयां,
सो भूली बनी बतइयो, मोरी खबर......
डेरा तेरे हिंग्लाज में, सो मईलो फेरो करियों। मोरी....
खबर शारदा लइयो॥
ईसुर बाँहें अंगके ऊपर,
खबर शारदा लइयो मोरी॥

(श्री लक्ष्मण, अतरार)

हे माँ शारदा! मैं आज आपका स्मरण करता हूँ। मुझसे जो भूल-चूक हो जावे या कोई संकट आये तो उसे टालना। माँ तू मेरी खबर लिये रहना। मेरे कंठ में स्वर बनकर आ जाना। मैं तो अनपढ़ हूँ कुछ भी नहीं जानता। अगर कुछ भूल जाऊँ तो आप वह भूली हुई लकीर मुझे याद करवा देना। आप हिंग्लाज में निवास करती हैं, यहाँ तक फेरा करना। ईसुरी कहते हैं कि आप मेरे बायें अंग पर विराजमान रहना।

होरी काय खेलत नैयां,
मोय तुम बिन चैन परत नइयां।
मईना मस्त लगो फागुन को,
बदनामी को डर नैयां।
मलो अबीर कपोलन ऊपर,
तपने बुझालो मन भैया।
खेल लेव दिल भरके अपने,

मोरे सैयां।
गंगाधर करो सके श्याम खाँ,
मनाई है परकें पैया॥

(श्री लक्ष्मण, अतरार)

आप होली क्यों नहीं खेलते जबकि मेरा हाल यह है कि तुम्हारे बिना मुझे चैन नहीं पड़ता। यह तो फाग का महीना है इसमें होली खेलने से कोई डर नहीं रहता। गुलाल को कपोलों पर मल दो तथा अपने मन की कर लो। आप तो जी भरके होली खेल लो। गंगाधर कहते हैं कि मैं कृष्ण से क्या कह सकता हूँ। सिवाय इसके कि उनके पैर पड़ लें।

फाग राई पहेला की

बरसाने में खेंले होरी रे....
कोनां गांव के कुँवर कनैया, कोना गांव की गोरी रे।
नंदगांव के कुंवर कनैया, बरसाने की गोरी रे।
कै मन को रस रंगा घुरानो, के मन केसर घोरी रे।
नौ मन का रसरंगा घुरानो, दस मन केसर घोरी रे।
उड़त गुलाल लाल भये बदरा, मारत भर भर होरी रे।
बरसानें में खेंले होरी रे।

(श्री घनश्याम विश्वकर्मा, सटई रोड)

होली का पर्व है, बरसाने में होली खेली जा रही है। कृष्ण कहाँ के हैं? तथा किस गाँव की गूजरी है जो होली खेल रही है? नंदगांव के कृष्ण है तथा बरसाने की गूजरियाँ है। कितने मन रंग घोला गया? कितने मन केसर घोली गई? नौ मन रंग तथा दस मन केसर घोली गई। सारे ब्रज में हर जगह रंग गुलाल दिखाई दे रहा है। गुलाल के उड़ने से बादल भी लाल रंग के हो गये हैं। सब एक दूसरे को गुलाल फेंककर मारते हैं।

बना रस गेंदिया ने मारो, हमखों लाग जैहे रे।
हमखें लाग जैहे रे, गगर सर फूट जैहे रे।
गगर मोरी फूट जैहे रे, चुनर मोरी भीज जैहे रे।
चुनर मोरी भीज जैहे रे, सास मोरी रूठ जैहे रे।
सास मोरी रूठ जैहे रे, सो घर मोरो छूट जैहे रे।
घर मोरो छूट जैहे रे, करम मोरो फूट जैहे रे।

(श्री घनश्याम विश्वकर्मा, सटई रोड)

हे दूल्हे राजा! मुझे गेंदे का फूल मत मारो, वरना मुझे उसकी चोट लग जायेगी। मैं अपने

सिर पर गागर रखे हूँ, वह फूट जायेगी। अगर गागर फूटी तो उसके पानी से मेरी चूनर सराबोर हो जायेगी। मेरी भीगी चूनर तथा फूटी गागर को देख मेरी सासू गुस्सा हो जायेगी। वे मुझे घर से निकाल देंगी। मुझे घर से निकाला गया तो मेरी किस्मत ही फूट जायेगी। इसलिए मुझे गैंदा नहीं मारना।

होरी खेल रहे नंदलाल, मथरा की कुंज गलन में।
ग्वालों के संग मुरारी, सखियन संग राधा प्यारी।
झोरन में भरे गुलाल॥
बजत मृदंग निकारें, बीड़ादि सखी कर धारें।
अरू बजत झांझ करताल॥
छज्जन पै सखी निहारे, रंग लोटन भर भर डारे।
सब भींज रहे बृज ग्वाल।
करते हैं ताता थैया, नाचे श्री कृष्ण कनैया।
संग नाच रहे सब ग्वाल॥

(श्री घनश्याम विश्वकर्मा, सटई रोड)

नंदबाबा के कन्हैया मथुरा की कुंज गलियों में होली खेल रहे हैं। कृष्ण अपने ग्वाल बालों के साथ हैं तथा राधा अपनी सखी सहेलियों के साथ होली खेल रही हैं। कई तरह के वाद्य बज रहे हैं। घरों के छज्जों से स्त्रियाँ रंग भर-भर के डाल रही हैं। रंग की अधिकता से ग्वाल बाल भींग गये। कृष्ण ताता थैया करके नृत्य कर रहे हैं।

चौकड़िया फाग

द्वारे खड़ी राधिका रानी,
भरत चलत को पानी॥ द्वारे खड़ी.....
सिर पै घड़ा घड़े पै गागर,
चाल चलत मस्तानी॥ द्वारे खड़ी....
चली जात सखियन के संग में,
बोलत अटपट बानी॥ द्वारे खड़ी....
ईसुर कहत श्याम की दुलहन,
छवि न जाय बखानी॥
द्वारे खड़ी राधिका रानी।

(श्री अशोक गुप्ता, छतरपुर)

वृषभान राजा की लाड़ली बेटी राधा पानी भरने जा रही हैं, वे अपनी सखियों के द्वारे पर

जाकर खड़ी हो जाती हैं, सबसे पूछती हैं कि कोई पानी भरने चलो। राधा के सिर पर घड़ा उसके ऊपर एक और घड़ा रखा है तथा वे बड़ी मस्तानी चाल से पानी भरने जाती हैं। ईसुरी कहते हैं कि ये राधा तो मनमोहन कृष्ण की दुल्हन हैं, इनकी सुंदरता का वर्णन करने में हम असमर्थ हैं।

होरी खेलन आयो श्याम, याखों रंग में बोरो री।
याको रंग में बोरो री। होरी.....
कोर-कोरे घड़ा मंगाओ, केसर घोरो री।
लेकर हाँत गुलाल करो, सारे से घेरो री।
भर पिचकारी श्याम चलाई, चुनरी भींजी री।
राधा जी को गोरो मुखड़ा, कर दव कारो री।
ग्वाल बाल सखियन के संग, मिल खेलें होरी री।
एक दूजे के रंग में रंग गये, कर बरजोरी री होरी.......

(श्री अशोक गुप्ता, छतरपुर)

अरी ब्रजबालाओं! कान्हा होली खेलने आये हैं। आज हम इसे ही रंग में डुबा देंगी। पहले ऐसा करो कि नये घड़ा मंगवाकर उसमें केसर घोल दो तथा हाथों में गुलाल लेकर उसको घेरकर सब रंग गुलाल से सराबोर कर देंगी। लेकिन इससे पहले श्याम ने ही पिचकारी में रंग भरकर सब बालाओं पर चला दी। सब भींग गई राधा का सुंदर मुख तो काला ही कर डाला। कृष्ण अपने सखाओं के साथ मिलकर ऐसी होली खेलते हैं कि सब एक दूसरे के रंग में रंग जाते हैं।

जातीं नीर भरन जमुना के,
दैकें काजर बांके। जातीं.....
जोन खोरहो पैलां कढ़ गई, खिंच गये हते सनाके।
पांवपोस पायलिया पहने,
खिच गये उते सनाके। जातीं......
गंगाधर मोहन राधा के, बैठे बांदे नाके।
जातीं नीर भरन जमना के..... ।

(श्री अशोक गुप्ता, छतरपुर)

राधिका जी सोलह श्रृँगार करके यमुना में जल भरने को जाती हैं। एक तो विधाता ने उन्हें अपूर्व सुंदर बनाया है उसके साथ उन्होंने बड़ी-बड़ी आँखों में काजल भी लगाया था, सुंदरता में चार चाँद लगा लिये। जहाँ-तहाँ से वे जाती हैं वहाँ सन्नाटा छा जाता है। वे अपने पैरों में पाजेब तथा पायल पहने हुए हैं। पायल के घुँघरू चलने से बजते हैं। गंगाधर कवि कहते हैं कि कृष्ण तो उनकी पहले से ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे एक खास स्थान पर उन्हें मिलने को छिपकर बैठे हैं।

आवत मोरी गलियन में गिरधारी।
मैं तो मर गई लाज की मारी। आवत मोरी.....
कुसमिल पाग केशरिया जामा,
ऊपर फूली है डाली। आवत मोरी.....
मुकुट के ऊपर छत्र विराजे, कुंडल की छवि न्यारी। आवत मोरी.....
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल बलिहारी।
आवत मोरी गलियन में गिरधारी।

(श्री अशोक गुप्ता, छतरपुर)

गिरधर गोपाल मेरी गली में आ रहे हैं, मुझे तो बड़ी लाज आती है। वे अपने माथे पर कुसुम रंग की पाग बाँधे हुए हैं तथा केसरिया रंग का जामा पहने हैं। वे जहाँ से आ रहे है वहाँ पर वृक्ष फूलों से लदे हैं। कृष्ण के आने से फूलों की सुंदरता और बढ़ गई। उनके माथे पर मोर मुकुट तथा छत्र शोभायमान हो रहा है । कानों में कुंडल लटक रहे हैं। मीरा के तो गिरधर ही हैं जिनके चरणों की बलिहारी है।

चौकड़िया

ब्रज में राधा और गिरधारी, करत खुलाशा यारी। ब्रज में......
विगरे जान नेक न हटकें, उनके बाप मतारी। ब्रज में......
कै सुन लेव हुए कैवे खाँ, कये की नैयां गारी। ब्रज में......
अपनी अपनी जांगन में जुरके, छेड़ करे हों नरनारी। ब्रज में......
ईसुर कवऊ बजत न देखी, एक हाँत से तारी। ब्रज में....

(श्री अशोक गुप्ता, छतरपुर)

ब्रज में राधा और कृष्ण के प्रेम की चर्चा चहुँओर फैल गई है, वे अब खुलकर मिलने लगे हैं उनके माँ-बाप ने भी उन्हें बहुतेरा समझाया लेकिन वे नहीं मानते। कहने सुनने से क्या होता है। कोई अपशब्द नहीं है जो ये मानते नहीं है। ईसुरी कहते हैं कि यह तो दोनों तरफ की स्वीकृति है । अरे! कभी एक हाथ से कहीं ताली बजती है?

होली खेलें नंद को लाल, गोकुल की कुंज गलन में।
पूरब में राधा प्यारी, पश्चिम में कुंज बिहारी।
उत्तर दक्षिण गोपी ग्वाल। गोकुल की...
मैं खेल रही थी होली, मोरे सिर पै धरी मटोली।
मोरे मुख पे मली गुलाल। गोकुल की........
ऐसी मारी पिचकारी, मोरी भींगी सबरी सारी।

मैं तो हो गई लाल गुलाल।
गोकुल की कुंज गलन में।

(श्री अशोक गुप्ता, छतरपुर)

नंदराय के लाड़ले पुत्र कृष्ण अपने सखाओं सहित आज कुंज गलियों में होली खेल रहे हैं। पूर्व की तरफ से राधा आ गई तथा पश्चिम से कृष्ण आ गये। उत्तर दक्षिण से ग्वाल बाल तथा गोपियाँ आ गई। रही-सही कमी इन्होंने आकर पूरी कर दी। मैं अपने सिर पर दधि की मटकी रखे जा रही थी लेकिन उन्होंने वरजोरी कर मेरे मुख पर गुलाल लगा दिया। इसके अलावा रंग से भरी पिचकारी मेरी साड़ी पर मार दी, जिससे मैं रंग गुलाल से सराबोर हो गई।

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया
अपने-अपने घर से निकरीं, कोई गोरी कोई कारी रे रसिया। आज बिरज में......
बाजत ढोल मृदंग झांझरी, और नगाड़े की जोड़ी रे रसिया। आज.....
कोई-कोई गावै कोऊ बजावे, कोऊ हँसे दै तारी रे रसिया। आज.....
उड़त गुलाल लाल भये अंबर, कुमकुम की छव न्यारी रे रसिया।
आज बिरज में होरी रे रसिया।
रंग गुलाल की धूम मची है, मारत भर भर गोरी रे रसिया।
आज बिरज में होरी रे रसिया।

(श्री रामसींग, छतरपुर)

आज ब्रज में होली खेली जा रही है, ब्रज की होली तो ब्रज के रसिया श्रीकृष्ण तथा उनकी सखी राधा की लीलाओं के कारण ही इस लोक में चर्चित हुई है। यहाँ की होली तो ऐसी है कि जबरन ही हुरयारे सबको अपने रंग में रंग लेते हैं। ब्रज बालायें अपने-अपने घर से निकलती हैं। वह कुछेक गोरे रंग की कुछ सांवले रंग की हैं। होली के पर्व पर मृदंग,ढोल,झांझ,नगाड़े आदि वाद्य बज रहे हैं। सब नृत्य करते हैं तथा तालियाँ बजाते हैं। रंग गुलाल की अधिकता में सारा वातावरण रंगीन हो गया। आसमान भी लाल हो गया। रंग तथा गुलाल की धूम मची हुई है।

माला सोने की
झलक रई माला सोने की लाल।
लाला काहे की माला जो बनी,
कहां लगो तो मेला। झलक रई......
सुन्ने की माला जो बनी,
इतई लगो तो मेला। झलक रई.....

स्वर्ण माला की झलक अलग ही दिख रही है। ये माला किसकी बनी थी? कहाँ मेला लगा था? माला सोने की थी और यहीं मेला लगा था।

अरे हाँ सिपइरा तोरी प्रीत के कारने,
इते हो गई मुलक बदनाम। सिपइरा.......
मैं तो हो गई मुलक बदनाम। सिपइरा.......
अरे हाँ सिपइरा कौना दिशा बदरा भये,
अरे कौना बरस गये मेव। सिपइरा.....
अरे हाँ सिपइरा आगम दिशा बदरा भये,
अरे हाँ सिपइरा पच्छम बरस गये मेव। सिपइरा.......

अरे सिपाही! मैंने तुमसे प्रेम किया तो मैं सारे जहान में बदनाम हो गई। बादल किस ओर से आये तथा कहाँ बरस गये? बादल पूर्व दिशा की ओर से आये तथा पश्चिम में बस गये।

कब मधुबन में आवै कनैया, कब मधुवन में आवै लाल।
आवै आवै आवै कनैया, कब मधुवन में आवै लाल।
कारे काजर धौरे जोवन, लै-लै नाव बुलावै कनैया।
कब मधुवन में आवै लाल।

कान्हा मधुबन में कब आयेंगे। अपने नयनों में काजल लगाये हुए हैं। उनका यौवन गोरे रंग का है। कृष्ण उनका नाम ले-लेकर बुलाते हैं। कान्हा मधुबन में कब आयेंगे।

बरसानो कनैया न जानो।
गोकल में पकर जेहों जब, मानों कनैया बरसानो।
हम बेटी वृषभान राजा की, और गुजरिया न जानो।
बरसानो कनैया न जानो।

अरे कान्हा! तुम बरसाना न समझना। तुम्हें गोकुल में जाकर पकड़ लिया जायेगा तब तुम्हें बरसाना का अहसास होगा, क्योंकि मैं कोई ऐरी-गैरी नहीं हूँ। मैं वृषभान राजा की बेटी हूँ, इसलिये जो भी करो, सोच-समझकर करना।

लाली भरी मोय नैनन में,
सेमलिया आ जाव रे। लाली भरी मोय नैनन में।

मेरे नयनों में लाली छायी है। अरे श्याम! जरा मेरे पास तो आ जाओ, मेरी आँखें तुम्हें ढूँढ रही हैं।

साक हुरयाऊ फाग

कोना रे रच दये सिनसार, कोना रचे पांचई पांडवा।
पिया मारन गये कारी कोयलिया।
कोयलिया अरीये पिया मारन गये...
कोहल खों का मारियो, सो बिनमारी मर जाय।
सुआ हरामी मारिये, फिर कतरे गादर आम।
पिया मारन गये......
सुआ हरामी खों का मारिये,बिन मारे मर जाय।
बन के हिरना मारिये, जो करे बीज के हान।
पिया मारन गये....
बिन के हिरन का मारियो, बिन मारे मारे जाय।
गली के छैला मारिये, जो छेंके पराई नार।
पिया मारन गये.........

(नेंगुवॉ खरगा टोरा)

किसने यह संसार रचा? किसने पांडवों को बनाया है? कोयल को न मारकर तोते को मारना था। क्यों मारो, यदि मारना है तो वन के हिरन को मारो, जो फसलों को हानि पहुँचाते हैं। उन्हें भी नहीं मारना चाहिए, वे तो निरीह पशु हैं। अरे! मारना है तो उन्हें मारो, जो पराई स्त्री पर बुरी नजर रखते हैं।

फाग सुमरनी

अरे हाँ, देवा सेवा सुमारी ना जानों।
गनेशा, गरीबा निवाज, जू देवा,सेवा तुमारी न जानो।
काये के गनपत करो, का देंव उनें पौड़ाय। देवा....
अरे हाँ गोवर के गनपत करें, और देऊ पटा पौड़ाय। देवा....
अरे हां काये के भोजन करों, और देऊ कहा अचवाय॥ देवा.....
अरे हाँ दूदा भात भोजन करो, और गंगाजल अचवाय॥
देवा सेवा तुमारी न जानो॥

(श्री कुंजीलाल पटेल वसारी)

हे बुद्धिविनायक! हे विघ्नहरता गणेश देव! हम आपकी सेवा से अनभिज्ञ हैं। हमें आपकी पूजा की विधि नहीं आती, न हम आवाहन जानते हैं न विसर्जन। हम आपका पूजन करना चाहते है। हम गणेश किसके बनावें? कहाँ आपको स्थापित करें? गोबर के गणपति बनावें तथा पटा पर उन्हें स्थापित कर दें। उन्हें क्या भोग दें किसका आचमन करायें? उन्हें दूध भात का भोग दें तथा गंगाजल का आचमन करायें। हे देव! हम आपकी स्तुति नहीं जानते।

ढुढ़वा लइयो राजा अमान,
हमारी खेलत बेंदी गिर गई॥
सखी री मोरी कहना सहर की जा बेंदिया,
भला कहना धरी है रवार। हमारी.....
सखी री झांसी सहर की बेंदिया,
भला पन्ना की धरी है रवार। हमारी....

अरे महाराज अमान! मेरी बिंदिया ढुंढ़वा लें, वह खेलते में गिर गई थी। वह बेंदी कौन से शहर की बनी थी तथा उसके रत्न कहाँ के थे? झांसी से बिंदिया बनवाई थी तथा पन्ना के हीरे जड़वाये थे।

छंदयाऊ फाग

दोहा- *एक घरी में उड़त है, जो मन कितनी दूर।*
गुनी समज कें आप से, पूँछत प्रश्न जरूर॥

टेक- *जो मन कौन कमल पै रावै, कब आवै कब जावै।*

छंद- *इसका भेद बतायें जइयो, पूरी जोर पखुरियां कइयो।*
एकऊ छोड़ न भैया दइयो, गुण गानन में।
जब मन किस पखुरी पै जावै, तन में भाव बासना बावै।
केवल भाव कुभाव सुहावे, हँस बातन में।

उड़ान- *कौन दिशा में रहे पखुरिया, अलग-अलग हम चावै।*
कैसो रंग कौन पखुरी कौ, गुनजन भेद बतावै॥

टेक- *भाव भजन भक्ति करने को, कब मनुआ ललचावै।*

छंद- *जो मन किस पखुरी पै जाय, तासें बुरी भावना आय।*
अकरम करम करन की चाय, उपजै तन में।
काहे करें लड़ाई झगड़ा, मनका ओर जबर है तगड़ा।
धरकें किस पखुरी पर रगड़ा,विध उलझन में।

उड़ान- *कौन पखुरिया के ऊपर मन,उड़के ढंग दिखावै।*
नारी पुत्र मोह में फंस के,विषय भोग में रावै।

टेक- *तीरथ ब्रत करने की इच्छा , किस पखुरी में रावै।*

छंद- *कैसो उन पखरी कौ रंग, रहती कौन दिशा में दंग।*
करनों जौ पूरो पिरसंग, होवै जानो।

जब मन किस पखुरी पै गसता, तासें जीव मोह में हँसता।
तन में अति आनंद दरसता, सो पहचानो।

उड़ान- *कौन दिया में कौन रंग की, कौन पखुरिया रावै।*
कौन भाव उठत काया में, गुनी होय समजावै॥

टेक- *आलस नींद आय किस कारन, कारन सहित सुनावै।*

छंद- *जब मन कौन पखुरिया बीच, जावै बसकें ठौर नगीच।*
तासें उठे भावना बीच, बोलो कारन।
चिंता शोक कहां से जानी, कहां ज्ञान उठावै ज्ञानी।
कांसे ध्यान समारे ध्यानी, काया धारन।

उड़ान- *फट गये गाल लाल भये टाके, तांसे खैर मनावे।*
धीर वीर मोती पानन में, चूना अधिक लगावै।

कहरवा- *डारो तुमने यार, तैल की करैया में पानी।*

हमारा मन एक घड़ी में कितनी दूरी तय करता है? आपको बुद्धिमान जानकर आपसे पूँछ रहा हूँ। यह मन कौन से कमल पर रहता है, कब आता जाता है? यह सब मुझे बताना। यह भी कि जब मन में काम वासना जागृत होती है तो कहाँ रहता है? कब अच्छी बात के स्थान पर बुरी बातें मन में आती है? ईश्वर भक्ति के लिए मन में कब भावना जाग्रत होती है? कब यह मन लड़ाई-झगड़े पर आमादा होता है? तीर्थाटन का मन कहाँ होता है? किसलिए व्यक्ति मोह के जाल में फंसता है? कब आनंदित होता है? कब आलस्य तथा नींद आती है? कब चिंता शोक तथा ज्ञान आता है? यह सब हमें अलग-अलग समझाकर कहना।

सकि गौने खों आ गये बालमा
भैया नैया गौने जोग। सकि.........
कपड़ा मैले हो गये, छोड़े धोबी घाट।
चार दिना गोने रे गये, सो कहत घर जाब।
लाल लाल ढोला सजें। पचरंग सजे कहार। सकि.......
आंगू सो ढोला सजो, पीछू बराती लोग। सकि.......
सका सहेली सबरी रोबे, रोबे गांव के लोग।
बाप मतारी बिछड़न परे, हँसे बराती लोग। सकि......
गोनो गोनो सब कोउ कहे, गोने भले ने होय।
दास कबीरा कह गये, अबें गमन ने होय। सकि.....

(ग्राम- अमरमऊ)

अब अंत समय आया तो यमराज के दूत हमें लेने आ गये। जीव सोचता है कि अभी कैसे जायें, अभी उमर ही कितनी हुई जो ये लेने वाले आ गये? अब ये शरीर रूपी वस्त्र हमारे कार्यों से मैले हो गये हैं। इन्हें छोड़ना होगा, ये कपड़े यमराज रूपी धोबी को देने होंगे। जीवन जाने के पश्चात् अर्थी बनाई गई, उस पर मृतक को लिटाकर लाल रंग का वस्त्र ओढ़ाया जाता है। मृतक के स्वजन रूपी कहार उसे कंधों पर उठाकर श्मशान ले जाते हैं। उस समय सारे परिजन रोते हैं लेकिन जाने वाला तो चला गया, उसका गमन हो गया। कबीर दास जी कहते हैं कि गमन के लिये तो सब कहते हैं लेकिन यह आवागमन अच्छा नहीं होता। हम यदि प्रभु का आसरा लें तो फिर यह आवागमन नहीं होगा।

छंदयाऊ फाग (बहुल छंदयाऊ)

दोहा- *बरनत हों संक्षेप में, राम कथा कौ सार।*
ध्यान लगा सुनहें सुजन, मास तिथी दिनवार॥

सैर- *दिनवार सहित बरनत हें,कथा राम की।*
धर ध्यान सुनो यारो, है बड़े काम की।
भव सिंधु पार माला, कर देत नाम की।
ले डुला तनक अपनी, जा जीव चाम की॥

टेक- *जन्में नौमी खां रघुराई, चैत सुधी सुखदाई।*

लावनी- *सुखदाई प्रभु दशरथ के घर, जन्में माँ कौशल्या से।*
भरत लखन लेव जान,शत्रुघन कैकई और सुमित्रा से।
चारु भैया परम मनोहर, रूप रंग के हैं लासे।
चउदा बरसें बाल चरित कर, सुखी करें नर लीला सें।

छंद- *पंद्रा बरस के भये राम, विश्वामित्र गये नृप धाम।*
जिनको राम लखन से काम, नृप से मांगे।
सुनके दशरथ भये बेचैन,भर गये दुख में दोनों नैन।
ठांड़े करे कुंवर दोई ऐन, मुनिके आंगे॥

गारी- *मुनि संग चले जावैं दोऊ भैया, हँसत मुनि संग चले।*
मग में मिल गई निश्चरनी नार, दौरी इनखां निहार।
मुँह बड़के अपार, दई ताड़का संहार।
रघुनाथ भले रघुनाथ भले,
जावे दोऊ हँसत मुनि संग चले।

उड़ान– *प्रभु प्रताप लख मुनिवर हरसे, विद्या सकल सिखाई।*
दस दिन मुनि आश्रम में रहकें, निश्चर करें सफाई॥

दोहा– *बनो कपट मारीच मृग, रावण जोगी आय।*
माघ शुक्ल आठें तिथि, हरि जानकी जाय।

सैर– *मघ बीच पाओं प्रभु ने अधमरो जटाई।*
सुन समाचार ताकी फिर मुक्ति बनाई।
सुग्रीव संग हनुमत करवाई मिताई।
वध वालि करो राम मिलन तारा आई॥

टेक– *चौमासो गत होत राम ने, सीता खोज कराई।*

लावनी– *अगहन तिथि द्वादस, सागर हनुमान कर पार गये।*
भेंट सिया से लंका में, कनक कंगूरा जार दये।
सात रोज में जाकें प्रभु से, सीता के सब हाल कहे।
लगत पूस की दसें तिथि, नल नील सेत को बांध रहे।

छंद– *परिवा माव कृष्ण की पावन, अंगद गये रावन समझावन।*
लौटे मानो न जब रावण, तब युद्ध ठनो।
निश्चर बीन बीन कुल मारा, चउदस चैत शुक्ल पखवारा।
तादिन राम जगत करतारा, लंकेश हनों।

गारी– *सुख छाय रहो देवतन में, फूल बरसाये, सुख छाय रहो।*
लाये विभीषण है सीता लुवाय।
सीता लुवा दई राम गहाय, राजलंका की पाय, रस रंग बहो।
रस रंग बहो देवतन नें, फूल बरसाये, सुख छाय रहो।

उड़ान– *सहित समाज राम घर आये, खुशी अवधपुर छाई।*
खेलसिंह वैशाख सप्तमी, गद्दी प्रभु ने पाई।

मैं रामकथा का संक्षेप में वर्णन करता हूँ आप सब ध्यान देकर सुनें। रामकथा दिन तथा तिथि के अनुसार वर्णित करूँगा। रामकथा हमारे बड़े काम की है यदि हम चमड़े की जीभ से राम का स्मरण करें तो वे हमें इस भवसागर से पार करा देते हैं। चैत्र सुदी नमी को श्रीराम का जन्म हुआ, वे अयोध्यापति दशरथ के पुत्र माता कौशल्या की कोख से जन्में थे, उनके अनुज लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न थे। वे चारों भाई रूपवान तथा गुणवान थे। श्रीराम जी चौदह वर्ष को वन गये और उस अवधि में लीला रची, जिसे सुनकर रानियों को हर्ष हुआ। जब श्रीराम पन्द्रह वर्ष के थे तो मुनि विश्वामित्र उन्हें लेने अयोध्या आये। पहले तो महाराज दशरथ को राम लक्ष्मण

को संग भेजने डर लगा रहा था लेकिन मुनि के समझाने पर वे राजी हो गये। मुनि के साथ जाकर दोनों भाईयों ने ताड़का आदि राक्षसों का संहार किया। मुनियों को राक्षसों से भय युक्त किया। तत्पश्चात् रावण के कहने पर मारीच कपट मृग बना। रावण ने योगी का रूप रखकर सीता का अपहरण माघ शुक्ल अष्टमी को किया। श्रीराम लक्ष्मण ने आकर देखा कि जटायु मरणासन्न पड़े थे, उनसे सीताजी की जानकारी ली। जटायु को मुक्ति प्रदान की। ऋषिमूक पर्वत पर जाकर हनुमान तथा सुग्रीव से राम की मित्रता हुई राम ने बाली वध किया। चार मास बीतने पर हनुमान ने सीता का पता लगाया। नल नील ने सेतु बांधा। प्रभु राम के साथ वानर सेना लंकापुरी गई। अगहन की द्वादसी को हनुमान ने रावण की लंका जलायी। माघ की परिवा को अंगद रावण को समझाने गये, जब रावण नहीं माना तो श्रीराम-रावण का युद्ध होने लगा। युद्ध में समस्त राक्षसों का संहार हुआ तथा चैत्र शुक्ल चतुदर्शी को रावण वध हुआ। प्रभु श्रीराम ने रावण वध किया तो स्वर्ग में देवता हर्षित हुए उन्होंने पुष्प वृष्टि की। राम ने विभीषण को लंका का राज्य दिया तथा सीता को लेकर अपने स्वजनों सहित अयोध्या आये। अयोध्यावासियों ने खुशियाँ मनाई। खेतसिंह जी कहते हैं कि बैशाख की सप्तमी को श्रीराम जी का राज्याभिषेक हुआ।

श्याम बने मनहारी ब्रज में।
घर घर देखें नारी ब्रज में।
अपने घर से चलो है कनैया,
घर घर फिरे मुरारी। ब्रज में......
बिंद्रावन की कुंज गलन में,
चुरियां पैरो हमारी। ब्रज में.......
ऊँचे अटा चढ़ टेरे राधका
इते आ चुरियन बारे। ब्रज में......
हीरी पीरी मोय पैरा दे
लगों पिया खों प्यारी। ब्रज में......
पकर बांह पैराउन लागे,
लाल हरीरी कारी। ब्रज में.......
चंद्र सकि मोहन को झगड़ो,
बाह पकड़ आ जावै। ब्रज में......

(ग्राम- नेंगुवाँ)

एक समय कृष्ण ने मनिहारी बनकर ब्रज में अपनी लीला की। वे मनिहारी अर्थात् चूड़ी बेचने वाली स्त्री बन गये। चूड़ियाँ लेकर घर-घर घूमते थे। कुंज गलियों में चूड़ी पहनने के लिये आवाज देते, सब स्त्रियों को चूड़ियाँ पहनाते। राधा ने अपने घर की छत से उन्हें आवाज दी कि- अरी चूड़ियों वाले! मेरे घर आओ, मुझे चूड़ी पहनना है। मुझे तू रंगबिरंगी चूड़ियाँ पहना देना,

जिससे मैं अपने पति को अच्छी लगूँ। कृष्ण राधा की बांह पकड़कर उन्हें चूड़ियाँ पहनाने लगे। चंद्रसखी कहते हैं कि ये तो कृष्ण राधा की लीला थी, जो सबको दिखा रहे थे।

हुरयाऊ फाग

अरी ऐ सकि सोचन में सूक गये बालमा,
करजा की कठन मरोर। सकि........
गोउ हते सो नुन लये, सिला गये ते बीन,
टोटे में टलवा गये सो बट्टे में खगवाँर। सकि.....
दूद भात की थारी परसी शक्कर दई बिरराय,
जब करजा की जा सुध आवे सो टाठी दई सरकाय। सकि.....
लोहे की पंपा बनो जल की परी पपेट,
जल्दी टिकट काट दे बाबू फिर कड़ी जात है रेल।
सकि सोचन में सूके बालमा।

(ग्राम- खरगाटोरा)

अरी सखी! मेरे पति तो कर्ज होने के कारण दिन पर दिन दुबले होते जा रहे हैं, यह कर्ज तो बड़ा रोग है। फसल आने पर गेहूँ की कटनी हो गई, खेत में पड़ी बालों को भी बीन लिया गया। कर्ज में बूढ़े बैल बिक गये तथा ब्याज में मेरे गले की हंसली बिक गई। एक बार मैंने उन्हें थाली परोसी, उसमें दूध भात परोसकर ऊपर से शक्कर डाली, वे खाने बैठे लेकिन जब कर्ज की याद मन में आई तो वैसी की वैसी थाली सरकाकर उठ गये। यह कर्ज तो बड़ा भारी रोग बन गया, जिसके कारण वे दुबले हो रहे हैं।

खड़ी फाग

नई आई नार खेले होरी, नई आई नार खेले होरी।
पैली जा होली कुअल बिच खेली, ढीमर ढिमरिया की जोड़ी।
दूजी होली तला बिच खेली,धोबी धुबनिया की जोड़ी।
तीजी होरी बाग बिच खेली, माली मलनिया की जोड़ी।
चौथी होरी महल बिच खेली, राजा और रानी की जोड़ी।
पांचवी होरी अंगन बिच खेली, देवरा भौजाई की जोड़ी।
नई आई नार खेले होरी॥

एक स्त्री का नया गौना हुआ है वह पहली बार ससुराल में आकर होली खेल रही है। पहली होली कुँआ पर खेली, पानी भरने के समय उसकी ढ़ीमर-ढिमरन की जोड़ी बनी। दूसरी

बार तालाब पर खेली तो धोबी-धोबिन की जोड़ी कहलायी। तीसरी होली बगीचे में खेली तो माली मालिन कहलायी। चौथी बार घर आकर होली खेलने पर राजा रानी की जोड़ी हुई। पांचवी होली आँगन में खेली तो वह देवर-भाभी के बीच की होली थी।

लपेड़ा की फाग

चंदरमा राखे बिलमाय, पिया बिन होरी को खैले।
पैलो पारो लागो रैन कौ, बन चर आई गाय।
उठो पिया तुम लेव दुहनियाँ, गैया लेव लगाय॥
दूजो पारो जब लागो रैन को, दियला मांगे तैल।
आलस मांगे जे दोई नैना, जुबना छाती मेल।
तीजो पारो लागौ रैन को, नटवा टोरी नाथ॥
सोउत पिया मोरे कौन जगाये, धरें जुबन पै हाँत।
चौथो पारो लगो रैन को, मुरगा दीनी बाँग।
उठो पिया तुम पाग समारो, हमई समारें मांग।

चन्द्रमा ने उन्हें रोक लिया है अब पति के न होने पर मैं होली किसके साथ खेलूँ? रात्रि के समय पहले पहर में वन से लौटी गाय को दुहना है। हे पतिदेव! जाकर उसे दुह लो। रात्रि के दूसरे पहर में दिया का तेल खत्म हो रहा है लेकिन आलस्य के कारण उठा नहीं जाता तथा इस समय यौवन में कसक उठती है। तीसरे पहर में तो मन बेकाबू हो रहा है लेकिन वे सोये हैं उन्हें कौन जगाये? रात्रि के अंतिम पहर में मुरगा ने बांग दी अब आप उठकर अपनी पगड़ी सिर पर रखें, मैं उठकर अपनी मांग ठीक कर लूँ।

दोहा- *समय बहुत थोड़ा रहा, कीन्हा कृष्ण विचार।*
सेवक प्रण को आ गयो, मोरे ऊपर भार।

सोरठा- *सुदर्शन तान, भानु छिपायो ता समय।*
मन में करत ग्लान, मरन हेतु दई रच चिता॥

सैर- *बैठक की चिता मांही, वह सामू आया।*
कर रहा हँसी आके, जिन गर्व बताया॥
तब चक्र हटा ब्रजपति ने भान दिखाया।
पारथ नें पाय आज्ञा, रिपु तुरत गिराया॥

छंद- *मारो बैरी को तत्काल, राखी टेक श्रीनंदलाल।*

ये हैं कमल ब्यूह का हाल, सुनलो यारो।
जिनको हो गाने की शान, जे नये तर्ज बखाने आन।
अपने राखे न अरमान, कोई फगवारो।

उड़ान– *दंगल में अब खेतसिंह नें, छयालीस रंग सुनावै।*
बिना जोड़की फाग दूसरी, नहीं सभा में गावै॥

कृष्ण ने देखा कि अर्जुन ने सूर्यास्त होने के पूर्व अगर जयद्रथ को नहीं मारा तो अर्जुन चिता में जल जायेंगे। यह प्रतिज्ञा की थी अतः उन्होंने सोचा कि मेरे भक्त अर्जुन की सहायता ही कर दूँ। उन्होंने अपना सुदर्शन चक्र चलाना शुरू किया, उस समय सूर्य को सुदर्शन की ओट में कर लिया, यहाँ अर्जुन ने अपनी चिता तैयार कर ली थी। जयद्रथ ने जाना कि सूर्यास्त हो गया है इसलिए वह हँसता हुआ निकल आया। उसी समय प्रभु श्रीकृष्ण ने चक्र को सूर्य से अलग कर लिया। सूर्य पुनः दिखने लगा। अर्जुन ने कृष्ण की आज्ञा पाकर जयद्रथ को मार डाला। कृष्ण तो अपने भक्तों की हर समय रक्षा करते हैं।

फाग महाभारत की

दोहा– *द्वापर कौ चौथे चरन, चौथे को चौथ्याव।*
ताकौ आधो कीजिए, मन में जोड़ लगाव।

सो.– *मन में जोड़ लगाव, सहस दस कम कर भाई।*
इतने दिना बिताय, भये सांतन नृप आई।
रखना इस पर ध्यान, कथा भारत की गाता।
द्वापर का विस्तार सुनो, मैं तुम्हें सुनाता।

टेक– *सुनिये महाभारत विस्तारा, जो मुनि व्यास उचारा।*

छंद– *जो मुनि व्यास कथा को गाई, इक दिन देव पुरी आई।*
अष्टवसु ने गऊ चुराई, खुल भेद गयो॥
दीन्ही है वशिष्ट ने श्राप, नरतन भोगों जानें आप।
तुमने कीनो ऐसो पाप, सोई भोग लये।

दोहा– *तब देवन नें पूस में, कह गंगा से जाय।*
अष्टवसु को शाप भई, तुम ही होव सहाय॥

छंद– *गंगा बनके फौरन नारी, आई सानातन ढिग प्यारी।*
बोली दासी बनों तुम्हारी, उन राख लिया॥
तिनसें भीषम का अवतार, सुंदर माघ का महीना यार।
सुनिये अब आगे विस्तार, जो हाल किया॥

दोहा- *पारासर इक दिन सुनो, गए नदी के पार।*
मच्छोदर से नत किया, भयो व्यास अवतार॥

छंद- *उसका दिया कलंक नसाई, ब्याही सो संतन घर जाई।*
जन्मैं दो सुत सुंदर भाई, भीषम भ्राता॥
तिनसें कीन्हौ ब्याह पिता का।
ठहरे तीस वर्ष निज धामा, हो गए अंत गए सुरधामा॥
नहीं सुत ज्ञाता॥

दोहा- *तब बुलवायो व्यास को, दृष्टि भोग उन कीन्ह।*
पाण्डु और धृतराष्ट्र में, फागुन कला नवीन॥

छंद- *बीते बीस वर्ष सुखदाई, कुंती पांडु के घर आई।*
दूजे कहो गांधारी माई॥ हो ब्याह गयो॥
कुंती के सुत पांच बताये, एक सौ एक गंधारी जाए।
ऐसे कुरू पाण्डव कहलाये। सुन हाल लयो॥

उड़ान- *पाण्डु सुतन हैं अति बली, दुर्योधन गुन हारा।*
अगर सयाने हो गए, वे हैं राज्य हमारा॥
सुनिये महाभारत॥

टेक- *लाख भवन रच दियौ चैत में, राखों कर सहकारा॥*

छंद- *ठहरे लीन मास सुखदाई, एक दिन कुरूपति आग लगाई।*
चूँ-चूँ गिरे लाख दुखदाई, सब निकल भए॥
बोले अब सहदेव विचारी, जुगति हो तो जल्द निकारौ।
नई तर मरना होय हमारा, उन गणित लये।

दोहा- *कर विचार बोलत भउ, खम्ब उखारै भीम।*
यह सुरंग बाहर गई, बचने की स्कीम॥

छंद- *पूरी रात भीम यह कीन्हा, खम्भा खैच फैक उन दीना।*
सबने जल्दी मारग लीना, जब देश दिया॥
घूमें ब्राह्मण भेष बनाकें, भोजन करते भिक्षा लाकें।
बीते तीन साल कहौ गाकै, प्रभु ख्याल किया॥

दोहा- *द्रुपद राज पंचाल कौ, सुता स्वयंवर कीन।*
देश-देश पाती दई, प्रण आषन लिख दीन॥

छंद- *नीचे भरा कराही तैल, ऊपर है चक्कर बघ मेल।*
आंगे टंगी मीन यह खेल, सुनिये भाई॥

मारै मीन नयन जो वान, सोई शूरवीर बलवान।
ब्याही जाय द्रोपदी रानी, करौ मनसाई॥

दोहो- कृष्ण संदेशा दे दिया, पाण्डव पहुंचे धाय॥
परमा को वैशाख में, पारथ दियो गिराय॥

छंद- गिरतन मीन द्रोपदी पाई, माता को जा जति बताई।
बोली लैलो पांचो भाई, कही अन्जानै॥
शादी भई पाँचों के संग, शायद भूल न जाना रंग।
तेरी कैसी मिटी उमंग, करलेव जाने॥

उड़ान- पता पाय धृतराष्ट्र ने, भेज दिया हलकारा।
लागत जेठ तीज को आकें, पाण्डु देश पग धारा।

टेक- सात साल तक रहे सजब सब, बाढ़ों बिरोध अपारा।

छंद- इक दिन कुरूपत मनय विचारा, इनका कीजे देश निकारा।
तब तो चौसर का विस्तारा, रख दाव दिया॥
जो कोई हारै सुनियों भाई, बारा साल जाय बन धाई।
कोई पता सकै ना पाई, प्रण कठिन किया॥

दोहा- तबै युधिष्ठर हार गए, चले चौथ शिरनाय।
अपना भेष छिपायकें, रहे विराट पुर जाय॥

छंद- तहं पर बारह साल बितायो, कुरूपत इनका पता लगायो।
सैना लेकर गाय हकायो, पाँचे के दिन॥
जोधा बड़े बड़े बलधारी, भीषम करण द्रोण धनुधारी।
उ संग अर्जुन करी तैयारी, दल घेरे इन॥

दोहा- भयो भयानक समर तहं, पारथ ने जय कीन।
कुरूपत सैना के सहित, छट कौ मारग लीन॥

छंद- आए पूरी साल बिताकें, पहुंचे पुरी हस्तना धाके।
अषड़ा लागो है सुख पाकै, सातें जानो॥
साबन रह कर तहां बितायो, करना पंचायत मन भायो।
इनके ब्यास कृष्ण बुलवायो, कहना मानौ॥

दोहा- आठें को लागी सभा, कीन्हों बहुत उपाय।
पाँच ग्राम दींहे नहीं, हारे सब समझाय॥

छंद- तासे युद्ध करन की ठानीं, जोधा बुलवायें मनमानी।

भादों में सेना सन्नानी, जुर वीर रहे॥
आए सात छौहनी इनके, ग्यारह छौ कुरूपत के गिनके।
कोई संत हते ना मिनके, नहिं सुनत कहे॥

उड़ान– *क्वाँर गयो करते जतन, तब मन माँह बिचारा ।*
हूहे जौन रचो विधिना ने, करियां समर करारा॥

टेक– *नौयी को सब साज लई, तब सहदेव विचारा॥*

छंद– *दसमीं रात खंभ गढ़वाये, एकादशी दोऊ दल आए।*
अर्जुन को माधव समजाये, उन शस्त्र लिया॥
कातिक मईना लीजे जान, भीषम पारथ का मैदान।
दस दिन कीन्हा युद्ध महान, सोई गाय दिया॥

दोहा– *अगहन महिना जानियों, पाँचे कौ परमान।*
भीषम सर सैया लई, छोड़ दिया मैदान॥

छंद– *छट से गुरू द्रोण रन ठाना, झारौ तीन दिना मैदाना॥*
जूझे बड़े-बड़े बलवाना, सुन लेव सबै॥
अगहन नौमी को विस्तारा, गुरू को द्रुपद पुत्र ने मारा॥
दसमी आय करन ललकारा, जुर गए सबै॥

दोहा– *करन पाँच दिन रण किया, फिर पहुंचे सुरधाम।*
शल्य परीक्षा के दिना, खूब कियो संग्राम॥

छंद– *भागो दुर्योधन छत धारी, जल में घुस गव जान बचायी।*
मारो भीम ताह बलधारी, ना बच पाए॥
द्रोणी द्रुपद पुत्र हन डारे, कींहा दोज को समर किनारे।
पाई विजय पाण्डु सुत त्यारे, ऐसी गाए॥

दो– *फूले- फूले फिर रहे, लिखें तीन ठां फाग।*
मुहरा आकै ले लिया, अब जाओगे भाग॥
होवै जौन गुनी का लाला, उत्तर कहै सभा में आला।
जिसमें कोई परै ना चाला, ऐसी गावै॥
कहना महाभारत विस्तार, संग में महिना औ तिथिवार।
नहितो लिखौ सभा में हार, क्यों इतरावै॥

उडान– *गुनियां वन के आ गये, मुहरा लिया हमारा।*
माऊ गान करत दंगल में, देत मुनीजन हारा॥ (सुनिये....... ॥)

(कन्हैयालाल पाठक, लौंड़ी)

द्वापर युग का चौथा चरण था और चौथे का भी चौथा या उसका आधा करके जोड़ लगाइये, जोड़ लगाकर दस सहस्त्र कम करें। इतना समय बीतने के पश्चात् महाराज सांतनु का जन्म हुआ। आप ध्यान देकर सुनें यह कथा महाभारत की है। द्वापर युग के विस्तार में ही यह कथा शुरू हुई थी।

आप सब महाभारत को विस्तार से सुनिये जो कि महर्षि वेदव्यास के द्वारा कहा गया था। एक समय अष्टवसु अपनी पत्नियों समेत घूमने निकले, वे सब चलते हुए मुनि वशिष्ठ के आश्रम के निकट पहुँच गये। आठवें वसु की पत्नि ने देखा कि मुनि वशिष्ठ की नंदनी गाय अपने बछड़े के साथ घूम रही है। उन्होंने सुंदर गऊ को देखा तो वे अपने पति से बोली कि मुझे यह गाय चाहिए। वसु ने कहा कि– हम गाय का क्या करेंगे? वसु पत्नि ने कहा कि मैं अपनी एक सखी को गाय देना चाहती हूँ। पत्नि के ज्यादा आग्रह पर वसु ने नंदनी गाय चुराने की योजना बना ली। उन्होंने नंदनी को चुराया, इसकी जानकारी ऋषि वशिष्ठ को हुई तो उन्होंने वसुओं को श्राप दिया कि तुम सब मनुष्य योनी को प्राप्त हो जाओ। ऋषि शाप से मुक्ति हेतु वसुओं ने उनसे प्रार्थना की इस पर वशिष्ठ मुनि ने कहा कि सात तो शीघ्र ही मनुष्य योनी से मुक्त हो जायेंगे और आठवां जिसने नंदनी चुराने की योजना बनाई थी, उन्हें ज्यादा समय तक मनुष्य योनी में रहना होगा और वे आठवें वसु गंगा पुत्र भीष्म हुए।

आठ वसुओं को श्राप था कि मनुष्य तन को प्राप्त होंगे, उन्होंने गाय को चुराने का पाप किया था। उनके शाप परिमार्जन हेतु देवता गंगा के समक्ष गये। गंगाजी ने उनकी बात मान ली। वे स्त्री बन गई और बाद में उनकी महाराज शांतनु से भेंट हुई तो उन्होंने महाराज की पत्नि बनना स्वीकार किया उनके गर्भ से आठों वसुओं ने जन्म लिया। सात को जन्मते ही गंगाजल में फेंक देती थीं। आठवें को जब ले जाने लगी तो महाराज शांतनु ने उन्हें टोका तो वे अपनी शर्त के अनुसार वापस चली गई। भीष्म का जन्म माघ में हुआ था। शांतनु का दूसरा विवाह सत्यवती से हुआ, उनके दो पुत्र चित्रांगद तथा विचित्रवीर्य हुए। विचित्रवीर्य की दो रानियाँ थी अम्बिका और अम्बालिका। अम्बिका से घृतराष्ट्र तथा अम्बालिका से पाण्डु हुए। बीस वर्ष पश्चात् धृतराष्ट्र का विवाह गंधारी तथा पाण्डु का विवाह कुंती से हुआ। पाण्डु की दूसरी पत्नि मादरी थी। पाण्डु के पाँच पुत्र तथा धृतराष्ट्र के एक सौ एक पुत्र हुए। वे पाण्डु के पाँडव तथा धृतराष्ट्र के कौरव कहलाये। पाँडव तो सर्वगुण संपन्न थे, कौरव पाण्डवों से द्वेष रखते थे। दुर्योधन तो पाण्डवों को अपना शत्रु मानता था, वह हमेशा यही सोचता कि सारे राज्य का आधिपत्य उसे ही मिले। दुर्योधन सदैव पाण्डवों को समाप्त करने की तरकीब सोचता रहता था। एक समय उसने अपने मामा शकुनि एवं कर्ण की कुमंत्रणा से एक क्रूर योजना बनायी, उस योजना के तहत पाण्डवों को वरणावत के मेले में जाने के लिए राजी करना यह कार्य धृतराष्ट्र ने किया, जब पाँडव वारणावत जाने को तैयार हुए तो उनके ठहरने के लिए एक ऐसा खूबसूरत महल बनवाया जो सन,घी,लाख चरवी आदि शीघ्र आग पकड़ने वाली चीजों से बना था। लाक्षागृह उसका नाम दिया गया। पाण्डव जैसे ही वारणावत पहुँचे उन्हें लाक्षागृह में रुकवाया गया। महल बहुत आकर्षक था

सर्वसुविधा युक्त भी था। लाक्षागृह चैत्र में बनाया गया था। एक रात्री पाण्डव भवन में विश्राम कर रहे थे उनके साथ माता कुंती भी थी। दुर्योधन ने भवन में आग लगवा दी। भवन धू-धू कर जलने लगा। पाण्डवों को जब इसका भान हुआ तो सहदेव से पूछा कि भैया आप ज्योतिष के आधार पर बताओ कि अब हमें क्या करना चाहिए? वरन् हम तो इस मायावी भवन में जलकर समाप्त हो जायेंगे। सहदेव ने कहा कि यहाँ एक खम्बा है इसे उखाड़ने पर उसमें सुरंग होगी उसी सुरंग के द्वारा हम बाहर जा सकेंगे। भीम ने खंभा उखाड़ दिया। उसके नीचे सुरंग थी, उसी रास्ते से पाण्डव तथा कुंती निकलकर बाहर आये। उन्होंने विचार किया कि अब अगर यहाँ रहे तो दुर्योधन किसी न किसी तरीके से हमें मरवा देगा अत: इससे अच्छा होगा कि हम राज्य ही त्याग दें। वे सब ब्राम्हणों के वेष में रहने लगे तथा भिक्षा मांगकर समय व्यतीत करने लगे। इस तरह से तीन साल व्यतीत किये। ब्राम्हण वेषधारी पाण्डवों को पता चला कि पांचाल देश के राजा द्रुपदराज ने अपनी कुमारी का स्वयंवर रचा है। पाण्डव तो एकचक्रा नगरी में रहते थे। पाण्डवों ने सोचा कि स्वयंवर का तमाशा देखने चलें तथा ब्राम्हण होने के नाते वहाँ से दान भी मिल जायेगा। कुंती से आज्ञा माँगी तो वे भी एकचक्रा नगर से पांचाल देश जाने को सहमत हो गई। स्वयंवर में देश-विदेश के राजा महाराजा आये थे। स्वयंवर स्थल में काफी ऊँचाई पर एक सोने की मछली टंगी थी। नीचे एक विशाल धनुष रखा था। नीचे एक कड़ाही में तेल खौल रहा था, मछली गोल यंत्र के मध्य घूम रही थी। शर्त यह थी कि जो धनुष से घूमते यंत्र में मछली को लक्ष्यभेद कर देगा, द्रोपदी उसी को वरमाला पहनायेगी। स्वयंवर में कौरव के सौ बेटे, अंगराज कर्ण, श्रीकृष्ण, शिशुपाल, जरासंघ तथा अन्य अनेक वीर क्षत्रिय उपस्थित थे। मंगल वाद्यों का निनाद चारों दिशाओं को गुंजा रहा था। श्रीकृष्ण को पाण्डवों की जानकारी थी, अत: पहले से ही उन्होंने पाण्डवों को संदेश पहुँचा दिया था कि उन्हें स्वयंवर में आना है। जैसे ही स्वयंवर की प्रक्रिया शुरू हुई तो एक-एक करके समस्त क्षत्रिय कुमार आये लेकिन किसी से भी लक्ष्य भेद नहीं हो सका। अंत में श्रीकृष्ण के इशारे पर ब्राम्हण वेषधारी पाण्डु पुत्र अर्जुन आये, उन्होंने धनुष उठाकर लक्ष्यवेध किया तो निशाना सीधे मछली की आँख पर लगा, सभा में शोर हो गया। द्रोपदी ने अर्जुन के गले में माला पहना दी। स्वयंवर के पश्चात् पांडव घर लौटे तो माता कुंती से पूछा कि हमें कोई उपलब्धि हुई है तो इसपर अनजाने में कुंती ने कहा कि पाँचों भाई उसे ले लो, माँ के आदेश पर द्रोपदी पाँचों पांडवों की पत्नि हुई।

स्वयंवर में अर्जुन को सबने पहचान लिया था जब इसकी जानकारी कुरूपति धृतराष्ट्र को हुई तो उन्होंने पाण्डुपुत्रों को बुलवा भेजा। ज्येष्ठ तृतीया को पाण्डव अपने देश में पहुँचे। सात वर्ष तक वे साथ रहे लेकिन कौरवों की कुमंत्रणा तो चलती ही रही, किसी न किसी तरीके से पाण्डवों को रास्ते से अलग करना था। दुर्योधन तथा शकुनि ने मंत्रणा की कि बगैर युद्ध के पाण्डवों को रास्ते से अलग किया जा सकता है। उस योजना के तहत धृतराष्ट्र के द्वारा युधिष्ठर को चौसर खेलने हेतु आमंत्रित किया गया। महाराज के आमंत्रण पर पाँचों भाई तथा पाँचाली द्रोपदी आये। अगले दिन चौसर का खेल (द्यूत क्रीड़ा) शुरू हुआ। शकुनि कौरवों की तरफ से

बैठा था। बाजी जब शुरू हुई तो युधिष्ठर का हारना शुरू हो गया। धीरे-धीरे राजपाठ खजाना, अपने पाँचों भाई, स्वयं को तथा अंत में द्रोपदी की भी बाजी लगा दी और सब कुछ हार गये। सब कुछ हारने के उपरांत इनका देश निकाला हो गया। बारह वर्ष के लिए पांडव चुपचाप सिर नीचा किये वहाँ से चल दिये । एक वर्ष का अज्ञातवास राजा विराट की नगरी में था। पाण्डव अपने को छिपाकर रह रहे थे तथा विराटराज के यहाँ नौकर बने हुए अलग-अलग कार्य करते रहे। दुर्योधन ने पता लगा लिया कि पांडव कहाँ पर है। चौसर में हारने पर शर्त यह रखी गयी थी कि अज्ञातवास के दौरान अगर पांडवों की जानकारी मिल गई, तो फिर से बारह वर्षों को जाना पड़ेगा। अब चूँकि दुर्योधन को पता चल गया था कि पांडव विराट नगरी में है तो दुर्योधन ने सेना सुसज्जित कर विराट राजा के यहाँ युद्ध की ठान ली। कौरव सेना में भीष्म, द्रोण, कृप, कर्ण आदि बड़े-बड़े महारथी थे। सेना ने विराट राज की गायों को घिरवा लिया। पांडवों को पता चला तो अर्जुन ने युद्ध करके कुछ सेना को खदेड़ दिया। बारह वर्ष व्यतीत करके पांडव हस्तिनापुर वापस आ गये। असाढ़ मास में वे हस्तिनापुर आये तथा श्रावण तक रहे, तत्पश्चात् मुनि व्यास तथा कृष्ण को बुलवाया गया। सभा हुई कौरव पांडवों को कुछ देने को तैयार नहीं थे। कौरव उन्हें पाँच गाँव देने को भी तैयार नहीं हुए। सारे सभासदों ने समझाया लेकिन अंत में उन्होंने कहा कि सुई की नोंक के बराबर भूमि हम पांडवों को नहीं देंगे। इसके पश्चात् युद्ध के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था, अत: युद्ध का ही तय हुआ, भाद्रपक्ष में सेनायें एकत्रित होने लगी।

पांडवों की सात अक्षौहणी सेना थी, कौरवों की ग्यारह अक्षौहणी सेना थी। इसी तरह से चलते-चलते क्वांर आ गया। नौमी को सेना सजवाई गई, दसमी को रात्री में खंभ गाड़ा गया। एकादशी को दोनों दल आये। अर्जुन के साथ में वासुदेव कृष्ण थे। कार्तिक में भीष्म तथा पार्थ का युद्ध हुआ। अगहन में भीष्म को वाणों की सैया में लिटा दिया गया। फिर गुरू द्रोण मैदान में आये। महाभारत के युद्ध में बड़े-बड़े महारथी खेत रहे। अगहन में द्रुपद राज के पुत्र दृष्टधुम्न ने गुरूद्रोण को मार दिया। फिर कर्ण का संग्राम होने लगा। कर्ण को अर्जुन ने मारा। शल्य ने भी बड़ा भारी संग्राम किया। दुर्योधन भीम का युद्ध हुआ तो दुर्योधन जल में छिप गया लेकिन अंत में भीम ने दुर्योधन को मार डाला। इस तरह से पांडवों को महाभारत में विजय प्राप्त हुई।

दोहा- *हरी भूम सब बन हरो, सावन को त्यौहार*
आज राधिका ने कियो, हरौ-हरौ सिंगार॥

छंद- *पैरी हरियल तन में सारी, श्रीबृषभान दुलारी।*
चोली हरी हरो सिर बूंदा, हरी बिचौली धारी।
हरी हरी बहियन में चुरियां, हरी पिचौरी न्यारी।
हरी हरी मड़ियन की माला, सोहै उर में प्यारी।
माधौसिंह कहे राधा जू खों, मोरये देख मुरारी।

(श्री राजेंद्र यादव-छतरपुर)

श्रावण का महीना है सर्वत्र हरियाली है, लेकिन आज राधिका जी ने हरा श्रृँगार किया है। हरे रंग की साड़ी पहनी। हरे रंग की चोली, अपने माथे पर हरे रंग की बिंदी लगाई। गले में हरी बिचौली पहनी। हरी-हरी चूड़ियाँ तथा हरी चूनर ओढ़ ली। गले में हरे मणियों की माला पहन ली। कवि माधोसिंह कहते हैं कि आज वृषभान नंदिनी राधे को देखकर कृष्ण मोहित हो रहे हैं।

फाग काया की

सुनलो कथा सुजान नई कथनी कथके,
कहत जंगल के दरम्यान,
जंगल के बीच कहते हैं कथा हुनर के।
क्यों न बढ़ाई करते, सरकार सुगर की।
धन-धन कला देखो उस कारीगर की।

दोहा- *शारीरिक विज्ञान की, सुनलो कथा सुजान।*
नई कथनी कथकें कहें, दंगल के दरम्यान॥

टेक- *दो सौ छै हड्डी हैं तन में, नर के सब अंगन में।*

छंद- *दीजे नर अंगन पै ध्यान, ये है डाक्टरी विज्ञान।*
गिन गिन हड्डी करो बखान, जहां है जितनी।
हड्डी आठ खोपड़ी मइयां, भीतर धरीं जोर कें सैया।
राखी सांसे तनकऊ नइयां, हिकमत कितनी।

उड़ान- *चहरा भर में चौदा हड्डी, छै है दोई कानन में।*
चारु तरफ ऊचांई करकें, ज्योति दई आंखन में॥

टेक- *भोजन जहां जात पेट में, खड़ी एक गर्दन में।*

छंद- *छब्बिस गिनों पीठ में ज्वानों, गुरिया एक एक कर छानो।*
जासें देह नवत पहिचानों, रचना प्यारी।
पूरी पच्चीस की है पुरिया, धर दई छाती और पसुरिया।
जैसे रहटा केर पखुरिया, कह पसुरिया॥

उड़ान- *तिल्ली जिगर फैफड़ा दिल कौ, राखों बड़ी जतन में।*
गुड़या के दो आंते धर दई, नर के इन पेटन में।
जानो देह रक्त कौ राजा, धन भारी सब धन में।

छंद- *बाकी यहीं रात दिन कार, देखों एक मिनट में यार।*
दौरा करें बहत्तर बार, दिल में जाकें।

दिल कौ हरदम है जो हाल, करता शुद्ध रक्त तत्काल।
मढ़ दई सबके ऊपर खाल, सुन चित लाकें॥

उड़ान–*सिर के भीतर शक्ति दिमागी, भरी खूब पुरजन में।*
खेतसिंह जा नर देही की, कथन करी फागन में॥

(सूरजपुरा खुर्द फाग पार्टी)

हे मुनष्य! तेरे शरीर की रचना के बारे में मैं सुनाता हूँ, तू ध्यान देकर सुन। हमें उस सृष्टि के निर्माता की कला की सराहना करना चाहिए जिसने मनुष्य शरीर का निर्माण किया है। मनुष्य के शरीर में कुल दो सौ छह हड्डियाँ हैं जिनकी रचना अलग–अलग है। मानव खोपड़ी में आठ हड्डियाँ हैं। चेहरे में चौदह हड्डियाँ हैं तथा कानों में छह हड्डियाँ हैं। आँखों के चारों ओर हड्डियाँ हैं बीच में आँखों के लिये दो गढ़े बने हैं। एक खड़ी हड्डी गर्दन के पीछे है। पीठ की छब्बीस हड्डियाँ गुरियों से जुड़ी रहती हैं। छाती और पसली में पच्चीस हड्डियाँ हैं। नीचे तिल्ली, जिगर, फेफड़ा और दिल है जिसे बड़ी सावधानी से बनाया गया है। पेट में दो आंतें रखी रहती हैं। आतों में पाचन के पश्चात् कुछ समय में रक्त बनता है, अर्थात् यह भी महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। रक्त पूरे शरीर में संचालन करता रहता है। एक मिनिट में बहत्तर बार दौरा होता है। दिल रक्त को शुद्ध करता है। हड्डियों के ऊपर मांस तथा सबके ऊपर चमड़ी मढ़ी रहती है। सिर के मध्य में कई छोटी–छोटी हड्डियाँ होती हैं। श्री खेतसिंह जी ने फाग के माध्यम से मनुष्य शरीर की हड्डियों की गणना की है।

सुन सुन हनुमान की हूँकें, रावण के मों सूकें।
हनुमान लंका खों चल दये, चरन राम कें छूकें।
भौतक जोधा लंकापुर कें, मड़ियन में हो ढूकें।
लत्ता तैल पूंछ में बांदे, चले पवन की लूंके।
मनभावन कयें पार न पाहौ, तुमसे कइयक झूके॥

(सूरजपुरा खुर्द)

हनुमान जी की गर्जना सुनकर रावण का मुँह कुम्हला गया। वीर हनुमान तो अपने प्रभु श्रीराम के चरण छूकर लंकापति के यहाँ गये थे। वहाँ के बड़े– बड़े योद्धा दूर से ही उन्हें देख रहे थे। उन्होंने मिलकर हनुमानजी की पूँछ में कपड़े लपेटे, तेल डाला और आग लगा दी। हनुमान ने अपना रूप छोटा करके लंका के घरों पर महलों पर, कूद–कूदकर समस्त लंका में आग लगा दी। मनभावन कहते हैं कि ईश्वर से कोई पार नहीं पा सकता।

दिन ललित बसंती आन लगे, अंग–अंग उमगान लगे।
कर अनुराग कलिन के ऊपर, कली गूंज ठहरान लगे।

कीड़न लगे कीरतन जहां तहां, करन कोकिला गान लगे।
मनभावन बिरही तन बेधन, चलन काम के बान लगे॥

(श्री कुंजीलाल पटेल, बसारी)

वसंत ऋतु के आगमन पर प्रकृति की छटा ही निराली हो जाती है। भौंरे कलियों के ऊपर गुंजार करने लगते हैं। कीड़े- मकोड़े शोर करते हैं, कोयल कूकने लगती है। मनभावन कहते हैं कि इस ऋतु में विरही जनों की विरह वेदना बढ़ जाती है।

दोई नैन गुलाबी कर आई, भुनसारे उनीदी धर आई।
बिगरी मांग उलट गई पटियां, गालन गुलेरी पर आई।
टूटी लर बेसर बल खा गई, कर की चुरियां झर आई।
ढरक गयो नैनन कौ कजरा, बैदी उतई बिसर आई।
रसिया रात जगी मोहन संग, उनई लौ मन धर आई।

(श्री कुंजीलाल पटेल, बसारी)

अरी बावरी! तेरे नेत्र गुलाबी क्यों दिख रहे हैं? तू बड़े सुबह उठकर आई है वह भी अर्धनिद्रा में । तेरे बाल भी उलट-पुलट हो रहे हैं। तेरी बेसर की सांकल टूटी है। हाथों की चूड़ियाँ भी टूट गई हैं। तेरी आँखों का काजल फैला है। माथे की बिंदिया भी नहीं है। तू किस रसिक के संग रात भर जागी है। तुझे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि तेरा मन भी उसी के पास छोड़ आई है।

एक समय श्रीकृष्ण ने, लख सबकों उत्साय।
रास रचो है प्रेम खाँ, शोभा कही न जाय।
ब्रज में रहस रचो गिरधारी।
बाजत ताल मृदंग ढप, मुरली धुन न्यारी।
ब्रज वनिता सब मोह गई हैं, नाचे दै दै तारी।
सुर नर मुनि सबकी मति डोली, शंकर बन गये नारी।
माधो सिंह कछू कहत बनेना, देख देख कलहारी॥

(श्री कुंजीलाल पटेल)

मुरली मनोहर कृष्ण ने एक समय सबको उत्साहित जानकर महारास रचाया। लीलाधारी कृष्ण का रास अद्‌भुत था, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। महारास में सभी वाद्य मृदंग, ढप, मुरली आदि बज रहे हैं। कृष्ण ने ऐसा जादू किया कि उनके रूप पर समस्त ब्रज बालायें मोहित हो गईं। सारे देवता, गंधर्व, किन्नर, मानव सबकी सूझबूझ को पता नहीं क्या हो गया। सबने स्त्रेण रूप धारण कर लिया। सब देवता यहाँ तक देवाधिदेव महादेव ने भी स्त्री का रूप

रखकर महारास में आ डटे। कवि माधवसिंह कहते हैं कि इनकी लीला को देखकर उनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

दोहा- *रामायण की कथा खों, समझे नैयां आप।*
किस कारन श्रीराम से, भवो तो भरत मिलाप॥

सौ- *भवो तो भरत मिलाप, राम क्यों प्रेम बढ़ाओ।*

टेक- *कितनी हती राम की सेना, गिनकर उत्तर देना।*
पूर्व जन्म को हाल सभा में, आज लखाओ॥

छंद- *बंदर भालू हते कितेक, सांसी कह दो होय जितेक।*
राखी रामचंद्र की टेक, लड़ लंका में।
कितनी सेना ले दशकंदर, गरजो लंका गढ़ के अंदर।
ईश्वर बांधो सेतु समंदर, दे डंका में।

उड़ान- *गीद जटायु पूर्व जन्म में, कौन हते सो कैना।*
कैसे प्रगट भये त्रेता में, फड़ में उत्तर देना।

दोहा- *ब्रह्म जी की तपस्या, कीनी दैत्य विराध।*
क्या दीनी वरदान विध, कहों सकल संवाद।

टेक- *पूर्व जन्म को बरनन करियो, बैठे चुप न रहना।*

छंद- *ऐसे कौन असुर दो भाई, अपनी निज माया फैलाई।*
तासे छले मुनी को जाई, पिर खा जात।
पहले मृग बछड़ा बन जात, भरके पेट के बीच समात।
जा है रामायण की बात, सो मै गाता।

उड़ान- *पेट फार के बाहर निकले, मुनि के प्रान बचेना।*
लाखों रिसीमुनि मारे, मारे क्यों मरेना।

दोहा- *कौन रिसी के पेट में, घुसो राक्षस आन।*
कढ़ न पाया पेट से, उतई निकर गये प्रान।

टेक- *कौन रिसी ने मारो इसको साफ साफ कह देना।*

छंद- *लेकर शिवजी ने त्रिशूल, दीनों क्यों सूरज पर हूल।*
कौने दई श्राप भई भूल, कोपे कइया।
बदला मिला कौन शिवजी को, पूरे भेद बताना ईकों।
आवै समझ सबही को, समझा दइयो।

उड़ान– *कहां राम से खिसयानी है, जनक सुता कह देना।*
कौन सौत से लगे बता दो, नाथ तुम्हारे नैना।

दोहा– *द्वापर की कुबरी हती, पूर्व जन्म में कौन।*
क्या त्रेता में वर मिला, कथा बता दो तौन।

टेक– *मंदोदरी हती को पहले, कहो कथा बिखरे ना।*

छंद– *बदली ईश्वर ने तकदीर, पारख रथ में तजे शरीर।*
खेंची मुनियों ने तसवीर, जग ने जानी।
इसका बरनन गुनो बताकें, कैयो बिधीवार समजाकें।

उड़ान– *जब लग जात मेर काहू सें, बस भर बैर करेना।*
धीर वीर मोती पन्ना कें, जम गये फिर हुमसे ना॥

कहरवा– *नौरा से विदो, करिया के नौ टूंका हो गये॥*

प्रभु श्रीराम की लीला रामायण में वर्णित है लेकिन आप उनकी कथा को समझ नहीं पाये। चित्रकूट में किसलिये भरत तथा राम का मिलन हुआ? क्यों उन भाइयों में प्रीति बढ़ी? श्रीराम रावण युद्ध में राम की सेना की कितनी गिनती थी। इनके पहले के जन्म का वर्णन करें तथा हमें बतायें। सेना में कितने वानर थे, कितने भालू थे सब कुछ बतालाओ। क्या सेना ने श्रीराम के पक्ष में लड़कर उनका मान बढ़ाया था? रामजी का प्रतिद्वंदी रावण जब उनसे लड़ने आया तो उसकी सेना कितनी थी? सेतु अर्थात् समुद्र को प्रभु की तरफ से नल तथा नील ने बांधा था। पूर्व जन्म में जटायु कौन थे? यह स्पष्ट करना। ये त्रेता में क्यों प्रगट हुए। इसकी भी जानकारी देना। विराध नामक दैत्य ने ब्रह्मा जी की तपस्या की थी उसे क्या वरदान मिला था। वह सब जानकारी मुझे बताना तथा पूर्व जन्म के संबंध में भी बताना। वे कौन दो राक्षस भाई थे। उन दोनों ने अपनी माया से पहले मुनि को धोखा दिया वे पहले मृग तथा बछड़ा बने तथा उनके पेट में समा गये। यह रामायण का प्रसंग है। तत्पश्चात् वे मुनि का पेट फाड़कर बाहर निकले थे, मुनि के प्राण ही जाते रहे। इस तरह से उनके राक्षसों ने असंख्य ऋषि मुनियों को मारा था। एक राक्षस ने ऐसा भी किया था कि वह मुनि के पेट में घुसा तो निकल ही नहीं पाया, वह मर गया था। वे कौन ऋषि थे तथा वह राक्षस कौन था? छंद में ही जवाब देना। एक समय शिवजी ने सूर्य पर त्रिशूल चलाया था, किस कारण यह हुआ था? इसका शिवजी को क्या परिणाम मिला, सब कुछ स्पष्ट करना। सीता एक समय श्रीराम पर कुपित हुई थीं? वह प्रसंग कौन सा था? द्वापर में कंस की दासी कुबरी पिछले जन्म में कौन थी? इन सारे प्रश्नों के उत्तर हमें छंद में ही देना।

कातक गा गा कैं कतकारी, खोजें मदन मुरारी।
रसवारी रसिया गा रसवें, बाँके रसिक बिहारी।

खेत पहारन बिलवारी गा, ढूढ़े सब वनवारी।
होरी फाग कबीर तान सें, छाँटे छेल बिहारी।

(श्री बी.एल.शुक्ला-सटई)

कार्तिक मास में कतक्यारी कृष्ण लीला से संबंधित गीतों को गा-गाकर कृष्ण को ढूँढ रही हैं। उनके लिए रसिया भी गाती हैं। रसवारी भी गाती हैं। खेतों और पहाड़ों में विलवारी गीत गाकर उन्हें ढूँढती है। होली कबीर आदि गाकर भी अपने मोहन रसिया की राह देखती हैं।

बिसरे न मोय हलन दुरकी, बेसर की गूंज तनक मुरकी।
दस उँगरी दस मुँदरी सोहें, बजन पैजना के सुरकी।
कानन भर-भर करन फूल हैं, गोरे गाल सांकर लुरकी।
नैनन भर-भर सुरमा सोह, भरो माँग सब सेंदुर की॥

(श्री बी.एल.शुक्ला, सटई)

मुझे तुम्हारी नासिका के मध्य पहनी हुई दूर की लटकन नहीं भूलती। तुम्हारी बेसर (नथ) की गूँज थोड़ी मुड़ी हुई है, वह भी बड़ी सुंदर दिखती है। तुम्हारी दसों अँगुलियों में दस अँगूठी शोभायमान हो रही है। तुम्हारे पैरों में पहने पैजना के कंकड़ों की आवाज बड़ी मधुर है। कानों में बड़े-बड़े कर्णफूल हैं, जिनकी सांकर गालों तक लटक रही है। तुम्हारे नयनों में सुरमा लगा है तथा मांग सिंदूर से भरी हुई है।

कारी सारी में तक मारी, मारी भर पिचकारी।
पिचकारी के घलत राधिका, चोर बोर भई भारी।
भारी भीर भई सखियन की, छेक लये गिरधारी।
घारी धरौ भलौ रोरी, कयें वृषभान दुलारी।
लागी पकर धाम मनमोहन, नर से कर देव नारी।
नारी पै गंगाधर इनने, भौत करी अधिकारी।

(श्री बी.एल.शुक्ला, सटई)

कृष्ण ने राधा की काले रंग की साड़ी पर रंग से भरी पिचकारी चला दी। वे रंग से सराबोर हो गई। राधा भी कब मानने वाली थी, उन्होंने अपनी सखियों को एकत्रित किया और कृष्ण को घेर लिया उनके मुख पर गुलाल लगा दिया, स्त्री का रूप बना दिया। कवि गंगाधर कहते हैं कि राधा की सखियों ने कृष्ण के साथ बड़ा अत्याचार किया।

प्यारी प्रकृति बहुरिया भारी, ओसन सपरी खोरी।
वन-बागन की पैर चुनरिया, सुमन अतर में बोरी।

पवन झकोरन साके गावे, गोबर धन गुन गोरी।
राग मल्हार अलापै प्यारौ, कभऊ प्रभाती-लोरी।
बन बुंदेली बहू मनोहर, करत फिरत चित चोरी।

(डॉ. के.एल.पटेल, बसारी)

हमारी प्रकृति रूपी दुल्हिन ओस से नहाई धोयी लगती है। उसने वनों, बगीचों के पेड़ पौधों रूपी चूनर पहन ली है तथा उनमें लगे सुगंधित पुष्पों की सुगंध रूपी इत्र में डूबी हुई है। पवन के मंद-मंद झोके जैसे गा रहे हैं। ऐसे लगता है कि जैसे कभी मल्हार, कभी प्रभाती गा रहे हैं। यह बुंदेली वधू सजधज कर सबका मन मोह रही है।

छंदयाऊ फाग (बारामासी)

दोहा- *जबसें हरि मथुरा गये, तजकें हमसें हेत।*
तबसें देखों बदन में, मदन मरोरे देत।

टेक- *दै रऔ मदन मरोरे भारी, आये न गिरधारी।*

छंद- *आये गिरधारी न आली, उन बिन सेज डरी है खाली।*
बिरहा बान जेठ में पाली, मुझपै आकें।
अपनो जौ दुख कीसें कावै, सबरी राते जागत जावै।
बैरन छिनभर नींद न आवै, गई मुरझाकें॥

उड़ान- *मुरझानी अति माननी, तन की दशा बिसारी।*
अव लग आओ असाढ़ बा सजनी, उठी घटा नमकारी॥

टेक- *सावन में मनभावन मोपै, ऐसी बिछरन डारी।*

छंद- *मोरी जा हैं बारी बैस, जायें कैसे सहो कलेश।*
आपुन छाये सौत के देश, न खबर लई।
भादों जल बरसे गंभीर, मोरे उठे करेजे पीर।
थर थर काँपै मोर शरीर, सुध बुध भूल गई॥

उड़ान- *सुध बुध भूली है सखी, बिरहा बान की मारी।*
कुआँर अबाई जान श्याम की, भौत निहारी।

टेक- *कार्तिक में सब ग्वाल बालजुर घर-घर नचत दिवारी।*

छंद- *घर घर नाचें ब्रज के वासी, बाजें ढोल ढाल चौरासी।*
मोरे मन में छाई उदासी, ना कुछ भाये।
ऐसो लगत आगन की ऐरी, तन में हूक उठत है मेरी।

मै हो बिना श्याम की चेरी, हरि ना आये।

उड़ान– *हरि न आये हैं सखी, कोटि जतन कर हारी।*
किये पठाऊं को जाय द्वारकें, पूस भओ अनजारी॥

टेक– *जो कोऊ लाल माघ में हमखां, देतो लाय मिला री।*

छंद– *अपनो दुख-सुख उनसें काती, मोरे जी की तपन बुझाती।*
जब कऊ होरी फाग सुहाती, फागुन मइयां।
करतो चित्र चैत में चैन सजती सिंगारन से ऐंन।
लेती पूज पुतरिया बैन, बरकी छइयां॥

उड़ान– *बटकी छइयां पूजती, सखीं पुतरियां लारी।*
बैसायक अक्ती खां पाकें, लेती नाम लिवारी।
माधौसिंह बनाकें गावैं, बारामासी प्यारी॥

कृष्ण प्रवासी हो गये, उनके वियोग में राधा एवं उनकी सखियाँ व्याकुल हैं। आगमन की प्रतीक्षा करतीं हैं। पूरा साल उनका किस तरह से बीता, उक्त बारामासी फाग में उसी का वर्णन है।

अरी सखी! कृष्ण नहीं आये, मेरी सेज सूनी है। मैं उनकी प्रतीक्षा करती रही। ज्येष्ठ मास में विरहाग्नि और बढ़ गई, मैं अपना दुख किससे कहूँ, अरी सखी! मुझे तो जागते ही रात व्यतीत करनी पड़ती है। मुझे एक पल के लिए भी नींद नहीं आती, मुझे अपने शरीर का ही होश नहीं रहता। असाढ़ मास में घटायें चहुँओर से घिर आयीं। सावन जो कि सबके मन को अच्छा लगता है, मेरे लिए तो सूना ही लगा। वे तो सौत कुब्जा के साथ रहते हैं। मैं अभी अवयस्क हूँ, उन्होंने जाकर मेरी खबर तक नहीं ली। भाद्रपक्ष में जल की अधिकता रही मेरे हृदय में पीड़ा उठती रही लेकिन वे नहीं आये। मैं उनके विरह में कांपती रही, मुझे अपना जरा भी होश नहीं रहा। क्वांर में उनके आगमन का सुना, उनका रास्ता देखती रही लेकिन वे नहीं आये। कार्तिक में उनके ग्वाल-बाल सखा दिवारीं गा-गाकर नृत्य करते हैं। मधुर वाद्य बज रहे हैं लेकिन उनके विरह में मुझे सूनापन ही लगता है। अरी सखी! मैं किसे द्वारिका भेजूँ जो जाकर मेरी मन:स्थिति उन्हें बता देता। मैंने तो उनके आने के लिए भाँति-भाँति के प्रयत्न कर लिये। यदि वे आ जाते तो उन्हें अपना दु:ख सुना देती शायद अपने मन की जलन कुछ कम हो जाती लेकिन माघ भी सूना ही रहा। अब फाल्गुन आ गया, उनके बिना यह होली मुझे तनिक भी अच्छी नहीं लग रही। हर घर में रंग अबीर की बहार है लेकिन मेरे मन में तो सूनापन ही है। यदि वे चैत्र में आ जाते तो मैं अपना शृँगार करती तथा पुतलियों का पूजन कर लेती। वट वृक्ष के तले पूजन करती उन्हें अपना दुखड़ा सुना लेती। बैसाख में अक्ती का त्यौहार आता है।

माधव सिंह जी ने पूरे वर्ष की बारामासी में राधा का विरह वर्णन कह दिया लेकिन राधा के श्याम नहीं आये।

छंदयाऊ फाग

टेक– *महिमा आदिशक्ति की जानों, सबमें तेज समानों।*

छंद– *सबकी शक्ति एक सी जानो, इसमें भेद नहीं मानो।*
एकहि नाम रूप पहिचानों , है जगदम्बा।
चण्डी चण्ड मुंड है मारो, छिन में महिषासुर संहारों।
ओही पार्वती तन धारौ, धनि धनि अम्बा।

उड़ान– *धनि धनि अम्बा तेज शक्ति से, तेरो भरो खजानो।*
महाप्रलय में तू रहती है, ग्रंथन यही बखानो।

टेक– *सब देवन की तू जननी है, शिव ब्रम्हा पहिचानो।*

छंद – *तेरे गुण गावत हैं ईश, सारे देव नवाबें शीश।*
महिमा कह न सकत फड़ीश, जो शहस मुखों।
संकट सकल मिटावन वाली, दुर्गा मात अनंता काली।
राखों सब देवतन की लाली, करदेव सुखी।

उड़ान– *सुखी करत है छिन में उनको, जिन उर शोक समानों।*
दुष्टन की नित दरस दारसी, रण में कौन खटानों।

माँ जगत जननी की महिमा सर्वविदित है। सारे संसार में उनका तेज समाया हुआ है सबमें समान रूप से शक्ति है उसका एक ही नाम है एक ही रूप है जगदम्बा। आपने चण्डमुण्ड को मारा, महिषासुर का संहार कर डाला। उन्होंने ही पार्वती का रूप लिया है। आपके पास असीम शक्ति है, महाप्रलय में तू ही विद्यमान रहती है। हे माँ! तू समस्त देवताओं की जननी है। सब आपके गुण गाते हैं। सारे देवता तुझे शीश नवाते हैं। तू सबके कष्टों को हरती है। तेरा गुण हम सहस्त्रों मुखों से भी नहीं गा सकते। आप उन सबके दुख हर लेती है जो भी आपको हृदय में धारण करते हैं। आपके समक्ष रण में कोई नहीं ठहर पाया।

ब्रह्मा के 96 मुँह की

दोहो– *स्वामी लोमसनाथ सें, कह अर्जुन कर जोर।*
समाधान शंका करौ, एक मनोरथ मोर।

शैर– *रहते है आपने बसे यहीं तो बताईये।*
ये घड़ा धरें शीश पर कारण बताईये।
करने भजन छोटी सी, कुटिया बनाईये।

शीत घाम वर्षा में, ना दुख उठाईये।

ख्याल- बना कांसको एक मड़ैया, बैठ भजन करिये स्वामी।
जला रहे क्यों चाम धूप में, ध्यान करो अन्तरयामी।
विषमय दूर करो प्रभु मेरा, मुझे अचंभा यही बड़ा।
क्या कारण से नहीं उतरो, घरें शीश पर आप घड़ा।

टेक- लोमश कहने लगे समझाई , सुन अर्जुन चितलाई।
जो एक घड़ा शीश पर धारें, ये ही कुटिया महल हमारे।
काटे शीत घाम बरसा रे। एही घर में ॥
अर्जुन कहा कुटी कों करने, निशदिन राम भजन में भरमें।
नैयां पता कौन दिन मरने॥ (पल पल में)

छंद- कोई पता स्वॉस कों नैया? जिदना बुलना लेत गुसैयां।
छोड़े महल कुटी छिन मैया। (कोऊ नहीं रहने)
दौलत साथ कुटुम्बी नाता, अंतिम कोई संग नहि जाता
जा दिन बुला लेत विधाता॥ (उदनई जानै)

उड़ान- मिट्टी कौ इक पुतला बनौ,अंदर पवन समाई।
जा दिन हवा निकल जाय, अर्जुन माटी में मिलजाई। (लोमश)

दोहा- पुन अर्जुन लागे कहने? सूनो मुनी चित लाय।
क्या उम्मर है आपकी, जन को देव बताय।

शेर- सुन ऋिषि कहत ऐसई रस प्रेम के पागें।
मर गए बीस ब्रह्मा हैं मोरे आगें।
बीस बार प्रलय परी मोरे सामने॥
चार लाख दो हजार बार जनमलये सामने॥

ख्याल- इतने बार अवधपुर जन्में, खेले दशरथ के आंगन।
भार उतारन जन दुख टारन, आए चित्रकूट कानन॥
कितने दिन की वर्ष होत है, कितने दिन में ब्रह्मा मरे।
कितने दिन लौ जिए विधाता, कितने दिन में प्रलय परे॥

टेक- कितने दिन कौ कल्प होत है, जन को देव बताई।

छंद- अर्जुन कलप अठारा मिल्की, कष्टा एक बनी है तिनकी।
कष्टा तीन कला फिर उनकी जिनकी, सुन धनुधारी॥
तीनों कला महूरत जान, तीन महूरत का दिन मान।
पंद्रह दिन का पाख सुजान, हुई पखवारी॥ (हुई पखवार महीना)

हाल बारह मास जानिये साल, इतने सतजुग लेव लये विचार।
आगे त्रेता का विस्तार॥ (कहौ समझायी)

उड़ान- बारह लाख हजार छियानवै, त्रेत युग कहलाई।
आठ लाख हजार हैं चौसठ, द्वापर युग बतलाई।

दोहा- चार लाख बत्तीस सहस, कलयुग का परमान।
इकत्तर युग का लीजिए एक मनवन्तर जान॥

शैर- ऐसे मनबन्तर जब चौदह बीत गए।
ब्रह्मा को मान लीजे, तब एक दिन भए।
ब्रह्मा को दिन बस उतनई रहत हैं।
रात गए दोनों बन कल्प जात हैं।

ख्याल- तीस कल्प का हुआ महीना, बारा महीना की भई साल।
सौ वर्षों में मरे विधाता, सुन लीजे कुंती के लाल।
सभी तत्व मिलजात ज्योति में समझ लीजिये प्रलय वहीं।
रहते नहीं गगन व तारे चन्द्र सूर्य औ अगिन नहीं।

टेक- अंधकार हो जात अंधेरा, जल की बाढ़ दिखाई।

छंद- ऐसा अगम नहि बढ़ जावै, इक दम जलामई दिखलावै।
सब ब ब्रह्माण्ड डूब जब जावै, सुनिये अर्जुन॥
किस्सा एक पुराना गाऊ, अर्जुन तुमको हाल सुनाऊँ, बैठे राम भजन लागी धुन धुन॥
ब्रह्मा आये चौमुख वारे, आकें ध्यान हमारे टारे।
मुख से ऐसे बचनउचारे॥ कछु बात करो॥
होने लगी बात मन लाय, पहुंची पवन अचानक आय।
मोखें बॉध के चली उड़ाय॥ मैं बहुत डरो॥

उड़ान- उड़त-उड़त ब्रह्माण्ड दूसरों, जल मोय परो दिखाई।
ब्रह्मा जहां दूसरो देखो, आठ शीश कौ भाई। लोमेश॥

दोहा- वे ब्रह्मा लागे कहन, कहो कौन तुम आन।
क्यों आए इस लोक में, कारण हमें बताव॥

सैर- तब चार मुखी बोले मैं जग कौ रचैया।
ब्रह्मा है नाम मेरो, तुम को हो भैया।
तब अष्टमुखी बोले मत कहना ऐसा।
सृष्टि रचाई मैंने, तू कहता कैसा॥

ख्याल- होने लगी वार्ता ऐसी, पवन उड़ा तीनों को लिया।

सोलह मुख ब्रह्मा वाले ने-ब्रह्मालोक में फेंक दिया।
ऐसई हाल हुआ सुन अर्जुन, जैसे मैंने प्रथम कहा।
तीनों को ले चली उड़ाकर, बत्तीस सिर का कहाँ रहा॥

टेक- *सबही की जब लियो गूढ़ नें, सिर चौसठ सौ धाई॥*

छंद - *सबको लिवा चली तत्काल, ब्रह्मा जहां छियानवै भाल।*
बाकौ कहिये कौन हवाल, कहौ कौन कहै॥
ऐसे कहयक ब्रह्मा देखे, मोसे करत बनत नई लेखे।
भूलेतन मन के सब, सच बात यहै॥

छंद- *फिर लौ चली गगन लेखे उस पारी, सौवे पुरूष जहाँ एक भारी।*
ताकी सूरत की बलिहारी, काहौ कौन बरन॥
वा छवि देख प्रेम में भूले, अस्तुति करता विधाता फूले।
न कहूं खबर दास की भूले। रख लेव शरन॥

उड़ान-*अस्तुति कर कीन्हौ गमन, लौट भवन निज आई।*
अलख तहां उमरवसिंह को, दइये झलक दिखाई॥

(कन्हैयालाल पाठक, लौड़ी)

एक समय अर्जुन जंगल में शिकार खेलने गए। वहाँ लोमस ऋषि के आश्रम पहुँचे। देखा कि लोमस ऋषि सिर पर मिट्टी का घड़ा रखे हुए तपस्या कर रहे हैं। अर्जुन ने हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना की-प्रभु मेरी शंका का समाधान करें कि आप यहाँ कबसे तपस्या कर रहे हैं और सिर पर घड़ा क्यों रखे हैं? भजन एक छोटी सी बाँस की झोपड़ी बनाकर क्यों नहीं करते? शीत, धूप, वर्षा में शरीर को क्यों जला रहे हैं? हे अन्तर्यामी! कृपया मेरे विस्मय को दूर करें कि आप सिर से घड़ा क्यों नहीं उतार रहे हैं?

तब लोमस ऋषि ने अर्जुन को समझाया कि हम जो घड़ा सिर पर रखे हैं, यही हमारी कुटिया है। इसी के नीचे हमने तीनों ऋतुओं को काटकर भजन किया है। हे अर्जुन! हमेशा राम भजन में रमना है। पता नहीं किस दिन मर जाना है। श्वास का कोई पता नहीं, जिस दिन भगवान बुला लेंगे उसी दिन सब छोड़कर जाना है, यही जगत की रीति है। उस दिन साथ में कोई नहीं जाता है। सिर्फ भगवान का भजन ही साथ देता है। यह मानव शरीर एक मिट्टी का पुतला है, और इसमें प्राण वायु भरी है। यह वायु निकल जाने पर यह सूक्ष्म शरीर में चला जाता है और शारीरिक मिट्टी को जला दिया जाता है।

तत्पश्चात् अर्जुन ने लोमस से पूछा कि प्रभु आपकी उमर क्या है। कृपया बताने की कृपा करें। हे अर्जुन! सुनो-मेरे सामने बीस ब्रह्मा मर गए हैं। और प्रलय भी मेरे सामने बीस बार पड़ी है। भगवान राम ने अवधपुरी में दशरथ के घर चार लाख दो हजार बार जन्म लिया है। वे जगत

का भार उतारने एवं जन दुख टालने (निशाचरों का वध करने को) अवतरित हुए हैं।

अर्जुन ने ऋषि से पूछा कि कितने दिन का वर्ष होता है? कितने दिन में ब्रह्म मरे? कितने दिन विधाता का जीवन था? कितने दिन में प्रलय होती है? कितने दिन का कल्प होता है?

ऋषि बताते हैं कि समस्त जगत की उत्पत्ति का कारण विष्णु जी के नाभि कमलोद्‌भूत श्री ब्रह्मा जी हैं। चार युगों का एक महायुग होता है। जिसकी सौरमान से वर्ष-संख्या 43,20,000 है और महायुग का एक कल्प होता है। दो कल्प ब्रह्माजी का अधोरात्र होता है। अर्थात् एक कल्प का एक दिन और एक कल्प की एक रात्रि होती है। तदनुसार 360 अधोरात्र बराबर 720 कल्प का एक ब्रह्म वर्ष होता है। ब्रह्मा की आयु सौ ब्रह्म वर्ष यानि 72,000 कल्प की होती है।

ब्रह्मा जी के दिन में चौदह मन्वन्तर होते हैं। उनमें से स्वायंभुव, स्वरोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष ये छः मनु व्यतीत हो गए हैं। अब सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है। उसमें भी सत्ताइस महायुग समाप्त होकर अट्ठाइसवें महायुग के तीन युग सतयुग, त्रेता, द्वापर व्यतीत हो गए हैं। चौथा यह कलियुग चल रहा है। सतयुग की आयु 17,28,000 वर्ष की रही, त्रेता की आयु 12,96,000 वर्ष की रही। द्वापर की आयु 8,64,000 वर्ष की रही।

अब कलयुग की उम्र 43,200 की है। इसमें इकहत्तर युग का एक मन्वन्तर होता है। जब ऐसे चौदह मन्वन्तर व्यतीत हो जाते हैं तब ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्मा जी का दिन एवं रात्रि दोनों से मिलकर कल्प बनता है। यानी एक दिन=एक कल्प के और हिन्दी में तीस दिन का एक माह माना जाता है। इसलिये तीस कल्प का एक माह और बारह माह का एक साल हुआ। इस प्रकार हे कुन्ती के पुत्र! सौ वर्षों में विधाता मरे।

जब सभी तत्व ज्योति में मिल जाते हैं, उसे प्रलय कहते हैं। उसमें चन्द्र, सूर्य, अग्नि आदि कुछ नहीं रह जाता। एकदम अन्धकार हो जाता है और जल ही जल दिखाई पड़ता है। यहाँ तक सब ब्रह्माण्ड भी डूब जाता है। तब फिर उत्पत्ति की रचना होती है।

ऋषि आगे कहते हैं कि अर्जुन तुमको पुराना किस्सा सुनाऊँ। मैं राम भजन कर रहा था, चार मुख वाले ब्रह्मा आये और हमारा ध्यान हटाकर बोले कि हमसे कुछ बात करो। हमारी उनकी बातें होने लगी कि-अचानक हवा आई और हमको उड़ाकर ले गई। जब हमको उड़ते दूसरा ब्रह्माण्ड दिखाई पड़ा, जहाँ पर आठ शीश के ब्रह्मा बैठे थे। उस ब्रह्मा ने हमारे आने का कारण पूछा कि भाई तुम कौन हो और इस लोक में क्यों आए? तब चार मुखी ब्रह्मा बोले जग रचयिता हूँ और मेरा नाम ब्रह्मा है।

तब अष्टमुखी बोले कि सृष्टि मैंने रचाई है। तुम ऐसा क्यों कहते हो? इस प्रकार तीनों में वार्ता हो ही रही थी कि पवन ने तीनों को उड़ा लिया और सोलह मुख वाले ब्रह्मा के लोक में फेंक दिया।

हे अर्जुन! फिर वैसा हुआ जैसा मैंने पहले कहा था। इसी प्रकार बत्तीस सिर के ब्रह्मा

फिर चौसठ मुख के ब्रह्मा और फिर छियान्वें मुख के ब्रह्मा के पास हम सभी थे।

हे अर्जुन! हमने ऐसे कई ब्रह्मा देखे। मैं उनकी गिनती करने में असमर्थ हूँ। फिर उस पार जाकर देखा, जहाँ पर एक पुरुष सो रहा था। उसकी छवि का वर्णन कौन करे? छवि को देखकर विधाता की स्तुति करना ही भूल गए और शरण में रखने की याचना की।

मिथला में आज मची होरी, मिथला में........
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप बरसत रंग उड़त रोरी॥ मिथला में........
रनवासिन में नगर निवासिन, बीत रंग काली होरी॥ मिथला में.......
हिलमिल फाग परस्पर खेलें, केसर प्रीत रंग कोरी॥ मिथला में.......
अबीर गुलाल की धूम मची है, फेंकत हैं भर भर झोली। मिथला में.........
सूरदास प्रभु देख मगन भये, सीताराम लगी डोरी। मिथला में ....

(श्री रामसिंह राय- छतरपुर)

आज मिथला अर्थात् जनक जी की नगरी में होली का त्यौहार मनाया जा रहा है। त्यौहार बड़े जोर शोर का चल रहा है। समस्त हुरयारे मृदंग, झांझ, ढप की लय पर नाचते हैं। चारों तरफ रंग गुलाल की बरसा हो रही है। लोग होली मिलन में एक दूसरे के गले मिलते हैं तथा रंग गुलाल में सराबोर हो जाते हैं। भक्त सूरदास यह होली देखकर अति प्रसन्न हैं, उनका मन सीता-राम के चरणों में लगा है।

रंग डारूँगी नंद के लालन पै, सखी फागुन मनाहों गालन पै॥
पीताम्बर की चुनरी बनाहों, बूंदा लगाहों गालन पै॥
ओटक हो हो चोट बचाहों, पिचकारी की घालन पै॥
बृजवारन कौ जोर चले ना, बृजवालन की चालन पै॥
पकर अरूण खाँ नाच नचाहों, झांझ मृदंग की तालन पै....
रंग डारूंगी नंद के लालन पै॥

(श्री रामसिंह राय- छतरपुर)

आज तो मैं नंदबाबा के लाड़ले कान्हा पर रंग डालूँगी। वह बड़ा नटखट है, आज की होली में उसके गालों पर अंकित कर दूँगी। उसके पीताम्बर की चुनरी बनाकर उसे पहनाऊँगी और गाल पर बूँदा लगा दूँगी। उसकी पिचकारी की चोट को बचाकर उसे ही रंग में डुबो दूँगी। उसके सखा कितने ही आ जावें लेकिन हम उनकी एक न चलने देंगी। आज तो कृष्ण को स्त्री बनाकर हम उसको नाच नचावेंगी।

अनरये की फाग

खबर कर लइयो आज, बाहे दिन की दोरे में यमराज॥
दोरे में खड़े जमराज, घरी भर की ना मानें।
राव, रंक और शूर कूर खें नें पैचाने।
नाक, कान, मुख, आंख के करकें बंद द्वार।
ऊपर से जमराज ने, फिर दई गदों की मार॥
दई गदों की मार, नीर नयनों में बहते।
बोलत बनें नई बात, बात सेनों में करते।
मात, पिता, भ्राता बहिन, घेर बैठ गये आन।
पता लगे न काहू खें, जे काँहो कड़ गये प्रान॥
कांहो कड़ गये प्रान, गई ने संग में माया।
लोक कुटम परवार, गई ने डग भर नारी।
जे काया के संग में, हंसा करै विलाप।
वो भी संग में ने गई, फिर क्या दुनियाँ की आस॥
क्या दुनियां की आस, चलो अब आँगे भाई।
इस मारग में होत, जीव खों बड़ी कठनाई॥
कांटे कंकर परत हैं, और ततूरी घाम।
कई जो जननों नें मिले, फिर प्राणी खों आराम।
प्राणी खों आराम, नदी एक अगम दुधारा।
डूबे और अतरांय, कछू ने मिले सहारा।
केवट रा बेपीर है, बहै रूधिर की धार।
बिना भजन भगवान के, फिर बंदे ने हुइयो पार।
हुइयो ने पैले पार, अगन के खम्भ गढ़े है।
पूंछत हैं पुटयाय कें, हमखां देव बताय।
का कहके तुम गेयते, का करकें तुम आय।
का करकें तुम आये, कछु नें करो विचारो।
पाप पुन्न सब लिखों धरों है, न्यारो-न्यारो।
नीकण्ड कथकें कहें, पूरी करके छान।
जो आवै इन्साफ में, फिर पटक देंय ओई खान॥
खबर कर लइयो आज वाहे दिन की।
दोरे में खड़े यमराज।

(श्री विश्वनाथ दुबे-नेंगुवाँ)

प्राणी का अंत समय आया उस समय उसे अपने जीवन में किये गये समस्त सत्कर्म, दुष्कर्म दिखने लगते हैं। कवि कहता है कि अरे बंदे! तू उस अंत समय की खबर तो कर कि तेरा क्या अंत होना है? तूँ तो इस संसार में बिल्कुल ही अकेला है। समय रहते सत्कर्म कर ले वरन् अंत में पछतावा होगा। तेरे द्वार पर यमराज खड़े हैं, वे तुझे लिवाने आये हैं। वे एक पल के लिए भी विलंब नहीं करते। वे राजा,रंक,शूरवीर, कायर किसी को भी नहीं पहचानते। वे तो शरीर के समस्त द्वारों को बंद करके गदा के प्रहार से जीव के प्राण हर लेते हैं। उस समय प्राणी की आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होती रहती है। मुँह से शब्द नहीं निकलते, शिथिलता के कारण इशारों में बात करता है। अंत समय में सभी घर के लोग माँ, बाप, भाई, बहिन, पत्नि, बेटे, बेटी आदि पास में बैठे हैं लेकिन कोई भी नहीं देख पाया कि प्राण पखेरू कैसे निकल गये। कहाँ से निकले। प्राण तो निकल गये लेकिन सारी उम्र की कमाई गई दौलत साथ नहीं गई, यहीं पड़ी रह गई। घर कुटुम्ब के लोग जिन्हें इस संसार में रिश्तों के नाम दिये जाते हैं। वे भी साथ नहीं गये। स्त्री भी तो जो जीवन संगिनी,अर्धांगिनी है वह भी साथ नहीं गई। जीव अपने शरीर के साथ रूदन करता है। अरे! वह शरीर भी तो नहीं गया, जीव के साथ जब शरीर ही संग नहीं जा सका तो फिर दुनिया में किसका भरोसा?

जीव के जाते ही पाप-पुण्यों के लेखे-जोखे के लिए उसे बड़े कठिन रास्तों से जाना होता है। जीव को बहुतेरी कठिनाईयों का सामना करना होता है। वहाँ पर एक असीम नदी है(वैतरणी) वह रक्त की नदी है, जीव उसी में डूबता उतराता रहता है। उसका संचालक तो बड़ा निर्दयी है वह तो साक्षात् यमराज है। जैसे-तैसे जीव ने नदी पार की तो रक्त तप्त खंभ गड़े हैं उनमें जीव को यमराज बाँध देते हैं तथा पूँछते है कि हे मानव! मुझे यह बतलाओ कि यहाँ से जब तुम इस मनुष्य योनि में गये थे तो क्या कहकर गये थे कि हम वहाँ जाकर क्या करेंगे? और सारे जीवन में तुमने क्या किया? मनुष्य के जीवन का लेखा-जोखा वहाँ होता है। कवि नीलकंठ कहते हैं कि पाप पुण्य के आधार पर ही जीव को अलग-अलग योनियों में जन्म मिलता है। इसलिए मनुष्य को सत्कर्म ही करना चाहिए तथा प्रभु का स्मरण करना चाहिए, जिससे जीव नरक में होने वाले कष्टों से तो बच जाता है।

उनकी लहस बगीचन आई, भाभी ने पठवाई।
केसरिया चंदन कटवा कें, ताकी चिता बनाई।
जाके ऊपर धर लाला खों, घी उर रार झुकाई।
ईसुर कात जुझार सिंह नें, भईये दई दिनाई।

ओरछा नरेश जुझार सिंह ने अपनी पत्नि के द्वारा अपने ही छोटे भाई हरदौल को भोजन में विष देकर मरवाया था। उनके मृत शरीर को बगीचे में रखवाकर चंदन की चिता में जलवाया था। ईसुरी जी कहते हैं कि भाई ने ही भाई की हत्या करवा दी।

इन पैलगे कुलरिया घालन, भैया मानस पालन।
इन्हें काटनो न चइयत तो, काट देत जो कालन॥
ऐसे रूख भूख के लानें, लगवा दये नंदलालन।
जे कर देत नई सी ईसुर, मरी मराई खालन॥

जो हमारे जीवन के हर पल के साथी हैं हम उन्हीं वृक्षों को कटवा देते हैं जबकि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। जो हमें जीवन प्रदान करते हैं। ईसुरी कहते हैं कि हम उन्हें ही नष्ट करने पर तुले हैं।

ऊँची सेमर डगडगी, छितरी साज मड़राय।
तनक चीज को देखकें, मरवे नहीं डराय।
उठत बैठत में न सीधे, चित्यै तुम हो।

सेमल का ऊँचा पेड़ है वह ऐसे दिखाई देता है जैसे कि उनकी डालियाँ आकाश को छू रहीं हों।

कै फुल फूली बेला चमेली, कै फुल फूली लाल अनार।
नौ फुल फूली बेला चमेली, दस फुल फूली अनार।

चमेली में कितने फूल लगे तथा अनार कितने फूले? चमेली के नौ फूल तथा अनार के दस फूल फूले।

प्रीत तौ ऐसी कीजिए, जैसी करी कपास।
जियत पैरावै कापड़ा, मरे ने छोड़ै साथ।

हमें कपास से शिक्षा लेकर उसकी तरह प्रीत करनी चाहिए। उससे बने वस्त्रों को हम पहनते हैं तथा मरने पर भी कफन उसी का ओढ़ाया जाता है।

अब रित आई बसंत बहारन, पान फूल फल डारन।
बाग बनन बंगलन बेलन, बीथी बगर बजारन।
तपसी कुटी कंदरन माँही, गई बैराग बिगारन।

बसंत ऋतु चहुँओर दिखाई देती है। पेड़ों में फूल लग जाते हैं। सारा वनस्पति जगत ऐसे प्रतीत होता है जैसे कि वसंत ऋतु के आगमन पर वह प्रफुल्लित हो गया है।

अरी ये तुमारे नैना बान उड़कें लागे।
कतकै नैना बान उड़कें लागे, छैला के गरद हो जाँय।
गरे में माला पैरें, गोट लरी भरी चंगोर।
मन मोहत कर डारे, अखियाँ राखों ठांसकें।
अर ममता दयची है ढोर, बारे बलम की सेज पै।
तनक लौटकें हेर तुमारे, नैना बान उड़कें लागे।
अतर सुपारी लायची, मुख में दावैं पान।

तुम्हारे ये तीखे नयन बाण हमें उड़कर लग गये, हम घायल हो गये। तुम अपने गले में माला पहने हो, वह हमारा मन मोह रही है। तुम सुगंधित पान का सेवन कर रही हो। वह ज्यादा ही आकर्षक लगता है।

अर्जुन के रथ पै बैठे कनैया, हाँत लयें मुरली संभारें है डोर।
डोर रथ के घुड़ला, पवन की ओर॥

श्रीकृष्ण युद्ध में अर्जुन के सारथी बने हुए हैं वे एक हाथ में रथ की डोर लिये हैं तथा दूसरे में मुरली है। रथ के घोड़े पवन वेग से दौड़ रहे हैं।

सीता की हट लख विकट, लखन भये लाचार।
भैया की सुध लेन खों, हो गये हैं तैयार।
हिम्मत को तान बोले हैं सुनियों माता।
तुम सावधान रइयों में देखने जाता।
कुटिया के चहुओंरन एक रेखा बनाता।
कड़ियों ने बात बाहर में तुमे जताता।
जाहै रेखा बान हमारे, जाहै रेखा बान हमारी लाल।
रक्षा करै तुमारी, आहें से लंक जौन अपने प्राण गमाहै है तौन।
एक तपधारी है कौन, जो बच जाये, बोले जा बानी, तुम लाचारी नें जानो।
दुख आवै न माँ सीता पै, पवन देवता में हारे।

छोड़े जात भरोंसे सबके मोरी है लाचारी।
जो है रेखा बान हमारी।

स्वर्ण मृग के पीछे श्रीराम गये। थोड़े समय पश्चात् उस मायावी मारीच ने जो कि स्वर्ण मृग बना था श्रीराम की ही आवाज की नकल करके लक्ष्मण को पुकारा। वह पुकार सुनकर सीताजी ने लक्ष्मण से कहा कि तुम्हारे भैया संकट में है उनके पास जाओ, वे तुम्हें पुकार रहे हैं। लक्ष्मण ने कहा कि आप निश्चिंत रहें लेकिन वे जिद करने लगीं उनकी बेचैनी को देख लक्ष्मण जी जाने लगे, जाने से पूर्व उन्होंने बाण से एक रेखा खींच दी और कहा कि आप इस रेखा को पार नहीं करना इसके भीतर रहेंगी तो ही आपकी रक्षा होगी। हे माता! आप सावधानी से रहना। मैं भैया के पास जाता हूँ। अगर कोई मायवी आ जाये तो आप इस सीमा रेखा में ही रहिये। जाने से पूर्व लक्ष्मण जी पवन देवता से कहकर गये कि हे पवन देव! मैं आपके भरोसे माता को छोड़े जा रहा हूँ। आप इनकी रक्षा करिये, जाना तो मेरी लाचारी है।

मथुरा जनम लये, गोकल सूरत समारी।

श्रीकृष्ण का जन्म तो मथुरा में हुआ था लेकिन गोकुल में ही उनका बचपन बीता था।

कोहल के बिना सूनो लगै रे बगिया में।

कोयल की कूक के बिना बाग में सूना लगता है।

दिन ऊंसई गये, राम के भजन कर न पाये रे।

हमारा सारा जीवन व्यर्थ ही गया, हमने प्रभु श्रीराम का स्मरण तक नहीं किया।

सुध रगवर की आई आज मोय,
सुध रगवर की आई रे।
सेज सुपेती गरम गेंडुवा, फूलन सेज लगा गई रे।
जौन गली हो राम चले गयो, हमखाँ देव बताई।
सुद रगवर की आई आज मोय, सुद रगवर की आई रे।
कौन बिना मोरी सूनी रसुइया, कौन करे चतुराई रे॥

(श्री कंदू राजपूत, मातगुवाँ)

आज मुझे श्रीराम जी की बड़ी याद आती है उनके लिए मैंने साफ स्वच्छ बिस्तर लगाया है, उस पर फूल सजा दिये हैं और उनकी प्रतीक्षा में हूँ। वे हमारे श्रीराम किस रास्ते से वन को गये हैं? हमें बतला दो। मैं उनकी खोज करूँगा। किसके बिन अयोध्या की रसोई सूनी पड़ी है कौन चतुराई से भोजन बनावेगा?

लागी लागी खजूरा की हाट रे, अलबेली अकेली ने जइयो।
हाट बजरियों में ठग हैं, बैठे वे सबई लूट जैंहे रे।
दो गोरी दो सांवरी, वे चारऊ बजारे जाँय रे।
हिलमिल के बजारे जाँय रे।
लागी-लागी खजूरा की हाट रे।

अरी सखी! खजूरे की हाट में तू अकेली मत जाना, वहाँ की हाट में बड़े लुटेरे हैं वो सब कुछ लूट लेंगे। इसलिये हाट में हम सब साथ में जावेंगे, साथ में रहने से फिर हमें कोई नहीं लूट सकता।

गौने से आई अबै, रही चार छै रोज।
बलम हमने सुनी तुम परदेशें जाव।
चूनर की चटक मैली न भई हमारी।
छूटे न दाग हरदी के, उम्मर बारी।
मोरी अबै उमर लरकैंया, अरे मोरी उमर लरकैंया लाल।
चले विदेशे सैंयां, मोरी उमर साल ग्यारा में।
परसें लग जानें बारा में, नैयां कछू धरा धारा में। उम्मर बारी......
बनकें बालम वे समारी प्रीतम, कैसी सुरत बिसारी।
जा दई देश आने के प्यारी, सो सुन प्यारे।
प्रीतम कम्मर बाँद कें, हो गये गमन करैयो।
मैं अबला अबका करों, सो चले विदेशों सैंयां।
चले विदेशों सैंयां, मोरी अबै......

(श्री कन्हैया लाल साहू, मातगुवाँ)

लाखन राना का अभी गौना चार रोज पहले ही हुआ था कि वे युद्ध के लिये जा रहे थे। यह जानकर लाखन की पत्नि ने समझाकर कहा कि आप न जायें, देखो हमारा गौना हुए चार रोज भी नहीं हुए मेरी चूनर अभी कोरी की कोरी रखी है। अरे! विवाह की हल्दी भी अभी ठीक से

नहीं धुल पायी। मैं तो अभी अवयस्क हूँ। आप मुझे इस स्थिति में छोड़कर युद्ध हेतु जा रहे हैं। मेरे बारे में कुछ तो सोचें कि आपके जाने के पश्चात् मैं कैसे रहूँगी?

धीरे धीरे काटो उमरिया, धीरे धीरे काटो रे।
परे पलंग में रावैं लालन, मौ मे उगरिया दावै रे।
धीरे-धीरे काटो उमरिया, धीरे धीरे काटो रे।

उम्र को धीरे-धीरे व्यतीत करो। आराम के साथ में रहो। इस तरह से जीवन व्यतीत हो जायेगा।

फाग चौकड़िया

राम भजन के लाने तन दये, राम भजन के लाने लाल।
, *साँची करकें मानें तन दये, राम भजन के लाने लाल।*
पैलो भोग ठाकुर खों, पीछू हमखाँ खा ने लाल।
जालों जियत जिंदगी जीवन, उनके हेत कमाने लाल।
राम नाम को लेत ईसुरी, लेत-लेत मर जाने रे।
राम भजन के लाने तन ये, राम भजन के लाने रे॥

(श्री कंदू राजपूत, मातगुवाँ)

हमारा जन्म भगवद् भजन के लिये हुआ है, यही हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। यही परम सत्य है। भोजन के पूर्व हमें पहला ग्रास भगवान को अर्पण करके फिर स्वयं खाना चाहिए। ईसुरी जी कहते हैं कि जीवन का क्रम इसी तरह से चलना चाहिए हमें उनका स्मरण करते-करते ही जीवन व्यतीत करना चाहिए।

माता के होकें बिदा, सेना सजी विशाल, लड़न चलो रण बांकुड़ा।
अभमन्नू तत्काल, रथ काल चलो शंका न करी काल की।
रणधीर वीर बालक, करनी कमाल की।
गये भीम मदद करने, अर्जुन के लाल की।
कोऊ लाख कहै रेखा, न मिटत भाल की।
टोरन चक्रव्यू खों आयो, टोरन चक्रव्यू खों आयो लाल।
वीर सुभद्रा जायो, जायो वीर सुभद्रा ऐन, लेकें रन में भारी सेन।

चक्रव्यू है लेन जो द्रोण रचे, न करी गुरू होशियार जाके सात द्वार।
सेना है तैयार, बहु भीड़ मची।
समर करें की शूर खड़े हैं, जावै नहीं बताओ।
द्वारे पै सेनापत खों, रक्षा हेत लगाओ, रक्षा हेतु लगाओं।
देखों पहले द्वार पै खड़ो जयद्रथ वीर, जरजोधन को।
आय जो बैहनोई रनधीर।
वरदान मिलो ताको है शंकर जू को।
अर्जुन के छोड़ रन में हारे ने किसी से।
गये दूर ललन पारथ डर नहीं इसी से।
ललकार गहो अभमन्यू हट कूर गली से, पारथ सुत को देख जयद्रथ।
आओ टोरन चक्रव्यू खों........
वीर सहोद्रा जाओ, निश्चय कही जयद्रथ बानी, जैसी कैसी है नादानी।
बालक तोरी मौत बुलानी, हटजा घर को।
बेटा अर्जुन को खिसयानो, जो तू जादा आज बखानो।
तोरी जींव पकरकें तानो, सांची कहता।
खेंचवान तरकस से तुरतई अपना धनुष चढ़ायो।
अभमन्नू सर कठन चलौ सो, विकट क्रोध में छाओ॥ .....

(श्री कन्हैयालाल साहू, मातगुवाँ)

महाभारत युद्ध में अभिमन्यु सुसज्जित होकर जाने लगते हैं। जाने से पूर्व उन्होंने अपनी माता से आज्ञा ली फिर अपनी सेना को साथ लेकर चल दिये। आज के युद्ध में अर्जुन के गुरू द्रोण ने चक्रव्यूह की रचना की थी। चक्रव्यूह को अर्जुन के अलावा पांडव सेना में कोई नहीं तोड़ सकता था। यह स्थिति देखकर रणबांकुरे सुभद्रा के लाल अभिमन्यु ने पांडवों से कहा कि मैं चक्रव्यूह में प्रवेश तो कर सकता हूँ लेकिन वापिस निकलने की जानकारी मुझे नहीं है। इस पर पांडवों ने कहा कि एक बार उसमें प्रवेश कर जाओ, वापस आने में हम सब तुम्हारी सहायता करेंगे। इस तरह से अभिमन्यु वीरता के साथ छह दरवाजे तो तोड़ता हुआ, रास्ते में मारकाट मचाता सातवें दरवाजे तक पहुँच गया। एक तरफ अकेला अभिमन्यु दूसरी तरफ कौरवों की सेना के सात-सात महारथी उस पर एक साथ आक्रमण कर रहे थे। उसकी सहायता के लिये पांडव जाते लेकिन प्रवेश न कर पाते। जयद्रथ फाटक पर था उसने अपनी युक्ति से किसी को प्रवेश न होने दिया। वह शिव का वरदानी था, उसे रण में अर्जुन के अलावा कोई पराजित नहीं कर सकता था। उसने अभिमन्यु को जाने से रोका लेकिन अर्जुन पुत्र तो काल की भी शंका नहीं करता था। कठिन संग्राम के पश्चात् अभिमन्यु ने वीरगति प्राप्त की। राम नाम के स्मरण मात्र से सद्गति पायी जा सकती है।

मन भजले सीताराम अबै तर जैहो राम गुन गावें सें।
भजले सीताराम अजामिल पापी तर गये,
लओ पुत्र को नाव दूत दूरई में डर गये।
बसे जाय बैकुण्ठ में हो रयी जै-जै कार, नाम लेत तर जात हैं।
पापी सो तर जात.........
पापी सोई तर जात नाम खों उल्टा जपते।
बालमीक महराज ऐसी करनी कर गये कै जानत है संसार।
रामायण त्रेता रची, सो पापी तरे अपार॥
पापी तरे अपार सुनी वे मीराबाई।
जहर हलाहल पियो भओ अमृत भर जाई।
जात पाँत सें काम नयीं, भजत है हरि कौ नाम।
सब कोऊ बोलो प्रेम सें, लगे कछू ने दाम।
लगै कछू ने दाम भक्ति रैदास।
गंगाजी की भेंट हाँत से लयी पसारा।
सबरी माता भीलनी, पाये श्री रघुनाथ।
खट्टे मिठे फल चखे, फिर दई बैकुण्ठ पठाय॥
अबै तर जैहों रम गुन गावें सें॥

(श्री कड़ोरी लोधी, बिलैकी)

हे मानव! तू अपने हृदय में सदैव श्रीराम का स्मरण कर, यही तेरे जीवन का मूल मंत्र है। उनके नाम के स्मरण करने से अजामिल जैसे पापी इस भवसागर से पार उतरे हैं। अरे! वाल्मीकि जैसे उल्टा नाम जपकर आदि कवि बन गये। त्रेतायुग में वे जन्म थे जिन्होंने रामायण की रचना कर दी। मीराबाई के बारे में सभी जानते हैं कि राणा ने उन्हें विष का प्याला दिया था प्रभु का नाम लेकर वे उसे पी गई तो वह हलाहल अमृत बन गया। इसमें जाति का कोई बंधन भी नहीं हैं। सबको उन प्रभु का नाम रटते रहना चाहिए। इसमें कुछ पूंजी भी नहीं लगती। वह तो बिना दाम की कमाई है।

सुमरों रे खेरे कीर खेर, सुमरों गुरैया ऐसी गाँव के हों।

मैं गाँव की खेड़ापति देवी का स्मरण करूँगा तथा ग्रामदेवता गुरैया का भी स्मरण करूँगा, जिनके स्मरण से मेरा गायन सफल होगा।

कौसम भये सरदार, सगोंना रूखों में राजा हो गये।
कौसम हैं सरदार बना है बड़ा कमिस्नर।
जामुन मिट्टी आप जे चीफ कमिश्नर।
सीताफल छिरोही भये, राजा भये अचार।
घटोली पहरे वारो, मुंशी अनार बकोली।
आंवला, छेवला तहसीलदार।
बाबू बनी बकान, मजिस्ट्रेट माहुल भये।
धबा भये कप्तान, साज हल्का निस्पिट्टर।
बहेरो है कम्पोटर, दईया खो दायनी भई।
भिलमा लम्बरदार, करोंदा रहे दरोगा।
मिरची है गुणवान, मैट है मैनर चम्पा।
चौसा तेंदू बजरिया बीजों के ठेकेदार।
कसई बमूरा सेमरा पलटन के ठेकेदार।
सगौना रूखों में राजा हो गये॥

उक्त वृक्षों की फाग में सारे वृक्षों के गुण तथा उनके ओहदे दिये गये हैं, उक्त गीतों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बुंदेलखंड अंचल में भी वृक्षों का हमारी संस्कृति से अटूट संबंध रहा है।

सुमरनी फाग

पेलऊ देवी शहारदा गाईये, फिर लियो राम के नाव।
पेलऊ देवी शहारदा गाईये, दूजे गांव गुरैया गाईये।
खेरे की खेर वहेर......
तीजें कुंती के अर्जुन गाईये, उनने सरग पठै दये वान। पैलऊं देवी शारदा.....

सर्वप्रथम मैं स्वर की देवी शारदा का स्मरण करूँगा, उनके गुणगान करूँगा, जिससें उनकी कृपा से मेरा गायन सफल हो, तत्पश्चात् में प्रभु श्रीराम का स्मरण करूँगा। दूसरे मैं अपने गाँव के गुरैया देव का स्मरण करूँगा, गाँव की खेरमाता तथा बहेरा वृक्ष का स्मरण करूँगा। इन सबकी कृपा से मेरा गायन सफल होगा। तीसरे मैं माता कुंती के पुत्र महान धनुर्धर अर्जुन का स्मरण करूँगा। जिन्होंने अपने वाणों को स्वर्ग तक पहुँचाया था। इस तरह से गायन में मैं उक्त सभी के गुणगान करूँगा।

बल खो रे सुमरो रे हनुमान, सुरखों सुमर लये मैया शारदा।

गाने के लिए शक्ति की आवश्यकता महसूस होती है उसके लिए मैं पवनपुत्र बलवीर हनुमान का स्मरण करूँगा तथा स्वर के लिए माता शारदा का स्मरण करूँगा जो कि मेरे कंठ पर आने विराजें, जिससे मेरा गायन सफल हो।

ये सखी मारे गये हमारे बालमा, फिर हो गई आस निराश। सखी मारे गये
हमारे बालमा, हो गई आस निराश कहे रो-रो अलबेली
कौरव बैरी भये, कहूं क्या बात सहेली, मनकी मन में रे गई
भई ने पूरी आस बालापन विरथा गये, न कीनें भोग बिलास। सखी मारे गये.......
न कीने भोग बिलास, उमर हमारी बारी भोरी टूटे ने दूद के दांत।
भरी ने गोद हमारी, होतों लालन एक तो, करती ओकी आस।
जीवे से मरवों भलो, अब हो गव सत्यानास। सखी मारे गये.....
हो गव सत्यानास उत्तरा रूदन मचावे, अभिमन्यु की नार
सती होवे खो जावे, भीम नकुल सहदेव जी कहे युधिष्ठन खास,
धीरज धरो ये बहु, करो महल में वास, सखी मारे गये........
करो महल में वास, करता धरता तीन है, सतराखो विश्वास।
मनसा पूरण हो गयी, खास वेद की बात, सखी मारे गये.......

वीर अभिमन्यु की पत्नि उत्तरा का वृतांत उक्त फाग में आया है। उत्तरा अपने पति जिसे कौरवों ने चक्रव्यूह में धोखे से मारा था। उन अभिमन्यु के मरणोपरांत उत्तरा अपनी सखी से कहती है कि देखो सखी मेरे पतिदेव को धोखे से मार दिया, अब इस संसार में मैं जीकर क्या करूँगी? उनके बाद तो मेरी समस्त आशायें निराशा में बदल गयीं हैं। उत्तरा रो-रोकर कह रही है कि मेरे परिजन कौरव ही मेरे बैरी हो गये। क्या कहूँ, मेरे मन की आशा मन में ही रह गई। मेरा जन्म ही व्यर्थ गया। मेरी व्यथा तो देखो कि मैं बाल विधवा हो गई। मैंने संसार के सुखों का उपभोग भी नहीं कर पाया और कर्मगति मुझे कहाँ से कहाँ ले आई? मेरी उम्र तो अभी बहुत थोड़ी ही है। अरे! मेरे अभी दूध के दांत भी नहीं टूटे, मेरी गोदी भी नहीं भरी। मैं किसकी आशा करूँ? काश! मेरा एक पुत्र होता तो मैं उसके सहारे अपना जीवन जी लेती, लेकिन अब ऐसे जीने से क्या फायदा? इससे तो मर जाना ही अच्छा है। मेरा तो सर्वस्व ही नष्ट हो गया।

उत्तरा यह सब स्मरण करके रो रही है, वह अपने पति के साथ सती होना चाहती है। उसके पाँचों ससुर उसे सांत्वना देते हैं और कहते हैं- बहु! प्रभु की गति को कौन जान पाया है? तुम धैर्य रखो, इस सृष्टि का कर्त्ता तो कोई और ही है। यही सत्य है। उस प्रभु पर भरोसा रखो। उनकी कृपा से सब ठीक होगा। हमारे वेदों में वर्णित है कि सृष्टि के रचयिता के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

रथ खों हांके कृष्ण भगवान, अर्जुन बैठे-बैठे मार करें।

महाभारत में श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बने थे तथा अर्जुन रथ में बैठकर युद्ध कर रहे थे।

मारे रे अर्जुन ने बान, बानों की शैया भीषम सो रये।

अर्जुन ने भीष्म पितामह को इतने बाण मारे कि वे बाणों की शैया पर सो रहे थे।

महौबे व्याव करन हम ने जैहे,
बिना किले के लोग महौबे व्याव करन हम ने जैहे,
बिना किले के लोग
वहां ने करो सगाई, निर्धन है वे लोग नौकरी करें पराई,
एक समय की बात है, सुनो पिता धर ध्यान।
चंदेले बरसात में घर से दये निकार,
महोबे व्याव करन हम ने जैहे
घर से दये निकार बहिन है एक हमारी,
न उनके घरदोर फिरेगी मारी मारी
ब्याह बैर और दोस्ती होवे एक समान,
ऐसी वेदों में लिखी सुनो पिता धर ध्यान।
सुनो पिता धर ध्यान,
मोहन सोहन कहे जात उनकी है ओछी।
सईयद की संगत करें, नईयां अपने जोग, पानी उनके घड़ा को।
ने पिये जगत के लोग, महौबे व्याव करन हम ने जैहे......
ने पिये जगत के लोग, बचन आल्हा से हारे, अपना प्रण अब राखवी।
लेवना उनसे बैर, टीका पूना जानदे, बंकटसा के पास।
महौवे व्याव करन हम ने जैहे।
बंकटसा के पास हमारी मनकी कीजे,
चंद्रकरण का ब्याह भीकम संग होने दीजे।
लगुन पठा बुलवालये, एक दुलहन दो जुवान,
झूनागढ़ में हो रही, दिन की संजा शाम, महौबे व्याव करन हम ने जैहे।

हम महोबा में अपनी बहिन का विवाह करने नहीं जायेंगे। महोबे वाले छोटे लोग हैं। विवाह तो बराबरी वालों के संग किया जाता हैं। उनके पास किला नहीं है वे निर्धन हैं, दूसरों के

यहाँ नौकरी चाकरी करते हैं। वहाँ फिर हम कैसे सगाई कर सकते हैं? एक बार महाराज चंदेल ने आल्हा ऊदल को अपने राज्य से निष्कासित कर दिया था। वो भी बरसात में। अरे! हमारी तो एक ही बहिन है, बिना घर-बार के लोगों से विवाह कर देंगे तो वह मारी-मारी न फिरेगी? अतएव हे पिता महाराज! जरा ध्यान दें कि विवाह, बैर तथा मित्रता समवर्ग में ही की जाती है, ऐसा वेदों में वर्णित हैं। मोहन और सोहन जो कि बेटी के भाई हैं वे अपने पिता को समझा रहे हैं। वे कहते हैं कि यदि आपने उन्हें वचन दे दिया है तो वह तो पूरा कर लेंगे। अरे! वे ब्याहने आयेंगे तो उन्हें मार भगायेंगे। अब टीका बंकटसा के पास भेज दो। आप हमारी इच्छा पूरी करें। चंद्रकरण का विवाह तो भीकम के साथ ही हो। बंकटसा के पास लग्न भेज दें, लेकिन महोबा में विवाह नहीं हो।

बंगालो रे जादू की मार, माहो ने जईयो मोरे बालमा

बंगाल में जादू की लड़ाई होती है। अतः हे पतिदेव! आप वहाँ से होकर नहीं जाना।

मोरो रे मन मोहन ललना, कब मधुबन से आहे लाल।
कबऊं तो आवे संजा सबेरे, कबऊं तो आवे अधराते लाल।
मोरो रे मन मोहन ललना, कब मधुबन से आहे लाल।

मेरा मोहन पता नहीं कब मधुवन से लौटे। कभी तो वह शाम को ही आ जाता है और कभी-कभी आधी रात को लौटता है।

दये जानकी मैया रे बूंदा दये जानकी मैया लाल।
लछिमन की भौजईया , बूंदा दयें जानकी मैया लाल।

जनक नंदिनी महारानी सीता जी अपने माथे बिंदी लगाये हैं, वह बिंदी बड़ी शोभायमान हो रही है। लक्ष्मण की भाभी सीता अपने माथे पर बिंदी लगाये हैं।

सूरज मोरे पावना चंद्रमा आये।
काहो डारे बैठका चंद्रमा आये।
सूरज मोरे पावना चंद्रमा आये।

मेरे अतिथि सूर्य हैं, वे हमारे घर आने वाले हैं लेकिन चंद्रमा भी आ गये। अब सूर्य चंद्रमा

का स्वागत हम कैसे करें? उन्हें कौन सा आसन दें, किस तरह से उनका सत्कार करें, वे दोनों पाँहुने हमारे घर पधारे हैं।

(लक्ष्मी नारायण यादव, सागर)

सभा में ठांड़ी पुकारे, द्रोपती दु:शासन खेंचे चीर।
दुशासन खेचे चीर, दया ने चित लावे,
देदे झटका दुष्ट सती को बदन उघारे
पाँचों पति दरबार में होकर बैठे मौन,
रो रो कह रई द्रोपती मोरी गत हो गई कौन।
मोरी गत हो गई कौन शकुनि करन दुर्योधन राजा बैठे है मौं फेर।
जागत देखी सभा की, फिर दई नार ने टेर
फिर दई नार ने टेर, बचाओ तुम गिरधारी।
आज जात है लाज, सभा के बीच हमारी।
सतभा माया नारी वजी धाये माधव राव
पवन रूप धरो प्रभु ने साड़ी में गये समाय......... ।

द्रोपदी कौरवों की सभा में बेवस खड़ी है। दु:शासन चीर खींच रहा है, द्रोपदी रूदन कर रही है। एक अबला नारी का इस तरह से अपमान करना नारी जाति का अपमान है। दु:शासन बर्बरता पूर्वक चीर खींच रहा है उसे मन में जरा भी ग्लानि नहीं, वह तो भरी सभा में द्रोपदी को नग्न करना चाहता है। पाँचों पांडव मौन बैठे हैं जबकि पांचाली एक-एक से पुकार-पुकार कर अपनी लाज बचाने की फरियाद कर रही है। इस सभा में शकुनि,करन, दुर्योधन आदि सभी बैठे हैं, उन सबसे भी कहा लेकिन उन्होंने अपना मुँह फेर लिया । द्रोपदी ने देखा कि उसकी लाज बचाने वाला इस सभा में कोई नहीं है तो उसने गिरधर श्रीकृष्ण का स्मरण किया। हे नाथ! आज भरी सभा में मेरी लाज बचाने वाला कोई नहीं, आप मुझ दीन की पुकार सुन लें और मुझे बेआबरू होने से बचायें। द्रोपदी की करूण पुकार सुनी तो मुरलीधर जो सत्यभामा के पास थे उन्हें छोड़ पवन वेग से आ गये तथा द्रोपदी का चीर बढ़ाकर एक अबला की लाज बचा ली।

आल्हा लगुन फेर दे संभर की ब्रह्मा के रचे ब्याह।
ब्रह्मा के रचे ब्याह,लगुन में लिखी लड़ाई।
सात लड़ाई भारत लिखी, हुकम गाज तरबार।
सुनतहु खों नाहीं करी, फिर कौन मरवे खो जाये।
को मरवे खो जाय, हार आल्हा ने खाई।
सुनत ऊदल से भाई हार, तुमने वृथा खाई।

उड़ो सुनामा देश में बड़े होय बदनाम।
बड़े लड़ैया न हमने सुनें, राजा खो गये डराय।
राजा खो गये डराय, लोग जब करहें हांसी।
हमसे सही ने जाय, करैजे लागत गाँसी।
आल्हा ऊदल वीर है, जग जाहर संसार।
पांव पुजाहो पृथ्वीराज से, बेला के ब्याहहों चीर।

महाराज चंदेले ने अपने पुत्र ब्रम्हा के विवाह के पूर्व अपने सामंत आल्हा को बुलाकर कहा कि पुत्र ब्रहानंद की लग्न जो कि दिल्लीपति पृथ्वीराज के यहाँ से आई है, वापस लौटा दो। क्योंकि इस विवाह में ज्यादा खून खराबा होगा। उनकी चिट्ठी में स्पष्ट लिखा है कि विवाह में सात लड़ाईयाँ होंगी और अब मैं स्वयं इस तरह के विवाह के पक्ष में नहीं हूँ। चंदेलराज के समझाने पर आल्हा भी उनकी बात से सहमत हो गये लेकिन जब ऊदल ने सुना तो बोले कि दादा आपका नाम जग जाहिर है जो भी लग्न वापिस जाने की सुनेगा तो हमारी बड़ी हँसी होगी, सब कहेंगे कि बड़े सूरमा बनते थे। आल्हा-ऊदल, मलखान तो तलवार के धनी हैं लेकिन बड़े बड़े सूरमा भी हार मान गये, यह सब चर्चायें हमसे न सुनी जायेंगी। हे महाराज! आपकी साख भी क्या इस तरह से रह जायेगी? मुझे तो आपका पृथ्वीराज से डर जाने या भय मानने का प्रस्ताव ही कलेजे में साल रहा है, मुझे ये सब कुछ सहन नहीं होता। अरे! आप तैयारी करें, हम अपने भाई ब्रम्हानंद के पैर दिल्लीपति पृथ्वीराज से अपनी तलवार की दम पर पुजवा लेंगे।

राई फाग

समझावें मंदोदर नार, सीता हरन खों ने जइयो।

लंकापति की महारानी मंदोदरी अपने पति रावण को बार-बार समझा रही हैं कि हे महाराज! आप सीता के अपहरण को न जाना।

मारे रे दुश्मन ने बान, भैया लखन रन पे परे।

लक्ष्मण जी को मेघनाद ने शक्ति बाण मारा तो वे शक्ति के लगते ही युद्ध क्षेत्र में मूर्छित हो गये।

कैसे रे दल उतरे पार सात समुद आड़े डरे।

प्रभु श्रीराम का दल अब कैसे पार उतरेगा? क्योंकि सौ योजन का समुद्र जो रास्ते में पड़ रहा है।

सीता रे गड़ुवा लये हाथ रामा भजन खों निंग चलीं

महारानी सीता अपने हाथ में जल से भरा लोटा लिये हुए प्रभु श्रीराम जी के भजन को चल पड़ी हैं।

सीता ने तप करे अपार, बंस भिरे छा रये हां।
मारे रे ब्रह्मा खो सेल, बेला के संभर तज दई।

आल्हाखंड में ब्रम्हानंद जो कि चंदेल नरेश के राजकुमार थे, उन ब्रम्हानंद को उनके साले ताहिर ने मारा था। एक भाई ने अपनी बहिन का सुहाग उजाड़ कर उसे विधवा बना दिया था। बेला ताहिर की बहिन थी, ताहिर ने बहनोई को मारकर अपनी बहिन बेला को विधवा बना दिया था।

कां गये रे ऊदल मलखान, कां गये बछेड़ा रस बेंदुला।

रण के दूल्हा ऊदल और उनके भाई वीर मलखान कहाँ चले गये? ऊदल का प्रिय घोड़ा बैदुला कहाँ चला गया?

निंग कें जा रये भगवान, चंचल बछेड़ा रथ में नहें।

भगवान पैदल जा रहे हैं जबकि उनके रथ में उनके घोड़े जुते हुए हैं।

(श्री माखन लाल विश्वकर्मा, सागर)

धर लये बामन भेष, राजा बलि खो छलवे चले हां।

वामन अवतार में विष्णु जी ने ब्राम्हण का वेश बनाकर राजा बलि को छला था।

मारे दशरथ ने बान, जिन बानो सरमन मरे हां।

अयोध्यापति महाराज दशरथ ने मृग के धोखे में बाण चलाया जो कि पितृभक्त श्रवण कुमार को लगा और श्रवण के प्राणान्त हो गये।

मारे अर्जुन ने बान, बानो की सैया भीषम सो रहे हां।

महाभारत में अपने पितामह भीष्म को अर्जुन के इतने बाण लगे कि बाणों की सैया बन गई थी, उसपर भीष्म लेटे थे।

मांगे रे दइया ने देय, बिन मांगे भटकी दई हां।

कृष्ण जब ग्वालिनों से दही माँगते हैं तो वे उन्हें दही नहीं देती और जब दही नहीं माँगते तो वे ग्वालिनें उनके समक्ष दही की मटकी लाकर रख देती हैं।

राजा रे परदेशी की प्रीत, जैसे नदी के गौदरा हां।

परदेश में रहने वाले से प्रेम करना उसी तरह से है जिस तरह से कि गाजर घास उग आती है अर्थात् परदेशी की प्रीत क्षणिक होती है।

जिन खो रे राखें भगवान, मारन हारे कोऊ नइयां हां।

प्रभु जिनकी रक्षा करें उसे कोई नहीं मार सकता, कहावत है-जिसे रब रखे, उसे कौन चखे?

भोला रे सोरय सुख नीद, पारवती सेवा करे हां।

भोलेनाथ तो सुख की नींद सो रहे हैं और माता पार्वती उनकी सेवा सुश्रुषा में रत हैं।

धर लय रे साधू के भेष, सिया रे हरण को निंग चले हां।

मायावी रावण ब्राम्हण का वेश बनाकर सीता जी का अपहरण करने गया था।

दे दय रे भष्मासुर वरदान, जैसे दये रे जैसे ने दये हां।

देवाधिदेव महादेव ने भस्मासुर को वरदान दिया था लेकिन उसने वरदान मिलने के

पश्चात् भोलेनाथ को ही भस्म करना चाहा था। इससे वरदान दिया और न दिया बराबर ही था।

ऊंगे रे सूरज नारान, चंदा की जोत मलीन भयी हां।

सूर्योदय होने पर चंद्रमा की ज्योति अपने आप क्षीण हो जाती है। अर्थात् सूर्योदय के पश्चात् चंद्रमा का अस्तिव जाता रहता है।

(श्री शिवराज सिंह और साथी, सागर)

फाग -श्रवण कुमार की

धूरा डारै पति की आँखों में, सरवन की करकसा नार।

1. *सरवन की करकसा नार, विचारे अंधी-अंधा,*
   गई कुमरा के पास में, मन चाहों मिल जाय,
   एक हड़िया दो पेट की, हमखों देव बनाय। धूरा डारै......

2. *हमखों देव बनाय, हवा जब लेबी ठंडी,*
   बना दई चक बैन, बहू ने मनकी हंडी।
   दे इनाम डगरी हती, अपने घर खों आय।
   हंडिया लै लई हांत में, फिर फूली नहीं समाय। धूरा डारै.....

3. *फूली नहीं समाय, हँसत जा आये घर खों,*
   सास ससुर मर जायें, मजा हो आवे हमखों।
   करतब की हंडी चढ़ी, पुलकित भये शरीर,
   सास ससुर खों बनी महेरी, फिर अपने लाने खीर। धूरा डारै......

4. *अपने लानें खीर, इनें जा रोज जुवाबे,*
   एक रोज की बात है, सरमन करें विचार,
   तातों देखो बाप कौं, सरका दओ अपने थार। धूरा डारै......

पितृभक्त श्रवण कुमार की कर्कशा पत्नि अपने ही पति की आँखों मे धूल झोंक रही थी। उसने एक युक्ति विचारी, वह कुम्हार के पास गई, उसने कहा कि हमें ऐसी हंडी बना दो जिसका मुँह तो एक हो लेकिन वह दो अलग-अलग भागों में विभक्त हो। कुम्हार ने उसकी पसंद की हंडी बना दी, उसने उस हंडी की कीमत देकर अपने घर लेकर खुशी-खुशी आ गई। वह घर आते समय रास्ते में सोच रही थी, अगर मेरे ये अंधा-अंधी सास-स्वसुर मर जायें तो कैसा अच्छा हो? घर आकर उसने हंडी को चूल्हे पर चढ़ाया, हंडी के एक हिस्से में खीर बनाने

को रखी, दूसरे हिस्से में खट्टी महेरी बनाई। वह स्त्री अपने अंधे सास-स्वसुर को खट्टी महेरी देती और आप तथा अपने पति को खीर खिलाती थी। बहुत समय तक यही क्रम चलता रहा। एक रोज उसके पति को लगा कि उसके पिता की थाली में परोसी गई सामग्री गर्म है, तो उसने अपनी थाली अपने पिता के समक्ष रख दी और पिता की थाली स्वयं ने ले ली। जब पिता ने खाना शुरू किया तो स्वाद चखकर वे बड़े खुश हुए। वे अपने बेटे से बोले कि बेटा आज का खाना तो बड़ा स्वादिष्ट था। वर्षों बाद खीर खाने को मिली। यह सुन श्रवण कुमार को समझ में आ गया कि वास्तविकता क्या है। सच्चाई का भान होने के पश्चात् श्रवण ने अपने घर का परित्याग कर दिया। उन्होंने एक काँवर बनवायी, उसमें अंधे माता-पिता को बिठाकर तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। एक समय माता-पिता को प्यास लगी तो वे उन्हें पानी भरने गये। पानी तुम्बी में भर रहे थे। तुम्बी गुड़गुड़ाहट की आवाज आयी जिसे दशरथ जी ने सुना तो उन्हें लगा कि कोई जंगली मृग पानी पीने आया है। उस धोखे में उन्होंने आवाज की दिशा में बाण चला दिया जो कि श्रवण कुमार को लगा। बाण के लगते ही उनके प्राण पखेरू निकल गये। दशरथ जी को कुछ आभास हुआ तो वे श्रवण के पास गये। वास्तविकता से परिचित होने पर उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया। श्रवण के कहने पर महाराज दशरथ उनके माता-पिता को पानी लेकर गये लेकिन अंधे-अंधी को अपने पुत्रहन्ता का जैसे ही पता चला तो उन्होंने दशरथ जी को शाप दिया और दोनों ने अपने प्राण त्याग दिये।

फाग सूम की

सुनलियो सूम की फाग, सूम मैं प्रान तजे।

1. *घर में अकेले सूम हते रे, और हती उनकी नार*
   परी मकर सकरांत, परब नहाये के लिए सूम भये तैयार।

2. *सूम भये तैयार, अकेली लैंके धोती,*
   नजर चौतरफा देखी , जहां सबरे गये हते,
   फिर बई गली गये काये।

3. *बई गली गये काये, पौचें औघट घाट,*
   प्रेम सें लगे नहाने,
   तिलक दयें माला लयें, कुसा दायने हांत,
   पुन्न करों तुम सेठ जी, हम आये दीनानाथ।

4. *पुन्न करों नें जाय, हजारों करें बहाने,*
   निर्धन हैं महाराज, इते आनकें बामनो में लुट जाय,

घर आइयो पुंडत जी, पैसा तुमारो हम देंहे।
आगें-आगें सूम चले, पीछे दीनानाथ।
घर पौंचे जा कें ललकार, कहां मरत जजमान।
सूम नें प्रान तजे॥

एक कंजूस की फाग सुन लें, उसने अपनी कंजूसी में भले प्राण त्याग दिये हों, पर कंजूसी नहीं छोड़ी। वह अपने घर में अपनी पत्नी के साथ अकेले थे। एक समय संक्रांति का पर्व आया तो उन्होंने पर्व पर स्नान हेतु जाने को तैयारी की। एक धोती बगल में दबायी और जाने के पहले चौतरफा नजर डाली। जहाँ से सब लोग जा रहे थे उनसे अलग रास्ते पर गये। एक अलग घाट पर जो कि सुनसान था, स्नान करने लगे। उसी समय एक पंडा आये और कंजूस से दान पुण्य करने को कहा तो उस पर उन्होंने जवाब दिया कि घर आकर ले जाना, मैं बड़ा गरीब हूँ और जब वे पंडित घर गये, तो दो-चार खरी खोटी सुनाकर उन्हें वापिस भेज दिया।

कुंवर नें छे दरवाजे टो डारे, सातों पै परी घमसान।
प्रथम द्वार खों टोरकें रे, दूजे दल सिंगार।
तीजे में गजयार, सूरमा भौतऊ मारे।
चौथे के जा पास में, पांचे खों लगी पुकार।
छटो दरवाजो बीच बीच मंच कोरे बड़ो बनो विस्तार।
चार खंम लोहे गड़े, फिर लए धनुष और बान।
यह बरन कुंवर को देख, सातमों द्वार पुकारे।
वीर मन ही मन में मतो विचारे।
इते अकेलो सूरमा रे, उते हजारों वीर।
जुरकें सबरे सूरमा, मारन लागे तीर।
मारन लागे तीर, वीर सब मन में कोपे।
एक धरनी आकाश, बान सूरज में तोपे।
मरे हजारों सूरमा, एक बान से घात। कुंवर ने......,

कुँवर अभिमन्यु ने चक्रव्यूह के छै द्वार ध्वस्त कर दिये। सातवें पर बड़ी घमासान लड़ाई हुई। उन्होंने एक-एक करके छै दरवाजे तो बड़ी चतुराई के साथ तोड़ दिये लेकिन सातवें पर सारे महारथी मिलकर अकेले अभिमन्यु पर बाणों की वर्षा करने लगे। जिस तरह से मघा में पानी की झड़ी लगती है उसी तरह से कुँवर पर बाणों की वर्षा हो रही थी। उस स्थान पर अंधेरा छा गया और अंत में वीर अभिमन्यु ने इस चक्रव्यूह में वीरगति पा ली।

हमें वा साड़ी मंगा दे बालमा, बा आड़े है लाल।
लाल हमखों मंगवा दे, मैं लालों की लाल पिया हमारो।
लाल ख्याल तुम भूल ने जइयो, रूपया चाय लग जाय।
चुनरिया वही मंगाहों, लम्मी चौड़ी एकसी ओई अरज ओई घेर॥
वा उतार बूटी चरन, तिल भर परै नें फेर।
तिल भर परें ने फेर, चुनरिया वही मंगा दई।
लाल चुनरिया ओढकें, निग रई कम्मर मोड़॥
देख पिया की सूरती, कर रई मदन हिलोर।
कर रई मदन हिलोर, छोर छूटे अचला के।
धरे मासालेदार, पान खाती मचला के।
नैन सरीसी सेत मुनैयां, भारत मोह।
मरोर लाखों की गिनती नहीं, फिर भारत करत किलोर।
भारत करत किलोर पिया की अधिक लाड़ली।
हजारी लाल गांके कहें, ख्याल ने जइयो भूल।
लाल चुनरिया बई सखी, मोरी रई नजर में झूल।
हमें वा साड़ी मंगा दे...... ॥

एक पत्नि अपने पति से लाल रंग की साड़ी लाने की जिद कर रही है। उस लाल रंग की साड़ी में कई तरह की उसकी पसंद की बेलबूटे, किनारी आदि हैं। वह कहती है चाहे अधिक पैसा लगे लेकिन मुझे तो वही साड़ी ला दो। लाल साड़ी पहनकर वह बहुत खुश हुई। साड़ी पहिनकर, चुनरी ओढ़कर वह अपनी कमर को ज्यादा ही लचका कर चल रही है। होठों में पान, आँखों में काजल लगाकर सज-धज कर जब निकली तो सबकी नजरें उसी को देख रही थीं।

फूलों खों विरज गई भानमती, फूलों खों।
सारे सुअना दो हते रे, एक पिंजरा रेवास,
सारो सुअवा सें कहें, तोरी काहे खों माँग वसाय।
काहे खों भाग वसाय, ओ जनम में मानस हते रे पंछी लये औतार।
ओ जनम में खोते नौ फुला मोरी, ओई में मेदा वसाय।
ओई से मेदा वसाय, ऊपर पिंजरा टंगे हते रे, नैचें बिछीती सेज।
सारी रात बातें सुनी, भुनसारें मार गई रार।
रानी राजा से कहें, सुनों ने राजा बात।
कै तो मंगवा दे नौ फुला, न पलकों तजो प्रान।
सत फुल अपने बाग में, अठ फुल हाट विकाय।

नौ फुला राजा वैराट कें, उतै लेन मरन को जाय।
रानी भानमती, फूलों खो विरज गई॥

रानी भानुमती नौ केवड़े के फूलों के लिये रूठ गई। उनकी जिद थी कि मुझे तो नौकड़े के फूल ही मँगवा दो। इस जिद के पीछे एक कारण था। जिस कक्ष में रानी थी उसी में सारस तथा तोते के पिंजड़े टँगे थे। वे रात्रि में आपस में बात करते थे- एक पक्षी ने दूसरे से कहा कि तुम्हारे शरीर से खुशबू क्यों आती है? इस पर दूसरे ने जबाव दिया कि मैं पिछले जन्म में मानव था। उस जन्म में मेरे पास नौकड़े नाम का फूल था। उसी की खुशबू इस जन्म में मेरे शरीर से आती है। इन दोनों की बातें रानी सुनती रही और सुबह को वे रूठ गई। उन्होंने राजा से कहा कि या तो वे फूल मंगवा दे, नहीं तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी। राजा ने कहा कि तुम्हारे बाग में तो कई तरह के फूल हैं लेकिन वे फूल नहीं है। वे फूल तो केवल राजा विराट के बाग में हैं। उन्हें जो भी लेने जायेगा, उसकी मौत निश्चित है।

कर्जा की कठन मरोर, सखी सोचों में दूबरे बालमा।
घर लिखो, घूरो लिखी, लिखी चंदेली भैंस।
उतनई पै कर्जा ने चुकौ, सो लिखो चरगुवां गांव।
थाली परसी खीर की, शक्कर दई विराय,
सुद आवै जब कर्ज की, कौर धसे ने जाय।
रठिया में कठिया बई रे, मुन्ड में बई मसूर,
नदया रें बई जूनरी, सुवा चरेरू खांय।
कर्जा वैरी नें चुके रे, कर्जा हो गई छीर,
हजारी लाल कथकें कहें, कईयक भये फकीर।
सखी सोचों में दूबरे बालमा...... ।

एक स्त्री अपनी सखी से कहती है कि कर्ज का बोझ बड़ा कठिन होता है। उसके बोझ में ही मेरे पति दुबले हैं। वह बैरी कर्ज चुकाये नहीं चुकता। कर्ज चुकाने में हमारा घरबार लिखा गया। चंदली भैंस लिखी गयी, उसपर भी जब कर्ज न चुका तो चरगुवां नामक गाँव रहन रखा गया । लेकिन यह कर्ज हमारा दुश्मन बना है। खीर की थाली परोसी उसमें शक्कर डाली लेकिन खाते समय जब कर्ज की सुध आई तो एक कौर भी नहीं खा सके।

हमारे रठिया नामक खेत में कठिया पिसी बोई गई, मुण्ड जमीन में मसूर बोई तथा नदी के किनारे वाले खेत में ज्वार बोई है। उसे पक्षी चुनते हैं लेकिन कर्जा का ख्याल रात दिन रहने से कोई काम नहीं हो पाता। यह बैरी दुश्मन कर्ज नहीं चुक रहा, यह तो अपना आधिपत्य हमारे ऊपर जमाये बैठा है। इस कर्ज के कारण तो हजारीलाल जी कहते हैं कि कई लोग फकीर हो गये।

चुनरिया रंग दे रे, रंगरेजा हमारे यार
सत्य बीज बनायकें रे, नींद लये सहदेव,
करम बिनौरा औट के, फिर सूत कते सुखदेव।
हीरी पीरी रंग दे रे, बुंदी बरन रंग सेत,
पेजानी रंग जबई विराजे, मुतियां लागी कोर।
वे चुनरी हरी नाम की, ओढ़े हरी को दास।
धव ओढ़ी प्रहलाद ने ओढ़ी, ओढ़ी मीरा बाई,
ओई चुनरी हनुमान ने ओढ़ी, फिर ओढ़ी तुलसीदास।
चुनरिया रंग दे रे..... ॥

हे मेरे सतगुरू रूपी रंगरेज! मेरी काया रूपी चुनर को तू अपने रंग में रंग दे। इस चूनर का निर्माण कैसे हुआ। सत्य का बीज बनाकर इसे सुखदेव ने बोया। सहदेव ने पौधे की निदाई की फिर कर्म रूपी बिनौले का कपास निकालकर इसका सूत काता। इसमें अनेक रंग है हरा, पीला। इस चूनर में बिंदी कई रंगों की बनी है। मोतियों की किनारी बनी है। हरी के नाम की चूनर का निर्माण हो जाने पर इस चूनर को ध्रुव, प्रहलाद, मीरा आदि ने ओढ़ी। पवनपुत्र हनुमान ने इसे ओढ़ा तथा अंत में संत तुलसीदास ने इस प्रभु नाम की चूनर को ओढ़ा।

छल भये रे महराज, मिरगा छल भये रे।
काहे की खुरियें करो रे, काहे के कर लये पेट,
काहे की सिंगिये करो, फिर चरन सिया को खेत।
लोहे की खुरियां करो रे, रूपे क कर पेट,
सोने की सिगिये करो, फिर चरे सिया को खेत।
लोटपोट मिरगा भये रे, विच गलियो विच बीच,
उतरत आवें गढ़ लंक सें रे, फिर चरे सिया कोरे खेत।
सीता निकरीं पनियां रे, धरे गगर पै लेज,
टोर लबुदिया आर की, फिर मिरगा विड़ारन जाय।
मिरगा बिड़ारे नई बिड़रे रे, सीता भई हैरान,
कछुअक भीजें लाख की, चोली हो गई निचोबे जोग।
मिरगा छल भये रे॥

स्वर्ण मृग जो कि मात्र छलावा था जिसने प्रभु श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी के साथ छल किया था। उस मृग की आकृति खुर, पेट, सींग कैसे बने थे? वह कहाँ चरवन कर रहा था। मृग के खुर लोहे के, चाँदी का पेट, स्वर्ण के सींग थे तथा वह कपट रूपी मृग सीता जी के खेत में

चरवन कर रहा था। सीताजी ने मृग को देखा वे उस समय पानी भरने जा रही थीं उन्होंने मृग को एक छड़ी लेकर खेत से बाहर निकालना चाहा, वे उस कार्य में पसीने से सराबोर हो गई।

बेला के कठन ब्याव, आला लगुन फेर दे सम्मर की।

पांच लड़ाई भारत लिख दई, हुकम गाज तलवार।
लोहू के बूंदा डार, रकत की कगरी स्यायी,
जे कोऊ बेला ब्याहवे आहे, लौट एक ने जाय।
लौट एक ने जाय, खबर ऊदल ने पायी,
नाहक हार बलधारी, दादा तुमने पाई।
बड़े लड़ैया महुवे बारे, राजा सें मान गये हार।
माव मास में लगुनें भेजीं, फागुन चढ़ी बरात,
नम भड़रिया भांवर पड़ी, सिर पै घूमें असाढ़।
हातों के कंगन छूटे नहीं, नहीं हरद के दाग,
तेल की फरिया फाटी नहीं, बारे में हो गई बेला रांड॥

दिल्लीपति पृथ्वीराज की बेटी बेला का विवाह होना था। विवाह की शर्ते देखकर समस्त राजा-महाराजाओं ने टीका वापिस कर दिया लेकिन आल्हा-ऊदल-मलखान ने वह टीका ब्रह्मा के साथ पक्का कर दिया, जब चंदेलराज को विदित हुआ तो वे आल्हा से कहने लगे कि तुम वह टीका लौटा दो क्योंकि हर नेग में रक्तपात होगा। उनकी चिट्ठी से तो यही लगता है। वे बड़े लड़ाकू हैं उनसे सब राजा हार मान गये हैं। और अंत में ब्रह्मा का विवाह बेला से हो ही जाता है लेकिन बेला तो विधवा हो गई।

हंसा भये चालनहार, बहुर नई मिलबे के।

1. *जम आये जमलोक सें, लयें कगदवा हाँत,*
जिनके पन्ना हो गये, चलो हमारे साथ।
जम जोतें गाड़ी चले, बरे अगर की झार,
कछु-कछु हंसा पार उतर गये, कछू हैं उतरन हार।
हंसा पिंगल देश के, उड़ आये बिराने देश,
डारे मोती नें चुनें, हीड़े अपने देश।
उड़ हंसा खेतों गये, मूरख बिड़ारन जांय,
अरे-अरे मूरख बाबरे, हंस नें कौरों खांय।

एक बार जीव शरीर से निकल जाये तो वह पुनः वापिस नहीं आता फिर चाहे कितने उपाय कर लो। यम के दूत अपना लेखा-जोखा लगाकर आते हैं। जिसकी उम्र पूरी हुई कि उसका बुलावा आ जाता है। यम के दूत प्राणों को लेकर चले गये। जिस गाड़ी में जा रहे हैं, उसमें भैंसें जुती हुई हैं। आगे-आगे अग्नि की लौ, पीछे यमदूतों की गाड़ी । कुछ जीव तो भवसागर के पार उतर गये कुछ उतरने वाले हैं। कुछ जीव पिंगल देश के हैं जो कि गल्ती से इस जगह आ गये हैं। वे हंस रूपी जीव मोती भी नहीं चुगते क्योंकि वे अनजानी जगह पर आ गये हैं। उन्हें अपनी जन्मभूमि की याद सताती है। उन्हें यहाँ अच्छा नहीं लगता। तत्पश्चात् वे हंस रूपी जीव दूसरे खेतों की ओर चले गये। कुछ अज्ञानी लोग उन्हें वहाँ से निकालने का प्रयास करते हैं। वे यह भी नहीं समझते कि उस जगह का वे जीव कुछ भी नहीं लेंगे।

फाग- झगड़ो

तुम लंके चढ़ जाव, अंगद बाली के।
पांच पान को बीड़ा रचो, चौवन लौंग ठटाई,
जो कोऊ लंका जायगो, बीरा लेय उठाई।
लैहे सें अंगद ठांड़े भये, बीरा लये उठाय,
हमतो लंके जायेंगे, पंचों शीश नवाय।
बोले अंगद जा कहे, पांव खों नैयां पावड़ी, सिर खों नैया पाग,
बैठवे खों नइयां लीली बछेरी, का लंके चढ़ जाय।
पांव खों लैजा पाँवड़ी, सिर खों पचरंग पाग,
बैठवे खों देंहों नीली बछेरी, तुम लंके चढ़ जाव।
नीली घोड़ी राम की, अंगद से असवार।
खुरी करावे रेते में, जलें ने भींजे पांव॥

हे बाली पुत्र अंगद! तुम लंकापुरी जाओ। प्रभु श्रीराम की सभा में पाँच पानों का बीड़ा लगाकर बीचों बीच रखा गया। तत्पश्चात् घोषणा की गई कि जो वीर यह बीड़ा उठायेगा, उसे लंकापुरी जाना होगा। बाली पुत्र अंगद ने सहर्ष वह बीड़ा उठा लिया तथा सभी पंचों को प्रणाम करके लंकापुरी जाने की घोषणा कर दी। तत्पश्चात् अंगद बोले कि मेरे पाँव में पहनने के लिए पांवड़ी नहीं है न सिर पर बाँधने की पाग ही है। जाने के लिए नीली घोड़ी भी नहीं हैं, मैं किस तरह जाऊँ? उन्हें सारी आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की गई। अंगद घोड़ी पर जो कि प्रभु श्रीराम की थी बैठे और पवन वेग से लंका की तरफ चल दिये।

मेलों समद की पार, राम दल मेलो रे।
घाटन घाटन सब दल मेलो, औघट मेले राम,
बीच दलों में लक्ष्मन मेले, पर्वत पै हनुमान।
लिख परमानो लक्ष्मन भेजो, रावन के दरबार,
हाँत जोड़ ले मिलो जानकी, कायखों बाटे रार।
इतनी बात सुनी रावण नें, धरे मूंछ पै हाँत,
मेघनाद से जोधा मोरे, लड़हें दिन और रात।
हनुमान से जोधा उनके, हांके टरे पहार,
उन जोधों से पार नें पांहों, छोड़ भगो हतयार।
भुज प्रसाद राम के कोपें, हुइये कुटम संधार,
तुलसीदास आस रगवर के, राम मिले सें सार॥

लंकापुरी में प्रभु श्रीराम जी का दल अपना डेरा डाले हुए है। समुद्र के किनारे-किनारे दल रुका है तथा प्रभु श्रीराम अलग रूके हैं। लक्ष्मण जी दल के बीचोबीच हैं। पवनपुत्र हनुमान एक ऊँची पहाड़ी पर रूके हुए हैं। अनुज लक्ष्मण ने रावण को एक संदेश लिखा कि लंकापति रावण अगर तुम अपनी खैरियत चाहते हो तो प्रभु श्रीराम से हाथ जोड़कर अपने किये की माफी माँग लो, वे तुम्हे माफ कर देंगे। क्यों व्यर्थ का बैर मोल लेते हो? रावण ने जब लक्ष्मण जी का संदेशा पढ़ा तो वह घमंडी अपनी मूंछों पर ताव देता हुआ बोला कि मेरे मेघनाद जैसे मेधावी योद्धा हैं वे रात दिन संग्राम करेंगे और राम को पराजित कर देंगे। लेकिन राम दल में भी तो बड़े-बड़े योद्धा है। अरे! हनुमान! अगर एक हाँक लगा दें तो पहाड़ अपनी जगह से डिग जाते हैं। वे दुश्मन के समक्ष आ जायें तो दुश्मन अपने हथियार छोड़ भागेंगे और यदि प्रभु श्रीराम युद्ध में आयें तो तुम्हारे सारे कुटुंब का संघार कर देंगे। तुलसीदास जी कहते हैं कि रावण की प्रभु रामजी से संधि कर लेने में ही भलाई है।

आज सरासर मारी कनैया नें, आज सरासर मारी रे।
भर पिचकारी मोरी चुनरी पै मारी, चुनरी की शोभा बिगारी। कनैया ने......
भर पिचकारी मोरी चोली पै मारी, चोली की शोभा बिगारी। कनैया ने ....
चंद्रसखी मोहन को झगड़ो, छलिया कुंजबिहारी। कनैया ने........

कान्हा ने आज सरासर अन्याय किया। रंग से भरी पिचकारी से मुझे समूचा भिगा दिया। पहली पिचकारी मेरी चोली पर मार दी। इससे चोली भीग गई, फिर लहंगा भिगोया, चुनरी भी भिगो दी, अब मैं किस तरह अपने घर जाऊँ । मुझे तो इस छलिया ने अपने रंग में समूचा ही रंग लिया।

घर आ गये लक्ष्मन राम, अवध में फूल भये।

घर-घर नार कलश लयें ठांड़ी, ऊपर झन-झन झाड़ी।
आवत देखे राम लखन खों, पीरी ध्वजा फहरायी।

हँस हँस पूछें माय कौशल्या, सुनो राम रघुराई,
चौदा सालें वन में रहे तुम, कैसे रहे दोई भाई।

तत्थ बिछौना पत्त उड़ौना, ढोरे बन पुल खाई,
माता पिता के पुण्य सें, अच्छे रहे दोई भाई।

चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात् जब प्रभु श्रीराम जानकी तथा अनुज लक्ष्मण अवध में लौटकर आये तो पूरी नगरी में हर्ष की लहर दौड़ गई। सारे अवध की नारियाँ अपने सिरों पर कलश रखकर उसपर दिया जलाकर अपने-अपने द्वारों पर प्रभु के स्वागत में खड़ी हैं। घर आ जाने पर माता कौशल्या प्रभु से पूँछती है कि बेटा चौदह वर्ष की इतनी लम्बी अवधि में तुम दोनों भाई किस तरह से रहे? श्रीराम बोले कि हमनें सत्य का सहारा लिया, वन में कंदमूल फल खाये, इस तरह से हमने वनवास की अवधि पूरी की।

लै गई लौंगे बसांय री, तोरे बगीचा लौगों के,
अरे हां रे तोरे बगीचा लौगों के सहेलरी।

एक सखी अपनी सखी से कहती है कि तू लौंगे क्यों ले गई? तेरे तो लौंग का बगीचा है।

सांझ भयें चलीं अइयो सहेलरी, मोरे बिछौना कमरी के,
अरे हां रे सहेलरी, मोरे बिछौना कमरी के।

अरी सखी! साँझ होते ही तू चली आना, मैंने तुझे कम्बल का बिस्तर लगाया है।

गुरू बिन रे मिलहे ने ज्ञान, सुरबिन मिले ने माता शारदा।

गुरू के बिना ज्ञान नहीं मिलता तथा माँ सरस्वती की कृपा के बिना संगीत का ज्ञान नहीं होता।

दै राखों बृजनार बांसरी दै राखों।

काल समय हर ठौर बाँसरी, तुम तो लै गई बन्सी मोरी।
देव वा बन्सी मोरे मन बस गई, नाई ने करिये नार।

बन्सी कैसो होय नैन भर कवऊं ने देखी,
पिता तुमारे सात धान तुम बड़े विवेकी,
इत उत तुम डोलत फिरो, बन्सी कहां बिसराई।

बन्सी मोरी देव, काहे खों रार बढ़ा रये,
लोग हँसे चरचा करें, मन में करें विचार,
जा बन्सी निरमोहनी, देबे नहीं गमार।

अरे ब्रज की नारी! तुमने मेरी बाँसुरी कहाँ छुपा दी? मुझे मेरी बाँसुरी दे दो। एक समय तुम मेरी बाँसुरी ले गई थी। मेरी प्रिय बाँसुरी है इसे मुझे दे दो। यह बाँसुरी मेरे मन को भा गई है। तुम मेरी बाँसुरी देने को न नहीं करना।

ब्रजबाला कहती है कि कान्हा तुम किस बाँसुरी की कहते हो। कैसी होती है? मैंने तो उसे देखा तक नहीं, फिर मैं कहाँ से दे दूँ बाँसुरी? अरे! जिस वस्तु को कभी देखा ही नहीं वह भला कैसे दे दूँ? अरे कन्हैया! तुम बड़े घर-घराने के हो, तुम्हारे पिता का बड़ा नाम है तुम भी विवेकवान हो। तुम तो सारे ब्रज में घूमते फिरते हो, कहीं भूल गये होगे। फिर मुझ पर तोहमत लगाते हो कि मैंने तुम्हारी बाँसुरी चुराई है।

कृष्ण बोले-देखो सखी मेरी बाँसुरी दे दो, क्यों नाहक में रार बढ़ाती हो, जो भी देखेगा, सुनेगा, वह क्या सोचेगा? यह बाँसुरी बड़ी जादुई है और तुम ब्रज की गँवार बाला मुझे क्यों नहीं देती।

हरन भये महराज सीता हरन भये
सूनी देखी जे मड़ी, टांसे कारे काग।
सीता नइयां इन मढ़ो, को पूछे बात।
तर हर काटो केवड़े, मड़ खों दे खिसलाय,
सिया हरन के कारने, ठौर लगा दे जाये।
काहो काटैं केबरे, कहो मड़ खिसलाय,
सीता गई हैं मायकें, भोर लेबी लुवाय।

जब श्रीराम लक्ष्मण मायावी मारीच रूपी स्वर्ण मृग का अंत करके पंचवटी में लौटे तो कुटिया को सुनसान देखकर वे कहने लगे कि सीता का अपहरण हो गया प्रतीत होता है। कुटिया

सूनी पड़ी है, यहाँ सीता नहीं हैं, यहाँ कौवे बोल रहे हैं। सीता यहाँ पर नहीं है किससे इस बारे में पूछा जाये? क्रोध के कारण लक्ष्मण कहते हैं कि यहाँ के हरे वृक्षों को काट डालूँगा। यह कुटिया गिरा दूँगा, भाभी सीताजी के ढूँढ़ने के लिए तो मैं जमीन आसमान एक कर दूँगा। उन्हें ऐसा लगा कि हो सकता है वे शायद अपने मायके चली गई होंगी, तो उन्हें सुबह तक बुला लेंगे।

(मलखान सिंह अहिरवार और साथी, सेमाढाना)

गुरू बिन मिलहें नें ज्ञान, सुर बिन सरसुती ने मिले है।

बिना गुरू के ज्ञान प्राप्त नहीं होता, इसी तरह से माँ शारदा की कृपा के बिना स्वर की सिद्धि नहीं हो सकती।

दे राख्यो बृजनार, बांसरी दै राखो।
काल समय हर ठौर बांसरी तुम तो लै गई,
बन्सी मोरी देव बा बन्सी मोरे मन में बस गई।
नाई नें करिये नार बंसी मोरे मन में बस गई,
नाई नें करिये नार बांसरी दै राखो।
बन्सी कैसी होय नैन भर कबऊ नें देखी,
पिता तुमारे सात कान, तुम बड़े विवेकी,
इत अर उत डोलत फिरो, बन्सी कहां विसराई।
सत्त बाबुल की धुवाई मैंने बंसी नहीं चुराई।
बांसरी दै राखो॥
बन्सी मोरी देव कायखों रार बढ़ा रये,
लोग हँसे चरचा करों, मन में करें विचार।
जा बंसी निरमोहनी, देव नहीं गमार॥

कृष्ण की बाँसुरी एक ब्रजबाला ने चुरा ली तो वे उससे विनम्रता पूर्वक कहते हैं कि देखो सखी! मेरी बाँसुरी दे दो। तुमने ही मेरी बाँसुरी छिपा दी है। इस पर वह बाला बोली कि मैंने तुम्हारी बाँसुरी नहीं देखी, फिर मैं कहाँ से दूँ?

हरन भये महराज, सीता हरन भये।
सूनी देखी जे मड़ी, टांसे कारे काग,

सीता नैया इन मड़ों, को पूछे बात।
तर हर काटों केवरे, मड़ खों दे खिसलाय,
सिया हरन के काटने, डोर लगा दे।
काहो काटो केवरे, काहो मढ़ खिसलाय,
सीता गई हैं मायकें, भोर लेवी बुलाय। सीता हरन भये।

सीताजी का अपहरण हो गया है। वे पंचवटी की कुटिया में थीं और राम स्वर्ण मृग के पीछे गये थे, लक्ष्मण भी उनके पास गये थे। जब लौटकर आये तो सीता नहीं हैं। वे कहाँ गई होंगी? कोई मायावी तो नहीं ले। गया लक्ष्मण जी क्रोधित होते हैं। वे गुस्से में बोलते हैं कि मैं सब कुछ नष्ट कर दूँगा। इस पर किसी ने कहा कि सीता जी तो अपने मायके गई हैं।

हो गये महराज, राज अंगरेजी हो गये।
लम्मीं सड़क दई निकास, लेन चौगर दों खोली,
माटी मुरम पुराय, गट्टी ककरों बार ऊपर तक तनाय।
काम बनाय, नेचें पन्सासार चकरी भौरा,
मिलाय कें बिन बैलों चला दई रेल।
बिन बैलों चला दई रेल, किले की मददम पाई,
सालों रये बनाय मजा दुनियां खों दिखाई।
इसका पार अपार है, कोयला पानी देत है,
तनक पेंच के दावतों, भोत तेज हो जाय॥

अब भारत में अंग्रेजों का राज हो गया है। अंग्रेजों ने आवागमन के लिए गिट्टी मुरम की लम्बी-लम्बी सड़कें बनवा दी है इसके अलावा जंगलों-पहाड़ों को काटकर रेल लाईनें बना दी। लोहे की पटरियों पर बिन बैलों की गाड़ी अर्थात् रेलगाड़ी चल रही है। थोड़े से बटन के दबाने से रेल बहुत तेजी से दौड़ने लगती है। अब भारत में अंग्रेजों का राज हो गया है।

तनक भरोसो नैयां तन के, तनक भरोसे नैया रे।
माटी में मिल जाने ये तन खों, माटी में मिल जाने रे।

मनुष्य शरीर नाशवान है, इसका जरा सा भी भरोसा नहीं। जीव के निकल जाने के पश्चात् इस नश्वर शरीर को पंचतत्वों में विलीन हो जाना हैं। पाँच तत्वों से निर्मित शरीर उनमें ही मिल जाता है।

दगाबाजी से मारे हमारे बालमा, चौड़ा को बुख हो जाय।
चौड़ा को बुख हो जाये, सुनो जब बेला रानी,
ब्रह्मा मारे गये भौत घबरानी रानी।
महलों में रोदन करें, नैनों नीर बहाय,
राजकुमारी की दशा, हमसे कही ने जाय।
हमसे कही ने जाय, अंग आभूषण सारे,
फिरत हैं मारे मारे, नथ बेसर की को कहे।
मोहन माल हार, हीरा मोती बिंदिया,
फिर दयी जमीं पर डार, फैक दई है सुकमारी।
कहूं चोली कहूं चीर, कहूं है रेशम साड़ी,
भारी संकट में परी, जा अलबेली नार।
दरबाजे के सामने, भारी दयी ललकार,
भारी दयी ललकार, कहाँ बांदी से जाकर।
कलम दवात और कागज लै,
ऊदल खों पाती लिखी, में हो गई आस निराश।
हो गई आस निराश, कुंवर दिवला के वारे,
तुम घर बैठे रहो, जुझा दये कंत हमारे।
मलना ने पाले तुमें, अपने दूद पिलाय,
इनई दिनों के वास्ते, फिर तुमें शरम ने आय।
तुमें शरम ने आय, धरो तुम रूप जनानो,
रन के दूला वनें, लुके मरने के लाने।
जस्सराज के लाल हों, ऊदल नाव कहाय,
तुम दिल्ली से आनकें, मोरे पति मिलाव।
मोरे पति मिलाव, जबई हो ठंडी छाती।

मेरे पति ब्रम्हानंद को धोखे से मार दिया, इस चौड़ा सरदार का सत्यानाश हो जाये इसने बहुत बुरा किया। दिल्लीपति पृथ्वीराज की पुत्री बेला अपने पति को धोखे से मारे जाने के पश्चात् रो-रोकर कह रही है। महलों में रूदन मचा है, बेला के नेत्रों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई है। बेला बेसुध हो गई है, उसने अपने सारे आभूषण फेंक दिये। उसे अपने ही शरीर की सुध नहीं रही। रोते-रोते बेला ने चीखकर बाँदी को बुलाया, उसे कलम दवात लाने को कहा। बेला ने अपने देवर ऊदल को गुस्से में पत्र लिखा। उसमें यह लिखा कि तुम तो आराम से अपने घर में बैठे हो और यहाँ पर मेरी दुनिया ही उजड़ गई। मेरे मैके वालों ने धोखे से मेरे पति को मार डाला। अरे! तुम्हें महारानी मल्हना ने अपना दूध पिलाकर पाला है, तुम भले ही माता दिवला के पुत्र हो लेकिन मल्हना से बढ़कर वे तुम्हारी माता नहीं हो सकती। तुम रण के दूल्हा बने हो और

यहाँ क्या कायरता दिखा दी? हे जस्सराज के बेटे! अगर जरा भी गैरत हो तो यहाँ आकर मेरी सहायता करो, अन्यथा तुम स्त्री का वेश धारण कर लो। रण के दूल्हा होकर भी क्या तुम मरने से डर रहे हो? तुम शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली आओ और मेरे पति से मुझे मिला दो, तभी मेरे मन को ठंडक मिलेगी।

(श्री रामनरेश तिवारी और साथी, तालचिरी)

कहीं ने माने हमारे बालमा, समझावे सुंदर नार।

समझावे सुंदर नार, सुनो पति अर्ज हमारी।
शिमला के देनसवार, कहां की करी तैयारी।
कही हमारी मान ले, तजो आल को संग।
कै राजा कन वज रहो, न चलो तुम्हारे संग।
कहीं ने.......

चले तुम्हारे संग, विकल भई राजदुलारी।
तुम जाने परदेश, उमर है मोरी बारी।
तेल की फरिया ने फटी, छूटे ने हरद के दाग
आसा विरह ने लगे, जे बरे हमारे भाग कहीं.......

बरे हमारे भाग, लिखी क्या करमन में।
ऐसे में छोड़ पिया, तुम जाते हो रन में।
पिया पिया पपीहा रटे, लागे वचन कठोर।
हमें चैन कैसे पड़े, जंगल कुहके मारे। कहीं.....

जंगल कुहके मोर, कहे कुसुमा सुकुमारी।
कैसे कटहै रैन, पिया कारी इंदयारी।
महिलों में भोजन रचों, जेय लेब जेवनार।
सेजो पे आराम है, पान मसालेदार। कही ने......

राजा जयचंद के पुत्र ऊदल के अभिन्न मित्र लाखन राना आल्हा-ऊदल के साथ संग्राम में जा रहे हैं। एक तरफ तो मित्र की मित्रता दूसरी तरफ नवब्याहता स्त्री, किसके साथ न्याय करें किसके साथ अन्याय? लेकिन लाखन ने अपने मित्र की मित्रता को ही सर्वोपरि समझकर समर में जाने का फैसला कर लिया। यहाँ लाखन की नवयौवना सुंदरी कुसमा बार-बार अपने पति को रोकने का अथक प्रयास करती है। वह पूछती है कि हे प्राणनाथ! आप कहाँ जाने की तैयारी कर रहे हैं? तनिक मुझे भी तो बतायें? अरे! मैं अभी-अभी तो आई हूँ क्या मेरे लिए आप आल्हा-

ऊदल का साथ नहीं छोड़ सकते? वह इतना तक कहती है या तो आप कनवज में रहें या फिर जहाँ आप जा रहे हैं, मैं भी आपके साथ चलूँगी। मैं आपके बिना कैसे रहूँगी? आप तो परदेश जा रहे हैं। मैं अभी बाली उम्र की हूँ। अरे! अभी मेरे शरीर से हल्दी के दाग भी नहीं छूटे, मेरे तेल की फरिया भी नहीं फटी, आपके जाने से मैं विरहाग्नि में जल ही जाऊँगी। मेरे भाग में क्या जलना ही लिखा है? ऐसे समय में आप मुझे छोड़ रन में जा रहे हैं। आपके जाने के बाद जब पपीहा पीऊ-पीऊ बोलेगा तो मेरे मन पर क्या बीतेगी? मुझे कैसे चैन आयेगा, उस समय जंगल का मोर भी कुहकेगा। इन मोर पपीहा के बोल मेरे विरह की अग्नि को कई गुना ज्यादा बढ़ावेंगे। हे प्रीतम! तब मेरी वे अंधेरी रातें, किस तरह से कटेंगी, यह भी तो सोचो। लाखन की रानी कुसमा आगे यह भी कह रही है कि आज मैं महल में आपको जेवनार रच रहीं हूँ, आप महलों में पधारें तथा सैया पर मसालेदार बीड़ा चाबकर विश्राम करें। रन पर जाने का विचार ही त्याग दें।

सूरज मोरे मखने, चंदमा आये

1. *काहो डोरे बैठका, चंदमा आये*
2. *चंदन चौकी बैठका, चंदामा आये*

सूर्यदेव तो मेरे पाहुने है और चंद्रमा भी तो हमारे घर पधारे हैं इन दोनों अतिथियों का सत्कार मैं किस तरह से करूँ? इन्हें बैठने का क्या आसन दूँ? इन्हें बैठने को चंदन की चौकी डाली गई।

जनम मथरा में लीनो कनैया
भक्तों हेतु औतार, जनम....
भक्तों हेतु अवतार, जनम......

(फाग पार्टी, बिलहरी)

श्रीकृष्ण जी भक्तों के दुख दूर करने हेतु मथुरा में अवतरित हुए थे।

सुमरो रे खेरे की खेर, सुमरो गुरैया एई गांव के हाँ।

मैं सर्वप्रथम खेरे की आदिशक्ति खेड़ापति का स्मरण करूँगा, तत्पश्चात् गाँव के गुरैया देव का स्मरण करूँगा, जो कि हमारी चहुँओर रक्षा करेंगे।

फाग वृक्षों की

सगौना अरे रूखों में राजा हो रये।

सागौन वृक्ष को वृक्षों का राजा माना जाता है।

हंसा भये चालनहार, बहुर नई मिलवे खों।

जीव एक बार शरीर से निकला कि वह पुन: नहीं मिल सकता।

(श्री राजाराम लोधी, बिलहरी)

मो पै रंगा नें डारों श्याम लला
मैं तो ऊंसई अतर में भीजी लला।
काहे को रस रंगा बनायो, काहे की पिचकारी लला।
केसर घोर रस रंगा बनायो, हरे बांस पिचकारी लला।
भर पिचकारी मोरे सन्मुख मारी, भीजी मोरी सगी लला।
जो सुन पाहे सुसरा हमारे, आउन नें दे है बखरी लला।
जो सुन पाहें जेठा हमारे, घुसन नें देहें रसुइया लला।
जो सुन पाहें सैयां हमारे, चढ़न नें देहें सिजरियो लला।
मो पै रंगा नें डारो श्याम लला।

अरे कान्हा! तुम मेरे ऊपर रंग क्यों डालते हो, तुम्हें क्या पता कि तुम्हारे साथ होली खेलने का परिणाम मुझे किस तरह से भुगतना पड़े। एक ब्रजबाला कृष्ण को रंग न डालने का आग्रह करती है। वह यह भी कहती है कि मैं तो वैसे भी तुम्हारे रंग में रंगी हूँ तो क्यों मुझपर रंग डालकर मेरी फजीती करवाने पर तुले हो। होली पर कौन सा रंग घोला गया, किस लकड़ी की पिचकारी बनाई गई? केसर मिश्रित रंग घोला गया। हरे बाँस की पिचकारी बनाई गई। कृष्ण ने पिचकारी भरकर उस ब्रजबाला के ऊपर मार दी, उसकी साड़ी रंग से सराबोर हो गई। वह कहती है यदि मेरे स्वसुर ने सुन लिया तो वे मुझे घर में नहीं घुसने देंगे, यदि जेठजी सुनेंगे तो रसोई में नहीं जाने देंगे और अगर मेरे पति को इस बात की जानकारी होगी तो वे मुझे सेज पर भी नहीं आने देंगे।

जनम लीनें हैं अयोध्या नगरी में, श्री कमलापत भगवान।
श्री कमलापत भगवान धन्न हैं दशरथ राजा,
जन्में चारों भाई अवध में बाजे बाजा।

कौशल्या सें रामजी, लखन सुमित्रा माई,
भरत शत्रुघ्न कैकई, फिर अवधपुरी में जाय।
अवधपुरी में जाय, नगर राजा सजवाये,
सखियां गायें गीत, मंगलाचार मनाये।
बजें नगाड़े गगन में, बरसें पुष्प अपार,
कीरत छाई अवध में, फिर सुख की नैयां पार।
सुख की नैयां पार, तुरत गुरू खों बुलवाये,
प्रेम सहित सें जाय, नाम उनके धरवाये,
तीन लोक के जे प्रभु प्यारे राम अधार,
भक्तों के बस में रहें, राछसों खों डारे मार।
राक्षस डारे मार, जाय अन्न जल निद्रा त्यागी,
ऐसे लक्ष्मन वीर, प्रभु के चरनन लागी।
प्रभु की सेवा करत हैं, नाम भरत बलवान,
शत्रुघ्न के नाव हैं, प्रभु के प्राण अधार।
प्रभु के प्राण अधार, रहे सब मिलके भैया।
दशरथ हू हैं मगन और कौशल्या मैया।
कल्यान कथकें कहें, मांग लये रिषीराज,
राम और लक्ष्मन गये, यज्ञ करन के काज।
जनम लीनें हैं....... ।

अयोध्या नगरी में आज श्री कमलापति भगवान ने जन्म लिया है। नगरी धन्य हो गई वे राजा रानी धन्य हैं जिनके घर प्रभु ने जन्म लिया। अयोध्यापति महाराज दशरथ के चार पुत्रों ने जन्म लिया है। महारानी कौशल्या के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण तथा भरत और शत्रुघ्न कैकेयी के हुए। सारे अवध में खुशियाँ मनाई जा रही हैं, सखियों द्वारा मंगलाचार हो रहे हैं। मंगल वाद्य बज रहे हैं। पुष्प वर्षा हो रही है। यहाँ अपार सुख की वृष्टि हो रही है। तदनन्तर महाराज ने कुलगुरू वशिष्ठ जी को बुलवाया। चारों पुत्रों का नामकरण का चारों का भविष्य गुरू वशिष्ठ ने बतलाया। महाराज दशरथ को कहा कि ये जो आपके बड़े कुमार हैं, वे साक्षात् त्रिलोकी नाथ हैं इनका नाम राम है ये सबको प्रिय होंगे तथा अपने भक्तों के बस में रहेंगे। आगे चलकर ये राक्षसों को मारकर पृथ्वी का भार हरेंगे। दूसरे कुमार ये श्रीराम के सहायक होंगे, इनका मन अग्रज राम की सेवा में रहेगा। ये राम के साथ राक्षसों का संहार करेंगे। इनका नाम लक्ष्मण होगा। तीसरे कुमार राम के ही अनुयायी प्रजापालक होंगे, इनका नाम भरत होगा। चौथे कुमार का नाम शत्रुघ्न होगा, ये सबके प्रिय होंगे तथा अपने भाइयों के समान गुणवाले होंगे। महाराज दशरथजी ने सबके गुण तथा भविष्य के बारे में सुना तो महारानियों सहित बहुत प्रसन्न हुये। कल्याणजी कहते हैं आगे चलकर विश्वामित्र मुनि यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न कराने के लिए कुमार राम और लक्ष्मण को माँगने आयेंगे।

बारामासी

सखी तज दीनबो हमें मुरली बारे, आये से लौट गये द्वार।
आये से लौट गये द्वार, कहें बृषभान दुलारी,
मैंने कीनों गरब, सुनो तुम ललता प्यारी।
अगहन में आये हते, गिरधारी मोरे द्वार,
गरब हमारे देखकें, फिर लौट गये करतार।
लौट गये करतार, पूस में फिरों अकेली,
तलफों में बिन श्याम, अवती संग सहेली।
दिन बैरी कट जात हैं, समजावै बृज नार,
रात हमें कैसे कटे, बिन मोहन नंदकुमार।
बिन मोहन नंदकुमार, माघ में थर थर कांपों,
हिरदे व्यापै पीर, जुबन चोली में नापों।
मोर मुकट की लटक पै, अटके नैन हमार।
खबर हमारी नें करें, जसुदा के राजकुमार।
जसुदा के राजकुमार, सर बीरी फागुन आये,
घर-घर उड़े गुलाल, श्याम हमखों तरसाये
रंग बिरंगी हो रही, बृज में घर-घर नार।
टेसू फूले सकल वन, फिर हमखों है दुख भार।
हमखों है दुख भार, बसन्ती रित जा आई,
चैत चितेरे घाम, हमें नें कछू सुहाई।
नौ दुरगा पूरीं करौ, लगा देव तुम पार,
भूल हमारी हो गई, मोरी विनती सौ-सौ दार।
विनती सौ-सौ दार, धरम वैसाख महीना,
जल बिन तलपै मीन, करो हमें श्याम बिहीना।
मुरली वारे आनकें, हमरो करो उद्धार,
बहे पसीना देय सें, फिर हो जाव हमखों ब्यार।
हो जाव हमखों ब्यार, हमारो खाव दहीना,
हमें दये बिसराय, बीत गये छै-छै मईना।
जेठ जगर ज्वाला जरे, तन में लगी दमार,
जा गरमी कैसे कटे, फिर तुम बिन कृष्ण मुरार।
तुम बिन कृष्ण मुरार, रही न हमरी जानी,
लागो अगम असाढ़, बरस हो रिमझिम पानी।
दादुर बोले जोर सें, बोलें जीव हजार,

मेघ गरजना कर रहे, इते सूनी सेज हमार।
सूनी सेज हमार, लगौ सावन मनभावन,
भारी जो त्यौहार, हमें नें सोहे पावन।
हमरे पीछे गोपका, सोच करें बृजनार,
बारा बरस के मोहना, जियरा के प्रान अधार।
जियरा के प्रान अधार, लगी भादों इंदियारी,
मघा नरबत अर्राय, हमें भूले गिरधारी।
श्याम बिहीना मै फिरों, ढूंढो द्वारन द्वार,
चूक हमारी छोड़ दो, फिर प्रानों के आधार।
चरनों में आधार, शरद रित क्वांर कहाई।
देव दशेरा होय, घरों घर बजे बधाई।
सब कोऊ हमरो भरो है, लाख लोग परवार,
श्याम बिना सूनो लगे, फिर देखों सब संसार।
देखों सब संसार, गोवरधन पूजा आई,
कातक ऐसो मास, खबर लीनी यदुराई,
ललता रूक्मन राधिका, और बिसाखा नार,
कहें फकीरेलाल जी , फिर भेंटे नंदकुमार।
सखी तज दीनों हमें मुरलीबारे.... ।

वृषभान दुलारी कृष्ण प्रिया राधा अपनी सखी ललिता से कहती हैं कि सखी मुझे तो लगता है कि जैसे मुरली मनोहर ने मेरा त्याग कर दिया है। उनके इस तरह के बर्ताव का कारण मैं ही हूँ या फिर मेरा अभिमान है। यदि मैंने अभिमान नहीं किया होता तो कान्हा मुझे इस विरह अग्नि में जलते हुए छोड़कर नहीं जाते। सुनो ललिता बहिन! मेरे कृष्ण अगहन माह में मुझे मिलने मेरे घर आये थे लेकिन मेरा अभिमान देखकर वे मेरे द्वारे से ही लौट गये। पूस मास में मैं अकेली उन्हें तड़पती रही, बिना श्याम के मैं बावली बनी भटकती रही। मेरी सखियों से भी मेरा दर्द नहीं छिपा था। अब ये हाल है कि दिन तो किसी प्रकार कट जाता है लेकिन रातें बिन नंदलाल के नहीं कटती। माघ मास में शीत की अधिकता की वजह से मैं अकेली काँपती रही, मेरे ह्दय में कृष्ण वियोग की पीड़ा सालती थी। मेरा यौवन उन्हें ही अपने अंक में समेटना चाहता था। उनका हर घड़ी ख्याल दिल में रहता था। उनका रूप रंग उनका मोरपंख का मुकुट उसके लटकन इन सबके लिए मेरे नैन तरस रहे थे। लेकिन उन यशोदा के लाल ने मेरी खबर ही नहीं ली, कितने निष्ठुर हो गये हैं। जैसे-तैसे रंग रंगीला फागुन आ गया। इस समय घर-घर रंग अबीर बरस रहा था और मेरे श्याम मुझे तड़पा-तरसा रहे थे। सारे ब्रज की नारियाँ रंग में सराबोर थी। फागुन में सारे वनों में टेसू फूला था, कैसा सुहावना मौसम और बिन गिरधारी के मुझे कुछ भी तो नहीं सुहाता, न फागुन न बसंत। फिर चैत्र का महीना आ गया, इस माह की धूप बड़ी

तीखी होती है लेकिन मैं तो बेसुध थी। मैं नवरात्र के व्रत करती माता से विनती करती कि- हे माँ! मेरी मझधार में अटकी नाव पार लगा दे, मेरी जीवन की नाव के खिवैया को बुलाकर, मैं तुमसे सैकड़ों बार विनती करती हूँ। चैत्र के बाद वैशाख आया। वैशाख तो धर्म का महीना माना जाता है लेकिन इस माह में श्याम के वियोग में मेरी दशा उस मछली के सदृश्य हो रही थी जिसे जल से निकालकर अलग कर दिया हो। मुझे बिना श्याम के क्यों कर दिया? हे मुरलीधर! आप आ जाओ। मेरा उद्धार कर दो, मेरे शरीर से पसीने की धार बह रही है। मुझे कृष्ण से प्रेम हो गया है। मेरा दही भी नहीं खाते, आते भी नहीं है उनके वियोग में छै मास बीत गये। ज्येष्ठ महीने में ग्रीष्म की तपन और ज्यादा बढ़ जाती है, कृष्ण वियोग में तो इस तपन ने अग्नि का रूप धारण कर लिया है। हे माधव! अब तो मेरी जान ही निकली जा रही है। असाढ़ में रिमझिम-रिमझिम पानी बरसने लगा, पानी के बरसते ही दादुर तथा अनेकानेक कीट पतंग रात्रि में बोलते हैं। आकाश में मेघ गर्जना कर रहे है। मैं अकेली अपनी सेज पर सोती हूँ लेकिन यह सेज तुम्हारे बिना सूनी प्रतीत होती है। असाढ़ निकलते ही मन को अच्छा लगने वाला श्रावण महीना आ गया। इस मास में तीज त्यौहार ज्यादा होते हैं लेकिन मुझ विरहिन को ये त्यौहार बिलकुल भी नहीं भाते। यहाँ पर आपके सारे सखा, ग्वाल-बाल तथा ब्रजबालायें आपके न होने की कमी महसूस करती हैं। आपके लिये अफसोस व्यक्त करते हैं। कहते हैं हमारे बारह वर्ष के मोहन हमारे प्राणाधार हो गये हैं। उनके बिना यह जीवन ही व्यर्थ है। श्रावण जाते ही भाद्र मास आ गया। पानी और तेजी से गिरने लगा, जब देखो अंधेरी घटायें छायी रहती है। इस समय मघा नक्षत्र की झड़ी लगी तो चहुँओर जल ही जल है। ऐसे समय में गिरधारी ने हमें भुला दिया है। मैं डाल-डाल, गली-गली ढूँढती फिर रही हूँ। मैं अपनी गलती के लिए बार-बार आपसे क्षमा याचना करती हूँ। आप तो मेरे प्राणों के तथा जीवन के आधार हैं। अब शरद ऋतु आ गई, दशहरे का समय है। घर-घर में त्यौहार की तैयारी चल रही है। मेरे घर में सब है। भरा पूरा कुटुम्ब परिवार है लेकिन एक तुम्हारे न रहने से सारा संसार सूना प्रतीत हो रहा है। जैसे कि इस दुनिया में कोई भी नहीं है। दशहरा दिवाली भी हो गये और गोवर्धन का पूजन आ पहुँचा। कार्तिक मास में मोहन अपनी सखी सहेलियों से मिलने आ गये।

फकीरे लाल जी कहते हैं कि कृष्ण आकर राधा, ललिता, रूकमणी और विशाखा आदि सखियों से गले लगकर मिले। मोहन के आने से विरहा वियोग का संताप जाता रहा।

गति टारी ने टरे जा करमन की, ब्रह्म ने खेंच दई रेख।
निरपत राजा हो गये, हरिशचंद्र कहो वे कैसे दानी,
कर्मगति से आन, डोम घर भरते पानी।
रानी ब्राह्मण घर रही, कर्मगति से आन,
सत्य ने छोड़ा निरपति ने, फिर भोगे दुःख महान।

भोगे दु:ख महान, गये सुरपुर वे राजा,
कोटन गौवे पुन्न करीं, नित हूं नर्ग राजा।
अंत समय गिरगिट भये, परे कूप में जाय,
कर्मगति बलवान है, सो नाहीं वरनी जाय।
सो नाहीं वरनी जाय, लिखी काहो करमन में,
सिया लखन अरू राम, फिरत व्याकुल वन वन में।
इते जानकी हर लई, लंकापत का नाथ,
तीन लोक के धनी पै, फिर पौची विपता जाय।
पौची विपता जाय, विपत सें कोऊ नें जीता,
जैसी होत व्यथा, तैसी मिले सहाय।
कै ले जावे तरह खों, कै तरह तहां लै जाय।
गति टारी ने टरे जा करमन की॥

विधाता ने हरेक की तकदीर में जो लिख दिया है वह अटल सत्य है। वह कभी भी नहीं बदल सकता अर्थात् ब्रम्हा की खींची गई रेखा अमिट है। एक समय की बात है कि इस पृथ्वी पर हरिश्चंद नामक सत्यवादी राजा थे। उनकी किस्मत को देखिये कि इतने बड़े राजा और उन्हें एक डोम के यहाँ चाकरी करनी पड़ी तथा रानी ने भी दूसरे के घर की चाकरी की। तात्पर्य यह कि कर्म का लेख नहीं बदला जा सकता। महाराज हरिश्चंद ने इतने कष्ट सहन करने के पश्चात् भी अपना सत्य नहीं छोड़ा, भले ही इसके लिए बड़ी मुसीबतें आई लेकिन सत्य पर अडिग रहे। अंत समय उन्हें स्वर्ग में स्थान मिला। इसी तरह नृगराजा ने असंख्य गौवें दान की लेकिन जरा सी भूल के कारण उन्हें गिरगिट की योनी में जाना पड़ा। कर्म के लेख के अनुसार ही सबको भोगना होता है। त्रेता में प्रभु श्रीराम ने अपने अनुज लक्ष्मण और सीता के साथ चौदह वर्ष का वनवास भोगा, वह भी उनके भाग्य का लेख था जो कि उन्हें पूरा करना ही था। कर्मगति में अच्छा बुरा जो भी लिखा है वह सबको भुगतना पड़ता है।

पक्षियों की फाग

गरुण पक्षों के राजा हो गये, सब पक्षी सरदार।
सब पक्षी सरदार, चील गीद अरू चेंपला, बगला थानेदार।
हवलदार हारेल है, फिर मुरगा है कुतवाल,
मुरगा है कुतवाल, मुकद्दम है कटकोला।
पटवारी है बाज, काम पैमायस करना,
पुलिस कबूतर कंपनी, कौड़ीला गुनवान,
अरूवा मैना पंच हैं, मुंशी हैं गुनवान।

मुंशी है गुनवान, अकल सें काम चलावें,
कऊवा है बेईमान, काम पर ध्यान लगावै।
अलवत पक्षी आकाश में, जो हाथों का काल,
जो दिमाक ह गरूड़ खों, बेसब करत सवाल।
सबसे बिकट चंडूल चिरैया, है मुलकों की लाट,
मुलक में हुकम करईया।
इते सिरस्ते किलकिला, वैरिस्टर नों डोर,
कानूनी है कोकला, फिर चीफ कमिश्नर मोर।
चीफ कमिश्नर मोर, पनवुडुवा है हैड कमिश्नर,
तहसीलदार है चैपला, मुकद्दम है कटकोला।
वलीराम कथकें कहें, सुन गलगलिया बात,
टिटहई टेर लगायकें, फिर सबखें लई बुलाय।
गरूण पक्षों के राजा हो गये रे॥

गरूण पक्षियों के राजा हो गये बाकी पक्षियों को उन्होंने अलग-अलग विभाग दे दिये। गरूण जी ने अपने राजा होने का दायित्व बखूबी निभाया। चील गिद्ध तथा चैपला को बगुला नामक पक्षी के अधीन पुलिस विभाग में रखा गया। बगुला थानेदार या हारेल हवलदार तथा मुर्गा कोतवाल था। कटकोला मुकद्दम बाज पक्षी पटवारी है, वह नाप तौल का काम करता है। कबूतर कौड़ीला भी पुलिस है। कौवा, मैना ये पंच तथा गुनवान मुन्शी हैं। कौवा तो बड़ी चालाकी दिखाता है। वह अपने काम पर नहीं आता। कुछ पक्षी आकाश में विचरण करके अपना कार्यभार निभाते हैं। गरूण उन सबसे सवाल-जवाब करते रहते हैं। चंडूल नाम की चिड़िया गोपनीय विभाग देखती है। किलकिला बैरिस्टरी करते हैं। कोयल कानून संबंधी मामले देखती है। मोर चीफ कमिश्नर है। पनबुडुवा हैडकमिश्नर, तहसीलदार चैपला तथा मुकद्दम कटकोला है। बलीरामजी कहते हैं कि हे गलगल! मेरी बात सुन, टिटही अपनी आवाज से सारे पक्षियों को एकत्रित कर लेता है।

(सर्वश्री तुलसीराम, राजेंद्र और साथी, धनगुवां)

भोजन करवे पावने बैठे हैं, परसें धनी चौहान।
परसें धनी चौहान, भरो है जैसे मेला,
हितुवा नातेदार, बैठे गव है चंदेला।
चांदी के पटा धरे, जिनपै बैठे बीर,
सोने के गडुवा धरे, पीवै खें कंचन नीर।
पीवै कंचन नीर, डार दयीं पतरीं आंगें,

दार भात और कड़ी सान में परसन लागे।
पापर, खारे और बरा, रायता छौक बगार,
शक्कर में दौना भरे, हलुवा है मसालेदार.....
हलुवा है मसालेदार, परस दये नरम सुहारी,
परम प्यारी लगे, कचौरी की छब न्यारी।
रसगुल्ला रस से भरे, लगी करारी धार।
लड्डुआ परसे मगद के, फिर बरफी खोबादार।
बरफी खोबादार, जलेबी और सेब खारे,
दूध मलाई खूब, सबई के धरे अंगारे।
कलाकंद बादाम के, सूते लच्छेदार।
फैनी परसीं चुरमुरी, फिर पांवना करें बिचार।
पावने करें बिचार, नवात समरथ हम पाये,
किसम-किसम के खूब, आज भोजन बनवाये।
मालपुवा और दुधबरा,घी शक्कर में डार,
खीर बदामी असवनी, बड़ी मसालेदार।
बड़ी मसालेदार, चकाचक माल खुवावें,
सब रवें एकई भांत, खड़े पृथ्वी परसावें।
बूढ़े अस्सी बरस के, बिन दांतन के वीर,
इच्छा भोजन हो रहे, आनंद भयो शरीर....
आनंद भयो शरीर, बने भजिया बेसन की,
जब परसें नमकीन, और चटनी कैथन की।
बुंदी मगोड़ा चटपटे, बड़े तरावटदार,
बेसन की बरफी बनी, घुइयां की साग तैयार।
साग बनी तैयार, बना के धरे अंगारे,
रूच रूच व्यंजन बने, स्वाद सब न्यारे न्यारे।
सकल पदारथ सब कछू, मेवा और मिष्ठान,
हांत जोड़ आज्ञा दई, पृथ्वीराज चौहान।

चंदेलराज के पुत्र ब्रम्हानंद के विवाह में सारे बाराती पाहुँने भोजन करने बैठे थे तो दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान स्वयं उनको भोजन परोसते हैं। इस समय इतनी आवाजाही हो रही है कि जैसे मेला लगा हो। सब अतिथियों को पंगत में बैठाया गया। चंदेल वंश के समस्त आगन्तुक बैठ गये। चाँदी के पटा डाले गये, जिनपर मेहमानों को बैठाया गया। स्वर्ण के लोटे में शीतल जल सबके समक्ष रखा गया। तत्पश्चात् पत्तलों में दाल, चावल, कढ़ी, पापड़, खारे, बड़ा, रायता, शक्कर, हलुवा, सुहारी, कचौरी, रसगुल्ला, मगद के लड्डू, बर्फी, जलेबी, सेव, दूधमलाई, कलाकंद

बादाम, फैनी, मालपुवा, दुधवरी, खीर, असबनी इत्यादि भाँति-भाँति के व्यंजन बारातियों को परोसे गये। इसके अलावा चटनी, बूँदी, मगोड़ी, बेसन बर्फी, छुइयाँ विविध तरकारियाँ परोसने के उपरांत पृथ्वीराज ने सबको भोजन करने के लिए हाथ जोड़कर आग्रह किया।

सौतों को झगड़ो

लुहरी ने खोले किवार,
राते झगड़ा भव घर जेठी सें।
लुहरी ने खोले किवार,संग में परे प्यारे,
जेठी लग-लग सुने,दूर से करे इशारे।
जबसे लौरी आई है,देरी मारी लात।
गतकें तो बोलें नहीं,सोवें ने हमारे साथ।
सोवें ने हमारे साथ,लगें दरपन में प्यारे,
मै हो रयी हों नीम,फिरत मैं मारी-मारी।
जूड़ा सो मोरे पेट में,हुमके आदीरात,
मोय चैन कैसे परे, मैं सोऊ कौन के साथ।
मैं सोऊं कौन के साथ,मोय ने परे रिहाई,
अपन बड़ो बेईमान, संग में करी लुगाई।
अरबस में आगी लगे,दिन सूजे नें रात,
ओमें का नोनों लागों,मोरी तनक ने पूछे बात।
तनक ने पूछे बात,ओय पैरावे साड़ी।
हमसे इतनो कपट, मिले ने कारी कमरी।
देखो बौटा बन गये, ओखे झझरीदार,
ढ़रमा के टोड़र बनें, फिर बिंदिया झूमकादार।
बिंदिया झूमकादार, हमें जे नकली चूरा,
उनके मान गुमान, हम तो माटी कूरा।
बा सोवत है सेज पै,हम तलफल है सेज,
सब पंचो से अरज है, मोय देव मायकें भेज।
देव मायकें भेज, मजूरी हम कर खाहें,
देखे उनके चमत्कार, तो हम मर जैहें।
बलीराम कथकें कहें, सुनो फाग के हाल,
जेठी के कैयक बने, लुहरी के फकीरेलाल।
रातें झगड़ा भव घर जेठी सें॥

(श्री श्यामल अहिरवार, शंकरगढ़)

उक्त फाग में सोतिया डाह का बड़ा सजीव चित्रण है। बुंदेलखंड में जिस पुरूष की दो पत्नियाँ होती हैं उनमें से पहली पत्नी को जेठी तथा बाद में लाई गई पत्नी को लुहरी कहते हैं। यहाँ पर जेठी की मन:स्थिति का वर्णन है। जेठी जब लुहरी के कक्ष में गई तो उसने देखा कि किवाड़ बंद है, इस पर जेठी ने किवाड़ खुलवाने के बहुतेरे प्रयत्न किये लेकिन जब नहीं खुले तो रात्रि दोनों सौतों में झगड़ा हो गया। जेठी बोली कि किवाड़ इसलिए नहीं खोले थे क्योंकि उस कक्ष में पतिदेव मौजूद थे। जेठी ने बहुत इशारे किये- जेठी कहती है कि जब से यह मेरी सौत आई है तबसे मेरे पति मुझसे कभी ठीक से नहीं बोले न ही मेरे कक्ष में सोने को आये। मैं अब उनको दूर से ही निहारा करती हूँ। उन दोनों के लिए मैं नीम सी कड़वी हो गई हूँ। मेरे मन में जब दर्द उठता है तो बड़ी बेचैन हो जाती हूँ कि उसी घर में मेरी जगह लुहरी ने ले ली। मैं किसके साथ रहूँ। मुझे न रात नींद न दिन में चैन है। मेरा पति ही जब बेईमान निकला तो फिर क्या हो सकता है? ये दोनों मेरे साथ में इतना अन्याय कर रहे हैं कि मुझे समझ में नहीं आता कि उसमें ऐसा क्या है जो कि मुझसे वे एक बात भी नहीं पूछते। उसे तो नित नई-नई साड़ी आती है। मुझे कोई एक काली कम्बली भी नहीं देता। उसे झझरीदार बोंटा, तोड़ल तथा बेंदी जेवरात बन गये मुझे तो नकली जेवर भी नसीब नहीं हैं। उस लुहरी का बड़ा मान सम्मान है और मैं सेज पर तड़पती रहती हूँ। अब तो मेरी सबसे यही अर्जी है कि मुझे मायके भिजवा दें। वहाँ पर मैं चाहे मजदूरी कर जी लूँगी, क्योंकि यहाँ पर इन दोनों के ढंग देखकर तो मैं कभी भी मर जाऊँगी। बलीरामजी कहते हैं कि जेठी की तरफदारी तो कई लोग कर रहे थे लेकिन लुहारी का तो केवल एक ही था।

अन्जनी सुत प्रभु, मन मोरे भायो राम।
लाल लंगोट लगे अति सुंदर, तैल सिन्दूर चढ़ायो,
एक हांत गदा दूजे, दोनागिर मूर सजीवन लायो
भरत ने मारे बान चलायो।
लागो बान गिरे धरती में, राम-राम मुख लायो,
सुनतई भरत भयो अचरज मन, मैने कोई भक्त सतायो।
भरत ऐसे बतराने,
कंपित पौंचे भरत जी, कौन कहां से आयो,
कौन राजा की करत चाकरी, कौने तुमें पठायो।
भरत के बैन सुने अरे हां,
अंजनी सुत मोरो नाम जो कहिये,लंकापुरी से आयो,
राम राजा की करत चाकरी,लक्ष्मण कुंवर सतायो।
संजीवन लेने आयो।
आओ पवनसुत बैठो बान पै,बाणों गैल बनावे,

दोनागिर पर्वत खों धरकें, बाण आकाश चढ़ावे।
पवनसुत बचन उचारे हों,
इतनी सुनके चले पवनसुत, एक छड़िक में आये,
तुलसीदास सब दल आनंद छायो,
भोर न होने पायो।
संजीवन आय कें दीनी।

अंजनी पुत्र पवनसुत हनुमान मेरे मन को बहुत भाते हैं। वे अपने शरीर पर लाल रंग का लंगोट धारण करते हैं तथा तैलयुक्त सिंदूर का लेप उनके शरीर पर बहुत अच्छा लगता है। उनके एक हाथ में गदा तथा दूसरे हाथ में द्रोणागिर पर्वत लिये सुशोभित हैं। एक समय लंकापुरी में जब लक्ष्मण को मेघनाद ने शक्ति बाण से घायल कर दिया था तब श्री हनुमानजी द्रोणागिर पर्वत पर संजीवनी लेने गये। लेकिन रावण ने अपनी माया से उसकी पहचान में भ्रम पैदा कर दिया, जिस पर हनुमान जी सारा पर्वत ही उठाकर ले आये। पर्वत समेत उड़कर जाते हुए जब भरत जी ने देखा तो मायावी समझकर उन्होंने उनको बाण मारा। बाण के लगते ही हनुमानजी गिर पड़े। उनके मुँह से प्रभु श्रीराम का नाम सुनकर भरतजी उनके पास गये। उनका परिचय जानने के उपरांत भरतजी को बहुत दुख हुआ। उन्होंने हनुमानजी को बाण पर बैठाकर समय के पहले ही उस स्थान पर पहुँचा दिया। उन्हें देखकर रामदल की सेना में हर्ष की लहर दौड़ गई।

समझावे उरबसी नार,पिया खरचा ने करो धन घट जैहे।
भांग तमाखू छोड़ दे, पान मसालेदार,
घी शक्कर जिन खाव, देह खो देब कसाले।
हर हांको गोबर करो,पानी भर-भर ल्याव,
रूखी-सूखी गांकरें, फिर मीड़ मठा में खाव॥ पिया..... ॥
मीड़ मठा में खाब,तरूज्जुत ऐसो करले,
बूंद ने बाहर जाय, कनस्तर घी से भर ले।
मेंगाई में बेंच कें, कर लेबी कलदार,
मांगे से दैबी नहीं, फिर सगे कुटम परवार॥ पिया...... ॥
सगे कुटम परवार, बचन हमारो मानो,
संग सखा से यार, मुहब्बत कभी न करना।
हितुवा रिस्तेदार, नेवतो कभी न देना,
भूल चूक में आ भी जैहें, करबू नें सत्कार॥ पिया...... ॥

एक सुंदरी अपने भोले भाले पति को समझाती है कि देखो जी अब तुम खर्चा करना बंद कर दो, नहीं तो अपनी जो भी जमा पूँजी है वह भी चली जायेगी। तुम भांग, तम्बाखू, घी-शक्कर

आदि छोड़कर देह को थोड़ा सा कष्ट दो। खुद हल चलाओ, गोबर भी करो,पानी भी तो भर सकते हो और गाँकड़ जो सूखी लगे तो उन्हें मठा के साथ खा सकते हो। इसी तरकीब से बचत हो पावेगी। खाना सूखा खाओगे तो घी के टीन भर जायेंगे। मंहगे दामों में घी बेचकर हम दाम सीधे कर लेंगे। हां कोई उधार मांगेगा तो भी नहीं देंगे। चाहे कितना ही सगा क्यों न हो। तुम मेरी बात मानो, कभी कोई मित्र संगी साथी न बनाओ। रिश्तेदारों का निमंत्रण कभी नहीं करना है। हाँ अगर भूले भटके कोई द्वार पर आ गया तो उसकी हम सेवा सुश्रूषा ही न करेंगे, तो आप ही चला जावेगा। हाँ एक बात ध्यान से सुनना-चोर,चुगलखोर,बेईमान इनसे तो दूर ही रहना। अगर मेरी सीख मानोगे तो फिर हमारे पास धन असीम हो जायेगा।

हरे फल खाये बगीचा रावण के,
हिरदे में सुमर भगवान।
हिरदे में सुमर भगवान, बाग में बंदर आयो,
सब फल डारे टोर, बाग के बनफल खायो।
बचन सुनत रावन हँसे, टेरे अक्षयकुमार,
बगिया जहयो लाड़रे, बंदरा खों डाटियो मार।
बंदरा खों डाटियो मार,पिता की आज्ञा पायी,
लयें धनुष और बान, बगीचा पौचे भाई।
आवत देखे हनुमान ने,परवत लये उठाय,
सुमर कौशलाधीस खों, अर मारे अक्षयकुमार।
मारे अक्षयकुमार,खबर रावन ने पायी,
इंद्रजीत खों हुकम,बगीचे जइयो भाई।
बंदरा ल्यहयो बाद कें, उठे करेजें पीर,
मै नैनों से देख लऊं, वो आवो कहां को बीर।
वा आवो कहां को बीर, तुरत फौजें सजवायी,
मेघनाद बलवान,बरम फांसे डरवायी।
युद्ध रचो भौ भारती, रकत माँस भये कीच,
बरम फांस में बाद के, लें आये सभा के बीच।
ले आये सभा के बीच,नीच मारन खों धाये,
कहे विभीषन राजदूत, मारे नहीं जाये।
कपि की ममता पूछ पै, हिरदे लेव लगाय,
तैल बोर पट बाँद के, पावक देव लगाय।
पावक देव लगाय, सुमरन प्रभुजी की कींनी,

हनुमान बलवान, बदन छोटो कर लीनी।
कूंद अटारी चढ़ गये, लंका दीनी जार,
सपथ करा रगवीर की, ले कुंभकरन की नाश।
कुंभकरन के नाश, राम की करे बढ़ाई,
कूंद गये मझधार, देह की तपन बुझाई।
बाग सिया के पौच गये, सुनियो माता बात,
कछू निशानी दे दियो, लै जेंहो राम के पास।
हरे फल खाये बगीचा रावन के,
हिरदे में सुमर भगवान...... ।

श्री हनुमान जी ने लंकापुरी जाकर माता सीता का पता लगाया। माता से ही आज्ञा लेकर उन्होंने अशोक वाटिका के हरे-भरे फल खाये,यह काम करने से पूर्व उन्होंने प्रभु श्रीराम का स्मरण किया और बगिया के फल खाने, पेड़ तोड़ने,बगिया में उजाड़ने का काम शुरू कर दिया उनके इस कृत्य को देखकर रखवाले जब उन्हें रोकने आये तो उन्होंने रखवालों की पिटाई कर दी वे वहाँ से भागकर लंकापति रावण के पास गये और उनसे कहा कि- महाराज! अशोकवाटिका में एक विचित्र वानर आया है उसने बाग के फलों को तोड़ डाला तथा पेड़ भी उखाड़ फेंके हैं। जब हमने उसे रोका तो उसने हम सबको भी पीटा। महाराज आप कुछ उपाय करें। बाग के रक्षकों की बात सुनकर रावण को हँसी आई, उन्होंने अपने बेटे से कहा कि बेटा जाकर बाग में आये उस दुष्ट वानर को मार डालो। पिता की आज्ञा पाकर धनुष बाण लेकर अक्षयकुमार वहाँ गये लेकिन हनुमान तो हर स्थिति से निपटने को तैयार थे उन्होंने सामने आ रहे दुश्मन को देखा तो क्रोध में पहाड़ उखाड़कर प्रभु श्रीराम का स्मरण करके अक्षयकुमार पर दे मारा। फलस्वरूप अक्षयकुमार के प्राण पखेरू उड़ गये। रावण ने जब यह समाचार सुना तो क्रोध में भरकर अपने पुत्र इंद्रजीत को बुलवाया और कहा कि तुम उस स्थान पर जाओ और उस वानर को जो कि मेरे पुत्र का मृत्युदाता है उसे बाँधकर मेरे पास ले आओ। मैं अपनी नजर से उसे देखना चाहता हूँ। इंद्रजीत वहाँ फौज लेकर गये। पहले हनुमान के साथ उनका युद्ध हुआ, जब देखा कि वानर इस प्रकार काबू में नहीं आ रहा तो मेघनाद ने ब्रह्मास्त्र को संधान करके मारा तो हनुमान घायल हुए, उन्हें बंधवाकर रावण के दरबार में ले जाया गया। उन्हें देखकर बहुत से राक्षस मारने को दौड़े। यह देखकर विभीषन ने कहा कि दूत को मारना नीति के विरूद्ध है। वानरों को पूँछ सबसे ज्यादा प्यारी होती है इसलिए उनकी पूँछ में कपड़े बाँधकर तेल डालकर आग लगा दो। सबने विभीषण जी की बात का समर्थन किया। हनुमान जी की पूँछ में कपड़े बाँधकर तेल डालकर आग लगा दी गई। राक्षस इस कृत्य को देखकर बड़े प्रसन्न थे। हनुमानजी ने प्रभु का नाम लेकर अपने शरीर को छोटा कर लिया और वहाँ से छलांग लगा दी। लंका जल गई, फिर समुद्र में पूँछ बुझाकर वे सीधे सीता माता के पास गये उनसे बोले कि- हे माता! मुझे अपनी कोई निशानी दे दें जिसे ले जाकर मैं प्रभु श्रीराम को दे दूँगा।

बारामासी फाग

हमरे पिया बदरिया हो गये,
बरसे नें एकऊ बेर।
असाढ़ अंग आगी लगी, जल गये सकल शरीर,
प्रेम बूंद बरसे नहीं, जीरा धरे नें धीर। हमरे.........
सावन में सुख होत ते, पिया मिलन की आस,
पिया मिलाये नें मिलें, दे गये करेजें घाव। हमरे.......
भादों रैन भियांयदी, निसदिन अंधेरो पाख,
मन के भौरा जा कहे, लै चलो पिया की सेज। हमरे......
क्वार कमंडल हो रहे, सिर पर जटा रखांय,
अंग भवूती ओढ़,घर-घर मांगन जॉय। हमरे.......
कातक मास लगे सखी री, बौनी करें किसान,
हम का करिये राधका, कनैया घरे नई आये। हमरे.......
अघन अमीरा हो रहे, फूले कुसय गमेर,
घर होते बाबा नंद के, रंगवाऊते हमारे चीर। हमरे.......
पूस माव की ठंडी रितें, हमें सतावै शीत,
सब सखियां सोवे पति के संग, हमें बड़ी अनरीत। हमरे........
फागुन फगुवा हो रहे, सब सखियां खेलें फाग,
घर होते बाबा नंद के, रंगवाऊते हमारे चीर।
हमरे पिया बदरिया हो गये,
बरसे न एकऊ बेर॥

हे सखी! मेरे प्रीतम श्री कृष्ण मुझ वियोगिनी को छोड़कर चले गये, वे उस बदली की तरह हो गये जो कि छा जाने के उपरांत भी नहीं बरसती। इसी प्रकार नंदलाल ने मुझे विस्मृत कर दिया है। असाढ़ माह में एक तो सूर्य की तपन दूसरे विरहाग्नि। मुझे ऐसा लगता था जैसे कि मेरा शरीर ही जला जा रहा हो,उनकी प्रतीक्षा की लेकिन वे प्रेम रूपी बूंद बनकर नहीं बरसे। मेरा मन उनसे मिलने की आस में लगा रहा। लेकिन जब नहीं आये तो हृदय को एक गहरा घाव सा लगा। भाद्रपक्ष तो मेघों और घटाओं के घनघोर से दिन-रात अंधेरा ही रहता है। रातें तो और भी डरावनी होती हैं। उस समय मेरा मन पंक्षी यही कहता रहा कि उड़कर प्रीतम के पास ले चलो। क्वाँर में तो मेरी स्थिति उस बालापन की जोगिन की तरह हो गई जो कि अंग में विभूति रमाये घूमती है। अब कार्तिक माह आ गया, इस समय किसान खेतों में फसल की बुवाई करते हैं लेकिन मैं क्या करूँ, जब मेरे पति ही घर में नहीं है? अगहन में शीत ब्यापती है। अनेकों पेड़ों में पुष्प खिलते हैं। इस समय यदि नंद बाबा के पुत्र घर में होते तो उनसे उन फूलों के रंग की चूनर रंगवा लेती। पूस में ज्यादा ठंड बढ़ गई। हमारी सहेलियाँ अपने-अपने पति के साथ शयन करती

हैं लेकिन वे तो मुझे विरहिन बना गये थे। फाल्गुन के रंगीले मास में सब होली खेलते हैं। चहुँओर रंग ही रंग, अबीर ही अबीर दिखता है यदि वे होते तो मुझे रंग से सराबोर कर देते। लेकिन मेरा दुख कौन समझ सकता है कि मेरे कृष्ण बदली बनकर मुझे विरहाग्नि में जलता छोड़ गये।

घर नईयां राज अमान,
अबै परना में होरी को खेले।
घर नइयां॥
राजा चलें शिकार खों, संग सिपहिया लोग,
हंसापुर की डांग में, हाँका दओ लगाय। घर.........
हाँकत-हाँकत दुफर भये, लौट गई चकवार,
हंसापुर की डाँग में,राजा खों लगी प्यास। घर......
कौनऊ ढूंढे ताल तलैयां, कौनऊ तला की पार,
हंसापुर की डाँग में, हिंदुओं ने खुदा दये ताल। घरे.......
इड़ियां बनीं छिड़ियां बनी, तला बनो गुलजार,
राजा घुसे पानी पियन, हिन्दू ने मार दई सांग। घर.......

राजा अमान घर नहीं हैं, अब प्रजा उनके बिना कैसे होली खेल सकती है? राजा शिकार पर गये, साथ में सिपासालार भी ले गये। हंसापुर नामक पहाड़ में शिकार के लिए हाँका लगाया गया, लेकिन बहुतेरा प्रयास करने पर भी शिकार नहीं मिला, शाम हो गई। राजा को प्यास लग रही थी, उनके पानी की व्यवस्था के लिए सब दूर लोग जलाशय तलाश रहे थे। उसी पहाड़ में किसी हिंदू ने तालाब खुदाया था, तालाब बहुत सुंदर था, जैसे ही राजा पानी पीने गये कि किसी दुश्मन ने उनके सीने में सांग घोप दी।

अबै घर आजा नंद किशोरा॥
पैलों मास असाढ़ जो लागो, चले पवन अति जोरा।
मोरे पिया परदेश गये हैं, घट गये ज्वानी के जोरा॥
साहुन में सखी झूला झूलें, झूलें नार हिंडोरा।
मोरे पिया ने सुध बिसराई, कर दई चाल मरोरा॥
अबै घर.......
भादों मास घुमड़ झिर लागी, कीच मची चहुंओरा।
सूनी सेज श्याम बिन मोरी, बैरी कूक गये मोरा॥

क्वाँर मास के तीखे धामें, तप गये नदिया झोरा।
मैं पापन बिरहा की मारी, हिरदे उठे ककोरा॥
अबै घर......
कातक में पाती लिख भेजी, ऊधो हाँत संदेशा।
मिलने होय तौ मिल ले स्वामी,न पीछें जहर कटोरा॥
अबै घर......
अगन मास में चीर उतारे, पैरे लहर पटोरा।
मोय छोड़ बैरागन कर गये, सूर श्याम चितचोरा॥
अबै घर......
पूस मास में जाड़े परत हैं, काँपत है तन मोरा।
नैनन धार बहे नदिया सी,जौतन लेत हिलोरा॥
अबै घर......
माँव मास में अम्मा मौरो,कोहल कर रई शोरा।
आये बसंत सखी सब गावें,ललचै जीरा मोरा॥
अबै घर......
फागुन मास में रंग बनाये, चीर रंग में बोरा।
मोरे पिय बिन रंग भंग है, गोरी कौ होरब होरा॥
अबै घर......
चैत मास में टेसू फूले, हो गये धाम चचेरा।
झौरन नीम निबरियां फूली, करमों कौ पर गव फेरा॥
अबै घर......
बैसाख मास में पिया ने आये, धरम करम को डोरा।
बेरऊं बेर निहारत दोरों, जैसे चंद चकोरा॥
अबै घर......
जेठ मास पिया घर आये, हो रव राग घनेरा।
सूर श्याम काँलौ बरनों, चकई भवों मन मोरा।
अबै घर आजा नंद किशोरा।

(सर्वश्री गोपाल, बृजेश विश्वकर्मा, गेहूंरास)

हे मेरे नंदलाल! अब तो घर आ जाओ, बिना तुम्हारे सबकुछ सूना है। तुम्हारे बिना पहला माह असाढ़ का कैसा बीता? इस समय तेज हवायें चलती हैं। हर समय तुम्हारा ही ध्यान बना रहा लेकिन तुम प्रवासी थे। फिर श्रावण आया इस माह में झूले डले थे, सखियाँ झूला झूलती थीं लेकिन मेरे पीव ने मेरी सुध भुला दी, मेरे मन को बहुत ठेस लगी। भाद्रपक्ष में वर्षा तीव्रगति से होती है। चहुँओर घटायें छाकर पूरे वेग से बरसती हैं, हर जगह कीचड़ ही कीचड़, जल ही जल

व्याप्त है। मैं अपनी सेज पर सोती हूँ तो तुम्हारे अभाव में सब कुछ सूना लगता है, ऐसा मौसम विरहीजनों को बड़ा कष्टदायी होता है और इस पर बैरी मोर कूक रहा है। क्वाँर में तेज धूप होती है, उसके प्रभाव से नदी नालों का जल तपने लगता है। मैं तो विरहाग्नि में पहले से ही जल रही थी और यह प्रकृति की निष्ठुरता तो मुझे भस्म कर देने पर तुली थी। कार्तिक में जब आपके सखा उद्धव जी आये थे तो उनके हाथों एक पत्र आपको लिखा था, उसमें स्पष्ट लिखा था कि या तो शीघ्र मिल लीजिए अन्यथा मैं जहर पी लूँगी। अगहन ने अपने वस्त्र बदले, नये वस्त्र पहने इसी आस में तुम आओगे लेकिन तुम्हारा मन तो बड़ा कठोर हो गया। मुझे वैराग्य ही धारण करवा दिया। पूस में ठंड अधिक पड़ती है, मैं थर-थर कांपती थी मेरे नेत्रों से निरंतर अश्रुधारा प्रवाहित होती थी और मेरे मन में टीस उठती रही, फिर भी कान्हा तुमने मेरी सुधि न ली। माघ में आम्रमंजरी आ गये, बसंतागमन का संकेत कोयल की कूक से चहुँओर सुनाई देती थी। सारी सखियाँ बसंत गाती थी लेकिन मेरा मन तुम्हारी ललक लिये हुए था । फाल्गुन रंग का त्यौहार है मेरी चूनर रंग में डुबोई गई लेकिन तुम्हारे बिना यह रंग भंग है और होली जिस तरह जलती है उसी तरह मैं विरह में जल रही थी। चैत्र में टेसू फूल गये, धूप तेज हुई, नीम फूलने लगा लेकिन मेरी किस्मत तो विपरीत थी। वैसाख में भी तुम नहीं आये। यह धर्म का मास कहा जाता है। मैं तुम्हारे लिए उस चकवी की तरह प्रतीक्षा करती रही जिस तरह वह चाँद को एकटक देखती रहती है, अपने पिया मिलन की आस में। ज्येष्ठ मास में तुम आकर मिले तो मेरा मन छत्तीसों राग- रागनियों से भर गया। सूरदास जी कहते हैं कि मैं कहाँ तक वर्णन करूँ, मेरा मन भी कृष्ण की आस में चकवी की तरह लगा हुआ है।

तुमारे कठन लुबौना आयेंगे, चलवे रवें रहो तैयार।
चलबै रवों तैयार, किसी दिन आहे रूक्का,
इसमें नैयां झूठ, काल रवें परे ने चुक्का।
ले परमाना आत है, जरा ने मुहलत देय,
प्रान बचाये नें बचें, खेंच महल से लेय।
खेंच महल से लेंय, देर नई फिर होने की।
लेय पाती जाय, विदा हे गई गौने की।
लाख जतन कर कर थके, चले ने जोर उपाय।
टूट जिमरिया जात है, फिर काल सबई रवें खाय।
काल सबई रवें खाय, सांस है जबलों तन में,
संसार में नई रेंबे रवों, आये राजा रैयत लखपती
माटी में मिल जाये।
माटी में मिल जाये, हमेशा नई रेबे में,
कुटम कबीला भरो रहत है, सब कहने में।

भूले जिनकी सान में, उमठे फिरे तमाम,
अन्त समय के बीच में, कोऊ ने आवे काम।
कोऊ न आवे काम, देह नाहक में जाती,
पुन्न धरम नई करें, जोन है अपना साथी।
धरम कमाई के बिना, बुरे होत है हाल,
चूके जाते आज लो,फिर के रये सुंदरलाल।
तुमारे कठन लुबौना आवेंगे।

हे मनुष्य! तू इस दुनियादारी में सब कुछ भूल गया, तुझे तो यह भी याद नहीं रहा कि तेरे लेने वाले आयेंगे और तुझे इस संसार से कूच करना पड़ेगा। तुझे तो हर समय यहाँ से जाने के लिये तैयार रहना चाहिये। जब यमराज के दूत आयेंगे तो एक छड़ की देरी न करेंगे। तू कितने ही सुरक्षा कवच पहन लेगा लेकिन फिर भी न रुक पायेगा। इस दुनिया से चाहे राजा हो या प्रजा सभी को विदा होना है। पंचतत्व का शरीर मिट्टी में मिलकर पुन: पंचतत्व में विलीन हो जायेगा। तेरा यह संसार रूपी कुटुम्ब परिवार सब कुछ कहने-सुनने के लिये है। जाना तो तुझे अकेला ही पड़ेगा, अंतिम समय में कोई तेरे काम नहीं आ सकते। इसलिये जो भी सत्कर्म कर लेगा वही तेरे साथी होंगे। कवि सुंदरलाल जी कहते हैं कि मनुष्य को सत्कर्म ही करना चाहिये, यही मनुष्य जीवन का सार है।

पवनसुत गढ़ लंका कैसी बनी,
हँस पूछें राजाराम।
आते बिचित्र कोट सुन्ने के, भारी हीरा अंक त्रिपुरार,
मड़ी चमकत है न्यारी, बेलभरी कलियां लगी
बज्जुर हने किवार, दरवाजे में भीतरें,
लंका को बड़ा विस्तार........।
लंका को बड़ा विस्तार, द्वार पें ठाड़े जमी,
लिये धनुष अरू बान, ढाल तरवारे नंगी।
एक एक से वीर हैं, महिमा अपरंपार,
बने अखाड़े भौत से, फिर गुरजा चारऊ खूंट।
गुरजा चारऊ खूंट, बनी महलातें भारी,
सोना चांदी के बहुत बने हैं, महल अपार।
फिर हनुमान ने जायकें, होरी दई जलाय,
पवनसुत गढ़ लंका कैसी बनी।

पवनपुत्र अंजनी कुमार हनुमान जब सीता माता का पता लगाकर प्रभु श्रीरामजी के पास

आये, तब प्रभु ने उनसे पूछा कि-हे मारूतिनंदन! तनिक ये तो बताओ की दसग्रीव रावण की लंका किस तरह की बनी है। हनुमान जी बोले कि- लंका स्वर्ण की बनी है उसके कंगूरों में हीरा मोती जड़े हैं तथा परकोटों पर वज्र के समान दरवाजे लगे हैं। बड़े-बड़े वीर पहरेदार हैं। लंका चारों तरफ से बहुत सुरक्षित बनी है, इन सबके बावजूद मैंने लंकेश की उस लंका को अपनी पूँछ से जला डाला है।

बिछुड़ना होत आज लक्ष्मन जी से,
आये ने पवनकुमार।
आये ने पवनकुमार, होत है बखत सबेरा,
बिलखत है भगवान, मिले ने भाई मेरा।
माता से क्या कहेंगे, जाकें अबध मंझार।
सेवा में हमरी रहे, फिर भोगे दुक्ख अपार।
भोगे दुःख अपार, प्रेम से संग में आये,
सीता करेंगी सोच, कहां तुम बांह गमाये।
धन दौलत मिल जात है, और कुटम परवार,
भाई सहोदर ना मिले, फिर कोट धरौ औतार।
कोट धरों औतार, बहुत हमने समजाये,
लक्षमन लौटे नाह, किये का उन फल पाये।
हिरदे में निसदिन भजो, गौरी अरू त्रिपुरार,
आज बांह की राखियों, बरधा के असवार।
बरधा के असवार, विकल हो गये रघुवीरा,
तीन लोक के नाथ, बंधे ना हिरदें धीरा।
लीला का कदु भेद, नहीं कोई ने पाया,
शक्ति में ब्याकुल भये, तीन लोक करतार।
तीन लोक करतार, संजीवन जोलो आये,
भारत मारे वान, पवनसुत मूर्छा खाये।
राम-राम कहकर उठे, ऐसे पवन कुमार,
भरत कहें हनुमान सो, तुम बैठो वान समार।
बैठो बान समार, कहे हनमत बलवीरा,
छिन में पहुचो जाय, मिटाऊ लक्ष्मन पीरा
एक पलक के बीच में, उड़ आये पवनकुमार,
दई सजीवन जायके, फिर कहे फकीरेलाल।
बिछुड़ना........।

श्रीराम-रावण युद्ध के समय मेघनाद ने लक्ष्मण जी को शक्तिबाण मारा तो लक्ष्मण जी मूर्छित हो गये। जब प्रभु राम को पता चला तो वे बहुत व्याकुल हो गये। लंका से सुषेण वैद्य को बुलाया गया। वैद्य ने उपचार बतलाया कि संजीवनी बूटी से ही लक्ष्मण ठीक होंगे। पवनसुत हनुमान संजीवनी लेने गये थे। सवेरा होने के पहले ही उपचार हो सकता था। श्रीराम लक्ष्मण को अपनी गोदी में लिये बैठे हैं, वे बिलाप कर रहे हैं, अब तक पवनपुत्र नहीं आये, अगर समय पर नहीं आये, तो क्या होगा? माताओं को क्या जवाब देंगे। ये लक्ष्मण जो मेरी सेवा में रहते हैं इन्होंने मेरे साथ कितने अपार कष्ट भोगे, सीताजी सुनेंगी तो कहेंगी कि अपनी बाँह को, अपने सहोदर को कहाँ छोड़ दिया, इस संसार में।

धन-दौलत-कुटुम्ब-परिवार सब मिल जाता है लेकिन भाई के जाने पर भाई कहाँ मिलता है। चाहे फिर कितने ही उपाय क्यों न किये जाँय। मैंने तो लक्ष्मण को बहुतेरा समझाया लेकिन उन्होंने मेरी एक न मानी और अपनी हठ का यह फल पाया। हे देवाधिदेव! हे उमापति! हे नंदी की सवारी करने वाले शिव! आज मेरी लाज रख लो। आज वे परब्रम्ह परमेश्वर साधारण मनुष्यों की भाँति व्याकुल हो रहे हैं। यहाँ तो प्रभु शोक संतप्त थे और वहाँ जैसे ही पवनसुत संजीवनी लेकर आ रहे थे उस समय भरत जी ने सोचा कि ये तो कोई मायावी राक्षस जा रहा है और यह सोचकर उन्होंने उसे लक्ष्य करके बाण मारा तो हनुमान जी बाण लगते ही संजीवनी के पर्वत सहित नीचे गिर जाते हैं, उनके मुख से श्रीराम का नाम सुनते ही भरत सोचते हैं कि शायद कोई रामभक्त है। वे तुरंत उनके पास गये, जाकर पूछने पर सब विदित हो गया। भरत जी ने एक बाण पर हनुमानजी को बैठाकर शीघ्र ही श्रीराम जी के पास पहुँचा दिया। हनुमानजी ने संजीवनी लाकर दी, उसके उपचार से लक्ष्मण जी ठीक हो गये।

सुत अंजली पवनकुमार, संजीवन लेन चले द्रोणधगिर खों।
सुत अंजनी पवनकुमार, सुमर हिरदे रघुवीरा,
मारी तुरत फलांग, उड़त अतपर रणधीरा।
काल नेम माया रची, बहुतक विलम लगाय,
सुमर कोशलाधीस खों, उनहूँ खो कीन्हा पार। संजीवन......
उनहूँ खों कीन्हा पार, करी रावण चतुराई,
द्रोणागिर में दई, वहां माया फैलाई।
सब पेड़ों में लिस गई, माया ज्योति उचार,
सेवा दिल में मान के, फिर लाये सहत पहार। संजीवन........

अंजनी सुत पवनपुत्र हनुमान संजीवनी लेने द्रोणागिर पर्वत पर जा रहे हैं, उन्होंने सर्वप्रथम अपने इष्टदेव प्रभु श्रीराम का स्मरण किया और एक छलांग लगाकर उड़ चले। वहाँ रावण के

एक साथी राक्षस कालनेमी ने रावण के कहने पर माया रच दी, जिससे हनुमान जी संजीवनी न ले पाये। फिर उन्हें रास्ते में विलंब हो जाये, लेकिन हनुमान जी पूरा पहाड़ ही उठाकर ले आये।

बिकल हो गये रामजी लंका में, लक्ष्मन खों लागे बान।
लक्ष्मन खों लागे बान, मान शक्ति खो दीन्हों,
लीला दई दिखाय। धरनगिर मूर्छा लीन्ही।
सब दल में खलबल मची, प्रभु ने किया तलास,
देख प्रभु ब्याकुल भये, भाई के बचे ना प्राण।
भाई के बचे ना प्राण, गिरत ही लगे उठाने।
हार गये सब देव, देख हनमत मुस्काने।
सुमरन करके प्रभु का, लाये गोद उठाय,
देख प्रभु ब्याकुल भये, को लेन संजीवन जाय।
जाव संजीवन लेन, लंक में वैद्य सुसेना,
ऐसे पवन कुमार, चलतें विलम लगे ना।
घर समेत बैद खो, लाये तुरत उठाय,
हुकम दियो है बैद ने, कोऊ लेन संजीवन जाय।
जाव संजीवन लेन, चले हनमत बलवीरा,
प्रभुजी ब्याकुल होय, देख भैया की पीरा।
होनहार नहीं मिटत है, कितनऊ करो उपाय,
उंगन पाये भान फिर, दई संजीवन आन।

श्रीराम जी लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने पर उन्हें देखकर व्याकुल हो जाते हैं। यह तो प्रभु की लीला थी। लक्ष्मण जी ने भी शक्ति बाण का मान रखा था और वे मूर्छित हो गये थे। रामदल में खलबली मच गई थी। लंका से सुषेण वैद्य आये, उन्होंने उपचार में संजीवनी बूटी लाने को कहा। पवनपुत्र हनुमान जी संजीवनी बूटी लाये तथा लक्ष्मण जी की मूर्छा उससे जागी।

समझावे सब सखी, धीर धर उठी सयानी।
कलम दान कागज लियो, धरों भुजा के पास,
अक्षर लिख दो प्रेम से, जब आवे हमें विश्वास।
आवे हमें विश्वास, भुजा ने कलम उठाई,
लिखी सत्य सब बात, मौंत लिखी सब बात,
मोरों तेरे बाप ने, अब काहे खो पछताय।

सुलोचना जो रावण की पुत्र वधू तथा मेघनाद की पत्नी थी उसने जैसे ही अपने पति की कटी हुई भुजा देखी तो वह घबरा गई। उसे भरोसा ही नहीं था कि इंद्रजीत को कोई मार देगा। जब वह भुजा को देखने गई तो उसके साथ में कई सखियाँ, दासियाँ थीं। वह भुजा के सामने रुदन करती जा रही थी। बार–बार यही कहती कि भुझे भरोसा नहीं होता कि आप रण में किसी से हार गये हैं और आपकी भुजा कट गई। यह कहते हुए वह मूर्छित होकर भूमि पर गिर जाती है। उसे सबने समझाया। उसकी मूर्छा जागी तो उठकर उसने एक कलमदान मंगवायी, उसे भुजा के समक्ष रखकर कहा कि जब तक अपनी भुजा से स्वयं ही सारा हाल नहीं लिख देते तब तक मुझे भरोसा नहीं होगा। उस समय मेघनाद की भुजा ने कलम से सारी लड़ाई का वर्णन लिख दिया तथा यह भी लिखा कि मुझे तेरे पिता ने ही मारा है। चिन्ता करने की जरूरन नहीं है। (चूँकि लक्ष्मण शेषावतार थे और सुलोचना शेषनाग की पुत्री थी इसलिए लक्ष्मण को सुलोचना के पिता का संबोधन दिया है।)

कही ने मानी असुर अभिमानी, ने अंगद ने रोपे पांव।
जुरे निश्चर अभिमानी, तिलभरा टरा न पांव।
हार जब सबने मानी, जितने जोधा लंक में,
कर हारे सकल उपाय, राम भक्त अंगद खड़े।
सुमरे प्रभु को नाव।
सुमरे प्रभु को नाव, डार दई कैसी माया,
मेघनाद से पुत्र हली, ने तिल भर काया।
रावण दौड़ा झपट के, नीचा सीस नवाये,
अंगद ने तुरतई कही, तुम शरण राम के जाव।
शरण राम की जाव, पकड़ते पैर हमारा,
ऐसई पकड़ो जाय बने जब काज तुमारा।
बलीराम कथ कर कहें, फिर नाहक रार बढ़ाव।
कही न मानी असुर अभिमानी ने।

श्रीराम रावण युद्ध के पूर्व बालीपुत्र अंगद लंकापुरी में दशग्रीव के पास राम के दूत बनकर जाते हैं तथा उसे यह समझाते हैं कि सीता माता को प्रभु श्रीराम को सौंपे दो और उनसे संधि कर लो, इससे तुम तथा राक्षस कुल बच जावेगा। रावण ने सुना तो वह घमंडी हँसने लगा, अंगद को एक तुच्छ वानर समझ रहा था। बहुतेरा समझाने पर भी जब वह नहीं माना और वह अपने बल का घमंड बताने लगा तो अंगद अपनी जंघा रोपकर खड़े हो गये तथा कहने लगे कि तुम्हारी सेना में एक से एक शूरवीर हैं। यदि कोई भी मेरी इस जंघा को हिला देगा तो मैं तुम्हारी

बात से सहमत हो जाऊँगा। रावण के समस्त शूरवीर अपनी शक्ति लगाकर हार गये लेकिन किसी से भी एक तिल उनका पैर नहीं उठ पाया। अंत में रावण स्वयं पैर हटाने गया। अंगद ने देखा कि रावण सिर झुकाकर अपना बल लगा रहा है तो अंगद ने कहा कि मेरे पैर को सिर झुकाने की बजाय श्रीराम के समक्ष सिर झुकाओ तो तुम्हारा कल्याण होगा।

मथरा में जन्में भगवान, लै बसुदेव गोकल चले हाँ।

श्रीकृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया और वसुदेव जी उन्हें लेकर गोकुल को चल दिये।

मथरा में जन्में भगवान, रात ने बसे गोकल जात रहे हाँ।

मथुरा में श्रीकृष्ण जी जन्में थे, एक रात भी वहाँ नहीं रहे। उन्हें वसुदेव जी लेकर गोकुल को चल दिये।

मथरा रे मोय लगत उदास, मधुवन लगत सुहावनी हाँ।

मथुरा में तो बड़ा सूनापन है अर्थात् मथुरा में अच्छा नहीं लगता। मुझे तो मधुवन में ही अच्छा लगता है अर्थात् जहाँ कृष्ण की लीला हो वहीं मन लगता है।

मारे रे दशरथ ने बान, जिन बानों सरवन मरे हाँ।

अयोध्यापति महाराज दशरथ ने मृग के धोखे में बाण मारा तो वह बाण पितृभक्त श्रवण कुमार को लगा, जिसके लगते ही श्रवण कुमार का प्राणान्त हो गया।

सरमन की करकसा नार, पति को धूरा डार रई आँखों में।

श्रवण कुमार की कर्कशा पत्नि अपने पति को ही धोखे में रखे थी। वह अपने लिये तथा पति को हर रोज खीर बनाती थी तथा अपने अंधे-अंधी सास-ससुर को खट्टी महेरी खिलाती थी।

ऐ भैरो लाल, तोरे शरन ढोलक बाजे, दोई चलो अगवान।

हे भैरव! हम तेरे ही भरोसे यह गायन वादन कर रहे हैं। उसमें हमारी सहायता के लिये आप आगे रहकर हमारा मार्गदर्शन करें।

भस्मासुर खों दे दये वरदान, लुके रे अकौवा के फल में हाँ।

भूतभावन देवाधिदेव ने भष्मासुर नामक असुर को वरदान तो दे दिया लेकिन फिर उसी के डर से वे आक के फूल में जा छिपे।

दतिया के लाला हरदौल, सेवा भगत की पत राखों रे।

हे दतिया निवासी हरदौल! हम भक्तों की सेवा की लाज रखना।

दतिया में चल रयी तलवार, कहुँ तेगा कहूँ ढाल चले रे।

दतिया में युद्ध हो रहा है, वहीं कहीं तेज–तलवार ढालें चल रही हैं।

साखी की

धरनी खोदे धन मिले, मित्र मिले परदेश।
भैया भरत से ने मिले, रे कोटन करो उपाय।

धरती की जुताई करने से अनाज रूपी धन मिलता है तथा परदेश में भी मित्र मिल जाते हैं लेकिन भरत जैसा भाई मिलना कठिन है।

गा लऊँ रे गौरा के गनेश, प्रथम मना लऊ माता शारदा हाँ।

मैं गायन में गौरी पुत्र गणेश का आह्वान कर लूँ तथा पहले माता शारदा माँ का स्मरण करूँगा।

जिनखो रे देईरा के गुमान, हमखों भरोसे राजाराम के हाँ।

किसी को तो अपने सुंदर शरीर का घमंड होता है लेकिन मुझे तो सूर्यकुल शिरोमणि प्रभु श्रीराम का ही भरोसा है।

कै रयी रे मंदोदर नार, बैर न करो श्रीराम से हाँ।

लंकापति रावण की पटरानी महारानी मंदोदरी अपने पति को समझाती हैं कि हे लंकेश! आप प्रभु श्रीराम से बैर न करें।

राजा रे सपने में दिखाय, बरजा घरी रे जे दिन प्रीतकरी हाँ।

मुझे तो अपना प्रेमी स्वप्न में भी दिखता है। मैं तो उस घड़ी को कोस रही हूँ जिस घड़ी में मैंने उससे प्रेम किया था और वह निर्दयी मुझे भूल गया।

रथ पै रे बैठे भगवान, अर्जुन बैठे बैठे मार करें हाँ।

महाभारत के युद्ध में लीलाधरी भगवान कृष्ण अर्जुन के रथ के सारथी बने थे तथा अर्जुन रथ पर बैठकर युद्ध कर रहे थे।

मथरा रे जन्में भगवान, लै बसुदेव गोकल चले हाँ।

मथुरा में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ, जन्म के पश्चात् वसुदेव उन्हें लेकर गोकुल को चल दिये।

रो रई रे द्रोपद नार, चीर बढ़ा रे नातर लाज गई हाँ।

पांचाली द्रोपदी कौरवों की सभा में रूदन कर रही है। वह प्रभु श्रीकृष्ण को याद करती है। हे नाथ! आज मेरी लाज सिर्फ आप ही बचा सकते हैं वरन् यह दुष्ट दुशासन तो मुझे निर्वस्त्र करना चाहता है।

गोरी रे तोरे नैना विशाल, मारें रैयों घूंघट नजर लग जैहें हाँ।

अरी कामिनी! तेरे नयन तो बहुत आकर्षक है, उन्हें तू घूँघट की ओट में छिपा ले, वरन् तुझे किसी मनचले की नजर लग जायेगी।

हर खेले जमना के तीर।
काहे की रूच गैंद बनाई, काहे को डंडा लयें रगवीर।
रूपे की रूच गेंद बनाई, इमली को डंडा लये रगवीर।
उचट गैंद जमना में गिर गई, कूद परे बारे रगवीर।
हर खेले जमना के तीर।

श्रीकृष्ण यमुना के किनारे अपने सखाओं के साथ लीला कर रहे हैं। वह गेंद काहे की बनी है? उसका डंडा किस लकड़ी का है? गेंद चाँदी की है, डंडा इमली की लकड़ी का है। गेंद खेलते में यमुना के कालीदह में चली गई, उसे लेने हेतु कृष्ण कालीदह में कूद पड़े।

वरिया रे तोरी गहरी है छाँव,घोड़ा रे बंदे रये मलखान के हाँ।

वट वृक्ष की छाँव तो बड़ी गहरी होती है उसी वृक्ष के नीचे वीर मलखान का घोड़ा बंधा है।

फागुन बौरे आम, सखी अग्गम रित आयी।

फाल्गुन में आम के पेड़ों में बौर आ गये, बसंत ऋतु का आगमन हो गया है, सखी यह बसंत सबके मनो को भाता है।

होली के खिलैया यार, राजा युग जियो यार।

अरे! होली के खेलने वाले राजा तुम जुगजुग जियो।

कौना के घर के आर, बूंदे परन लगी।
होली के खिलैया, मोहे रंग डारन दे।
मोरे घर आये चंद्रमा, काहे डारे बैठका।
शिर बांदे मुकुट, खेले होरी।

श्रीकृष्ण अपने सिर पर मोर मुकुट बांधकर होली खेल रहे हैं। यह होली वे पहली बार नहीं खेल रहे, सबसे पहले त्रेतायुग में होली खेली थी। उसके पश्चात् द्वापर में आकर होली खेली तो राधा कृष्ण की जोड़ी बनी और दोनों ने मिलकर होली खेली।

मोपै रंगा ने डारों सांवरिया, मैं तो उंसई अतर में डूबी पिया।

अरे कृष्ण! मेरे ऊपर रंग न डालना, क्योंकि मैं तो वैसे ही सभी रंगों के इत्र आदि से सराबोर हो रही हूँ।

मोहे ने सुहावे ऐसी होरी पिया रे बिन।

मुझे अपने प्रवासी पति के बिना यह होली बिल्कुल नहीं भा रही। इस समय तो मेरे पति परदेश में है और यह बैरन होली आ गई। ढोल मंजीरे बज रहे हैं रंग गुलाल का त्यौहार मनाया जा रहा है और मैं विरहिणी उनके बिना विरहाग्नि में जल रही हूँ।

(श्री प्रहलाद कुर्मी और साथी, आमेट)

बनयाये महादेव बैरागी, वन आये भोला बैरागी।

महादेव जी तो साधू का रूप धारण करके आये हैं।

पूरे पिछले भाग सैंया, मिले री फागुन म।

मेरे बड़े भाग्य हैं कि मेरे पति पूरे एक वर्ष पश्चात् फाल्गुन के महीने में मुझसे मिले हैं।

रसिया

होरी में लाज न कर गोरी,
होरी में....... ।
जो तुम होरी में लाज कर टैहो,
बरबस अबीर मलहों गोरी।
होरी में........ ।
हम रसिया तुम नई किशोरी,
कैसी बनी सुंदर जोड़ी।

होरी में .... ।
होरी में लाज न कर गोरी। होरी में....... ॥

अरी प्रिया! होली में क्या लाज शरम करना? अरे! होली तो मस्ती का त्यौहार है यदि इसमें तुम शरम करोगी तो जबरन हम तुम्हारे कपोलों पर अबीर मल देंगे। तुम ब्रज की किशोरी हो और मैं ब्रज का रसिया हूँ, हमारी कितनी अच्छी जोड़ी है। हम आज होली खेलेंगे।

मोय ने सुहावे ऐसी होरी, पिया के बिना।
मोय ने सुहावे ऐसी होरी,
अरी होरी......... ।
अबई पिया परदेश गये हैं,
अबई जा आ गई बैरन होरी।
पिया के बिना मोय ने सुहावे ऐसी होरी।
ढोलक बाजे रे मंजीरा बाजे,
तारें बजें रे दस जोड़ी।
पिया के बिना मोय ने सुहावै ऐसी होरी।
अरी होरी....... ॥

मुझे यह होली का त्यौहार बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा है। इसी होली में मेरे पति प्रवासी हैं। बिना उनके यह रंग रंगीला त्यौहार सूना लगता है। होली में ढोल मंजीरे बजते हैं। रंग अबीर चारों तरफ उड़ रहा है लेकिन उनके बिना तो सब कुछ व्यर्थ है। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

राधा प्यारी कौनसी चूक भई,
भूसन बसन उतार लाड़ली, काहे मौन गही।
बोलत नहीं कबसें मैं ठांड़ो, कर है रीत नई।
हा हा करत हों प्यारी श्यामा, विनती मैं नमई।
अमानसिंह तज मान उठी प्रिया, श्याम को अंक लई॥

आज वृषभान राजा की लाड़ली हमसे रूठी हैं पता नहीं हमारी कौन सी चूक हो गई। उन्होंने अपने आभूषण उतारकर रख दिये हैं। उन्हें मनाने को कृष्ण बहुत देर से खड़े हैं लेकिन वे तो मौन धारण किये हुए हैं। अमानसिंह जी कहते हैं कि अंत में वे कृष्ण की बात को मानकर उनके अंग में समा जाती हैं।

बघेली फाग

संतोष कुमार तिवारी

अनुवाद

गोमती प्रसाद विकल

अरे हाँ बाग माँ बिहरे दूनो बालक
बाग माँ बिहरे दूनो बालक
अन्तरा - *शिव पूजन जाइ रे*
बाग माँ बिहरे दूनो बालक

बाग में दोनों बालक (राम , लक्ष्मण) विचरण (विहार) कर रहे हैं। शिव पूजन हेतु जानकी जा रही हैं, और उसी रस्ते से जायेंगी जिसमें दोनों बालक विहार कर रहे हैं ।

हरि ये , राम लंका का सजि के आये
सजिके आये राम लंका का
सब सेना , सब सेना , सब सेना
संग लेबाय के , राम लंका का
अन्तरा- *ये नल अऊ नील कुमुद के बासी*
तुरतई बाँधी ओहि पारा
उतरि गें लाल धजा फहराये
हरि ये, राम लंका का सजि कै आये॥

रामचन्द्र जी अपनी सेना सहित लंका की ओर कूच कर रहे हैं। नल और नील दोनों ने समुद्र पर तुरन्त पुल (सेतु) का निर्माण कर दिया और उस पार उतर कर (लंका की तरफ) लाल ध्वज फहरा दिया।

उचटा- *रामै भजु रावन अभिमानी*
रामै भजु हाँ रे रावन
अन्तरा - *ये कहे मंदोदरि सुनु पिया*

सुनु हमारौ बानी राम भुजु
रावन अभिमानी ।

राम का भजन करो। हे रावण! राम का भजन करो। ये मंदोदरी अपने पति रावण से कहती हैं कि कुछ हमारी भी बात मानों, राम का भजन करो, हे रावण!

लेजम

लछिमन अऊर राम ऐ हो , लछिमन और राम ऐ हो
लछिमन अऊर राम संघै , सखा लिहे जानकी होरी खेलैं
ये जानकी होरी खेलैं , ये जानकी होरी खेलैं
अंतरा - *ये केखर भीजे ये जामा अउ जोड़ा*
केखरे पायी चीर ये हो, ये जानकी होरी खेलैं

लक्ष्मण और राम दोनों भाई साथ में साथी और सखा और जानकी होली खेल रहे हैं। किसकी जामा और जोड़ा (पुरुषों के वस्त्र) भीग रहे हैं और किसका आँचल भीग रही है।

चढ़ाव- *रामा के भीजे जामा और जोड़ा*
सीता के भीगै चीर हो
ये जानकी होरी खेलैं ।

राम का जोड़ा और सीता की चीर रंगों से भीग रही है।

उचटा- *ये होरी खेलैं रघुवीरा अवध मां होरी खेलै।*
दूनउ हाथे मां भरिके अबीरा, राम होरी खेलैं॥

श्री राम अयोध्या में होली खेले रहे हैं। दोनों हाथों में अबीर(गुलाल) भरकर राम होली खेल रहे हैं।

तीनताल (त्रिताला)

हे, एक तौ यमुना गहिरी हो दूजै अड़बड़ घाट
तीजे कंधइया बइरी जिया मारै हमार।
तीजे कंधइया बइरी जिया मारै हमार ....

एक तो यमुना नदी की गहराई, दूसरे विचित्र घाट, तीसरा कृष्ण (कन्हैया) बैरी हमारा जी जलाए या मारे जा रहा है।

दहका

धीरे-धीरे झुलाइ देओ पलना, हमरो, रोबै सामरो बारो।

अन्तरा - *काहेन केरे बना पालना, काहेन केरे बना*
काहेन डोरी लागी , हमरो रोबै सामरो बारो
ये चंदन काठ का बना पालना , चंदन काठ का बना
रेशम डोरी लागी रे , हमरो रोबै सामरो बारो

यशोदा कहती हैं-कोई धीरे-धीरे पलना झुला दो, मेरा सांवरा बालक रो रहा है। पालना किस लकड़ी का बना है और कौन सी डोरी लगी है? पालना चन्दन की लकड़ी का बना है और उसमें रेशम की डोरी लगी है। कोई पालना हिला दो, मेरा साँवरा रो रहा है।

डग्गा

हे का करिके आया हो बालम
मऊ से का करिके आया हो बालम
फरबाय हनू हंकार मऊ से
का करिके आया हो बालम

अन्तरा - *पहिलै मुर्चा चढ़े करचुली, तेंदून केर बघेल*
लड़िका सहित परिहार चलेंगे, दिखित गोरइया केर
मऊ से का करिके आया, हो बालम

उचटा - *चऊका से गोली मारैं गुलाब सिंह, चऊका से गोली मारैं ....*

एक बार बाँधवेश महाराजा गुलाब सिंह ने समीपी सामंती राज्य मऊ पर आक्रमण कर उसे जीत लिया था । वहाँ से लौटकर आये सिपाही की बीवी पूछ रही है-हे पिया! मऊ में क्या करके आये हो ..। हनू हंकार (एक तोप का नाम)को मऊ में दाग कर आए हो ।

सिपाही-सबसे पहले मोर्चे पर करचुली चढ़े और तेंदुन (गाँव का नाम) गाँव के बघेल, फिर अपने लड़के के साथ परिहार चले और फिर गोरइया (गाँव)के दीक्षित साथ ही अपनी चौकी से गुलाब सिंह गोली चलायें ।

चौताल (चारताल)

हे कऊने गुना कऊने गुना गोरी पियर भई कऊने गुना

अंतरा– *एक ता पियर दूजे हलदी लगाये , तीजे गोरी गोदाये गोदना ,*
गोरी पियर भई कऊने गुना ......

किस तरह से गोरी(लड़की)पीली हो गई ।एक तो वैसे भी पीली , दूसरे हल्दी लगी है और तीसरे गोरी ने शरीर पर गोदना गोदा रखा है ।

लेजम

हे बाजि रही पैजनिया, छमाछम बाजि रही पैजनियाँ,
राजा दशरथ के तीनिउ रनियाँ, बाजि रही पैजनियाँ।

अंतरा– *केखे सोहै पग पइजनियाँ, केखे कमर करधनियाँ,*
छमाछम बाज रही पैजनियाँ .... ।
हे राम के सोहै पग पइजनियाँ, लछिमन कमर करधनियाँ,
छमाछम बाज रही पैजनियाँ .... ।

राजा दशरथ की तीनों रानियों के पैरों में आज पैजनियाँ (पायल) बज रही हैं। किसके पैरों में पैजनियाँ है और किसके कमर में करधनी ? राम के पैरों में पैजनियाँ हैं और लक्ष्मण के कमर में करधनी।

उचटा

होरी खेलैं कंधइया जमुना तीर,
होरी खेलैं कंधइया जमुना ....

अंतरा – *हे जमुना तीन तिरबेनी*
तिरबेनी के तीर, होरी खेलैं कन्धइया
होरी खेलैं कंधइया जमुना तीर।

कन्हैया जमुना (यमुना)के किनारे होली खेल रहे हैं। यमुना के किनारे त्रिवेणी नदी है, उसी त्रिवेणी नदी के किनारे कन्हैया होली खेल रहे हैं।

बुन्देली

ये भुजा गिरा आँगन मां हो , पती का भुजा गिरा आगन मां।

अंतरा– *ये सोचैं सुलोचना नारी , पती का भुजा गिरा आगन मां।*

सुलोचना (मेघनाथ की पत्नी)सोच रही है कि उसके पति युध्द में विजयी होंगे तभी मेघनाथ की भुजा उसके सामने आँगन में गिरती है।

बैसवारा

हरि ये बसो मोरे नैनन मां हँ हाँ बसो मोरे नैनन
बसो मोरे नैनन मां चारिऊ भइया बसो मोरे नैनन मां
कऊशलपुर बाजी बधइया , बसो मोरे नैनन माँ चारिऊ भइया

अंतरा– *राम ,लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन रूप अनूप सोहइया*
ठुमक - ठुमक नृप आँगन खेलत, सब सखि लेत बलइया ,
बसो मोरे नैनन मां चारिऊ भइया , बसो मोरे नैनन ....
कऊशलपुर बाजी बधइया , बसो मोरे नैनन मां...

हमारे नैनों में बसो, ओ चारो भाइयों! कौशलपुर में बधाई बज रही है। राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के रूप में अद्वितीय है। वे ठुमक–ठुमक कर आँगन में खेल रहे हैं। सभी सखियाँ उनकी बलैयाँ ले रही हैं।

दहका

राखो लाज हमारी , राखो लाज गिरधारी ,
राखो लाज गिरधारी, हमारी राखो लाज गिरधारी।
खींचत चीर दुशासन, करत है हमका उघारी,
राखो लाज गिरधारी हमारी, राखो लाज गिरधारी।

हे गिरधारी! हमारी लाज रखो, हमारी लाज रखो। दुशासन हमारी चीर खींच रहा है उसका अभिप्राय हमें नग्न करना है, वो हमें नग्न कर रहा है। हमारी लाज अब तुम्ही बचाओ।

बुंदेली

मैहर की शारदा भवानी
तेरो भवन बड़ो ऊँचो

ऊँचे पर्वत रहन तुम्हारी
सीढ़ी चढ़त मोरो पैर पिरानो
कैसे के दर्शन पाऊँ
मैहर की शारदा भवानी , तेरो भवन बड़ो ऊँचो।

हे मैहर की भवानी शारदा! तुम्हारा निवास बड़ी ऊँचाई पर है। ऊँचे पर्वत पर तुम रहती हो। सीढ़ी चढ़ते हमारे पैर दुखने लगे हैं, हम कैसे तुम्हारे दर्शन कर पायेंगे।

दहका

हरि ये लखन के लागे शक्ती
बाण लखन के लागे
शक्तिबान लगे लक्ष्मण के
हाहाकार भयो दल माही
बूटी संजीवनी हनुमत लाये
लखन उठे हरषाई

लक्ष्मण को युद्ध के दौरान शक्ति बाण लगा है। पूरे दल में हाहाकार मचा है। वीर हनुमान जब संजीवनी लेकर आये तो लक्ष्मण हर्षित एवं स्वस्थ हो उठे।

खेलैं गेंद मेरो नंदलाला , खेलैं गेंद मेरो नंदलाला
लेकिन गेंद जमुना दह गिरिगै
सोच करै मुरली वाला
जमुना जी माँ कूदे कृष्ण जी
टूटे कालिया के तारा
खेलैं गेंद मेरो नन्दलाला

नंदलाल, यमुना नदी के किनारे गेंद खेल रहे हैं। किन्तु अचानक उनकी गेंद यमुना की गहराईयों में गिर गयी। मुरली वाले कुछ देर तक सोचते रहे, फिर यमुना नदी में कूद पड़े और यमुना में स्थित कालिया को युद्ध कर पछाड़ते हुए उसे तार दिया।

दहका

जागो महादेव कैलाशी
कैलाशी हो अविनाशी, जागो महादेव कैलाशी

ऊपर छत्र फिरै सोनेन के
सीस बहै गंगधारा
मुण्ड के माला गले मां सोहे
भाँग धतूरा के दासी
जागा हो महादेव कैलाशी।

हे महादेव शंकर! कैलाश में रहने वाले कृपया जागिये। महादेव अविनाशी के सिर के ऊपर सोने की छत्र फिर (घूम) रही है, उनके सिर से गंगा की धारा बह रही है। कपाल की माला उनके गले में अच्छी लग रही है, वे भाँग और धतूरा के नशे के दास हैं।

लछमन अऊ राम ये हो,
संगै सखा मिल जानकी होरी खेलैं
काखे हाथ पिचकारी भरि -भरि सोहैं
काखे हाथ अबीरा
रामा के हाथे पिचकारी भरी सोहैं
सिया कि हाथ अबीरा
जानकी होरी खेलैं।

लक्ष्मण और सीता के साथ राम और उनके सखा आपस में होली खेल रहे हैं। किसके हाथ में पिचकारी है और किसके हाथ में अबीर? राम के हाथों में पिचकारी है जबकि सीता के हाथ में अबीर।

बोलै मोरवा घहराइ रे घटा
मोहि नीकै न लागै नइहरवा
कौन मास रितु कोयल बोले
कौन मास बोलै मोरा
चैत मास रितु कोयल बोले
लागै अषाढ़ बोले मोरा
मोहि नीकै ना लागे नइहरवा

आसमान में बादल उमड़ रहे हैं। मोर बोल रहा है किन्तु मुझे नैहर (मायके) में अच्छा नहीं लग रहा है। किस माह में कोयल बोलती है और किस माह में मोर? चैत्र माह में कोयल बोलती है जबकि आषाढ़ के प्रारंभ होते ही मोर बोलता है।

दहका

गढ़ लंका गये कपि दोनों
वीर अंगद हनुमाना
खेलत सतरंग पाँसा
रावण के साथ
खेलत सतरंग पाँसा

अंगद और हनुमान दोनों ही कपि लंका की हवेली में गये और रावण के साथ चौपड़ खेल रहे हैं।

बुन्देली

वृन्दावन भूला कान्हा सखी मोरा
वृन्दावन भूला कान्हा
गाय चरावत बंसी बजावत
नाचत ग्वालन के संग
माखन खात बृजराज हमारो
वृन्दावन भूला कान्हा

कृष्ण को, हे सखी! लगता है वृन्दावन भूल गया है। वही कान्हा जो गायों को चराता था, बाँसुरी बजाता था, ग्वालों के साथ नाचता था, हमारा माखन चुराकर खाता था। वही कान्हा अब हमें और वृन्दावन को भूल गया है।

दहका

दोऊ नैनन बीच लसै कजरा
दोऊ नैनन बीच लसै कजरा
सोनेन केर बनी कजरउटी
आँतर गुलाल के कजरा हो
दोऊ नैनन बीच लसै कजरा

दोनों आखों में नायिका काजल लगाये हुए है। काजल की डिबिया सोने की है तथा काजल में महकते हुये इत्र की सुगंध भरी है।

बुन्देली

जमुना मा न कूदो गिरधारी
हबै कालिका दह माही
जमुना मा न कूदो गिरधारी

यमुना नदी में कृष्ण जी कूद गये और कालिया नाम का नाग उस नदी में रहता है।

धीरे-धीरे झुलावो पलना यशोदा
धीरे झुलावो पलना
कृष्ण उदक न जाय यशोदा
धीरे झुलावो पलना

हे यशोदा मइया! पालनें को जरा धीरे-धीरे झुलाओ, कहीं कृष्ण जी की नींद न खुल जाय या वे डर ना जायें इसलिए पालना धीरे झुलाओ।

त्रिताला

बिरझाय गये लाल
चन्द्र खेलउना के कारन

अंतरा - *सौ योजन से ऊंचे चन्द्रमा*
कृष्ण मनाये न मानै
माता यशोदा बिहंसि बोली
आवा लाल मोरे कनिया
बिरझाय गये लाल
चन्द्र खेलउना के कारन

बाल कृष्ण जी चाँद को खिलौना समझ बैठे और माता यशोदा से जिद करने लगे कि वह खिलौना उन्हें चाहिए। सौ योजन की दूरी पर चन्द्रमा आकाश में स्थित है और कृष्ण जी मनानें की सारी विधियों से भी नहीं मान रहे हैं। तब माता यशोदा हँसकर उनसे कहती हैं- आओ तुम, मेरी गोद में बैठ जाओ।

ये मोरिला बोलै हो, बोलै सुहावन बोली
कोलियन कोलियन मोरिला चरत है

कोऊ ना मारै रोरा
रोरा के मारे मोरा मरत है
फूटत है दोनों जोड़ा रे
मोरिला बोलै हो, बोलै सुहावन बोली

बड़ी ही लुभावनी बोली (आवाज) में मोर बोल रहा है। मोर जो गलियों में विचरण करता है उसे कोई पत्थर मत मारो, क्योंकि पत्थर लगने से मोर मर जायेगा और उसका अपनी मोरनी से साथ खत्म हो जायेगा अर्थात् जोड़ी टूट जायेगी।

झूमर

सोने गोड़रिया होय, गरू लागै दोहनियाँ
कहाँ की आहीं, ग्वालन गुजरिया
कहाँ दधि बेचन जाँय - गरु लागै दोहनियाँ......
मथुरा की आहीं, ग्वालिन गुजरिया
गोकुला दधि बेचन जाँय - गरु लागै दोहनियाँ ....
कै लख आवै, नवल राधिका
कै लख आवै अहीर - गरु लागै दोहनियाँ ....
नौ लख आवै, नवल राधिका
दस लख आवै अहीर हो - गरु लागै दोहनियाँ ....

सोने की गोड़ है (गोड़र यानी सिर पर मटकी रखने के लिए कपड़े की छल्लानुमा आकृति), सिर पर रखी हुयी मटकी भारी है। ये ग्वालिन गुजरिया (युवती) कहाँ की है और दही बेचने कहाँ जा रही है? ग्वालिन युवती मथुरा की है और गोकुल में दही बेचने जा रही है। कितने लाख राधिका (नायिका) हैं और कितने लाख अहीर? नौ लाख नव युवतियाँ (राधिका या नायिका) और दस लाख अहीर (नायक या कृष्ण)।

लछिमन और रामा खेलैं होरी जनकपुर, लछिमन रामा खेलैं
एक तो खेलैं राम लक्ष्मन, दूजै जुगल किशोरी
तीजे खेलैं भरत शत्रुघन, भरे रंगन मा बोरी
हरा बांस का हरा पताका, रेशम लागी डोरी
धाय-धाय पिचकारी चलावैं, सीता रंगन मां बोरी

लक्ष्मण और राम जनकपुर में होली खेल रहे हैं। राम, लक्ष्मण, सीता, भरत, शत्रुघ्न रंगों से

भरे हुये हैं, रंगों से सराबोर हैं। हरे बाँस की हरी पताका है जिसमें रेशम की डोरी लगी हुयी है, बार-बार पिचकारी चलाते हुए सीता रंगों से सराबोर दिखायी दे रही है।

दहका

सीता का स्वयंवर भारी हवै
सीता का स्वयंवर भारी

अंतरा - *देश देश के भूपति आये*
बड़े बड़े महिपाला
ब्रम्हा सहित महदेवा आये
केखे पड़ा जयमाला।
रावण और बाणासुर आये
दूरी से माथ नवाये
तिल भर धनुष टारा टरै ना
लौट घरे पुनि जॉय।

सीता जी का स्वयंवर हो रहा है जो बहुत भव्य और विशाल है। दूर-दूर से भूपति और राजे महाराजे आये हैं। ब्रह्मा जी के साथ महादेव शंकर आये हैं। किसके गले में जयमाला पड़ेगी? रावण और बाणासुर भी आकर धनुष को दूर से ही प्रणाम करते हैं। धनुष तिल भर भी नहीं हिल पा रहा है। सभी निराश होकर लौट रहे हैं।

बुन्देली

नाही पटै गिरधारी हमारी तोरी
नाहि पटै गिरधारी

अंतरा- *तुम तो आहे नन्द दुलारे*
हम ब्रजभान लोलारी
तुम तो पहिना पीत पीताम्बर हम पहिरी रंग सारी
नाहि पटै गिरधारी
लेकर चीर कदम चढ बैठे सखियाँ रहत उघारी
चीर हमारी देदे मुरारी, नाहि हम दे हैं गारी
नाहि पटै गिरधारी
चीर तुम्हारी तब दैंहे राधा, जल से हो तू न्यारी
पुरइन पात पहिर राधा निकली, कृष्ण हंसै दै तारी। नाहि पटै गिरधारी

राधा- हे गिरवरधारी कृष्ण! तुम्हारी नहीं बनेगी तुम तो नन्दबाबा के प्रिय पुत्र हो और हम वृषभान की प्रिय पुत्री हैं। तुम पीला पीताम्बर पहने हो जबकि हम रंगीन साड़ी पहने हैं। तुम हमारी सखियों के वस्त्र चुराकर कदम्ब के वृक्ष पर जा बैठे हो हमारी सारी सखियाँ निर्वस्त्र होकर रह गयी हैं, हमारे वस्त्र हमें लौटा दो, नहीं तो हम तुम्हें गाली देंगी।

कृष्ण- हम तुम्हारे वस्त्र तभी देंगे जब तुम पानी से बाहर आओगी। तब सभी सखियों सहित राधा भी कमल के पत्ते धारण कर बाहर निकलती हैं और कृष्ण ताली बजाकर हँसते हैं।

राई

सखि सोलह हजार सखि सोलह हजार
मधुबन मा कान्हा अकेला

सोलह हजार सखियों के बीच मधुबन में कान्हा अकेले विचरण कर रहे हैं।

टिमकी मा गणेश टिमकी मा गणेश
ढोलक मा बसै मइया शारदा

टिमकी (झाँझ या मजीरा) में गणेश जी विराजमान हैं और ढोलक में माता शारदा विद्यमान हैं।

दहका

कैसे गज का फन्दा छोड़ायो नाथ कैसे गज फन्दा छोड़ायो
अंतरा - *गज और ग्राह लड़े जल भीतर*
लड़त लड़त गज हारो
तिल भर सूंड़ रही जल ऊपर
तब हरि नाम पुकारो। नाथ कैसे गज को........
सबरी के बेर सुदामा के तेन्दुल
साग बिदुर घर खाओ
दुर्योधन का मेवा त्यागो
रुचि रुचि भोग लगायो ॥ नाथ कैसे ...
कच्चा सूत रंग, गहि गहि गाँठ लगायो

डोरी ना टूटै सिया जी के कंगन
ये बल कहां घटाओ ॥ नाथ कैसे......

हे ईश्वर। तुमने किस तरह गज (हाथी) को बनन से मुक्त किया। गज और ग्राह (मगर) जल में लड़ रहे थे और लड़ते-लड़ते हाथी हार गया था, जब उसकी सूँड़ मात्र पानी के ऊपर रह गयी, तब उसने तुम्हें पुकारा था।

तुमने शबरी के बेर, सुदामा के चावल और भाजी विदुर के यहाँ प्रेम से खायी है जबकि दुर्योधन के मावा (मेवा) का तिरस्कार किया था।

कच्चे सूत को रंग-रंग कर उसमें गाँठ लगायी गयी। अब ये डोरी नहीं टूट रही है। ऐसा बल कहाँ से आया?

बैसवारा

अरे हाँ वीर धुन बाजी , हाँ हाँ वीर धुन बाजी
वृन्दावन माँ वीर धुन बाजी
जहाँ नाचै नन्द के लाल , वीर धुन बाजी ....

अंतरा- *केखे हाथ ढोलकिया सोहें, केखे हाथ मजीरा,*
केखे हाथ कनक पिचकारी, केखे हाथ अबीरा ॥ वीर धुन बाजी .....
शंकर हाथ ढोलकिया सोहे , नारद हाथ मजीरा,
कान्हा के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ अबीरा । वीर धुन बाजी ......

वृन्दावन में वीर धुन (भीषण ध्वनि) गूँज रही है। जहाँ नन्द के लाल कृष्ण जी नृत्य कर रहे हैं। किसके हाथ में ढोलक है, किसके हाथ में मंजीरा किसके हाथ में सोने की पिचकारी और किसके हाथ में अबीर (गुलाल)? शंकर जी के हाथ में ढोलक है, नारद के हाथ में मंजीरा, कृष्ण के हाथ में सोने की पिचकारी और राधा के हाथ में गुलाल है।

तीनताल

बसिया बाजै हो , नाचै नन्द के लाला नाचै नंद के लाला रे,
बसिया बाजै हो । नाचै......
एक ता नाचै काली कोयलिया
दूजे नाचै घर मोरा

तीजे नाचै सोलह सौ सखियाँ
कृष्णा नाचै अकेला । बसिया बाजै हो..

बंशी (मुरली) बज रही है और नन्द के लाल नृत्य कर रहे हैं। एक तरफ काली कोयल नृत्य करे दूसरी ओर मोर। एक ओर सोलह हजार गोपियाँ नृत्य करें, जबकि कृष्ण अकेले ही नाच रहे हैं।

झूमर

रस पिचकरी भरी अबीर
यमुना धीरे बहो
धीरे बहो रे धीरे बहो रे ...
कै लख आयी ग्वालिन गुजरिया
कै लख आये अहीर
नौ लख आयीं ग्वालिन गुजरिया
दस लख आये अहीर
यमुना धीरे बहो ॥

यमुना जी धीरे बहो, रंगों का मौसम (त्यौहार) है। कितनें लाख गोप युवतियाँ आयी हैं कितने अहीर (गोप) आये? नौ लाख गोप युवतियाँ आयी हैं और दस लाख अहीर आये हैं।

दहका

मोरो दीन्ह दधि खाले कन्हैया, मोरो दीन दधि खाले
का जानी कबै होई भेंट कन्हैया ,मोरो दीन दधि खाले
अंतरा – *केखर आहै लालना भला, लालना का है तुम्हारा नाम*
कहना के तू काहनी का है तुम्हारा देस कन्हैया। मोरा दीन दधि खा ले
नंद बाबा के ललना भला ललना श्री कृष्ण हमारा नाम
मथुरा में है रहनी हमारी , उहै हमारा देस ।
मोरो दीन्ह दधि खा ले॥

मेरा दिया हुआ दही खा लो कन्हैया। क्या पता अब कब दोबारा हमारी तुम्हारी मुलाकात होगी? तुम किसके पुत्र हो क्या नाम है तुम्हारा? तुम कहाँ के हो और कौन से देश से आये हो? हम नन्दबाबा के पुत्र हैं, कृष्ण हमारा नाम है। हम मथुरा में रहते हैं और वही हमारा देश है।

बुन्देली

रामलखन की छवि जोड़ी
जब से राम धनुष तोड़े , सिया राम लखन की जोड़ी

राम और लक्ष्मण की सुंदर जोड़ी है। जबसे राम ने स्वयंवर में धनुष तोड़ा। तबसे यह जोड़ी बढ़कर सीता, राम, लखन की हो गयी।

चल देखन फुलवारी ललिता
फूले फूल हजारी ललिता
चल देखन फुलवारी ललिता

हे ललिता! चलो फुलवारी (बगीचा) देखने चलें। जहाँ हजारों हजार फूल हैं।

केवट बड़े अनुरागी राम के
धोय चरण लिये पानी राम के
केवट बड़े अनुरागी राम के ...

केवट राम के बहुत अनुरागी हैं। उन्होंने राम के चरण कमल धोये हैं।

नारद महाराज आये हो रूप बनाय के
नारद महाराज, सकल देह सुबरन के लीन्हे
नाक ,कान ,मुँह काला
ब्रम्हा सहित महादेव आये
केखे पड़े जयमाला । नारद महाराज ...

नारद मुनि स्वयंवर में अपना रूप सजाकर आये हैं। पूरी देह (शरीर) स्वच्छ और अच्छी प्रतीत हो रहा ही है किन्तु नाक, कान और मुँह काला है। स्वयंवर में ब्रह्मा जी के साथ शंकर जी भी आये हुये हैं, पता नहीं किसके गले में जयमाला पड़े।

हाथ लिहे कनक पिचकारी रंग केसरी घोरे
दौड़ - दौड़ पिचकारी चलावे कुन्ज गली के खोरे

हाथ में सोने की पिचकारी लिये, केसरिया रंग घोलकर गलियों-गलियों में पिचकारी दौड़-दौड़कर चला रहे हैं।

फुल बगिया लगाये मलीवा रे
आबय महक बेलन के
केखर बाग बगैचा आहीं
केखर आहीं फुलवार हो
आबय महक बेलन के
रामा के आहीं बागा बगैचा
सीता के आहीं फुलवार हो
आबय महक बेलन के

माली ने फूलों की बगिया लगायी है जिससे बेला की खुशबू (सुगंध) आ रही है। बाग बगीचे किसके हैं और फूलों से लदे पौधे किसके हैं? राम के बगीचे हैं और फूल व पौधे सीता जी के हैं। जहाँ से बेला की सुगंध आ रही है।

चलो पनिया भरन शिवनार सागर पै
उतारी गागर आज चली पनिया भरन
शिवनार सागर पै उतारी गागर
सागर पूछै रूप देख के
कौन पिता महतारी
भूप देस के रहने वाले
भूप के पिता महतारी
आज सागर पर उतारी गागर

शिव की स्त्री (पार्वती) पानी भरनें को चली हैं। सागर (समुद्र) में अपनी गागर उतारी हैं। सागर ने उनका रूप देखकर पूछा- तुम कौन हो, किस देश की हो एवं तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? पार्वती ने उत्तर दिया-भूप (स्थल या पृथ्वी) में रहते हैं और भूप के ही हमारे माता-पिता हैं।

श्याम बने मधुबनिया ऊधौ श्याम बने मधुबनिया

अंतरा- *वा दिन की सुधि भूल गयी है*
गोद खिलावैं कनिया
गुहि गुहि दीन्ही नंद बाबा जी
हरे काँच की
जब से जाय बसे मधुबन माँ

बिरसाई निदरनिया
अब गोकुल काहे का आवैं
रचत नयी यौवनिया। ऊधो......
सूरदास प्रभु कहां लग बरनैं
अब भये छैला चिकनियां। ऊधो.....

विरह की मारी कृष्ण की सखियाँ ऊधौ से कह रही हैं-श्याम तो अब मधुबन के ही होकर रह गये हैं। उस दिन की सुधि (स्मृति) भूल गये जब हम उन्हें गोदी (गोद) में खिलाया करते थे। नंद बाबा ने उन्हें हरे-हरे काँच की माला बनाकर दी थी।

जब से कृष्ण मधुबन चले गये तब से हमें नींद ने भी त्याग दिया है। अब श्याम गोकुल में लौटकर क्यों आयेंगे? वो तो नयी-नयी यौवनाओं के समीप होते होंगे। सूरदास जी कहते हैं कि उनका कहाँ तक वर्णन करें अब तो वो चिकने युवक हो गये होंगे।

कुंजन बिहरै मोर ,कान्हा गौवन के साथ
लीन्हें बाँस की बंशी, श्री नन्द के लाल
खेलै कान्हा राधा, शिव करें विचार
गौवा चरैं मधुवन माँ, यमुना के तीर।

कुंज में मोर विहार कर रहा है और कृष्ण जी अपने गायों के साथ घूम रहे हैं। उनके हाथ में बाँस की बंशी (बाँसुरी) है। राधा जी और श्याम खेल रहे हैं, शंकर जी ध्यान मग्न हैं। मधुबन में गाय चर रही हैं।

वृन्दावन की कुंज गलिन माँ
होइगै सखी से भेंट
पिया मनमोहन आया
केखर भीजै ई जामा जोड़ा
केखर पचरंग चीर
श्यामा के भीजै जामा जोड़ा
राधा के पचरंग चीर

वृन्दावन की महकती हुई गलियों में दो सखी आपस में मिलती हैं और चर्चा कर रही हैं-मनमोहन (मन को हरने वाले) पिया श्री कृष्ण और राधा होली खेल रहे हैं किसका जामा जोड़ा और किसका पंचरंगी वस्त्र भीग रहा है? श्याम का जामा जोड़ा और राधा को पंचरंगी वस्त्र भींग रहे हैं।

बम भोला तेरी दरबार
हमारा मन टारो टरै ना
बाजत ढोल मृदंग झाँझ ढफ
और बजै शहनाई
महादेव के डमरू बाजे
थिरक पड़े हनुमान
नारद नाचै, विष्णु नाचै
भैरव तेरे द्वार
सबसे निकहा ब्रम्हा नाचै
दै दै के ताल

हे शिवशंकर! तुम्हारा दरबार देखकर हमारा मन अब हटने का नहीं कर रहा है। ढोलक, झाँझ, मजीरा, मृदंग और डफली बज रहे हैं। साथ में शहनाई भी बज रही है। जब महादेव शंकर का डमरू बजा तो हनुमान जी थिरक उठे। नारद, विष्णु और भैरव तुम्हारे द्वार पर नृत्य कर रहे हैं। किन्तु सबसे सुन्दर नृत्य ब्रह्मा जी कर रहे हैं ताल दे देकर।

बैसवारा

अरे हाँ कोयलिया बोले
अमवा कइ डार कोयलिया बोलै
ऋतु आई, ऋतु आई
ऋतु आई बसन्त बहार
कोयलिया बोले ॥

आम की डाली पर कोयल बोल रही है। बसन्त ऋतु आयी है, कोयल बोल रही है।

लेजम

काहेन के गौड़रिया आय
काहेन के गागरिया

अन्तरा – *कहना के आहीं ग्वालिन गुजरिया*
कहना दधि बेचन जाँय
सोनमा के गोड़रिया आये
ओहिन पर गगरिया

किस चीज की गोनर है और किस चीज की गागर बनी है? कहाँ की ग्वालिन युवती है और कहाँ दही बेचने जा रही है? सोने की गोनर है और उसी पर गागर रखी है।

कई न गये बेईमनवा पतिन मोर कई न गये बेईमनवा
बेइमान परेशानी मेरी

असाढ़ मास जब लागे सइयां, झुकि आये कारे बदरा
सावन भादौं मेघा बरसे , टुप - टुप चुअै भवनवा

कुंवर मास कुवरा बलि आयी, कार्तिक दिया देवारी
अगहन माँ जो होते सइयाँ, होत मजे से अलहनमा .

पूष मास पुषरावलि आयी , माघ मे मकर नहा ले
फगुआ मास जब लागै सइयां , रस में भीग यौवनमा

आगे चैत नवमी दिन आये , पवन बहै बैसखवा
लगे जेठ गर्मी ऋतु आई , चोलिया भीग पसीनमा।

विरह में क्षोभ के साथ नायिका विलाप करते हुऐ कह रही है। बेईमान मुझे परेशानी में डाल गये ना। आषाढ़ मास जब आता है, काले बादल घिर आते हैं। सावन, भादौं मास में पानी बरसता है और हमारा भवन टपकता है। क्वाँर माह में खिलने वाले पुष्पों की श्रृँखला आती है। कार्तिक मास में दीपावली आती है, अगहन मास में यदि पिया पास में होते तो प्यार की बौछार होती। पौष माह में खिलने वाले पुष्पों की श्रृंखला आयी। माघ में मकर (संक्रांति) का स्नान किया, फाल्गुन मास जब आया तब यौवन में रस आने लगा। चैत्र के प्रारंभ में ही नवमीं के दिन आते हैं, बैसाख में पवन (हवा) बहनें लगती है। ज्येष्ठ माह में गर्मी की ऋतु आती है जिससे चोली पसीने से भींग जाती है।

बारहमासी

कई न गये बेइमनवा पतन मोरि
अरे आसौं के अगहनमा पतन मोरि
कई न गये बेइमनवा

कई के असाढ़ असाढ़ी ऊधौ
सावन बूँद चुअनवा
भादौं का बिजुरी तड़-तड़ गरजै

कढ़ि ना जाय अंगनमा

कई के कुँवार कुँवारी ऊधौ
कातिक दिया लेसनमा
अगहन बीते अगम होत हैं,
कोऊ सखी चला गमनवा

पूस पुसउल करि कै ऊधौ
माघै मकर नहनवा
फागुन मास खेल ऋतु आई
घर नहिं आँय सजनमा

चेत मां चैती कर के ऊधौ
बैसाख लागि लगनवा
जेठ मास गरमी रितु आई
चोलि बिच छूटे पसिनमा

बेईमान मुझे परेशान करके मुझसे दूर चले गये हैं। आषाढ़ मास में व्याकुलता बढ़ती है, सावन में बूँद टपकती है। भाद्रपद में बिजली जब चमकती है, तब आँगन में भी जाने से डर लगता है। क्वाँर कुँवारी जैसी कर गयी, कार्तिक में माचिस जैसी हालत हो जाती है। अगहन माह के बाद चलो कोई मेरा गौना करा दो। पूज (पौष) में किसी तरह गुजारा किया और माघ में मकर नहाया फागुन माह में खेलने की ऋतु आयी और साजन घर पर नहीं है। चैत्र में चैती हुयी और लग्न लगने लगी। बैसाख में, ज्येष्ठ माह में गरमी ऋतु आयी और चोली के बीच में पसीना बहने लगता है।

बहियाँ ना झकझोरा पिया
झुलनी माँ दरेरा लागै

पिया, मेरी बाँह को मत झकझोरो (झटको), मेरी झुलनी (नथ) में झटका लगता है।

है सोनेन केर घइलना हो, रेशम की डोर
पानी भरैं अलबेलिया , कुअना दई बोर

सोने की मटकी और रेशम की डोरी है, अलबेली नार पानी भर रही है और उसने मटकी तथा डोरी कुआँ में डुबा दी।

रीवा राजौ माँ परिगा पाथर
हो मसुरी रे चना के दाल न पूछा मारी गड़ जाय

रीवा राज्य में पत्थर (ओला) पड़ गया। मसूर, चना की दाल की हालत कहते ना बने, सब मिट्टी में दब गयीं।

गोपाला गली माँ गावै सखी
गाय गाय वीणा बजावै सखी

गोपाल (कृष्ण) गलियों में गा रहे हैं। हे सखी! और गा-गाकर वीणा बजाते जा रहे हैं।

उड़े गुलाल, लाल भये बादर
मचिगा धुंधा काल
राधा के ऊपर रंग चुअत है
नाचै कृष्ण मुरारी लाल

लाल-लाल गुलाल उड़ रहा है, बादलों का रंग लाल हो गया। गुलाल के उड़ने से धुंध छा गयी। राधा के ऊपर रंग टपक रहा है और कृष्ण मुरानी नृत्य कर रहे हैं।

मोही घेर लियो कुन्जन मां कान्हा
घेर लियो कुन्जन मां
मोहि पायी अकेली बन मां साँवलिया
घेर लियो कुन्जन मां

मुझे कान्हा ने कुन्ज की गलियों में आज घेर लिया। मुझे वन में अकेली पाकर, साँवले रंग के गोपाल ने आज घेर लिया।

रथ साजे जनक दुलारी
राम का ढूढ़ै चली फुलवारी

जनक दुलारी सीता ने रथ सजवाया और रथ पर सवार होकर राम को ढूँढने निकली हैं।

शंकर जी का चाही कमरिया
हो गौरा जी को चीर

पुन के होय गठजोड़वा
चला देखन चली

शंकर भगवान को काँवरिया चाहिए। गौरा पार्वती को चीर (साड़ी नुमा वस्त्र) चाहिए। फिर से उनका गठजोड़ हो (विवाह), चलो सब लोग देखने चलो।

होरी खेलें रघुवीर अवध माँ
होरी खेलें रघुवीर अवध माँ

रघुबीर (राम) अवध में होली खेल रहे हैं।

या बंसी कौन बजाई बरा तर
या बंसी कौन बजाई
सुध बुध सगरी बिसराई बरा तर
बंसी कौन बजाई

ये किसने वट वृक्ष के नीचे बाँसुरी बजाई है? हमारी सब सुध-बुध भूल गयी।

सिर सोने केर पंखा डोलवा महादेवा
रामा का गरमी लागै

हे भगवान शिव शंकर! आप सोने का पंखा झलो, क्योंकि राम को गरमी लग रही है।

दहका

सुमिरौ मन राम आनंदा ह्दय मन राम आनंदा
कटि जैंहे जनम के फंदा ह्दय, सुमिरौ मन राम आनंदा

हे मन! राम का नाम सुमिरण करो इससे आनंद मिलता है और तुम्हारे जन्मों के फंदे (पेंच) राम के सुमिरन से कट जायेंगे।

बुन्देली

मैं न खेलो ऐसी होरी, अरे कान्हा
मैं ना खेलो ऐसी होरी

सारी चुनर रंग बोरी
हो कान्हा मैं ना खेलों ऐसी होरी

हे कान्हा! मैं इस तरह की होली नहीं खेल सकती। मेरी सारी चूनर तुमने रंग में डुबो दी है।

बैसवारा

अरे हाँ अवध माँ खेलें
हाँ हाँ अवध माँ खेलें
खेलै चारिऊ भाई
संग लिहे जानकी माई
अवध माँ खेलें

अयोध्या में चारों भाई होली खेल रहे हैं। साथ में जानकी को लेकर सब अवध में होली खेल रहे हैं।

राई

भज लो सीताराम, तुलसी का माला लै लो
हाथ में तुलसी का माला लै लो
आल्हा अमर भयो, ऊदल अमर भयो
दै गई वरदान शारदा मैया, तुलसी का माला लै

हे मानव! सीताराम भजो, तुलसी का माला हाथ में लेकर सीता राम भजो। आल्हा-ऊदल अमर हो गये हैं, उन्हें शारदा माई वरदान दे गयी हैं। तुम भी सीताराम भज लो।

सखि सोलह हजार, बृज में कन्हैया अकेला
उलझो न श्याम, हाँ हाँ हमारी कही मानो
नील रंग में रंगे हैं श्याम, राधा रंगी हरदी मां
मुख में मुरली बजाय श्याम, गो चराय मधुवन मां
सखि सोलह हजार...

सोलह हजार सखियों के बीच में कन्हैया अकेले हैं। सखियाँ कह रहीं हैं कि श्याम हमसे मत उलझो नीले रंग में श्याम रंग गये हैं और राधा को हल्दी रंग में रंग दिया है। श्याम मुख में बाँसुरी बजाते हुए मधुबन में गाय चरा रहे हैं।

तीन ताल

गढ़ि लंका लड़े कपि दोनों
बीर अंगद हनुमान
खेलत सतरंग पॉसा
रावण के साथ

लंका के अभेद गढ़ में हनुमान और अंगद ने चढ़ाई कर दी है और रावण के साथ चौसर (चौपड़) खेल रहे हैं।

श्रीराम गये वनवासा
अयोध्या सूनी भयी
भरत गये ननिअउरे
काऊ लावा बोलाय

श्री राम बनवास चले गये। अयोध्या सुनसान हो गयी। भरत अपने ननिहाल गये हुये हैं, कोई बुला लाओ।

चन्द बदन उजियारी राधे, चन्दन खोला केमार

दस अंगुरी दस मुदरी सोहै
भरी बांह चौड़ाई हो, भरी बांह चौड़ाई
गरे हार मोतिन का सोहै
गजरा सोहे हजार, राधे चन्द बदन...

तीन लाख का लंहगा सोहै
उसमें झूना सारी
हरे रंग की चोलिया सोहै
गले पीताम्बर डारि, हो राधे...

आंखी के काजर माथे की बिंदिया
नाके केर मकवाही
वहै पहिर के निकरी राधिका
कृष्ण हँसैं दे तारी, राधे...

चन्द्ररूपी बदनवाली राधा, चन्दन के द्वार खोलो। दस अँगुलियों में दस अँगूठी धारण किये हुये हैं। चूड़ियों से बाहें भरी हुई हैं। गले में मोतियों का हार है और हजारों गजरे पहने हुये

हैं। तीन लाख का लँहगा पहने हैं। उस पर झीनी साड़ी तथा हरे रंग की चोली पहन रखी है और पीला वस्त्र गले पर डाल रखा है। आँखों में काजल, माथे पर बिंदिया, नाक में नथनी ये सब पहनकर राधिका निकलीं जिन्हें देखकर कृष्ण ताली बजा-बजाकर हँस रहे हैं।

डग्गा

शिवशंकर खेलैं फाग, गौरा के आंगन

काहेन चढ़ि शिवशंकर आयें
काहेन चढ़ि भगवाना, गौरा के आंगन

बैला चढ़ि शिवशंकर आये
गरूण चढ़े भगवाना, गौरा के आंगन

भगवान शंकर गौरा पार्वती के आँगन में होली खेल रहे हैं। किसकी सवारी में शिवशंकर आये और किसकी सवारी में भगवान्? बैल में चढ़कर शिवशंकर आये तथा भगवान विष्णु गरूण पर बैठकर आये हैं।

तीनताल

गोविन्दगढ़ का अजब तालाब
बॉध माधै की गढ़ी
किला इलाहाबादी
जहां गंगा बही। किला इलाहाबादी

गोविन्दगढ़ का अजूबा तालाब, बाँधवगढ़ की गढ़ी (हवेली) इलाहाबाद का किला, जहाँ गंगा बहती है।

झूमर

वृन्दावन की कुंज गली माँ हो गयी कृष्णा से भेंट

जमुना धीरे बहो,

रंग पिचकारी भरी अबीर, जुमना धीरे बहो

केखर भींजत जामा जोड़ा
केखर चोली चीर, जमुना धीरे बहो

श्याम के भीजत जामा जोड़ा
राधे के चोली तीर, जमुना धीरे बहो

उड़त गुलाल लाल भये बादर
झोंका आयै अबीर, जमुना धीरे बहो

हम तरसे प्रभु तेरे दरसे को
आखिर जाति अहीर, जमुना धीरे बहो

वृन्दावन की कुञ्ज गलियों में कृष्ण से मुलाकात हुयी है। हे यमुना मैया! धीरे बहो। रंग से पिचकारी भरी हुयी है, अबीर उड़ रहा है। यमुना धीरे बहो। किसका जामा जोड़ा भीग रहा है और किसकी चोली? यमुना धीरे बहो। श्याम का जामा जोड़ा भींग रहा है और राधा की चोली। यमुना धीरे बहो। गुलाब के उड़ने से बादल का रंग लाल हो गया और अबीर का झोंका चल रहा है। यमुना धीरे बहो। तुम्हारे दर्शन को प्रभु हम तरस रहे हैं। यमुना धीरे बहो।

डग्गा

हमको बृजनारि सतउती हई

गलिन गलिन माँ कुआँ बउलिया,
रेशम डोरी डरउतीं हईं। हमका बृजनारि...

सोनेन इनके बने घइलना,
हमसे मूड़े ढोबउती हईं।
हमका बृजनारि...

अपने घर के काम गुदुरूआ,
सब हमसे करबऊती हई। हमका बृजनारि...

भादौं के हीले माँ देखा झऊआ,
हमरे मूड़े धरऊती हई। हमका बृजनारि...

हरी चुनरिया लाल घाँघरा,
सब गहना पहिरऊती हईं। हमका बृजनारि...

मर्द के भेष जनाना करके,
अपनें साथ सोवउती हईं। हमका बृजनारि सतउती हईं।

कृष्ण अपनी आपबीती सुना रहे हैं– हमें बृज की नारियाँ सताती हैं, परेशान करती हैं।

गलियों-गलियों में कुँए और बावडियाँ हैं जिनमें ये सब हमको रेशम की डोरी डालने को विवश करती हैं। इनके मटके सोने के बने हुये हैं जो ये हमारे सिर पर रखकर ढुलवाती हैं। अपने घर के सभी छोटे बड़े काम ये मुझसे ही करवाती हैं। भादौं मास के कीचड़ में भी हमारे सिर पर टोकना (टोकनी) रखती हैं। हमें हरी चूनर, लाल घाघरा और सभी गहनें पहनाती हैं। मर्द को जनाना वेषधारण कर अपने साथ हमें सुलाती हैं।

बुंदेली

खेलत चगन मगनवा अगनवा मां
खेलत चगन मगनवा
दशरथ के चारिऊ ललनमा अगनमा मां
खेलत चगन मगनवा

आँगन में घूम-घूमकर दशरथ के चारों पुत्र खूब खेल रहे हैं।

दहका

होली खेलत रघुबीरा अवधमां
होली खेलत रघुबीरा
झोली में लै ले अबीरा अवध मां
होली खेलत रघुबीरा

अयोध्या में रघुबीर (राम) होली खेल रहे हैं। झोली में अबीर गुलाल भरकर रघुबीर अयोध्या में होली खेल रहे हैं।

डग्गा

होली खेलैं यमुना तीरे कन्हैया
सखन संग होली खेलैं
बाजत ढोल मृदंग मजीरा
मुरली धीरे धीरे कन्हैया
सखन संग होली खेलैं।

यमुना के किनारे अपने साथियों के साथ कृष्ण होली खेल रहे हैं। ढोल, मृदंग, मजीरा और मुरली बज रहे हैं। कन्हैया धीरे-धीरे होली खेल रहे हैं।

बुन्देली

धीरे गोद गोदनहरी अरे गोदना
धीरे गोदनहरी ना
कसकत बाँह हमारी अरे गोदना
धीरे गोद गोदनहरी ना

अन्तरा– *बाहौं म गोदो मोर मोरैला*
छतियन कुन्ज बिहारी, अरे गोदना
धीरे गोद गोदनहरी ना

अरे ओ गोदने वाले! धीरे–धीरे गोदना गोद। हमारी बाँह में दर्द होता है। मेरी बाँह में मोर का चित्र बनाओ और छातियों में कुन्ज बिहारी का चित्र गोदो।

उचटा

मन बसा हमार वृन्दावन मां
वृन्दावन मां चम्पा, चमेली, गुलैबास गुलजारा
गुलखैरा, गुलमेंहदी, गुलश्री डार गुलै गुल बाढ़े
निब्बू, नारंगी, आँवरा महकैं हर चौबारा
मालिन की बिटिया तोड़त बिचवत तरफा हाट बजारा मां
मन बसा हमार वृन्दावन मां

हमारा मन वृन्दावन में बसा (रमा) हुआ है। वृन्दावन में चम्पा, चमेली, गुलबास, गुजलारा, गुलखेरा, गुलमेंहदी और गुलश्री की डालियाँ बढ़ती है (बागों में) और नींबू, नारंगी, आँवला हर चौबारे में महक रहे हैं। मालि की बेटी जिन्हें तोड़कर बाजार में बेच रही है।

बैसवारा

रामानन्दा भज मन रामानन्दा
कटि जेहैं जनम के फन्दा, भज मन रामानन्दा

अवधपुरी एक धामा धामा धामा
जहां जनम लिहिन श्री रामा
उत्तर सरजू बहे नीरा
जहां पाप ना रहें शरीरा । भज मन रामानन्दा...

पूरब दिसा है कासी कासी कासी
जहां कासी बसे कैलासी
जहां है साधुन का डेरा
जहां हरि करें उठे फेरा। भज मन रामानन्दा...

केवट गुनी कहावैं कहावैं
बिन कर के नइया चलावैं
पण्डित पोथी लै धावें
बिन बाँचे बेद सुनावैं। भज मन रामानंदा..

रे मन! राम का सुमिरन करो। राम का सुमिरन करने से जन्म के पाप कट जायेंगे।

अवधपुरी धाम है जहाँ राम ने जन्म लिया। उत्तर में जिसके सरयू नदी बहती हैं, जहाँ पाप शरीर को छोड़ देते हैं।

पूरब (पूर्व) दिशा में काशी हैं, जहाँ कैलाशी (शंकर) वास करते हैं, जहाँ साधुओं का जमावड़ा लगा रहता है।

केवट जहाँ गुणी हैं, बिना पतवार के नाव चलाते हैं। पण्डित जहाँ बिना पढ़े ही वेदों का पाठ करते हैं।

दहका

हरो तन की पीरा पवनसुत

अंजनी के तुम जनम लियो है, खेंच पियो है छीरा,
होत भोर सुरिजन लीला देवन विनती कीना।

लै के वीरा चले पवनसुत उतरे सागर तीरा।
रामचन्द्र के दिहिन मुद्रिका सीता के मन घीरा।

शक्ति बान लगे लक्ष्मण के रोवत हैं रघुवीरा,
मूल संजीवन लेन पठायो पवन पुत्र बलवीरा।

फूट पताल बैठे जिमि कातर बैठत है बलवीरा,
अहिरावण के भुजा उखार के फेंक दिहिन्ह रणधीरा।

ज्वाला अग्नि उठी भीतर से सहि न सकत सरीरा,
तुलसीदास विश्वास राम के निर्मल होत सरीरा।

हे पवन सुत हनुमान! हमारे कष्ट और पीड़ा से हमें मुक्ति दें।

तुमने प्रातः होते ही सूर्य को निगल लिया था, समुद्र को एक ही साँस में पिया है, अंजनी के पुत्र सभी देव तुम्हारी स्तुति करते हैं।

तुमने संकल्प लिया और सागर पार उतरकर राम की मुद्रिका सीता तक पहुँचायी और उनके मन को शांति पहुँचायी।

लक्ष्मण को जब शक्तिबाण लगा तब राम विह्वल हो गये। ऐसे में तुम संजीवनी बूटी लेकर आये।

जिस शिला पर तुम बैठ जाते हो वह पाताल को चली जाती है। तुमने अहिरावण की भुजा उखाड़कर फेंक दी थी।

हमारे शरीर से अग्नि की ज्वाला उठ रही है, जिसे सहन नहीं किया जा सकता। तुलसी दास जी कहते हैं कि राम के विश्वासपात्र का स्मरण करने से शरीर निर्मल निर्मल हो जाता है।

डग्गा

चले आवैं धनी विसुनाथ कामता तोरे शरण मां
पहिलैं डेरा परा अमहिया, दूजे टमस के तीरा
तीजै डेरा मा सरभंगा, चौथ पइसुनी तीरा
कामता तोरे शरण मां।

महाराजा विश्वनाथ चित्रकूट की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। हे कामदनाथ! हमारे राजा विश्वनाथ तुम्हारे दर्शन को आ रहे हैं। सबसे पहला पड़ाव अमहिया, दूसरा पड़ाव टोंस नदी के किनारे, तीसरा पड़ाव सरभंगा और चौथा पड़ाव पैसुनी (मंदाकिनी नदी) पर पड़ेगा।

तीन ताल

रीवाँ के पल्टन भारी, जाय झाँसी लड़ै।
रीवाँ के बाघ बघेला, चाहे दिल्ली लड़ैं॥

रीवा की फौज बहुत जबरदस्त है वह झाँसी तक लड़ने जाती है। रीवा के बघेल जो शेर के समान हैं वो दिल्ली तक लड़ते हैं।

कहाँ पायो महावीरा अरे मुंदरी
कहाँ पायो महावीरा लाल
सीता के शोक शरीरा अरे मुंदरी
कहाँ पायो महावीरा लाल

हे हनुमान! तुमने यह अँगूठी कहाँ प्राप्त की? सीता का शोक मिटाने यह अँगूठी कहाँ से लाये?

अरी ये लखन के लागो शक्ति बाण
नहीं आये बीर हनुमान नहि आये
लखन के लागे शक्तिबान
होत भोर भिनसारे का पहरा
भज मन हरण बनाये
मूल संजीवन ढूढ़े ना पाये
पर्वत लाये उठाये। लखन के लागो शक्ति बाण

लक्ष्मण को शक्ति बाण लगा है। राम हनुमान की बाट जोह रहे हैं। हनुमान अभी तक नहीं आये, भोर होने वाली है। जब हनुमान मूल संजीवनी मूल पहचान नहीं पाये तो समूचा पर्वत ही उठाकर ले आये।

चारताल

घूंघरिया रे घूंघरिया है रस मोती,

कौन शहर से सोना मंगाय देऊ
पै कहना का पाट बड़ा सइयां है रस मोती। घूंघरिया रे...

पन्ना शहर से सोना मंगाय देऊ
पै रीवाँ का पाट बड़ा सइयाँ है रस
घूंघरिया रे...

करके सिंगार पलंग पर बैठी
पै मांग सम्हारत नाउनियां
है रस मोती, घूंघरिया रे...

घुँघरू के बजने से रस टपकता है। कौन से शहर से सोना मँगा दूँ और कहाँ का कपड़ा?

पन्ना शहर से मोती मँगा दो और रीवा से कपड़ा। नायिका श्रृँगार कर पलंग पर बैठी है और नाऊन (नाई की स्त्री) उसकी माँग सँवार रही है।

चाचर

लक्षिमन रघुबीर ये हो, सरजू के तीर
संग सखा लिए जानकी होरी खेलैं

केकर भीजैं जामा जोड़ा
केकर भीजें रंग चीर। होली खेलैं

रामा के भीजैं जामा जोड़ा
सीता के रंग चीर। होली खेलैं

लक्ष्मण और राम सरयू के किनारे अपने साथियों और जानकी के साथ होली खेल रहे हैं। किसका जामा जोड़ा भींग रहा है और किसकी चीर (स्त्री वस्त्र) भीग रही है? राम का जामा जोड़ा रंगों से भींग रहा है और सीता की चीर भीग रही है।

मोर चम्पा गले का हार पहनैं भौजी दुलरी

दुलरी तिलरी या चाउलरियां
मोतियां लगे अनमोल, पहनै भौजी दुलरी

बैठे पलंग पर बटुआ खोलें
बीरा चवाबैं अमोल, भौजी दुलरी।

चम्पा का हार गले में डालकर दुलारी भाभी आयी हैं। दो लटों वाली, तीन लटों वाली और चार लटों वाली मालायें जिनमें अनमोल मोती पिरोये हैं, दुलारी भाभी पहने हुये हैं। पलंग पर बैठकर भाभी ने बटुआ खोला और उससे पान निकालकर चबा रही हैं।

आय बसो महारानी कंठे
आय बसो महारानी
मेहर की शारदा माई
आय बसो महारानी कंठे

हे महारानी शारदा मैया! कृपा करके हमारे कंठ (गले) में आ बसो।

हरि ये सती होने को चली उत्तरा प्यारी
अभिमन्यू की नार सती होने को चली उत्तरा प्यारी
अभिमन्यू की नार करत है रोदन भारी
कर कर बहुत विलाप, नीर नैनन से जारी
प्राणपति किस होर गये कि मेरे प्राण अधारी
दासी को बिलगाई के फिर बोली अगम दहारी
मैं हो गयी आस निरास लाल गोदी में नहिआं
धिग धिग जीना है वृथा बिना पुरुष की नारी
सती होने को चली उत्तरा प्यारी
संग सती हो जाऊं रे सत्यदेव भरतार
सत्यदेव भरतार चिता पर बैठी प्यारी
मनमोहन सुन्दरलाल सुनत धाये गिरधारी
कही मान लो हे लली यह आशीष हमारी
गर्भवती ना सती हो फिर मानो वचन हमारी
फिर मानो वचन हो चिता के बाहर
महाप्रतापी होयेंगे फिर तेरे राजकुमार
फिर तेरो राजकुमार वीर सुन्दर जग जाहिर
बली राम कथ कथ कहैं यही फाग को सार
राजा परीक्षित भये उत्तरा के राजकुमार।

रानी उत्तरा सती होने को उद्धत हुयी है। अभिमन्यू की स्त्री उत्तरा सती होने को चली। वह बहुत रो रही है, उसकी आँखों से आँसू निकल रहे हैं। वह रोकर कहती है–मेरे प्राण आधार तुम कहाँ गये, मुझ दासी को छोड़कर? मैं अनाथ हो गयी, बेसहारा हो गयी। बिना पुरुष की स्त्री का जीना बेकार है। जैसे ही उत्तरा चिता पर बैठती है वैसे ही मनमोहन कृष्ण वहाँ आते हैं और उत्तरा को समझाते हैं– मेरा कहना मान, मेरा आशीर्वाद लो, तुम गर्भवती हो और सती मत होवो, कृपया चिता के बाहर आ जाओ, तुम्हारे राजकुमार महाप्रतापी होंगे, वीर होंगे, सुन्दर होंगे। बलीराम (कवि) कह रहे हैं– इस प्रकार बाद में राजा परीक्षित का जन्म होता है और वे उत्तराधिकारी बनते हैं।

कोऊ देखा हमारे शिव जोगी
शिव जोगी रे बड़ा जोगी
कोऊ देखा हमार शिव जोगी
सेता सुपेती मन नहि भावैं
बाबा कमरिया मां है राजी

लोटा कटोरा मन नहि भावैं
बाबा तुमड़िया मां राजी
कोऊ देखा हमारे शिव जोगी

कोई देखो तो हमारे शिव जोगी को, उन्हें श्वेत रंग अच्छा नहीं लगता। वे काला कंबल पसंद करते हैं, उन्हें लोटा, कटोरा आदि बर्तन अच्छे नहीं लगते, वे तो कमण्डल पसंद करते हैं।

धोले चरण रघुबर के केवट, धोले चरण रघुबर के
पानी कठउता लई के केवट, धोले चरण रघुबर के

अरे केवट! रघुवर (राम) के चरणों को धो लो। कठौती (काठ का बर्तन) में पानी भरकर लाओ और राम के चरण धो लो।

हरो तनय की पीरा पवनसुत
शक्तिवान लगे लक्ष्मण के विकल भये रघुबीरा
मूल संजीवन लइके आये, हनुमान अस बीरा
लइके वीरा चले पवनसुत, उतरे सागर तीरा
रामचन्द्र के मुदरी लइके, सीता धरै मन धीरा
पवनसुत हरो तनय की पीरा

हे पवनसुत हनुमान! हमारे कष्ट दूर करो। जब लक्ष्मण को शक्तिबाण लगा, राम विकल हुये तब तुम संजीवनी लेकर आये। तुमने संकल्प लिया और सागर के उस पार राम की अँगूठी सीता को सौंपी जिससे सीता का शोक दूर हुआ।

अस पूछें श्री भगवान
विभीषण तोर लंका गढ़ कैसा
काहेन का तोरा लंका बना है
काहेन लगे केमार
तोर लंका गढ़ कैसा
सोनेन का मोर लंका बना है
चन्दन लगे केमार
तोर लंका गढ़ कैसा ।

भगवान विभीषण से पूछ रहे हैं– विभीषण तुम्हारी लंका कैसी है? तुम्हारी लंका काहे

की बनी है और उसमें काहे के दरवाजे लगे हैं? विभीषण बनाते हैं कि–सोने की हमारी लंका बनी है और चंदन के उसमें दरवाजे लगे हैं।

अरे हां, सखी शिवजी का धनुष कैसे टूटे
पिता बचन गये हार, सखी शिवजी का धनुष कैसे टूटे
देश–देश के भूपति आये, बड़े–बड़े बलवान
धनुष उठाया उठै नहि, फिर निवें होत दिवस अवसान
रावण बाणासुर सब हारे, हार गये भूपाल
छोटे छोटे राम लखन जी, कैसे पइहैं पास
सखी शिवजी का धनुष कैसे टूटे

सीता स्वयंवर का दृश्य–अरे सखी! ये भगवान शंकर का धनुष कैसे टूटेगा? लगता है पिताजी अपने वचन हार गये। देश–देश के भूपति और भूपाल आये, उनसे धनुष उठाये नहीं उठा। दिन का अवसान होता जा रहा है। रावण, बाणासुर सभी हार गये हैं। ये छोटे बालक राम लखन क्या कर पायेंगे?

जल भरैं हिडोल हिडोल रेशम की डोरी
रेशम की डोरी कब नीके लागै,
जब सोने घइलना होय। रेशम की डोरी
सोने घइलना कब नीके लागै,
जब रूपै गोनरिया होय। रेशम की डोरी
रूपै गोनरिया कब नीके लागै,
जब पातर धनियां होय। रेशम की डोरी

नायिका रेशम की डोरी लटकाकर पानी भर रही है। रेशम की डोरी तभी अच्छी लगेगी जब मटकी सोने की हो। सोने की मटकी तब अच्छी लगेगी जब रूप की गोनर हो। रूप की गोनर तब अच्छी लगेगी, जब नायिका दुबली पतली हो।

मूल सजीवन लै आये पवनसुत
मूल सजीवन लै आये
लक्षिमन का लेत जियाये पवनसुत
मूल सजीवन लाये

संजीवनी बूटी लेकर हनुमान जी आ गये हैं और लक्ष्मण की जान बच जायेगी।

सब तारन को आई हो गंगा, सब तारन को आयी।
भागीरथी ले आई हो गंगा, सब तारन को आयी।

सभी को तारने गंगा पृथ्वी पर आयी (अवतरित हुयी) हैं। भगीरथी गंगा को पृथ्वी पर ले आये हैं।

राखो लाज हमारी मुरारी, राखो लाज हमारी।
मुरली के बजबइया मुरारी, राखो लाज हमारी।

हे मुरारी! गिरधारी! मुरली वादक कृष्ण! हमारी लाज रखो।

जइसे तलाये के गोदली, बूड़े उतराय।
ओइसै विदेशी के जियरा, रहि रहि पछिताय।

जिस पर तालाब की घास या शैवाल डूबे- तैरे वैसे ही विदेशी का दिल बार-बार पछताये।

लक्ष्मण के कोमल बानी
परशुराम तूँ ता बड़े अभिमानी

लक्ष्मण की वाणी बहुत कोमल है किन्तु परशुराम तुम तो बहुत अभिमानी हो।

राधा बनी मजिस्ट्रेट
ललिता बनी कोतवाल
सोलह सौ रानी सिपाही
कैदी नंदलाल

राधा मजिस्ट्रेट बनी हैं। ललिता कोतवाल बनी हैं। सोलह सौ रानियाँ सिपाही बनी हैं और नंदलाल कृष्ण कैदी हैं।

होली खेलैं रघुबीरा अवध मां
केखे हाथ मां ढोलक सोहे

केखे हाथ मजीरा
केखे हाथ कनक पिचकारी
को आय खेलें अबीरा । अवध मां..
राम के हाथ मां ढोलक सोहै
लक्ष्मण हाथ मजीरा
भरत के हाथ कनक पिचकारी
सत्रुघन खेलैं अबीरा। अवध मां.........
होली खेलैं रघुबीरा।

रघुवीर अयोध्या में होली खेल रहे हैं। किसके हाथ में ढोलक, किसके हाथ में मंजीरे हैं? किसके हाथ में सोने की पिचकारी और कौन अबीर खेल रहा है? राम के हाथ में ढोलक है, लक्ष्मण मंजीरे लिए हुये हैं। भरत के हाथ में सोने की पिचकारी है और शत्रुघ्न अबीर खेल रहे हैं।

अरे हाँ रोहिनियाँ में अनहद बाजा बजत है
शिव भोले का होत विवाह
रोहिनियां में अनहद बाजा बजत है।

रोहिणी नक्षत्र में अनहद बाजा बज रहा है। शंकर जी का विवाह हो रहा है।

बैसवारा

अरे हाँ सुमिर दुर्गा का मन में लेई
जेहि सुमिरे सिधि होय, सुमिर दुर्गा का
ध्वजा सुपाड़ी हाथ माँ नरियर
मन्दिर का पगु धारे
भीतर से जगदम्बा बोले
जो मांगे सो पावें
सुमिर दुर्गा का।

दुर्गा का स्मरण करो। जो स्मरण करता है उसको सिद्धि होती है। पताका, सुपाड़ी और हाथ में नारियल लेकर मंदिर के अंदर प्रवेश किया तभी भीतर से जगदम्बा बोलीं– जो माँगोंगे, सो मिलेगा।

हरि ये आज बृज सूना दिवस अंधेरे, आज बृज सूना
चहूं दिस से बादल घेरे, आज बृज सूना
गरज घुमड़ चहुं दिसि से बरसे
पवन बहे पुरवाई
दिवस भयावन अति भय लागै
सूरज रहे छुपाई
आज बृज सूना।

आज ब्रज सूना है, दिन में ही अंधेरा छा गया है। चारों ओर से बादल घिरे हैं, आज ब्रज सूना है। गरज-गरजकर घुमड़-घुमड़कर चारों ओर से पानी बरस रहा है। पवन (पुरवाई) बह रही है। दिन बहुत भयानक लग रहा है। सूर्य छुप रहा है। आज ब्रज सूना है।

हरि ये जटायु रथ का निरखत जात
रे जग जननी करत विलाप,
जटायु रथ का निरखत जात
भिक्षा लेने गया निसाचर, देखि जानकी माई
ले भिक्षा निकली जब सीता, रथ पर लीन्ह चढ़ाई
जटायु रथ का निरखत जात
करत विलाप जात जानकी, सरन सरन गोहराई
है कोऊ ऐसन रामादल माँ, हमका लेत छोड़ाई
जटायु रथ का निरखत जात।

जटायू रथ को देख रहा है, जिसमें सीता विलाप कर रही हैं। रावण भिक्षुक का वेश धारणकर भिक्षा माँगने गया। जब सीता भिक्षा लेकर आयीं तो उन्हें रथ पर बैठा लिया। जानकी विलाप करती हुई पुकारती जा रही है कि क्या कोई ऐसा है जो हमें इस राक्षस से छुड़ायेगा?

लेजम

रतनारे हैं नैना जाके सखि रतनारे है नैना जाके
मुनि संग दो बालक काके सखी रतनारे है नैना जाके
रवि शशि कोटि बदन की शोभा, श्याम गोर तन धारे
राम लखन कौशल्या के सुत हैं दसरथ नाम पिता के
रतनारे है नैना जाके।

हे सखि! उनके नैन रत्नों जैसे हैं। मुनि विश्वामित्र के साथ दो बालक किसके हैं? सूर्य तथा हजारों चन्द्रमा सी आभा लिए ये श्याम और गौर वर्ण वाले हैं। राम और लक्ष्मण ये दशरथ और कौशल्या के पुत्र हैं।

लेजम

हरि होइगें द्वारिका वासी

माघ उतर दिन फागुन लागे
झरिगें तरूवर पाती
तुम बिन लालन ऐसे लजत हूँ
जैसे तेल बिन बाती। हरि होइगे...

गउआ छोड़कर चले गये हैं
गऊआ मरै सब प्यासी
कितना पास किहे तुम लालन
हमसे किहे बदमासी
हरि होइगे द्वारिका वासी।

हरि द्वारिका के बाशिंदे हो गये हैं।

माघ का महीना उतरा, फाल्गुन प्रारंभ हुआ। वृक्षों के पत्ते झर गये। हे कृष्ण! मैं तुम्हारे बिना ऐसे हूँ जैसे बिना तेल की बाती। गायों को छोड़कर चले गये हैं, सभी गायें प्यासी मर रही हैं तुमने हमें इतना समीप कर फिर हमसे बदमाशी कर ली है।

उचटा

वश होइया कन्हैया प्यारी से
श्री बृजभान दुलारी से
वश होइया कन्हैया प्यारी से

प्यारी सखी के वश में कन्हैया हो गया। श्री वृषभान दुलारी (राधा) के वश में कन्हैया आ गया है।

लेजम

मैके की रे मैके की दुकनिया
जाऊ भादौं की रतियां
वृन्दावन की कुंज गलिन में
हेरे ना पाऊं डगरिया
चलत-चलत मोरा पांव पिरानो
जियरा होइगा बेहाल
भादौं की रतियां

भाद्रपक्ष की रात्रि में और वृन्दावन की कुञ्ज गलियों में डगर (रास्ता) भी ना पा सकूँ। चलते-चलते पैर दुखने लगे। जिया मेरा बेहाल हो गया भाद्रपद की रात्रि में।

दहका

वृन्दावन की सांकर खोरी
कन्हैया खेलै सखिन संग होरी
काहे के तोरा रंगा बना है , काहेन कै पिचकारी
खेलै सखिन संग होरी
अंतर गुलाब के रंगा बनो है , सोनेन कै पिचकारी
खेलै सखिन संग होरी

वृन्दावन की सँकरी गलियों में कन्हैया अपनी सखियों के साथ होली खेल रहे हैं। इत्र और गुलाब के रंगों द्वारा सोने की पिचकारी से कन्हैया सखियों सहित रंग खेल रहे हैं।

लेजम

चारिऊ भइया करन कलेवा आये

लख्खी घोड़ा लखन लाल का
बाकें चतुर चलाको
उड़ उड़ जाय वायु मण्डल में
पांव धरत नहीं ताको॥ चारिऊ भइया..

नाच नचावत है थिरकावत

करत अनेक तमासे
मृदु मुस्कात बतात परस्पर
पहुँच गये जनमासे
चारिऊ भइया करन कलेवा आये।

चारों भाई कलेवा (नाश्ता) करने आये। (कलेवा शादी के समय एक नेग होता है) लखन भैया का लख्खी घोड़ा बाँका, चतुर और चालाक है, वह वायु में उड़ जाता है जमीन पर पाँव नहीं रखता। उसे नाच नचाते हैं, थिरकते हैं, अनेक तमाशे करते हैं। धीरे-धीरे मुस्कुराते हैं, आपस में बातें करते हैं और जनवास पहुँच जाते हैं।

बुंदेली

अरे हाँ रे कन्हैया को जनम भयो मथुरा जी मां
भदौं की अंधियारी रात
कन्हैया को जनम भयो मथुरा जी मां।

कन्हैया का जन्म हुआ है मथुरा में, भाद्रपद की अँधेरी रात में कन्हैया का जन्म मथुरा में हुआ है।

रीमा का बांका बघेला गुलाब सिंह
चौकस गोली मारै
श्री वेंकट रमण का लड़िका गुलाब सिंह
चौकस गोली मारे।

रीवा का बाँका नरेश गुलाब सिंह बघेल सही निशानें पर गोली मारते हैं, वे व्यंकट रमण सिंह के पुत्र हैं।

रीमा कै तोप गलझारै
सागर हहनाय
पन्ना कै रानी रोबैं
राजा नहि आय

रीवा की तोप आवाज करती है तो सागर तक झनझना जाता है। पन्ना की रानी रो रही है क्योंकि उसका राजा घर पर नहीं है।

जमुना मां ना कूदौ गिरधारी
जमुना मां ना कूदौ गिरधारी
कर जोड़े खडी राधा प्यारी
जमुना मां ना कूदौ गिरधारी
जहां बसै कालिया बड़ भारी
जमुना मां ना कूदौ गिरधारी।

हे गिरधारी! यमुना नदी में मत कूदो। राधा हाथ जोड़कर विनती कर रही है। यमुना में कालिया नाग बसता (रहता) है। अत: यमुना में मत जाओ।

बारी मां फूलै चमेली
अंगना मां गुलाब
सेजा मां फूले कन्हाई
राधा जी के साथ।

बाग में चमेली फूली, आँगन में गुलाब। सेज में खिले (फूले) कृष्ण, राधा जी के साथ।

आजु ललन नहिं बोलैं हमसे
दूध पिये ना खेलै हँसिके
आज ललन नहीं बोलैं हमसे।

आज कन्हैया हमसे बात नहीं कर रहे हैं। ना तो वे दूध पी रहे हैं और ना ही हँस-हँस कर खेल रहे हैं।

बुंदेली

का वरनौं उहि दिन की सोभा
राम औ लछिमन की सोभा
का वरनौ उहि दिन की सोभा

उस दिन, उस क्षण की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। जब हमनें राम और लक्ष्मण के दर्शन किये।

रीवा का बड़ा सम्मेलन हो
आज जुबराज
देखा सभा माँ पधारे ।

रीवा में बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ। जहाँ की सभा में युवराज पधारे हुये हैं।

चौताल

रंग भरे रस रंग भरे लाल कन्हैया रंगा भरे ,

कऊने मात के गर्भ भरे तै
कि कऊने मात के गोद भरे। कन्हैया रंगा भरे ....

मातु देवकी गर्भ भरे तै
कि माता यशोदा के गोद भरे। कन्हैया रंगा भरे....

आधी रात के जनम लियो रे
लगत पहरा सब सोय गये। कन्हैया रंगा भरे ....

लै बसुदेव चले गोकुल का
उगहिं के जमुना चरण गहे। कन्हैया रंगा भरे .....

कन्हैया रंग के रस से सराबोर हैं।

कन्हैया! आप किसके गर्भ से पैदा हुये और किस माता की गोद में तुम खेले? देवकी माँ के गर्भ से पैदा हुये और यशोदा की गोद में खेले हैं। आधी रात को जब जन्म हुआ था तो सभी पहरेदार सो गये। जब पिता वासुदेव लेकर चले तो यमुना ने उछलकर चरण छुये थे।

बैसवारा

हरि ये दिवारे मां का हो उरेहा
दिवारे मां का छबि बरनऊ हो
जहां सीता सहित भगमान दिवारे मां
का छबि बरनऊ हो॥
संगी सखा पूजत हैं निसिदिन
पूजा करत पंडित रे
बैठे पुरानिक बांचय भागवत

कटत जनम का पाप
दिवारे मां का छबि बरनऊ हो

अरे! दीवाल में कौन सी छवि उकेरी गयी है? इसमें सीता और राम की छवि है। जहाँ संगी साथी नित्य पूजा करते हैं। पंडित पूजा करते हैं, पौराणिक भागवत बाँचते (पढ़ते) हैं। सभी के पाप यहाँ कट जाते हैं।

डग्गा

कुसुमानी आँचल फहराये
मिदुलिया पूजैं गयी तै हो
एक ता गोरी अंग से पातर
दूजे बहै बयार
तीजे गोरी झपक के रंग की
उड़ि अंचला फहराय
मिदुलिया पूजैं गयी तै हो।

कुसुम रंग का आँचल लहराते हुये मृदुबानी बोलती पूजा करने गयी हैं। एक तो नायिका पतली दुबली है, दूसरे हवा चल रही है। तीसरे नायिका बहुत गोरी है उसका आँचल उड़-उड़ जाता है।

बृज बासिया हो
खींचो आनय गगरिया
माँ बाप के रहौ दुलारी
अमै दे मोरी रसरिया
कैसे अनाड़ी से पाला पड़ो है
मोसे खींचे गगरिया। बृज बसिया हो

हे बृजवासी! मेरी गागर मत खींचो, हम अपने माँ बाप की दुलारी बेटी हैं। हमारी रस्सी वापस कर दो। हे भगवान! ये किस अनाड़ी से पाला पड़ा है? ये तो मेरी गागर खींच रहा है।

तीन ताला

एक चक्रवीह रच दीन्हा
गुरू द्रोणाचार्य
मारा गया अभिमन्यु
अर्जुन कै लाल । मारा गया अभिमन्यु

गुरू द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह रचा है, जिसमें फँसकर अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हुये हैं।

राई

चुरिया मगाय दैं छोटी छोट
सइयां लरमी कलइंया
कउने सहरबा के हरी हरी चुरियाँ
कऊने सहरबा के गोरी बइँया। चुरिया मगाय दैं
पन्ना सहरबा के हरि हरि चुरियाँ
सतना सहरबा के गौरी बहियाँ। चुरिया मगाय दैं।

प्रीतम! मेरी नरम कलाइयों के लिए छोटी-छोटी चूड़ियाँ मँगवा दो। किस शहर की हरी चूड़ियाँ है और किस शहर की नरम कलाइयाँ हैं? पन्ना शहर की हरी चूड़ियाँ और सतना शहर की नरम कलाइयाँ हैं।

बुंदेली

लहर लहर लहराये तिरंगा
लहर लहर लहराये
हमरे भारत देश तिरंगा
लहर लहर लहराये।

हमारे देश का ध्वज तिरंगा लहर-लहर लहरा रहा है।

दहका

ये बंसी कौन बजायी सखी
ये बंसी कौन बजायी

जमुना तट धूम मचायी सखी
ये बंसी कौन बजायी
गोपिन संग रास रचाई सखी
ये बंसी कौन बजायी
मारी सोवत नींद उड़ाई सखी
ये बंसी कौन बजायी ।

हे सखि! ये बाँसुरी किसने बजायी? यमुना के किनारे खूब धूम मची है। गोपियों के साथ रास रचायी है। मेरी सोते से नींद उड़ा दी है। ये बाँसुरी किसने बजायी है?

बुंदेली

प्रथम गणेश मनाऊँ रे पहले
प्रथम गणेश मनाऊँ
शारद शीस नवाऊं रे पहले
शारद शीस नवाऊं।

सबसे पहले गणेश जी का आवाहन कर लूँ। उसके पश्चात् शारदा जी को शीश नवाऊँ।

मान सरोवर से आये हंसा रे
मान सरोवर से आये
मोतिन कै लाये हार हंसा रे
मान सरोवर से आये ।

ये हंस मानसरोबर से आये हैं। ये हंस मानसरोवर से मोतियों का हार लाये हैं।

श्याम तोरी मुरली ऐसी बली,
राधा ठाढ़ी ठगी री ठगी।
धन अमरइया लहर जमुना जल,
छेड़ै कन्हैया गली रे गली।
फागुन मास गगन रस बरसै,
भीजै चुनरिया नयी रे नयी।

अखियन रंग गुलाल भरे है,
सुधि ना संवरिया रही रे रही।
उड़त अबीर लाल भई धरती,
माथे की बिंदिया झरी रे झरी।
श्याम तोरी मुरली ऐसी बली॥

हे श्याम! तुम्हारी मुरली सुनकर राधा ठगी सी रह गयीं। घनी अमरइया (आम का बाग) और बहता हुआ यमुना का जल है। कन्हैया गली-गली बाँसुरी के स्वर छेड़ रहे हैं। फाल्गुन माह में आसमान से रंग बरसे, जिससे नयी चूनर भींग रही है। आँखों में गुलाबी रंग है, अपनी सुध नहीं रह गयी है। अबीर उड़ा तो बादल लाल हो गये और माथे की बिंदिया कहीं गिर गयी है।

दहका

होरी खेलत रघुबीरा अवध मां
होरी खेलत रघुबीरा।
हिलमिल फाग परस्पर खेलत,
कर कंचन पिचकारी चलावत। होरी खेलत रघुबीरा......
जनक नार डारे सिर घूंघट,
रंग गुलाल भरे अखियाँ। होरी खेलत रघुबीरा.......

अयोध्या में रघुबीर होली खेल रहे हैं। सभी लोग आपस में मिलकर फाग खेल रहे हैं। हाथों से सोने की पिचकारी चला रहे हैं। जनक की पत्नी सिर पर घूँघट डाले हुये हैं। उनकी आँखों में रंग और गुलाल भरे हुये हैं।

जी भर के रंगा डारो सजन पै,
जी भर के रंगा डारो।
चूनर सर केसरिया रंग की,
धातक घुंघटा भारी । जी भर के रंगा डारो.......
सीना कस अंगिया रेशम की,
लंहगा सोलह कली को सिया री।
जी भर के रंगा डारो.........
माथे बेंदी कानन झुमका
आँखन कजरा मतवारी।
जी भर के रंगा डारो सजन पै।

साजन के ऊपर दिल भर कर रंग डालो। सर पर केसर रंग की चूनर और घूँघट किये हुये छाती पर रेशम की अंगिया, सोलह कली का लहँगा सिला हुआ है। माथे पर बेंदी, कानों में झुमका, आँखों में काजल लगाकर साजन के ऊपर खूब रंग डालो।

दहका

पिया मारन चले काली कोयलिया।
काली कोयलिया ना मारो सइयाँ, जो लेत राम को नाम।
मारय का चाही उन छैलन का, जो हरै परायी नार।
पिया मारन चले काली कोयलिया।
हरे सुआ ना मारो सइयाँ, जो लेत राम को नाम।
मारय का चाही उन छलियन को, जे करत देस बदनाम।
पिया मारन चले काली कोयलिया।

पिया काली कोयल का शिकार करने जा रहे हैं। पिया काली कोयल को मत मारो, वो तो राम का नाम लेती है। मारना तो उन युवकों को जो दूसरों की स्त्री का हरण करते हैं। हरे तोतो (तोता) को मत मारो, वो राम का नाम लेते हैं। मारना ही है तो उन्हें मारो जो देश को बदनाम करते हैं।

मो पर रंगा ना डारो संवरिया,
मो पर रंगा ना डारो।
मै तो वैसई अंतर से भीगी पिया,
मो पर रंगा ना डारो।
भर पिचकारी मोपे सन्मुख मारी,
भीग गयी तन सारी पिया,
मो पर रंगा ना डारो।
जों सुन पइहें बलमा हमारे,
आवैं न देहै बखरिया पिया।
मो पर रंगा ना डारो।

मुझ पर रंग मत डालो, मैं तो वैसे भी अंदर से भीगी हुई हूँ। पिचकारी भर कर मुझे मारी है जिससे मेरी साड़ी भींग गयी है। अगर मेरे साजन सुनेंगे तो मुझे घर नहीं आने देंगे।

टूटै ना धनुहियाँ, मारी गुइयाँ
टूटै ना धनुइयाँ गुइयाँ
रामा लखन की लड़कइयाँ
टूटै ना धनुइयाँ गुइयाँ

राम लखन इतने छोटे-छोटे हैं उनसे धनुष टूटना असंभव सा है।

हियाँ ना बरस कारी बदरिया रे,
हियाँ ना बरस कारी बदरिया।
भीजै पिया की सेज बदरिया,
हियाँ ना बरस कारी बदरिया।

हे काली बदली! (काले बादल) यहाँ मत बरसो। मेरे पिया की सेज (बिछौना) भीग जायेगी।

बजत पैजना चलो बृज में,
एड़िया धरत छमको बृज में।
बजत पैजना चलो बृज में

पैरों में पैजनियाँ बज रही है, एड़ी रखते ही छम-छम बज रही है पैजनियां। हे सखि! चलो ब्रज चलें।

चला हिल मिल के खेली फाग हो यारो
या देयि मिली न दुबारा।

मित्रों! चलों परस्पर मिलकर होली खेलते हैं। यह देह (तन) दोबारा नहीं मिलेगा।

बेसरिया अरझी केस रे
करउटा लइले बालम।

मेरी नथ बालों में उलझ गयी है। हे पिया! आप करवट बदल लीजिये।

जय बोलो विजय बजरंगी की,
राम लखन सिय संगी की
जय बोलो विजय बजरंगी की।

बजरंगी हनुमान की जय बोलो। जो राम सिया और लखन के साथ रहने वाले हैं।

चले आवैं श्याम मोहन माला
माथे मुकुट काने बाला।
श्यामलिया यार हमरा सखी
वो काली कमलिया बाला ।

श्याम (कृष्ण) चले आ रहे हैं। उनके माथे पर मुकुट, कानों में बाला है। हे सखी! वो काली कमली वाला श्याम हमारा मित्र है।

दहका

मुरली बजाय बजाय अरे
कोऊ टेरत राधे राधे
राधा श्याम की जोड़ी निराली
जैसे जीवन आधे आधे
मुरली बजाय बजाय अरे
कोऊ टेरत राधे राधे

मुरली बजा-बजाकर कोई राधा को पुकार रहा है। राधा और श्याम की जोड़ी ऐसी जैसा आधा-आधा जीवन।

करत है रास सारी बृज मां
राधे और गिरधारी बृज मां
करत रास सारी बृज मां

राधा और गिरधारी दोनों मिलकर सारे ब्रज में रास करते रहते हैं।

त्रिताल

ललिता ऐसी बंसी बाजै
हमार जिया कइसे रहैं
मोहन मुरली वाला
भजु मन राधे श्याम।

हे ललिता! ऐसी बाँसुरी बज रही है कि हमारा हृदय विह्वल है। ये मोहन मुरली वाले की चाल है। हे मन! राधे श्याम का भजन करो।

बुंदेली

चरन बसंती के आने लगे
हरे पेड़ पियराने लगे।

बसंत ऋतु के चरण पड़ गये हैं। हरे-हरे पेड़ पौधे पीले पड़ने लगे हैं।

तीनताल

मनमोहन लाल कन्हैया
बलैंया लेबै तुम्हार।
कबै अइहैं मधुबन मां
फगुआ के बहार।

मेरे मनमोहन कन्हैया फागुन की बहार आ गयी है। तुम कब मधुबन में आओगे? आओ हम तुम्हें प्यार करना चाहते हैं।

बुन्देली

मैं न खेलूं ऐसी होरी अरे कान्हा,
मैं ना खेलूं ऐसी होरी लाल।
मोरी सारी अनारी भिगोयी कान्हा,
मैं ना खेलूं ऐसी होरी लाल।

मैं ऐसी होली नहीं खेलूँगी कान्हा। मेरी साड़ी तुम अनाड़ी ने भिगो दी है।

दहका

दह कीचा मचा गये कान्हा दही
दह कीचा मचा गये कान्हा
बड़े देवरा हो मोरा लाल खेलाओ
पानी ले आउँ नयी झिरिया अरे कान्हा
दह कीचा मचा गये कान्हा.......

कीचड़ मचा गया कन्हैया। बड़े देवर तुम मेरे पुत्र को संभालो। मैं नयी झिरियाँ (झिर) से पानी ले आऊँ।

बृन्दावन की साँकर खोरी
सखियन का मेला पड़ा
मोरा कन्हैया अकेला
संग खेलैं चली। मोरा कन्हैया अकेला...

वृन्दावन की संकरी गलियों में ढेर सारी सखियों के बीच में अकेला कन्हैया होली खेल रहा है।

चला चली अटरिया भागा पिया,
बरसैं लागे कारे बादर।
बरसैं काले बादर पिया,
बरसैं लागे कारे बादर।

हे पिया! काले बादल बरसने लगे हैं। चलो भाग कर अटारी में चलते हैं।

मैं रात जगी मैं तो रात जगी
पनियाँ भरत नींद आवै
पनियाँ भरत नींद आवै पिया
पनिया तूँ भरा, पनिया भरत नींद आवै ॥

मैं कल पूरी रात जागी हूँ। अत: पानी भरते हुये मुझे नींद आ रही है। हे पिया! पानी तुम भरो, मुझे नींद आ रही है।

हीरा के जड़ाऊ हार साजन लई देते
लई देते हो लेवाय देते हीरा के जड़ाऊ हार
कौने सहर माहीं हीरा बिकत है,
कौने जड़ाऊ हार। सजन लई देते
पन्ना सहर माँ हीरा बिकत है,
रीवा जड़ाऊं हार, सजन लई देते ....
रीवाँ सहर मां होरी मची है,
आये देखन सब लोग।
होरी खेलै एक साथ,
सजन लई देते।
हीरा के जड़ाऊ हार। सजन लई देते

हे पिया! मुझे हीरों से जड़ा हुआ हार खरीद दीजिये। किस शहर में हीरा मिलता है और कहाँ जड़ाऊ हार बिकता है? पन्ना शहर में हीरा बिकता है और रीवा शहर में जड़ाऊ हार। रीवा शहर में तो होली मची हुयी है, सब लोग देखने आये हैं सब लोग होली खेल रहे हैं। ऐसे में तुम्हें मै जड़ाऊ हार कैसे खरीदूँ?

बारहमासी

कौन हरै मोर पीरा श्याम बिन,
कौन हरै मोर पीरा .....
लागत अषाढ़ झिमिक जल बरसै,
सावन गरु गम्भीरा।
भादौं मास झड़ी झड़ बरसै
काँपत मोर सरीरा। श्याम बिन
कौन हरै मोर पीरा।
लगत कुंआर शरद रितु आयी,
कातिक मस्त महीना। श्याम बिन
अगहन बाद पूस रितु आयी
थर थर काँपे सरीरा। श्याम बिन कौन हरै मोर पीरा।

मेरी पीड़ा कौन हरे, मेरा दुख कौन बाँटे? श्याम बिना अषाढ़ के प्रारंभ में ही रिमझिम पानी बरसता है और सावन में गंभीर शान्त, भाद्रपद में पानी की झड़ी लगती है जिससे हमारा

शरीर काँपने लगता है। क्वाँर मास के प्रारंभ होते ही शरद का आगमन होता है। कार्तिक में मस्ती छाती है, अगहन के पश्चात् पौष ऋतु आये जिसमें शरीर थर-थर काँपता है।

काले घोड़ चितकाबर हो
पतले असवार
देखयं ना पाऊं नजर भर
घुँघटा बैरी राम
देखयँ ना पाऊं नजर भर हो।

काले चितकबरे घोड़े पर, दुबले पतले सवार हैं। घूँघट की वजह से मैं उन्हें नजर भर कर देख भी नहीं पायी।

सखी मैं ब्याहौं नहीं बर बूढ़ो हैं
मोरी गिरिजा है सुकुमार
सखी मैं ब्याहौं नहीं बर बूढ़ो हैं

हे सखी! मैं अपनी पुत्री गिरिजा (पार्वती) की शादी नहीं करूँगी। क्योंकि उसका होने वाला पति (शंकर) बूढ़ा है।

डग्गा

देख सखिन कै भीड़ जहाँ, भीतर गये न श्याम।
दै उछलइया द्वार से, लौट चले घनश्याम।
पुतरिया खेलैं ना पावैं, खेलैं ना पावैं हो।
ले गयो नन्द के लाल, पुतरिया खेलैं ना पावैं हो॥

साखियों की भीड़ देखकर श्याम भीतर ही नहीं गये और बचकर उछलकर वापस चले। गये वो मेरी गुड़िया ले गये, मैं गुड़िया कैसे खेलूँ?

दादरा

सिर बाँधे मुकुट खेलैं होरी।
पहली होरी गंगा जी में खेली,

गंगा जमुना की है जोड़ी,
सिर बाँधे मुकुट...
दूजी होरी गया जी में खेली,
गया गजाधर की है जोड़ी।
सिर बाँधे मुकुट.....
तिसरी होरी काशी जी मे खेली,
काशी बिसेसर की है जोड़ी।
सिर बाँधे मुकुट खेलैं होरी।

सिर पर मुकुट पहनकर होली खेल रहे हैं। पहली होली गंगा में खेली जहाँ गंगा–यमुना की जोड़ी है। दूसरी होली गया में खेली, जहाँ गया– गजाधर की जोड़ी है। तीसरी होली काशी में खेली, जहाँ काशी–विश्वेश्वर की जोड़ी है।

बेलबरिया

सिया रामै भजन कर लो री
को है रे पहिने पीत पीताम्बर
महादेव है पहिने पीत पीताम्बर
गौरा पहिने है रंग चुनरी
को पहिने है रंग चुनरी
सिया रामै भजन कर लो री
को तोरे बाँचय कथा भागवत
कऊने तीरथ मां लट छोरी
ब्रम्हा बाचे कथा भागवत
प्रयाग राज मां लट छोरी
सिया रामै भजन कर लो री

सीता राम का भजन कर लो। कौन पीला पीताम्बर पहने है और कौन रंगीन चुनरी? शंकर पीला वस्त्र पहने हैं और पार्वती रंगीन चुनरी। कौन तुम्हारे यहाँ भावगत का वाचन करता है और तुमने केश कहाँ छुड़ाये? ब्रह्मा भागवत वाचन कर रहे हैं और प्रयाग में हमने केश छुड़ाये हैं।

बही जाय जल धारा अरे नदिया
बही जाय जल धारा
जैसे सती चिता पर बैठीं

पति का वचन न टारा
अरे नदिया बही जाय जलधारा

नदी की जलधारा बहती चली जा रही है। जिस प्रकार सती चिता पर बैठ गयी। उन्होंने अपने पति को दिया हुआ वचन भुलाया नहीं।

कंकड़ गड़ गड़ जाय , राम चले जब बन को।
संग भइया और नार , राम चले जब बन को ॥

राम वन को जा रहे हैं। उनके पैरों में कंकड़ बार-बार गड़ रहे हैं। उनके साथ उनके भाई और स्त्री (सीता) भी जा रहे हैं।

बुन्देली

मथुरा से एक गुजरिया चली आवै
मथुरा से एक गुजरिया ......
सिर पर धरे मटुकिया चली आवै
मथुरा से एक गुजरिया ......
ओढ़े कुसुम रंग साड़ी चली आवै
मथुरा से एक गुजरिया ......

मथुरा से एक लड़की चली आ रही है, अपने सिर पर मटकी रखे हुए कुसुम रंग की साड़ी पहनकर एक युवती चली आ रही है।

त्रिताला

गोदी में लेके लखन
पूछैं भगवान।
भैया लखन उठ बोलो
कहाँ लागे हैं बान॥

लक्ष्मण को गोद में लिए राम पूछ रहे हैं। भैया लखन उठो, तुम्हें कहाँ शक्ति बाण लगा है?

डग्गा

तू काहे जादू डारे श्यामलिया ,तू काहे जादू डारे।
काहे मोरे अकेले निया मा,
लकड़ी जरि कोयला भयी, कोयला जल भयो राख।
मैं पापिन ऐसी जली, कोयला भयी न राख।
श्यामलिया तू काहे जादू डारे..

अरे श्याम! तूने मुझ अकेली पर जादू क्यों कर रखा है? लकड़ी जलकर कोयला होती है, कोयला जलकर राख होता है। मैं पापिन ऐसी जली कि न कोयला हुई न राख।

बैसवारा

हरि ये गुजरिया ओरहन हाँ हाँ
गुजरिया ओरहन लई के आयी
मोरो लाल पलंग मां सोवैं
नाहक दोष लगायी।
गुजरिया ओरहन लई के आयी।

अरे ओ युवती! तू मेरे कान्हा की शिकायत लेकर मेरे पास आयी हो। मेरा लाल (पुत्र) पलंग पर सो रहा है और तुम शिकायत लेकर आयी हो। तुम नाहक (बेकार) ही दोष लगाती हो।

लेजम

बही जाय जलधारा नदिया , बही जाय जलधारा।
आगे-आगे राम चलत हैं, पीछे लक्षमन भाई।
उनके बीच माँ चलत जानकी, सोभा बरन न जाई।
बही जाय जलधारा ....
रिमझिम रिमझिम मेघा बरसे , पवन बहे पुरवाई।
कौने वृक्ष तर भींजत होइहैं, राम लखन दोऊ भाई।
बही जाय जल धारा नदिया ,बही जाय जलधारा।

नदिया की जलधार बही जा रही है। आगे राम, बीच में सीता और पीछे लक्ष्मण चले जा

रहे हैं। रिमझिम-रिमझिम मेघ बरस रहे हैं। पवन पूर्व से चल रही है। किस वृक्ष के नीचे राम लखन और सीता भीग रहे होंगे?

कबै अइहैं मधुबन से कन्हइया,
कबै अइहैं मधुबन से लाल।
काली धुमई घोरी रागी
लै लै नाव बोलामै कन्हइया का।
कबै अइहैं मधुबन से लाल

हे श्याम! मधुबन से कब आओगे? तुम्हारी गायें (काली, धौरी, रागी-नाम की) तुम्हें याद कर तुम्हें पुकारती रहती हैं।

दादरा

भय आँगन भीर जनक के,
सब सखियाँ करै तैयारी।
भय आँगन भीर.......
रात तुरत सब सजी बराती,
लागे झरोखर परम सुन्दरी,
अवधै अवध बिहारी। जनक के भय आँगन मां भीर
सब सखी मिल कर एक मत ठानी
देय लाल का गारी
ये हो लाल कंकन नहीं टूटै
हार देत महतारी
इतना सुनकर बोले जनक जी
वह सकुचावहि नारी
जे मेरा रे धनुग्रह तोरी
कंकन वही बिजारी । जनक के भय आँगन मां भीर

जनक के आँगन में सभी सखियाँ इकट्ठी हुईं। रात को राम की बारात सजी। गज (हाथी) पर राम बैठे। यह शोभा (दृश्य) बहुत अच्छी लग रही है। सब सखियों ने तय किया कि राम को गाली देंगी। हे राम! तुमसे कंकन नहीं छूट रहा है, अपनी माँ को बुलाओ। यह सब सुनकर जनक बोले कि- अरे लड़कियों! थोड़ा संकोच तो करो, जिसने धनुष तोड़ा है वह क्या कंकन नहीं तोड़ सकता?

बारहमासी

हो नौकर ननदीवा बलम के
हो नौकर ननदीवा लाल ......
अषाढ़ मास रितु बदरी झमकै
सावन बरसे महीना
भादौ मास रितु बिजुरी चमकै
जिया परै ना धीरा। हो नौकर ननदीवा लाल ......
कुंवर मास बरसा औलानी
कातिक सरद महीना
अगहन मां कुछु जाड़ होत है
थर-थर काँपै सरीरा। हो नौकर ननदीवा लाल.......
पूष माह पुसऊल होई
माघै मकर महीना
फागुन मां सखियाँ फगुआ खेलैं
कैसे के डालौं अबीरा। हो नौकर ननदीवा लाल...
चैत मास बन टेसुआ फूलै
बैसाखे धूप महीना
जेठ मास सइयाँ नहि आये
पूज गे बारह महीना॥ हो नौकर......

अरे ननद! मैं तो अपने बालम की नौकर हूँ। असाढ़ माह में बादल हलके से बरसें और सावन में जोर से। भाद्रपद माह में बिजली कड़कती है जिससे मन की अधीरता बढ़ती है। क्वाँर माह में बारिश कम होती है, कार्तिक से शरद प्रारंभ होता है। अगहन माह में कुछ ठंड होती है और शरीर काँपने लगता है। पौष माह में त्यौहार होता है। माघ में मकर संक्रांति होती है। फागुन माह में सखियाँ होली खेलती है, हम कैसे उन पर गुलाल डालें? चैत्र माह में टेसू खिलता है, बैसाख में धूप तेजी होती है। ज्येष्ठ मास तक मेरे साजन नहीं आये, इस प्रकार बारह माह गुजर गये हैं।

नारदी

गोकुल बज्र किवाड़ खुले
बसुदेव की बेड़ी कटी
अरे पियरी पट वाले
ताही से प्रीत लगी।

जब कृष्ण जी पैदा हुये थे तब आधी रात को गोकुल और ब्रज के दरवाजे अपने आप खुल गये। वासुदेव की बेड़ियाँ स्वयं खुल (कट) गयी थीं। ओ पीले वस्त्र वाले कृष्ण! हम तुमसे प्रीत करती हैं।

प्रहलादहिं लागि रही रहना
हिरणाकश उग्र पिता से
अरे रघुनन्दन प्यारो हो
रखबारो है हमरो।

भक्त प्रहलाद को उग्र पिता हिरण्याकश्यप से बचाने के लिए प्रार्थना करते हुए कहते हैं- हे रघुनन्दन! प्यारे तुम ही उसके रखवाले हो।

मारग रोकत नन्द को लाला
ठाड़ी ओट लजाय
अरे बृजभामा नाकी जाय।

नन्द के पुत्र कृष्ण मार्ग पर खड़े होकर मार्ग रोक रहे हैं। जिससे ब्रज की लड़की ओट में खड़े होकर शर्मा रही है और अचानक छलांग लगाकर भाग खड़ी होती है।

धीरे से पाँव धरे पलंगा
मारी जागत जेठ जेठानी
सइयां सेज चलो न हो
मोरी अखियाँ अलसानी

हे पिया! धीरे से पलंग पर पैर रखना। मेरे ज्येष्ठ और जेठानी जाग रहे हैं। चलो पिया अब सेज पर मुझे तो नींद आ रही है।

खाये लौंग गरमी होइगै
बालम आजु वायु डोलावैं
गोरी आजु रिसानी
पलंगा नहीं आवै

नायिका ने लौंग खा ली है जिससे उसे गरमी लग रही है। नायक पंखा झल रहा है, नायिका नायक से नाराज है, शयन के लिए पलंग पर नहीं आ रही है, नायक इंतजार कर रहा है।

राई

ऊंचा सहर पुट पटना
हो जहँ लागै बाजार
लइदे बलम रस बिंदिया
हो चलबै तोरे साथ ....

पटना एक बड़ा शहर है, जहाँ बाजार (मेला) लगा है। हे साजन! मुझे बिंदिया खरीदवा दो, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।

पारथ के रथ हेतु, मुरारी जोति गहे
भीष्म के प्रण हेतु, सुदर्शन चक्र गहे

अर्जुन का रथ हाँकने के लिए कृष्ण सारथी बने हैं। भीष्म पितामह के प्रण की रक्षा करने हेतु सुदर्शन चक्र हाथ में उठा लिए हैं।

दहका

कौरव सभा के बीच
द्रोपदी की लाज रखी
अब है मेरी बारी
श्याम कहँ देरी करी

कौरव सभा में तुमने द्रोपदी की लाज बचायी थी। हे कृष्ण! अब मेरी बारी है पर तुम ना जाने कहाँ हो, कितनी देर लगा रहे हो, आने में?

अनुजन सहित सखा सब लीन्हे,
रोके गइल कर नाका।
सूर श्याम कह जोर साँवरो,
ऐसो है छैला बाँका।

मोपे रंगा ना डारो साँवरिया,
आयी पिया की चोरी।

अपने भइया और साथियों के साथ श्याम राह रोक रहे हैं। सूरदास के अनुसार वे ऐसे बाँके छैला हैं। हे साँवरे! मुझ पर रंग मत डालो, मैं अपने पिया से बिना बताये यहाँ आयी हूँ।

बुंदेली

बाँहे का बाजूबन्द लै आये
लई आये हैं कँगना
मोरा घर आये सजना

आज मेरे साजन घर आये हैं वो मेरे लिए बाहों का बाजूबन्द और हाथों के लिए कंगन ले आये हैं।

उड़ि जा काग तोहि मारब हो
कब अइहैं पिया मोरा
गये परदेस बलमा
परदेस गये मोरो बलमा
कछु खोज खबर नाही
परदेस गये मोरे बलमा

हे कौअे (काग) ! तू उड़ जा, नहीं तो मैं तुझे मारूँगी। पता नहीं मेरे पिया कब आयेंगे, वे परदेश गये हैं उनका कुछ पता नहीं है।

दोनों भउजन बीच रसे कजरा
चितवै मुस्कान छबीली
सोहे तन गोरे
हो चुनरी चमकीली

दोनों भौहों के बीच काजल लगाकर गोरी मुस्कुरा रही है। गोरे तन पर चमकीली चुनरी धारण कर गोरी जा रही है।

भा भिनसाल चम्पाकली कुम्हलानी
उठ जा मोरे बालम सारी रैन सिरानी

प्रात: हुयी है, चम्पे की कलियाँ कुम्हला गयी हैं। मेरे साजन अब उठ जाओ, पूरी रात बीत चुकी है।

बैसवारा

हरी ये लखन के लागी, शक्ती बान लखन के लागी
नही आये वीर हनुमान, लखन के लागी शक्तीबान
शक्तिबान लगो लछिमन के, राम धरै ना धीरा
उठो हमारे लछिमन भइया, विपत मिटा मन हारा
लखन के लागी शक्तिबान, लखन के लागी.......
बारह बरिष अन्न जल त्यागो, तब नहि विफल सरीरा
उठो हमारे लछिमन भैया, गहो और तीरा
रामा भेजिन हनुमान का, बैद्य सुखेन बुलाये।
बैद्य सुखेन का सोवत पाके, घरैं सहित लै आये।
रामा भेजिन हनुमान का, मूल संजीवन लावैं का
मूल संजीवन हेरे ना पाये, पर्वत लाये उठाये
लखन के लागी शक्तिबान, लखन के लागी.......

लक्ष्मण को शक्ति बाण लगा, राम हनुमान की प्रतीक्षा कर रहे हैं। राम अधीर होकर कहते हैं– हे लक्ष्मण! उठो, तुम विपत्तियों को मिटाने वाले हो। बारह वर्ष तुमने अन्न जल त्यागा है तब भी तुम्हारा शरीर ऐसा विकल नहीं हुआ। हे लक्ष्मण! उठो और धनुष बाण उठाओ।

राम ने हनुमान को भेजा सुखेन वैद्य को बुलाने के लिए। हनुमान वैद्य सुखेन को सोता पाकर पूरा घर ही उठा लाये। राम ने हनुमान को संजीवनी लाने हेतु भेजा, संजीवनी न खोज पाये तो हनुमान पूरा पर्वत ही उठा लाये।

दहका

फूलन से कुम्हलानी सेजरिया
पूरब दिसा ना जा मोरे स्वामी, पूरब का लागन पानी।
पानी पिये तू मरि जइहे, हम धना होवै विरानी।
पश्चिम दिसा ना जा मोरे स्वामी , पश्चिम की नार सयानी।
रात सोवावैं रंग महल माँ, भोर भरावैं पानी।
दखिन दिसा ना जा मोरे स्वामी, दखिन द्वारिका धामी।

जाय द्वारिका श्राप लै अइहै, पितर ना पावै पानी।
उत्तर दिसा ना जा मोरे स्वामी, उत्तर अयोध्या धामी।
डलियन डलियन फूल चढ़त है, लोटियन लोटियन पानी।
फूलन से कुम्हलानी सेजरिया

फूलों की सेज कुम्हलाने लगी है। हे स्वामी! तुम पूर्व दिशा को मत जाओ। पूर्व का पानी अच्छा नहीं है। पानी पीकर तुम मर जाओगे तो हम अकेली रह जायेंगी। पश्चिम को मत जाओ, पश्चिम की स्त्रियाँ चतुर हैं, वे रात में अपने शयन कक्ष में सुलाती हैं और सुबह पानी भरवाती हैं। दक्षिण दिशा को मत जाओ वहाँ द्वारिका धाम है, द्वारिका में अगर श्राप मिल जायेगा तो पितरों को भी पानी नहीं मिलेगा। उत्तर दिशा की ओर मत जाओ, वहाँ अयोध्या धाम है। अयोध्या में टोकनी भर फूल और लोटे-लोटे पानी चढ़ता है।

बुंदेली

अरे हाँ काम ने जीते सकल प्रण धारों को
फिर शिव से खाई हार। काम ने जीते सकल प्रण धारों को
शिव ने खायी हार तपस्या कीन्हें भारी
उमा भक्त की डुली आसन सुर न्यारी
कामदेव को बल दियो, देवो कला सम्हार
आसन संकर के डूले , फिर करतूत तुम्हार॥
काम ने जीते ....
सब करतूत तुम्हार, दई माया फैलायी
मच गयो अन्धाधुन्ध करी ऐसी चतुरायी
तरुवर से तरुवर लगे, जल जल से करते प्यार
सुर नर मुनि व्याकुल भये, शंकर से गलै ना दाल॥ काम ने जीते ..
शंकर से चली ना चाल, काम ने धनुष चढ़ाये
चले फूल के बान, सम्भु के सिर पर जाये
संकर की दृष्टि खुली, बड़ी गुस्सा त्रिपुरार
नैन तीसरा खोल दिये, ज्वाला बढ़ी अपार। काम ने जीते ....

वासना के देव कामदेव ने सभी जीवों को अपने वश में कर लिया। फिर भी शिव से हार खायी। कामदेव तपस्या कर रहे शंकर को विघ्न डालने का प्रयास करता है किन्तु संभव नहीं हो पाता। सभी प्रकार के छल किये, माया फैलायी, सकल भूमि में प्रेम और वासना की धुंध छा

गयी। पौधे से पौधे, यहाँ तक कि जल से जल प्रेम वासना में डूब गये। कामदेव ने धनुष से शंकर पर फूलों की बरसा की। शंकर के नेत्र खुले, उन्हें बहुत क्रोध हुआ और तीसरा नेत्र खोल दिया, जिससे कामदेव ज्वाला में समा गये।

लेजम

जमुना तट कान्हा ऐ हो, संगै सखा लिये गोपिन होरी खेलैं
भर पिचकारी मोरे सनमुख मारी, चोली देत भिगायी
अंगिया रंग गयी ये हो। संगै सखा....
लाल गुलाल मले मुख ऊपर, करत ठिठोली ए हो
चोली भिगायी लहंगा भिगाये, बहियाँ पकरी ए हो। संगे सखा.....
ढोलक बाजे,मजीरा बाजे मुरली बाजे ये हो। संगे सखा.....संगै सखा

यमुना तट पर कान्हा अपने संगी–साथियों और गोपियों के साथ होली खेल रहे हैं। पिचकारी भरकर उन्होंने मुझपर सामने से चला दी, मेरी चोली और अँगिया भिगो दी। लाल गुलाल मेरे मुँह पर मल दिया, ठिठौली कर रहे हैं। मेरी चोली, लहँगा भिगो दिया। मेरी बाँह पकड़कर ठिठौली की। ढोल, मजीरा और मुरली के स्वर उभर रहे हैं।

झूमर

एक सामर दुइ गोरियाँ
भला तीनौं ना पनियाँ जाँय
अम्माँ झूमरिया
एक ता ठाढ़ी कुँआ जगत मां
दुई छिटिक करौंदा खांय। अम्मा झूमरिया ....
को भला तोरो काँटा काढ़ा
कउन नयन रस पाये। अम्मा झूमरिया..

एक साँवली और दो गोरे वर्ण की सहेलियाँ तीनों पानी भरने को आमों की अमरइयाँ जा रही हैं। एक सखी कुएँ की जगत में खड़ी है और दो सखियाँ दूर जाकर करौंदा खा रही हैं जिसमें से एक ने दूसरे से पूछा। सखी! किसने तुम्हारा काँटा निकाला और तुम्हारे नयनों के रस का पान किया?

तीन ताल

अब तो समय नकचाना, ना बहाना करो
दस अँगुरी दस मुंदरी सोहै, छल्ला छाय उठाना
कड़ा के ऊपर छड़ा विराजै, लै दर्पन मुस्काना
ना बहाना करो ....
या संसार कागज के पुड़िया, बूँद परे घुर जाना।
सीत बात कफ घेर लियो है, यम का पड़ा निसाना।
ना बहाना करो .....

अब समय नजदीक आ रहा है, बहाना मत करो। दस अँगुलियों में दस अँगूठियाँ हैं। कंगन पर कंगन (बहुत सारे) पहने हो, दर्पण लेकर मुस्कुरा रहे हो। पर अब समय नजदीक है। यह संसार कागज की पुड़िया है, जरा सा पानी पड़ने पर घुल जायेगी। शीत, वात, कफ ने घेर लिया है, अब यम के आने का समय है।

चौताल

आज कन्हैया के जनम भये
केखे भये हैं कऊन खेलावैं, कउन माई के गोद गये
देवकी के भये, बसुदेव खेलावैं, माई यशोदा के गोद गये
जाय के पहुँचे नन्द राय घर गोपी ग्वाल के भीर भये
आज कन्हैया के जनम भये ....

आज कन्हैया का जन्म हुआ है। किसकी कोख में पैदा हुये और किसकी गोद में खेले? देवकी की कोख से पैदा हुये और यशोदा की गोद में खेले हैं।

डग्गा

बृज में हरि होरी मचायी, आज बृज में हरि होरी मचायी
बाजत तबल मृदंग झाँझ,डफ, मंजीरा, सहनाई
उड़त गुलाल लाल भये बादल, रहैं सकल बृज छाई
उत से निकली नवल राधिका, इत से कुँवर कन्हाई
हिल मिल फाग परस्पर खेलैं, सोभा बरनि न जाई

हरि ने ब्रज में होली मचायी है। तबला, मृदंग, झाँझ, डफ, शहनायी बज रहे हैं। गुलाल के

उड़ने से आसमान का रंग लाल हो गया है। उधर से राधा आयीं इधर से कृष्ण जी। दोनों परस्पर होली खेल रहे हैं, इस दृश्य का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

बुन्देली

अरे हाँ रे भीम तुम आये कहाँ इहाँ जंगल में
वन काहे डारे उजार भीम तुम आये इहाँ कहाँ जंगल में
सुनत भीम गरजन लागे ज्यों भाँदव घनघोर
जीव जन्तु भागन लागे, सुनकर उनका सोर
भीम तुम आये.......
वचन मागे हनुमाना, सुनो भीम चितलाय
राम काज बहुतक किये, लंका दीन्हो जार
अहिरावण पाताल में फिर हमने डारे मार । भीम तुम आये.....
टोरौं पूँछ लंगूर धरी है सनमुख धरनी
भीमसेन दोऊ हाथ से, लो लंगूर उठाय
बज्र पवनसुत हो गये फिर तिलभर डुरै ना डुराय।
भीम तुम आये.......

अरे भीम! तुम इस जंगल में कहाँ आ गये, ये जंगल तुमने उजाड़ क्यों दिया? इतना सुनते ही भीम भाद्रपद के बादल जैसी गर्जना करने लगे, जिससे सभी जीव जन्तु डरकर इधर-उधर भागने लगे। हनुमान ने भीम से कहा- सुनो भीम, हमने राम के बहुत काज सँवारे हैं। लंका जलायी, अहिरावण को पाताल में जाकर मारा। भीम ने चाहा कि इस बंदर की पूँछ क्या, मैं इसको ही समूचा उठाकर फेंक दूँ पर पवनसुत बज्र की तरह हो गये और भीम के सारे प्रयास विफल हुये।

गोविन्द गढ़ का अजब तालाब, महल बाँधौं बना
महाराजा बघेला वेंकटरमण जहाँ वास करें
रात सजे दरबार , महल बाँधों मां बना
पपरा मां खेलैं, अहेर बहेलिया हाँका करैं
बाघन करैं सिकार
महल बाँधौं मां बना......

गोविन्दगढ़ का अजीब तालाब और बाँधवगढ़ में महल बना है जहाँ महाराजा बघेल

व्यंकटरमण निवास करते हैं, जहाँ रात में दरबार सजती है। पपरा नाम के पहाड़ में व्यंकटरमण बाघों का शिकार करते हैं और शिकारी बाघों के लिये हाँका करते हैं।

नारदी

स्थाई - *रंगीली खेलन होरी*

दादरा - *जब से गये पिया, सुधि नहीं लीन्ही*

चलावनी- *दोनों नैनन अंजन आँच चली*
मन बाड़ो सिरोही धरी
रंगीली खेलन होरी हो सजि कै कहां आज चली

होरी - *आयऊ पिया की मैं चोरी*
हो कोऊ रंगा ना डारै

अंतरा-1 *माघ महीना मकर नहायन*
चैत बदी तै कीन्हा
जाकै पिया परदेश गये हैं
सूनी सेज मलीना
हो कोऊ रंगा ना डारै

अंतरा-2 *करके सिंगार पलंग चढ़ि बैठी*
सुन्दर नार नगीना
यौवन के रस चोली टपकै
पोछति नार पसीना
हो कोऊ रंगा ना डारै

डोल- *मोर मग रोकत नंद के लाल*
बड़ी होत लजाऊँ
अरे बृज भामा को जाऊँ

दहका - *कजरा मैं ना देबै लगाऊँगी बालमा*

अंतरा - *ई कजरा मोरा गीला गिलोबा*
लगै पिया के गाला
कजरा मैं ना देबै बालमा

अंतरा - *ए झुलनी मोर मइके के आयी*
बेसर गुंज ना पहिरब पिया
झुलनी मां दरेरा लागै

होली रंगीली खेल रही हैं। जब से पिया गये हैं, हमारी सुधि नहीं ली। दोनों नैनों में काजल लगाकर आज चली गोरी होली खेलने। मैं पिया की चोरी से आयी हूँ, मुझ पर रंग मत डालो। माघ के मास में मकर स्नान किया, चैत्र तुमने खराब कर दिया। पिया परदेश गये हैं और कोई खबर नहीं ली। सिंगार करके पलंग पर बैठी सुन्दर स्त्री उसकी चोली से यौवन टपक रहा है। वह पसीना पोंछ रही है। कृष्ण मेरी राह रोक रहा है मुझे शर्म आ रही है, मैं बृज भामा (राधा) के पास जाती हूँ। मैं काजल नहीं लगाऊँगी, मेरे साजन के गाल पर लग जायेगा। नाक की नथनी मेरे पीहर से आयी है। मैं बेसर गुंज वाली नहीं पहनूँगी, क्योंकि उससे नथ में रगड़ लगती है।

नारदी

स्थायी - *मोहन आया ना गयो*

दादरा - *सोनें सलाई काजर पारौ*

चलावनी- *कूद परे काली दह में ,*
गोकुल बृज सोर भयो
सखा सब सोच करें मन माही
मोहन आ न गयो

होरी - *गोपिन का संदेस कछु बरनि ना जाय*

अंतरा - *जिन गऊआ श्याम नितहूँ चरावैं उन गऊआ बिसराई*
हुकर हुकर गऊआ बन बन ढूढ़ै
निरखत कान उठाई, व्यथा कछु बरनी ना जाई

डोल - *कोयल हो कुहकै*
बृजनारि लै ले मोहन नाम घोराई
आयो ना घनश्याम मोरो री

दहका- *बृन्दावन भूली जाऊँ सखी ,मोहि गैना बताओ सहर की*

स्थाई - *झूमत गागर ले चली अलबेली*

दादरा - *चढ़त अटा मोरी पायल बाजै*

चलाउनी – छोड़ छैल मोरी अँगुरी, मैं तो आँचल लेऊँ सम्हार
झूमत गागर ले चली अलबेली, नयी पनिहार

होरी – या फगुआ की बहार चलो सखि खेलन होरी ।

अंतरा – अपने अपने मंदिर से निकरी, कोऊ श्याम कोऊ गोरी
हिल मिल फाग परस्पर खेलैं, सोभा बरनि ना जाई
चलो सखी खेलन होरी

डोल – कोयल होय कुहकै बृजनारि
लै लै मोहन नाम मुरारी

दहका – सोनें का पंखा डोलावा
जानकी, रामा का गरमी लागैं

आज मोहन नहीं आये। सोने की सलाई से मैं काजल पाड़ रही हूँ। कृष्ण काली दह में कूद गये हैं पूरे गोकुल और ब्रज में शोर हो रहा है, सभी साथी खड़े सोच रहे हैं, मोहन अभी नहीं आये। गोपियों का संदेश,उनकी विरह का वर्णन किया नहीं जा सकता। जिन गायों को श्याम चराते थे उनको भी वे भूल गये हैं। वे गाये उन्हें ढूँढ़ रही हैं। ब्रज की स्त्रियाँ कोयल की तरह कुहुक-कुहुक कर मोहन को पुकार रही हैं, पर मोहन नहीं आये। मैं मोहन की विरह में वृन्दावन की गलियाँ भूल गयी हूँ, कोई मुझे शहर की राह बताओ। कहाँ की ये स्त्री है और कहाँ दही बेचने जा रही है? वृन्दावन भूल रही है इसको शहर का रास्ता दिखाओ।

नारदी

स्थायी– जमुना अकेली हो पनिया कैसे भरौं

दादरा– जय हनुमान अंजनी नंदन

चलावनी– चितचोर छिपाय जवाब करै बरजो यसुदा अपनें लला
अरे जमुना अकेली हो भरैं पनिया कैसे जाऊँ

होरी – मैं पनिया भरै कैसे जाऊँ अरे जमुना हो अकेली

अंतरा – जमुना के तट पनघट पर नटखट रोकत बाट हमारी
गइल चलत मोरी गागर फोरी , मैं पनिया भरैं कैसे जाऊँ अकेली

डोल – उड़ जा कागा तोहि मारब

कब अइहैं पिया मोर परदेसवा से लाल

दहका - *तू मोरी गेंद चोराई हो राधे तू मोरि गेंद चोराई*

अंतरा - *हाँथ पकड़ि चोली विच ढूढ़ै हाथ पकड़ि चोली रे*
एक गयी दुई पाई, तू मोरि गेंद चोराई

नयी-नयी पानी भरने वाली स्त्री झूमते हुये गागर लेकर चली। मैं जब अटारी की सीढ़ी चढ़ूँ तो मरी पायल बजती है। हे नायक (छैला)! मेरी अँगुली छोड़ों, मैं अपना आँचल तो ठीक कर लूँ। फागुन की बहार है, चलो सखी होली खेलें। कोई गोरी, कोई साँवली स्त्रियाँ अपने-अपने घर से निकली और आपस में होली खेल रही है। कोयल की तरह ब्रज की स्त्रियाँ कृष्ण को पुकारती हैं। सोने का पंखा झलो। हे सीता जी! राम को गरमी लग रही है।

नारदी

स्थाई- *लड़िकौंधी गोरी जुल्फैं ना सम्हारै*
दादरा- *जनक दुलारी की लाली लाली अखियाँ*
चलावनी- *फागुन मास बिरह के लागे सूनी सेज*
पड़ी अरे लड़िकौंधी है गोरी हो जुल्फैं ना सम्हारै
होरी- *पतली कमर बल खाय गगरिया खैंची ना जाय*
अंतरा - *माई बाप की रही दुलारी , हाथ ना लीन्ह रसरिया*
जबसे पड़ी निर्मोही के पाला, दुई दुई भरावे गगरिया
गगरिया हो मोसे खीची ना जाये
डोल- *जइसन गोरी जोवन पाये*
माता पिता के संग
ऐसइ मोरि गगरिया डोले , रहै परोसिन के अंग
गगरिया हो मोसे खींची ना जाय
दहका- *मोरी गगरिया ना डूबै देवर*
कौन मां पनिया का जाऊँ हो देवर
मेरी गगरिया ना डूबै।

अकेली स्त्री यमुना में पानी कैसे भरे? जय हनुमान अंजनी के पुत्र। मेरा मन चुराकर मुझसे उलझ रहा है। हे यशोदा! अपने पुत्र को मना करो। यमुना के तट पर नटखट हमारी राह रोकता है। रास्ता चलते मेरी मटकी फोड़ दी, मैं अकेले कैसे जाऊँ पानी भरने। अरे कौवे! उड़ जा, नहीं तो मैं तुझे मारूँगी। पता नहीं मेरे प्रीतम परदेश से कब वापस आयेंगे? हे राधिका! तुमने

मेरी गेंद चुरायी है। कृष्ण राधा का हाथ पकड़कर चोली के अंदर अपनी गेंद ढूढ़ते हैं और चिल्लाते हैं कि आहा एक गेंद के बदले में दो गेंद मिल गयी। (यहाँ दो गेंद का मतलब स्तनों से है।)

नारदी

स्थाई- *मूरति सलोनी हो, चितवै एहि ओर*

दादरा- *अवध छैला, काहे मारी नजरिया*

चलावनी- *रंग रंगीली, कटीली कटा*
सबकै कब जोरि के चितवै
एहि ओर मूरति श्याम सलोनी

होरी- *चोरबा घर लोटी रे, अकेली जानि के*

अंतरा- *आठ परेऊना नौ सुआना*
दस तीतुर एक मोर
इतनी चौकी नाकि के
नकबेसर लइगा चोर
अकेली जानि के

डोल- *राम जानकी चौक माँ बइठे, बरसत प्रेम अबीरा*
आलि कबहौं मिलिहैं रघुवंशी बीरा

दहका- *कजरा मैं ना दैबे बालमा*

अंतरा- *कजरा मोरा गील गीला*
लागै पिया के गाल मा
कजरा मैं ना देवै बालमा

किशोरी युवती तुम अपनी जुल्फे क्यों नहीं सँवारती? जनक दुलारी की लाल-लाल आँखें। फागुन मास में विरह के कारण सेज सूनी पड़ी है। पतली कमर में जोर पड़ता है, मटकी खींचते नहीं बन रही है। माता की पिता की दुलारी लड़की थी, कभी पानी भरा ही नहीं था। लेकिन जब से निर्मोही के साथ ब्याही, वो तो दो-दो मटकियाँ भरवाता है। जैसे माता पिता के घर में युवती को यौवन प्राप्त हुआ, वैसे ही उसकी मटकी डोल रही है और दूसरी स्त्री उसे उठाये हुये है। अरे मरे देवर! देखो, मेरी मटकी कहीं डूब ना जाये। मैं पानी भरने कहाँ जाऊँ।

नारदी

स्थाई- *उधौ वा छवि हेर रही*

दादरा- *सोने सिरोही काजल पारौं*

चलावनी- *आठ नयन मुख चार सींग दुई*
द्वादस चरण गही
चार बेद रस दुहत स्याम रो
नैन जब शयन गही
ऊधौ वा छबि हेर रही

होरी- *बृज बालन घेरि रही यसोदा के कान्ह को*

अंतरा- *छलबल कर छल्ला पहिनायै बाजूबंद सही*
अंजन पाँव महाउर सोहैं, सब सिंगार करी
ऊधौ वा छबि हेर रही

डोल- *पातर गोरि पाटे की डोरी, पहिर कुसुम रंग सारी*
छम छम कुँअना पानी जाय, कौन छयलवा की ना

दहका- *यौवन मां बेड़ी डारा ससुर को रो जिया धरैना धीर*

अंतरा- *कै मन की तोरी बेड़ी परी है, कै मन का जंजीरा*
नौ मन की तोरि बेड़ी परी है, दस मन का जंजीरा
ससुर मोर जिया धरै ना धीरा

श्याम सलोनी चितवन (सूरत) इसी ओर देख रही है। अयोध्या के छैला (युवक) तुमने मुझे क्यों देखा? रंग-रंगीली, कटीली छवि वाली, सब लोग मिलकर उसे देख रहे हैं। चोर ने मुझे अकेला पाकर मेरे घर को लूट लिया। आठ पक्षी, नौ तोते, दस तीतर, एक मोर इन सबके होते हुये भी चोर मेरी नकबेसर ले गया। राम जानकी चौक में बैठे हैं, प्रेम रूपी अबीर बरस रहा है। हे सखी! कब मिलेंगे रघुवंश के ये वीर। मैं काजल नहीं लगाऊँगी प्रीतम। मेरा काजल गीला है जो तुम्हारि गाल पर लग जायेगा।

नारदी

स्थाई- *ललिता संग जाऊँ कैसे*

दादरा- *मोहन खेलैं फाग बिरज मां*

चलावनी- *मो संग काह दुरावत है, तुम वही के रंग रंगे*
अरे देखे वा बनवारी, हो ललिता संग जाऊँ कैसे

होरी- *टोरि लावो निबुलवा की डार, बलम टोरि लाओ*

अंतरा- *छोटे नकुला बहुत रसीले, हमैं रसीलियों की डार*
नेबुला तोड़न सइयाँ गये हैं,
कैसे करौ कहाँ जाऊँ बेदर्दी टोरि लाओ रे

डोल- *खम्मा लाली पतंग सी डोलैं, बोलैं अमृतबाणी*
सैया मोरे सेज चलो, अब अखियाँ अलसानी

दहका- *होरी खेलैं रघुबीरा अवध मां*

अंतरा- *काखे हाथे ढोलकिया सोहै, काखे हाथ मजीरा*
रामा के हाथे ढोलकिया सोहै, लछमन के हाथे मजीरा।
अवध मां होरी खेलैं रघुबीरा

ऊधव! हम वह छवि ढूंढ़ रही है। सोने की सलाई से काजल बना रही हूँ। आठ आँखें, चार मुख, दो सींग, बारह पैर जिसके हैं, चार वेदों का रस मिलता है जब श्याम के नयन नींद में हों। ब्रज बालाओं ने यशोदा के पुत्र को घेर लिया। छल और बल से छल्ला पहनाया, बाजूबंद पहनाये, काजल, पैरों में महावर लगाया, सब सिंगार किया (कृष्ण जी का)। पतली दुबली गोरी, रेशम की डोरी, कुसुम रंग की साड़ी पहने पानी भरने कुएँ की ओर जा रही है। यह किस छैला की स्त्री है? यौवन में रोक लगाओ, यह सम्हाले नहीं सम्हलता। नौ मन की बेड़ी और दस मन की जंजीर डालकर यौवन को रोको।

नारदी

स्थाई- *मग में दधि रोके मो को नन्द कुमार*

दादरा- *मैं पनियाँ कैसे भरन जाऊँ सखी री*

चलावनी- *मटकी ना छुओ, गोड़री मरबै*
नकबेसर भाव बतामैं अंगिया बंद खोलो
कंसहि जाय पुकारौ,
मग में दधि रोके मो को नंद कुमार

होरी- *ऐसी चतुर बृजनारि, लंगर डारि दे तूं*

अंतरा- *कब से मोहन तूं भये दानी, कब कब दीन्हे दान*

नंद बबा की गौआ चराबै, हमसे ना कीन्है गुमान
लंगरि डारि दे तूं

डोल- *भा भिनसार लाल भये बादर, चम्पा कली कुम्हलानी*
उड़ जा उड़ जा कागा कारे, सारी रैन सिरानी

दहका- *चुनरी रंग भीजै सामन मां*

अंतरा- *नदिया बाढ़ी नाव उतरानी*
मोर कइसै के आवैं सजना
चुनरी रंग भीजै सामन मां

ललिता के साथ कैसे जाऊँ? श्याम होली खेल रहा है। मेरे साथ क्यों दोहरा व्यवहार करते हो? वनवासी तुम वही के वही हो। हे साजन! नींबू की डाली तोड़ लाओ, छोटे-छोटे नींबू बहुत रसीले हैं। साजन नींबू तोड़ने गये हैं, अब हमें बेचैनी हो रही है। हम क्या करें कहाँ जायें? मेरे साजन! चलो सेज पर, अब मेरी आँखों में आलस्य उतर आया है। अयोध्या में रघुबीर (राम) होली खेल रहे हैं। राम के हाथों ढोल, लक्ष्मण के हाथों मंजीरा सुशोभित हो रहा है।

नारदी

स्थायी- *अरे अब सीय सैयाँ बारो मारो भूपा*

दादरा- *बाँके है नैना तोहार गोरी, बाँके है नैना तोहार*

चलावनी- *तोड़ सरा शिव शंकर का, सिया राम ल्याय घर आये*
अरे अब सीय सैयाँ बारो, मारो भूपा या बनि आयो

होरी- *या बृज में हरि होरी मचाई, आज बृज में हरि होरी मचायी*

अंतरा- *अनुजन सहित सखा सब लीनैं, रोकै गयलबा का नाका*
सानदार सहयोग साँवरों, डारे आखिन पर डाका
रहै नहि एकौ ताका या बृज में हरि होरी मचाई

डोल- *ऊंची अटा पर चढ़िके, मारै दुनाली भरिके*

अंतरा- *काहेन की दुनाली बनी है, काहेन भरि-भरि गोरिया*
मारै दुनाली भरिके
नैनन की दुनाली बनी है, काजल भरि-भरि मारै गोरिया
मारै दुनाली भरिके

मार्ग में श्याम खड़ा दही वालियों (गोपियों) को रोक रहा है। मैं पानी भरने कैसे जाऊँगी? मेरी मटकी मत छुओ, मैं गोनर से मारूँगी। वो तो नकबेसर का भाव बताये, अँगिया के बंद (हुक) खैले। मैं कंस से जाकर कहूँगी। ब्रज में हरि ने होली मचा दी है। अनुज और साथियों के साथ वो रास्ता रोक रहे हैं। सबका शानदार सहयोग है, वो आँखों पर डाका डाल रहे हैं। ऊँची अटारी पर नायिका चढ़ी है और वहीं से दुनाली भरकर मार रही है। वो नैनों की दुनाली से काजल भर-भरके मार रही है।

नारदी

परम पुनीता सक्ति स्वरूपा, माँ शारद महारानी
तुम ही तो जग तारन मइया, जगदम्बा जगजननी
हो दुर्गा जयति भवानी, करहुं कृपा कल्यानी
मातु सरस्वती ज्ञान विकासिन, जगतारण जगदीश्वरी
जन जन का कल्याण करा मां, सबका संकट टारा
येहिं विधि विनय हमारी, सुन लीजै हे दयानी
दुर्गति देख जगत की जननी, पुरनहु आस हमारी
दै प्रकास अंधियार मिटावो, सबहि लोक सुखकारी
कमल कर बीणा बजावति, जग में मंगलकारी।
जन कष्ट निवारक संकट टारन, जयति सरस्वती माता
कह जयति सरस्वती माता, करै सब जय जय गान्
देवी मइया पाप हर द्रया टारो, टारो सकल अंधियार
यही वर मांगन आयो रे
जय जय जय जगदंबा भवानी, मइहर की शारदा भवानी
हमारी हैं कितनी वर दायनी॥

परम पुनीत, शक्ति स्वरूपा शारदा माँ, तुम जग को तारती हो। हे माँ जगदम्बा! हे दुर्गा! जय-जय तुम्हारी, कृपया कृपा करो। कल्याण करने वाली माँ, माता सरस्वती तुम ज्ञान का विकास करती हो, तुम जगत की ईश्वरी हो। जन-जन का कल्याण करो माँ, सबका संकट दूर करो। इस तरह ही हमारी विनती सुन लो। हे दया करने वाली! हमारी दुर्गति देखो। हे जगतजननी! हमारी आशा पूर्ण करो। प्रकाश देकर अँधेरा मिटाओ, सभी को सुखी बनाओ। कमल पर आरूढ़ वीणा बजाने वाली जग में मंगल करने वाली सबके कष्ट दूर करने वाली, कष्ट दूर करने वाली, हे माता सरस्वती! सब लोग तुम्हारा जय-जय गान करते हैं।

हे देवी माँ! दरिद्रता दूर कर अँधेरा मिटानें की कृपा करो, यही वरदान चाहिए। मैहर की शारदा भवानी, कितनी वरदायनी है?

नारदी

स्थायी- *मंगल मूरति मारूती नंदन, पवन तनय बलिहारी*

दादारा- *सीतहिं खोज समुद्र हिलोरे, रावन लंका जारी*
नवन सुत तुम बलिहारी

चलावनी- *जय हनुमान अंजनी के नंदन, कहियो संदेस बहोरी*
मातहिं नाई चरण गहि लीना, बिनती करहुं कर जोरी

होरी- *जाय पवन सुत अवध नगर को, भरतहि कुशल सुनाये*
सीता अनुज सहित रघुनंदन, पुष्पक माही आमै
अवध मां बजहिं बधाई, आवत हमैं रघुरायी
सुर काज सम्हारौ रावन मारो, रघुनंदन घर आयो
ए रघुनंदन घर आयो, सब जय जय गावहिं ना

डोल- *चारि भइया लाल गुलाले लाल*
लाल महल के बीच फगुआ खेलन आये रे

दहका- *सरजू तट राम खेलैं होरी*
रंग अबीर भरे झोरी

मंगल की प्रतिमा, मारूति के पुत्र, जय पवन पुत्र हनुमान। सीता की खोज में समुद्र छाना, रावण की लंका जलायी। हे हनुमान! मेरा संदेश जाकर कहना, माता को चरण स्पर्श प्रणाम कहना। (राम कहते हैं।) पवन सुत अयोध्या जाकर भरत को सभी कुशलता सुनाते हैं, तभी सीता और अनुज सहित राम पुष्पक विमान से आते हैं। अयोध्या में बधाई बज रही है। उन्होंने देवता के काज सम्हाले, रावण का वध किया सब उनकी जय-जयकार कर रहे हैं। चारों भाई गुलाल से लाल महल के बीच होली खेल रहे हैं। सरयू नदी के किनारे राम होली खेल रहे हैं। झोली में गुलाल लिये हुये हैं।

बुंदेलखण्डी

अरे हां, बालि सुत कइके कठिन प्रण पग ठानी
बालि के पुत्र बलवान कहैं, सुनि अंगद बानी

अंतरा- *क्यों रे मूढ़ गंवार हरी नारि बिरानी*
समदर्शी प्रभु राम हैं, जगत मात सिय आय
खोटा-करम तुमने किया, फिर भारी-अभिमान

अंतरा– *फिर भारी अभिमान, तुम मान हमारी*
वैदेही दे बहुरि करो, न उनसे रारी
राघस जितने लंक, किसी की बचे न जान
वंश नास हो जायेगा, तुम कही हमारी मान

अन्तरा *कही हमारी मान, बात सुन मान हमारी*
आया बंदर एक, जे गयो नगर उजारी
अक्षय मार लंका जरा, और कई बलवाना
चूड़ामणि सिय मात की, ले गया जहां भगवाना

बालि के पुत्र अंगद कह रहे हैं– हे रावण! तुम मेरी बात सुनो। अरे गँवार! तुमने परायी नार का हरण क्यों किया? प्रभु राम समदर्शी हैं और सीता जगत की माता हैं। तुमने बहुत नीच कार्य किया है फिर भी अभिमान कर रहे हो। तुम मेरी मानो वैदेही सीता को वापस कर दो। तुम राम से बुराई मत मोल लो, नही तो लंका के सभी राक्षसों की जान जायेगी। तुम्हारा वंश नष्ट हो जायेगा।

एक बंदर पहले भी आया था जो तेरी लंका तबाह कर गया था। अक्षय कुमार को मारा था और सीता से प्राप्त चूड़ामणि भगवान् राम के पास ले गया था।

झिमका

ना जाई हो राम या सुख बरनि ना जाई
बाजत तबल मृदंग झांझ डफ मंजीरा सहनाई
जमुना तीरे बजी मुरलिया,आई जमुन हहराई
होरी खेलन को जब मैं गयी, सास ननद की चोरी
मार गुलाल लाल भयो बादर, रही ललामी छायी
खेलत गेंद गिरी जमुना में, सखियाँ लेत उठाई
डर हाथ चोली बिच ढूंढ़ै, एक गई दुई पायी

इस सुख की प्राप्ति का वर्णन करना मुश्किल है। तबला, मृदंग, झाँझ, डफ, मंजीरा, शहनाई, मुरली यमुना के किनारे बज रहे हैं, यमुना लहरा रही है। सास और ननद की चोरी से मैं होली खेलने गयी, वहाँ गुलाल के कारण आसमान लाल था, चारों ओर लालिमा छायी थी। गेंद अचानक यमुना में चली गयी, कृष्ण हमारी चोली में हाथ डालकर गेंद ढूढ़ रहे हैं और फिर अचानक हर्षित होकर कहते हैं कि एक गेंद खोई और दो गेंद पायी।

मैं ना खेलौं ऐसी होरी साँवरिया, मैं ना खेलौं ऐसी होरी
संग लिहे भरि रंग पिचकारी, बागत खोरी खोरी
मार गुलाल लाल मुख कीन्हो, नकबेसर मोरी टोरी
मारै भरि भरि रंग पिचकारी, सारी रंग से बोरी
सास हजारों गारी दैइहैं बाँकी ननदिया मोरी
फोरि दई सिर गागर कोरी, मोतिन माला टोरी
जाय कहूंगी नन्द बाबा से, कैसे बचें बृज गोरी
ऐसे वचन सुनत गोपिन के, अजसय प्रेम रस बोरी
प्रभु मुस्कान खड़े हरि ऐसो, हरो विपति प्रभु मोरी

हे कृष्ण! मैं ऐसी होली नहीं खेलूँगी, तुम पिचकारी लेकर गलियों-गलियों घूमते हो। गुलाल से मेरा मुख लाल कर दिया। मेरी नाक की बेसर तोड़ दी। पिचकारी भर-भरकर तुमने मेरी साड़ी रंग दी। मेरी सास मुझे गाली देगी और ननद भी दुष्ट है। मेरे सिर की गागर फोड़ दी, मोतियों की माला तोड़ दी। मैं नन्द बाबा से शिकायत करूँगी कि ब्रज की युवतियाँ कैसे बचेंगी। गोपी के वचन सुनकर कान्हा प्रेम मुदित मन से मुस्कुरा रहे हैं। हे प्रभु! तुम सबकी विपत्ति दूर करना।

बैसवारा

हरि ये नाथ गज ग्रह के,
गज ओर ग्राह लड़े जल भीतर, लड़त-लड़त गज हारे।
गज की टेर सुनत रघुनंदन, तबहिं आय पधारे॥
कच्चा सूत कुसुम रस बोरा, गहि गहि बांह दबाये।
छोरी ना छूटै सिया जू के कंकन, या बल कहां गया रे॥
सबरी के बेर सुदामा के तेंदुन, साग बिदुर घर खायो।
करि किरपा रघुनाथ हमारो, हमें भरोसा आयो। नाथ......

गज (हाथी) और ग्राह (मगर) पानी में लड़ रहे थे। लड़ते-लड़ते हाथी हारने लगा। उसने प्रभु को पुकारा, तभी प्रभु आ गये। शबरी के बेर, सुदामा के चावल, विदुर की साग प्रभु ने खायी। रघुनाथ हम पर भी कृपा करेंगे, हमें ऐसा भरोसा है।

चौताला

घेरि लई कुंजन मां साँवरिया।
मोहि पाय अकेली वन मां सांवरिया। घेर लई.......

मैं दधि बेचन जात वृन्दावन, लिए सखिन की टोली
दधि मोरा खाई मटकी मोरी फोरी, साँवरिया मैं न खेलूं ऐसी होली
पाई अकेली बनि आई है तेरी, करो जो भावै मन मां
जाय कहूँगी नंद बाबा से, फेरी हाथ मोरे तन मां।
जब फागुन की फिरी दुहाई, श्री कृष्ण वृन्दावन मां
तुम तो राधा रंग भरी हो, क्यों निकली फागुन मां
भयी महल मां खूब बदनामी, सोर भयो सहरन मां
अब कहाँ जइहा भाग के मोहन, चलब तुम्हारे संग मां

मुझे अकेली पाकर कुंज गली में कृष्ण ने घेर लिया। मै अपनी सखियों के साथ वृन्दावन दही बेचने जाती थी। मेरी मटकी फोड़ी और मेरा दही खा लिया। श्याम ने मुझे अकेली पाकर तुम्हारी बन आयी है, अब जो मन में हो कर डालो। मैं नंदबाबा से कह दूँगी कि तुमने मेरे शरीर पर हाथ फेरा है। फागुन में पता चला कि कृष्ण वृन्दावन में होली खेल रहे हैं। राधा रानी तुम बाहर क्यों निकली, तुम तो वैसे भी रंगी हो। महल और शहर में मेरी खूब बदनामी हुयी है। कृष्ण अब तुम बचकर कहाँ जाते हो, अब हम तुम्हारे साथ चलेंगे।

बुंदेली

अरे हां, पन्ना बिच होरी खेलैं
मऊ सहर है मायको, पन्ना है ससुरार
महीराजा को ब्याही गयी, भरी जवानी में हो गयी रार ॥ पन्ना विच......
बूंदी रोवत है बूंदन का, भरी तुपक फहराय
तापैं रावत है मोरचन को, को मोरचा देई छोड़ाय
तेलिन रोबैं तम्बोलिन रोबैं, विरमा जाति कलार
लड़की रोबैं बरई की, को कतरी बेलरी पान॥
रानी रोवैं, निवासन मां, तिरियन पवन दुआर
चिरयी रोवत है पिंजरन की , कोई देई चना बोबाय
पन्ना पूरी धाम है, धरम ध्वजा फहराय
आस पास हीरा गड़े, जहां नाचत जुगल किशोर

पन्ना में होली खेली जा रही है। मऊ शहर में पीहर है, पन्ना ससुराल है। महाराजा से ब्याह हुआ और भरी जवानी में लड़ाई हो गयी। बूँदी शहर बूँद (पानी) के लिये रो रहा है, भरी तोपें खड़ी है तोप रो रही है कि कोई जंग छुड़ा दो। पान वाली लड़की रो रही है कि उसका पान किसने कतर दिया? रानी अपने निवास में, औरतें द्वार पर और पिंजरे की चिड़िया रो रही है।

पन्ना एक धाम है जहाँ धर्म की ध्वजा ऊँची है। आस-पास हीरे गड़े हैं और जहाँ जुगल किशोर नृत्य करते हैं।

चौताल झिमका साथ

या बंसी कौन बजाई, अरे मधुबन बंसी कौन बजाई
ए बंसी बाजी बाजी बाजी, मोहि लगी प्रेम की बान
बंसी वाला ऐ यदुराई, मोर सोवत नींद जगायी,
या बंसी कौन बजाई.......
ओढ़ पिछौरा बामा बामा बामा,मोरि चोल मा लपकै कान्हा
बालमे रेन कहै नहि पायी, मोहि सोवत नींद जगाई। या बंसी...
अरे नंद के लाला लाला लाला, काहे हुए मोर गाला
दहिया खायो और ढरकायो, कहाये नंद के लाला॥ या बंसी...

ये बाँसुरी किसने बजायी। मधुवन में, मुझे प्रेम रूपी बाण से बेध गयी। ये बाँसुरी वाले यदुराय (कृष्ण) ने मेरी नींद उड़ा दी। चादर ओढ़कर कृष्ण मेरी चोली की ओर लपकता है। मेरी रात कट नहीं पाती है, मेरी नींद उड़ा दी। अरे नन्द के पुत्र! तुमने मेरा गाल क्यों छुआ? मेरा दही खाया, गिराया और नंद के लाल कहलाते हो।

चौताल

बरजो यसुदा जी कान्हा सखी, बरजौ यसुदा जी कान्हा
मैं दधि बेचन जात बृन्दावन, मारग में इठलाला
वह कपटी मोरि गागर फोरी, धरि चोली मुसकाता
मोरो लाल पलंगा पर झूलै, नाहक लाई ओरहना
का जानैं रस बस की बातें, जानैं खेलों खाना।
हम सांची हमरो सुत सांचों, हमसों करत बहाना
एक राय बस यहि करि राख्यो, करे जौन मनवाना
वाही समय घर आयो श्याम, अऊवै रोदन ठाना
ये मैया मोहि बहुत सतावैं, दै दै नयन निसाना।
बृन्दावन की कुंज गलिन माँ, फिर कान्हा मस्ताना
सूरदास सब गुनन के आगर, नंदगांव बरसाना।

हे यशोदा! कान्हा को समझा लो, मना कर लो। मैं दही बेचने वृन्दावन जाती हूँ तो

मार्ग रोकता है। मेरी गागर फोड़कर, मेरी चोली पकड़कर वह मुस्कुराता है। यशोदा कहती है मेरा पुत्र पलंग पर सो रहा है, तुम नाहक शिकायत करती हो। वो ये सब रस की बातें क्या जाने, वो तो खाना और खेलना जानता है। उसी समय कृष्ण घर आये और आते ही रोने लगे। वृन्दावन की कुंज गलियों में कान्हा फिर से मस्ती कर रहे हैं। सूरदास जी कहते हैं सब गुणों से भरपूर है नंदगाँव बरसाना।

तन ओढ़े चुनरिया लाल सखी नाउन बन गये कान्हा
तन ओढ़े चुनरिया लाल, कसै हैं रेशम चोली
मुख भरि बीरा पान, बोलती मधुरी बोली
पहिनै तोड़ा पैजना, पनवादार हेवाल
शीरा फूल करि पाहुंची, सोई बहुटा जालीदार
सोई बहुटा जालीदार, कान में झुमका भारी
बेंदी मध्य लिलार, लगत देखन में प्यारी
माऊ नथुनिया सोहती, कजरा दिये बिसाल
लिहै नहन्नी हाथ में, चले अनोखी चाल
चले अनोखी चाल, गयो जहां राधा प्यारी
उबटन लेहु कराय, श्री बृषभानु दुलारी
कुशल पूछ बातें भई, पूछ ताछ सब हाल
पहिचानी राधे नहीं, कि ये हैं नंद के लाल
ये हैं नंद के लाल, तुरत पानी मगवायो
केसर तेल फुलेल, सकल उसमें मिलवायो
अंग अंग पर उबटन, करि के लाल
फिर स्नान कराय, गुहै शीस के बाल
गुहैं सीश के बाल, मांग में सेंदुर दीन्है
बेंदी मध्य बिहार, खुसामद पूरी कीन्है
फिर सखियन संग बैठि के, सोई पहिर जवाहर लाल
पहिर जवाहर लाल, पांव राधे फैलावै
देत महावर लाल, फेरि मोहन सकुचावैं
मूलचंद कविवर कहें, जानि गये सब हाल
ये हैं छलिया नंद के, सोइ छैल नंद के लाल

लाल चुनरिया ओढ़ के कृष्ण नाउन (नाई की स्त्री) का रूप बनाये हैं। चुनरी लाल रेशम की चोली पहनकर, मुख में पान भरकर मधुर वचन बोलते हैं। पाँव में तोड़ा, पैजना, पान

की आकृति का हेवाल (गले का हार), करधन, बहुँटा जालीदार पहनकर, बेंदी माथे पर लगाकर, नाक में नथ, आँख में काजल, हाथ में नाखून काटने की ब्लेड लेकर अनोखी चाल चलते हैं राधा के घर पहुँचते हैं और कहते हैं कि- हे राधा! तुम उबटन लगवा लो। इसी बीच कुशल क्षेम और हाल चाल पूछते हैं किन्तु राधा उन्हें नहीं पहचान पाती। वे तुरंत पानी मंगवाते हैं। केशर, तेल, फुलेल उसमें मिलवाते हैं। राधा के अंग-प्रत्यंग पर उबटन लगाकर स्नान कराया, फिर सिर पर कंघी कर चोटी करते हैं, माँग में सिंदूर लगाते हैं, माथे पर बिंदिया लगाते हैं। उन्हें जवाहर और लाल से सुशोभित आभूषण पहनाते हैं। राधा अपने पैर फैला देती हैं जिसमें कृष्ण महावर लगाते हैं और संकोच करते हैं। मूलचंद कवि कहते हैं वे इस तरह सभी हाल चाल जान जाते हैं, आखिर वे नंद के लाल जो हैं।

तीन ताला

मोरे मोहन लाल कन्हैया
बलइयाँ लेवे तुम्हार ॥
कबे अइहा मधुबन मां
फगुआ के बहार॥

ब्रज की नायिका मनहार करती है कि- प्यारे कन्हैया! आप मधुवन में हमारे साथ होली खेलने कब आओगे?

डग्गा

गिरधारी लाल तेरा भरोसा भारी
मोरा मन लागे गिरजा गिरधारी
तोरा भरोसा भारी गिरधारीलाल

गिरिवरधारी कृष्ण! मुझे तुम पर अटूट विश्वास है। गिरधारी मेरी प्रीति गिरि-पुत्री पार्वती से लगी है। मेरी मनोकामना आप अवश्य पूरी करेंगे।

लेजम

श्याम बिना ब्रज सूना हो सखिया
श्याम बिना ब्रज सूना....

लाल पलंग का लाल बिछउना
लालै सूत का बीना
धीरे पांव धरा पलंगा पर
सोवत लाल नगीना। सखिया...
सुख की मारी बैठी पलंगा पर
टप टप चुअत पसीना
चोली की बंधन तड़ तड़ टूटै
पोछत श्याम पसीना। सखिया...

सुनो री! सखी कृष्ण के बिना ब्रज सूना-सूना है। लाल रंग की सेज पर लाल सूत का बीना हुआ बिछौना पड़ा है। लाल रंग देखकर कामोत्तेजित प्रिय श्याम शयन कर रहे हैं इसलिए अहिस्ता से सेज पर चढ़ना। कहीं प्यारे श्याम जाग न उठें। उन्मादिनी सखी श्याम की पलंग पर चढ़कर बैठ जाती है, उसकी तप्त देह से पसीना टपक रहा था। स्तनों पर कसे चोली के बन्धन चटककर टूट गये। श्याम बड़ी आतुरता से सखी की देह का पसीना पोछते हैं।

बुंदेली

अरे हां रे मलखे मार गये
गढ़ सिरसा में
महोबे के उदय चंदराय हो
मलखे मार गए गढ़ सिरसा में

महोबे के उदय चन्द राय को सूचना दी जाती है कि मलखान वीरगढ़ सिरसा के युद्ध में मारे गये।

दहका

सिया रामा हमार वर होय जानकी ठाड़े
वर होय जानकी ठाड़े, सिया रामा हमार
वर होय जानकी ठाड़े॥ ...

जनक दुलारी कामना करती हैं कि राम हमारे वर बने।

तीन ताल

मुरली के बजावन हार फाग रंग बोरे न छोड़बै
मुरली के बजावन हार...
एक सखी लै दोना खड़ी है
दूजै खवाबय पान
तीजे सखी रंग घोरे खड़ी है
अब न बचिहा श्याम
बिन फाग रंग बोरे ना छोड़बै

सखियाँ कहती हैं कि मुरली बजाने वाले श्याम फागुन की बहार है। आज हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। रंग में डुबायेंगे। एक सखी दोना में पान लिये खड़ी है। दूसरी सखी पान खिला रही है। तीसरी सखी रंग घोलकर खड़ी है। सभी सखियाँ श्याम को चुनौती देती हैं कि आज आप रंग की फुहार से नहीं बच पायेंगे।

बुंदेली

तनि रहे राजा द्वारे चांदनी
तनि रहे राजा द्वारे मां
जहां सीता को होत बियाह
चांदनी तनि रहे राजा द्वारे मां

सीता का ब्याह होने वाला है। राजा के दरवाजे पर चाँदनी लगायी गई है।

तीनताला

लाल घोड़ चितकबरे हो
पतले असबार
देखै ना पावै मजा भर
घुंघटा बैरी मोर, देखे ना पावे नजर भर।

लाल रंग चित्तीदार घोड़े पर पतली देह वाला सवार बैठा है। लोक नायिका के चेहरे पर घूँघट पड़ा है इसलिए वह आकर्षक सवार को जी भर के देख नहीं पाई।

तीन ताल

परदेसी सिपाही आय
समुझ के कइल्या चिन्हारी
परदेसी सिपाही आय समुझ के कइल्या चिन्हारी
कइल्या चिन्हारी आय समुझि के कइल्या
परदेसी सिपाही आय समुझि के कइल्या॥

प्रेमिका मन में विचार करती है कि यह व्यक्ति दूसरे देश का रहने वाला है। बहुत सोच समझकर इससे प्रीति की जाय। परदेशी प्रीति बढ़ाकर दूर चला जायेगा। जिससे बाद में पछताना पड़ेगा। अत: सोच-समझ कर प्रीति बढ़ाई जाय।

डग्गा

मैं पनियां ना जाबै अकेली
मै पनिया ना जाबै
पांव छटिलगा घइला फूटिगा
सास हमैं बहु मारी
लई लेबै ननद का साथ
अकेली मैं पनियां ना जाबै॥

लोक नायिका कहती है कि मैं अकेली पानी भरने नहीं जाऊँगी। यदि मेरा पाँव फिसल गया तो पानी भरा घड़ा फूट जायेगा। मेरी सास मुझे मारेगी। मैं अपनी ननद को साथ लेकर पानी भरने जाऊँगी।

दहका

नैना लागा ना प्यारो
चलत बटोही ना मारो
काहे बाँके नैना कटारी मारो
सोवत जागत चैन हरो
चलत बटोही ना मारो॥...

प्रेमी पथिक कहता है कि प्यारी आँख से आँख मिला लो। तुम्हारी आँख की चितवन की कोर कटारी की तरह मेरे हृदय में चुभती है। जबसे तुमने मेरी ओर प्रीति भरी आँखों से देखा, मुझे सोते-जागते हुए किसी भी दशा में चैन नहीं मिलता।

दहका

कागा बोलन लागे हो पिया के आंगन
काहे नन्द के लाल हमैं बस कीन्हा
काहे लइगा चित्त चोराय
फगुआ खेलन को जाय

प्रियतम के आँगन में काग बोलने लगा। नन्द के लाल श्याम! आपने क्यों मेरे मन को अपने वश में कर लिया? होली खेलने के बहाने क्यों मेरा चित्त चुरा ले गये?

दहका

पिया परदेसा हो बाला
पराये देसा हो बालमा
आज की रैन सपन हम देखे
सैंया सेज पड़े, परदेसा बालमा
पिया परदेसा हो बालमा

नायिका की पति पराये देश में रह रहा है। विरहिणी नायिका स्वप्न में अपने पति को अपने साथ लेटा हुआ पाती है।

बुंदेली

अजहु ना लई हमार सुधि बालमा
बदरा गरजै छतियां दमकै
चोलिया नव खंड भई, हमार सुधि बालमा
अजहु ना लईहो हमार सुधि बालमा॥

मेरे प्रियतम इतने निर्मोही हो गये कि आज के मादक मौसम में भी मेरी याद नहीं की। वर्षा ऋतु के बादल गरज रहे हैं। मेरी छाती काम पीड़ा से घड़क रही है। स्तनों के जोर से चोली टुकड़े-टुकड़े हो गई। फिर भी मेरे प्रिय ने मेरा स्मरण नहीं किया।

दहका

राम धनुष टोर्‍यो
रवि मारग भूल गयो

सीस कंपे मुनि ध्यान छूट गयो
रवि मारग भूल गयो॥

राम ने धनुष तोड़ दिया। आकाश में सूर्य अपना रास्ता भूल गये। धनुष टूटने पर इतनी तेज आवाज हुई की मुनियों के शीश हिल गये और उनका ध्यान टूट गया।

बुंदेली (मिश्रित)

आली कैसे मिलेंगे ये रघुवंशी हीरा
आली कैसे मिलेंगे,
राम लखन दोनों खेलन धावे
उड़त गुलाल अबीरा
आली कैसे मिलेंगे ये रघुवंशी हीरा॥

सखी! रघुवंश के सुन्दर कुमार कैसे मिलेंगे? राम-लक्ष्मण दोनों मर्म खेल रहे हैं। होली की बहार है। रंग-अबीर उड़ रहा है।

दहका

कहै रवि सुत बाण चलाबै
अर्जुन संग्राम दस जोजन रथ पछिलै
श्री कृष्ण सहाय, दस जोजन रथ पछिलै॥

कर्ण और अर्जुन का युद्ध चल रहा है। सूर्य पुत्र बाण चलाता है जिससे अर्जुन का रथ दस योजन दूर चला जाता है। श्री कृष्ण अर्जुन के सहायक हैं।

दहका

मोरा नथ लईगा कागा
मोरा नथ लईगा कागा
नहिं जानी कऊन अभागा हो
मोरा नथ लईगा कागा॥

नायिका पश्चाताप करती है कि मेरी नाक की नथुनी लेकर कौआ भाग गया। मुझे पता नहीं यह अभागा कौआ कौन है?

बैसवारा

हां हां दयानिधि आय बसा एहिराता मां
बड़े मोरे हैं भाग, आय बसा एहिराता मां
रामै राम कहु रे मन, रामै राम कहु बऊरा
काहे परे उलझन मां रे बऊरा, काहे परे उलझन मां
बऊरा रामै राम कहु रे, मन रामै राम कहू रे
हां हां दयानिधि आय बसा एहिराता मां॥

भक्त प्रार्थना करता है कि दया के निधान भगवान आज रात्रि में आप यहीं विश्राम कीजिए। प्रात:काल में आगे बढ़ने का सौभाग्य है। पागल मन राम नाम का स्मरण करो। संसार की उलझन में क्यों फँसे हो?

बुंदेली

बड़े बड़े बूंदन बरसै बदरिया
बड़े बड़े बूंदन बरसै॥
जाय बरसै पिया के देश
बदरिया बड़े बड़े बूंदन बरसै॥
बरसै लागे काले बादर पिया
बरसै लागे काले बादर
बहै पुरवइया हिलोरे रे
बरसै लागे काले बादर॥

बादल बड़ी-बड़ी बूँदों की वर्षा कर रहे हैं। नायिका चाहती है कि यह बड़ी-बड़ी बूदों की बरसात उसके पति के देश में हो। काले-काले बादल वर्षा कर रहे हैं और साथ में पुरवा हवा चल रही है।

दहका

अरे हां रे कन्हइया जी का
जनम भयो मथुरा मां
भादौ की अंधेरी रात

कन्हइया जी का
जनम भयो मथुरा मां कन्हइया जी का ।

मथुरा में कृष्ण का जन्म हुआ। भादौं महीने की अंधेरी रात्रि में कृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया।

दहका

बाजति अनद बधइया बिरज मां
बाजति अनद बधइया
यशुदा के नन्द दुलारे
बिरज मां बाजत अनद बधइया
बाजति अनद बधइया बिरज मां॥

कृष्ण जन्मोत्सव पर ब्रज में आनन्द-बधाई बज रही है। यशोदा और नन्द के दुलारे कृष्ण के जन्म पर्व पर आनन्द बधाई बज रहे हैं।

बैसवारा

हरि ए बधइया बाजी हां हां बधइया बाजी
बधइया बाजी अयोध्या बधइया बाजी
कौशल्या के जनमें राम
बधइया बाजी अयोध्या बधइया बाजी
राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन
रूप अनूप सोहइया
ठुमुक ठुमुक नृप आँगन खेलत
सब सखि लेत बलइयाँ
बधइया बाजी अयोध्या बधइया बाजी
दसरथ के चारिउ ललनमा
अँगना मां खेलत चगन मगन
खेलत चगन मगनवां। दसरथ के चारिऊ लाल

राम जन्मोत्सव पर अयोध्या में बधाई बज रही है। कौशल्या की कोख से राम ने जन्म

लिया है, इस खुशी में बधाई बज रही है। राम–लक्ष्मण–भरत और शत्रुघ्न का सौन्दर्य अनुपम है। राजा दशरथ के ये चारों राजकुमार ठुमुक–ठुमुक चलते हुए आँगन में चंगन–मंगन का लोक खेल खेल रहे हैं।

बैसवारा

हरि ए राम लंका का
सजि के आये राम लंका का।
सजि के आयी सबै सेना
हरि ए राम लंका का॥
ए नल अऊ नील कुमुद कै वासी
तुरतै सेतु बधाये
हां सेतु बांधि ओहि पारा उतरिगे
लालै ध्वजा पहिराये राम लंका का
बाजै राम का डंका
बाजै राम का डंका
गढ़ लंका घेरे राजा राम हो
बाजै राम का डंका॥

राम ने अपनी सेना लेकर रावण की लंका पर चढ़ाई कर दिया। उनकी सेना में शामिल नल और नील समुद्र के निवासी हैं। नल–नील ने समुद्र पार करने के लिए पुल बना दिया। पुल से होकर राम की सेना ने समुद्र पार लंका में लाल रंग की पताका फहरा दिया। रावण की लंका में राम की विजय का डंका बजने लगा।

तीनताला

हे एक तऊ जमुना गहिरी
दूजे अड़बड़ घाट
तीजे कन्हइया बइरी
जिया मारै हमार
जात रही जल भरन को पनघट
श्याम ने गागर फोरी। दूजे अड़बड़ घाट...

कान्हा की छेड़-छाड़ से परेशान होकर गोपी कहती है कि एक तो यमुना गहरी और दूसरे यमुना कन्हैया की प्रीति मेरे मन को पीड़ित करती है। मैं (गोपी) यमुना के किनारे पानी भरने जा रही थी। नटखट श्याम ने मेरी गागर फोड़ दिया।

लेजम

आए है बाजनी पैजनियाँ
सइयाँ मोरी है बाजनी पैजनियाँ
छमकति रेंगै पनिया
सइयाँ मोरी है बाजनी पैजनियाँ
सोने सलाई काजर पारै
छुपि छुपि मारै नजरिया हो
मोरी है बाजनी पैजनियाँ॥

चुलबुली नायिका अपने पति को बताती है कि मेरे पाँव में बँधी पायल बजने वाली है। जब मैं सधे हुए पाँवों से पानी भरने जाती हूँ तो मेरी पायल बजने लगती हैं। सोने की सींक से मैंने आँखों में काजल लगाया है और छिप-छिप कर अपने प्रेमी पर प्रेम के कटाक्ष चलाती हूँ।

डग्गा

हरि ए बाजै नगारा हो
बाजै शिवम का बाजा॥
बीतै घड़ी दुई चारि
शिवम का बाजा॥
ठाकुर दुआरे मादल बाजै
गंगा बीचे घड़ियार
नाहर बाजा बँधाने बाजै
बाजन केर दरबार
अनहद बाजा बाजै रोहिनिया मां
अनहद बाजा बाजै
शिव भोले का होत बियाह
बाजै नगाड़ा हो, शिवम का बाजा॥

शंकर जी का विवाह हो रहा है। उत्सव में कल्याणकारी लोक वाद्य नगाड़ा बज रहा है। दो-चार पल लगातार बाजा बज रहा है। ठाकुर यानी बड़े दरवाजे पर आदिवासियों का विशेष वाद्य मादल बज रहा है। तरह-तरह के वाद्य एकत्र हैं। गंगा के किनारे घंटे बज रहे हैं और ऊँचे बंधान पर नाहर वाद्य बज रहा है। रोहिनियाँ में अनहद नाद बज रहा है।

लेजम

हे बाजि रही पैजनियाँ छमाछम
बाजि रही पैजनियाँ
राजा दशरथ के तीनऊ रानी
बाजि रही पैजनियाँ॥
केखे सोहै पग पैजनियाँ
केखे कमर करधनियाँ
केखे मोहन माला छमाछम
बाजि रही पैजनियाँ॥
राम के सोहै पग पैजनियाँ
लछिमन कमर करधनियाँ
सीता के सोहै मोहन माला
बाजि रही पैजनियाँ छमाछम
बाजि रही पैजनियाँ॥

पाँव में बँधी पायल छमा-छम बज रही है। राजा दशरथ के तीन रानियाँ हैं। किसके पाँव में पायल शोभा दे रही है? किसके कमर में करधनी बँधी है? और किसके गले में मोहन माला लटक रही है? राम के पाँव में पायल बंधी है। लक्ष्मण की कमर में करधन है और सीता के गले में मोहन माला लटक रही है।

दहका

गोपाला गली मां गावै सखी
गाय गाय बीना बजावै सखी
गोपाला गली माँ गावै
गावत गावत वहां गयो
जहां की सांकर खोरी

राधा जी ये हुकुम दियो है
जाओ पकड़ कन्हैया लाओ सखी
गोपाला गली मां गावै सखी

मुँह लगी सखी बताती है कि वीणा बजाते हुए गोपाल (कृष्ण) गा रहे हैं। गाते-गाते राधा के घर की ओर जाने वाले संकरे रास्ते में पहुँच गये हैं। राधा सखी को आदेश देती है कि गोपाल को पकड़ लाओ।

बुंदेली

दई देओ बुलौआ गाने को नगर में
ए दै दो बुलौआ गाने को
कुंअर कलेऊ होय नगर में
दे देऊ बुलौआ गाने को॥

नगर में कुँवर कन्हैया का प्रातःकालीन ज्योनार होने वाला है। इस उत्सव में गीत गाने के लिए नगर बुलावा दे दिया जाय।

तीन ताला

कहे मेघनाथ की शक्ति
हो लछिमन के लाग
लई आवा मूल संजीवन
अंजनि के लाल
लई आवा मूल संजीवन
हे कहां धवला कहां मूल संजीवन
कहां रै वैद्य सुखेन
ले आबा मूल संजीवन
हो अंजनि के लाल॥

राम-रावण युद्ध का प्रसंग है। मेघनाद ने लक्ष्मण को शक्तिबाण मार दिया है। लक्ष्मण की चिकित्सा के लिए हनुमान मूल संजीवनी ले आओ। धवलागिरि और मूल संजीवनी कहाँ से प्राप्त होगी? और वैद्य सुषेण कहाँ रहते हैं?

बैसवारा

हरी ऐ अवध मां खेलैं
चारिऊ भाई अवध मां खेलैं
संग संग लीन्हे जनक दुलारी
अवध मां खेलैं॥
केखे हाथ ढोलकिया सोहइ
भला केखे हाथ मजीरा
कौने बीन बजाइ
अवध मां खेलैं॥
रामा के हाथ ढोलकिया सोहइ
लक्ष्मण हाथ मजीरा
भरतहि बीन बजाई
अवध मां खेलैं॥

जनक दुलारी सीता सहित चारों भाई अयोध्या में खेल रहे हैं। किसके हाथ में ढोल? और किसके हाथ में मजीरा है और बीन कौन बजा रहा है? राम के हाथ में ढोल सुशोभित है और लक्ष्मण मजीरा तथा भरत बीन बजा रहे हैं।

झूमर

सोने के गोड़रिया हो ओहिन पर दोहनियाँ
कहना की तुम ग्वालिन गुजरिया
कहना दधि बेचन जाय हो। ओहिन पर दोहनियाँ
बरसाने की ग्वालिन गुजरिया
मथुरा दधि बेचन जाय हो
सोने की गोड़रिया हो ओहिन पर दोहनियाँ॥

सोने की गोड़री (आधार) पर दधि की मटकी रखकर बेचने जाने वाली ग्वालिन तुम कहाँ की रहने वाली हो और दधि बेचने कहाँ जा रही हो? ग्वालिन उत्तर देती है कि मैं बरसाने गाँव की रहने वाली हूँ और मथुरा में दधि बेचने जा रही हूँ।

डग्गा

लकड़ी कोइला भई
कोइला जरि भई राख

मैं पापिन ऐसी जरी
कोइला भई ना राख।
खेलौ ना पाऊं पुतरिया
खेलौं ना पाऊं
लै गयो नन्द को लाल
हो खेलौ ना पाऊं पुतरिया

नववधू के द्वारा बड़ी गंभीर बात कहलाई गई है। आग में जलकर लकड़ी दहकता कोयला हो गई। कोयला बुझकर राख हो गया। नववधू अपने को ऐसा मानती है कि वह प्रीति की आग में जलकर कोयला और राख कुछ भी नहीं हो पाई। वह अपनी प्यारी पुतलियों से जी भरकर खेल भी नहीं पायी थी कि उसके पति उसे बुला ले गये।

लेजम

बही जाए हो धारा नदिया
बही जाय हो जल धारा नदिया
पुरइन पात जलै मा सिरजै॥
बही जाय हो धारा नदिया॥

नदी की जलधार बह रही है। कमल के पत्ते जल में उत्पन्न होते हैं। नदी की जलधार बह रही है।

दहका

भजिल्या सीताराम
तुलसी का माला लई के
भजल्या सीता राम
तुलसी का माला लई के

तुलसी की माला पर जाप करते हुए सीता राम का स्मरण कर लो।

बेलबरिया

फूलन मा कुम्हलानी सेजरिया
फूलन मा कुम्हलानी

सोवत अनोखी नारि सेजरिया
फूलन मा कुम्हालानी

नायिका फूल की सेज पर सो रही है। उसकी देह के ताप से सेज पर बिछे फूल कुम्हला गये।

चौताला

होली के होली के होली के खेलैया
आबा साल लइ देवै
कहना पायन या तन सखिया
कहना बेचन जाय। हो साल लइ.....
पन्ना पायन (पाया) या तन सइयाँ
रीवा हाट बिकाय। हो साल लई......

होली खेलने वाले रसिक को नायिका निमंत्रित करती है और शाल खरीद देने का वचन देती है। रसिक पूछता है कि तुम्हें यह सुन्दर शरीर कहाँ मिला अर्थात् तुम कहाँ की रहने वाली हो और कहाँ बिकने जा रही हो? सखी उत्तर देती है कि मुझे यह तन पन्ना में मिला हैं और रीवा शहर में बिकने जा रहा है।

श्री राधा हो माधौ जी के साथ, गयी हिंडोला झूलै
कइसन सखियाँ राधा के संग मा
भला कइसन मनमोहन के साथ, गयी हिंडोला झूलैं॥
नौ सै सखियाँ राधा के संग मा
भला दस सौ हो मोहन के साथ
गयीं हिंडोला झूलै॥

राधा जो माधव (कन्हैया) के साथ हिंडोला झूलने गयीं। राधा और माधव के साथ में कितनी सखियाँ हैं? राधा जी के साथ में नौ सौ सखियाँ और माधव के साथ में दस सौ सखियाँ हैं।

दादरा

लछिमन अऊर राम ए हो
संग सखा लिए जानकी जी होरी खेलै

केखे ओलिया केखे चोलिया ए हो
केखे हाथ अबीर संग सखा लिए
जानकी जी होरी खेलै॥
राम के ओलिया सीता के चोलिया ए हो
भला लछिमन हाथ अबीरा हो
संग सखा लिए जानकी होरी खेलै॥

राम-लक्ष्मण अपने सखाओं और सीताजी के साथ होली खेल रहे हैं। किसकी झोली, किसकी चोली और किसकी हथेली में अबीर है? राम की झोली, सीता की चोली और लक्ष्मण की हथेली में अबीर है।

दहका

हरि ए जनकपुर नीका
अरि ए जनकपुर नीका लागै
हो जहां सीता सहित भगवान
जहां सीता राम
जनकपुर नीका॥

जनकपुर जहाँ सीता और भगवान राम की उपस्थिति है, सुहावना लगता है।

बैसवारा

हरि ए लखन के लागे, हरि ए लखन के लागे
सक्तीवान नहि आए वीपीर हनुमान। लखन के लागे...
कहां धवला कहां मूल संजीवन
अरे जाय पवन सुत बूटी लावा
लखन होय सुख चैना । लखन के लागे...
गिर धवला मा मूल संजीवन
लंका वैद सुखेना। लखन के लागे.....
गये पवन सुत बूटी ना जानै
पर्वत लाय उठाय॥ लखन के लागे...

राम-रावण युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति बाण लगता है। वीर हनुमान वहाँ आये। औषधीय

पर्वत धवलागिरि कहाँ पर है? और संजीवनी बूटी कहाँ हैं? हनुमान धवलागिरि पर जाकर संजीवनी जड़ी-बूटी ले आओ, जिसके सेवन से लक्षण सचेत हो जायें। धवलगिरि में संजीवन है और लंका में वैद्य सुषेण है। हनुमान संजीवनी लेने गये और धवलागिरि को उखाड़ ले आये।

बुंदेली

बिन्दरावन एक गड़ा हिंडोलना हो
झूलत कुमर कन्हाई लाल
झूलत कुमर कन्हाई हिन्डोलना
झूलत कुमर कन्हाई लाल॥
राधा झुलामैं कृष्णा झूलै
ललिता खीचै डोर हिन्डोलना
झूलत कुमर कन्हाई लाल॥

वृन्दावन में हिंडोला गड़ा है और कन्हैया झूल रहे हैं। ललिता हिंडोले की डोर खींचती है। कृष्ण झूल रहे हैं और राधा झुला रही है।

बेलवरिया

जब धनुष जनक का तोड़ दिया, श्री रामचन्द्र बलधारी ने।
पहनायी गले जयमाल तब, सीता जनक दुलारी ने॥
सिया राम की छवि जोड़ी हो
सिया राम की छवि जोड़ी ॥
मिथिलापुर की नर नारि खुसी भई
जब राम धनुष का तोड़ी हो
सिया राम की छवि जोड़ी॥

पराक्रमी राम ने जनक द्वारा स्वयंवर में रखे धनुष को तोड़ दिया। जनक दुलारी सीता ने राम के गले में वर माला पहना दी। सीता-राम की जोड़ी बहुत सुन्दर रही। मिथिलापुर के स्त्री पुरुष इस छवि को निहार कर बहुत खुश हुए।

अरे मैं तो गयो तेरे सुदेखन नैना
जहां वृन्दावन रहस रचाय, सुदेखन नैना

देव तलाये मादर बाजै
गया बाजै घरियाल
बरहौ बाजा हुँअै बाजै
बाजा केरि दरबार। सुदेखन नैना

मैं तुम्हारे सुन्दर नेत्रों को देखने गया, वहाँ वृन्दावन में सहसा वाद्य बज रहा है। गया में घंटे बज रहे हैं। वृन्दावन में बारह प्रकार के बाजे बज रहे हैं।

दादरा

कबे अइहा मधुबन मा कन्हइया
कबे अइहा मधुबन मा
काली, काबरी, घुमई लाली
लइ लई नाव गोहरामय
कन्हैया कबे अइहा मधुबन मा॥

प्यारे कन्हैया! आप मधुवन में कब आयेंगे? कानी, कुबरी, धौरी और लाल रंग वाली गायें आपका नाम लेकर पुकार रही हैं।

हनूमान अलबेला हनूमान अलबेला
हमारो हनूमान अलबेला
लंका लड़त अकेला
हमारो हनूमान अलबेला

हनुमान अद्भुत योद्धा हैं। लंका में अकेले ही युद्ध कर रहे हैं।

महराजा के खाइन भात
भड़ारी पाती के
गोड़ धोवत के लपकत गरजत
पतरी परत बुंदिआय
भात सान के कऊर उचाइन
मोती महल अर्रान

भड़ारी पाती के
महाराजा के खाइन भात, भड़ारी पाती के॥

रीवा की भौगोलिक स्थिति से जुड़ा फाग है। पाती गाँव के निवासी भण्डारी है। महाराजा के यहाँ भात खाने के लिए पाँव धोते समय बादल लपकने गरजने लगा। पत्तल डालते समय बूँदा–बाँदी होने लगी और कौर उठाते समय तो महाराजा का मोती महल ही घर–घरा उठा।

महफिल में आज, लाज शारदे राखो
बीणा वाली भोली भाली, मूरत जरा दिखला दो
रसना पर बसना हर दम, छन्द को जगा दो
बजा दो वीणा हो जाय बुद्धि प्रवीणा
बढ़िया स्वर राग, बैठ जीभ पर गावै
मस्ती का फाग, तोहरे खातिर मैया
यहां जुड़ी समाज, लाज शारदे राखो
महफिल में आज, लाज शारदे राखो॥

हे सरस्वती माँ! इस सत्संग सभा में मेरी लाज बचाओ। वीणा बजाती हुई भोली भाली मूर्ति का दर्शन दो। मेरी जिह्वा पर निवासकर छन्द को जागृत कर दें। मधुर स्वर राग में मैं गाऊँ। तुम्हारे लिए देवी सुन्दर फागेगा सकूँ।

दहका

भादौं के अन्धियारी रात रे
कन्हैया जनम लिहिन गोकुला में
कन्हैया जनम लिहिन गोकुला में
भौदौं के अन्धियारी रात॥

भादौं माह की अँधेरी रात्रि में कृष्ण ने गोकुल में जन्म लिया।

दहका

छल करने को आयी पूतना हो
छल करने को आयी

छाती जहर लगाय पूतना हो
छल करने को आयी
छल करने को आयी पूतना हो
छल करने को आयी॥

राक्षसी पूतना बाल कृष्ण से छल करने आयी। वह अपने स्तनों पर विष लेप लगाये थी जिससे स्तन पान करने पर बालक कृष्ण की मृत्यु हो जाये।

तीनताला

बृजबसिया हो रोकै हमार डगरिया
माई बाप केर हौं लोलारी
हाथे ना छुऔ रसरिया
ऐसो बेदर्दी से पाला पर्यो है
फोरे मोर गगरिया हो
बृजबसिया हो रोकै हमार डगरिया

ब्रज के निवासी कन्हैया गोपियों के आने-जाने वाली राह में छेड़-छाड़ करते हैं। गोपी शिकायत करती है। मैं अपने माता-पिता की दुलारी बेटी हूँ। मुझसे रस्सी उठाने तक को नहीं कहा गया किन्तु कन्हैया इतने कठोर हैं कि मेरी गागर ही फोड़ डालते हैं।

दहका

रथ साजे जनक दुलारी
रथ साजे जनक दुलारी
राम का हैं चली फुलवारी
रथ साजे जनक दुलारी

जनक दुलारी सीता श्रीराम से मिलने के लिए पुष्प वाटिका में रथ सजाकर जाती हैं।

तीनताला

बन निकरे जायं राम लखन दोउ भाई
आगे आगे राम चलत हैं पीछे लछिमन भाई

उनके बीच मा चलै जानकी सोभा बरनि ना जाई।
रिमझिम रिमझिम पानी बरसै, पवन चले पुरवाई
कौन वृक्ष तर भीजत होइ हें सिया सहित दोउ भाई॥
भीतर रोमैं माता कौशल्या बाहर भरत भाई
राजा दशरथ प्रान तजत हैं कैकेई पछताई॥
राम बिना मोरी सूनी अयोध्या लछिमन बिन चौपाई
सीमा बिना मोरी सूनी रसोई, जेमन कउन बनाई॥

राम-लक्ष्मण दोनों भाई वनवास की यात्रा पर हैं। राम आगे-आगे चल रहे हैं और लक्ष्मण पीछे हैं। दोनों के बीच में सीता हैं। वर्षा के बूँदों की झड़ी लगी है। पुरबा हवा चल रही है। किस वृक्ष के नीचे वन में सीता सहित राम-लक्ष्मण भीग रहे होंगे? माता कौशल्या महल के भीतर रो रही है। भरत भाई बाहर रो रहे हैं। राजा दशरथ प्राण त्याग करते हैं। कैकेई को पश्चाताप होता है। राम के बिना सारी अयोध्या सूनी लगती है और लक्ष्मण के बिना चौपाल सूना है। सीता के बिना रसोई गृह सूना है। ज्योनार कौन बनाये?

हरि ए कमर के पातर
गोरी हो कमर के पातर
धीरे-धीरे उठावै पांव
कमर के पातर। गोरी हो........
एक तो गोरी खुदै है पातर
दूजे बहै पवनमा हो
तीजै गोरी झपट के रेंगै
अँचरा उड़ि उड़ि जाय हो।
अरि ए कमर के पातर गोरी हो॥

गौरांगी पतली कमर वाली है। वह धीरे-धीरे पाँव रखती है। एक तो गोरी कमर की पतली है। दूसरे हवा चल रही है। तीसरे गोरी झपट्टा मार के चलती है जिससे उसका आँचल बार-बार हवा में लहराता है।

नारदी

रामा धनुष को तोड़ो
रवि मारग भूल गयो

आड़ - *ऊंचे अटा से सीता निहारे*
कब अइहई दोनो वीरा

चलावनी- शीश कपै मुनि ध्यान छूटै
रवि मारग भूल गयो।
हो रामा धनुष को तोड़यो
रवि मारग भूल गयो।

होली- *राम धनुष तोड़न को चले*
देखत नर और नारी
रहा उठाना दूर, न तिलभर टारस के बलधारी
बाणासुर लंकापति रावण की भी हिम्मत हारी
रामा धनुष तोड़न को चले
देखत नर और नारी

दहका - *टूटे ना धनुष मोरी गुइयां*
राम लखन की लड़कइयां

राम ने सीता स्वयंवर के लिए रखे धनुष को तोड़ दिया। सूर्य देव अपना पथ भूल गये। ऊँची अटारी से सीता देख रही हैं कि राम-लक्ष्मण दोनों वीर कब आयेंगे? मुनियों के शीश काँप उठे और उनका ध्यान साधना से टूट गया। जब राम धनुष तोड़ने के लिए तत्पर हुए तब जनकपुर के स्त्री-पुरुष टकटकी लगाकर उन्हें देखने लगे। बड़े-बड़े बलवान राजाओं ने धनुष तोड़ने की चेष्टा की किन्तु धनुष को तिलभर हिला-डुला नहीं सके। लंकापति रावण और बाणासुर जैसे शूरवीरों की हिम्मत छूट गई। जनकपुर की सखियाँ शंका करती हैं कि अभी तो राम-लक्ष्मण दोनों भाइयों का बाल्यकाल है, इनसे धनुष कैसे टूटेगा?

नारदी

फाग- *चली जगतारण गंगा*
मृत्युलोक को आयी।

आड़- *कौने दिसा से आयी मोरी गंगा*
कौन दिसा का चली जायी

चलावनी- *शिव शीश जटा से गंगा बही*
त्रिवेणी नाम तुम्हारो री

जगतारण गंगा हो मृत्युलोक को आई॥

होली– *शंकर तेरी जटाजूट में बहती गंग की धारा*
पीताम्बर बाघाम्बर ओढ़े शेषनाग लपटायो
माथे बांधे तिलक चन्द्रमा जोगी जटा बढ़ायो

दहका– *बाजे डमरू डफ और बीना।*
सदासिव बाबा बैल असवारे॥

लोकोद्धार को देव नदी गंगा धरती पर उतरी। गंगा जी किस दिशा से आयी और किस दिशा की ओर चली जा रही हैं? शिव की जटा से गंगा प्रवाहित हुई और त्रिवेणी नाम धारण किया। शिव जी की जटा से गंगधार बहती है। शिवजी पीताम्बर–बाघाम्बर ओढ़े हैं और गले में शेषनाग की माला पहने हैं। वीणा और डमरू बजा रहे हैं। सबका सदा कल्याण करने वाले भोले बाबा बैल पर सवार हैं।

नारदी

फाग– *मोरी लाज राखो गिरधारी*
हे मुरारी मोरी लाला राखो गिरधारी
आड़ जैसी लाज रखी अर्जुन की
चक्र सुदर्शन धारी

चलावनी– *गणिका गिद्ध अजामिल तारी*
तारी गौतम नारी
सभा विच राखी लाज मुरारी

होली– *पइयां परूँ कर जोरि, श्याम सुन बिनती मोरी*
खींचत मोर दुसासन सारी
एकौ नहि सरभायो पांचों पति मौन है
बैठे अपना शीश नवाये
श्याम सुन बिनती मोरी।

दहका– *लाज बचा ले मेरी आकर*
मोहन मुरली वाले॥

गिरि को धारण करने वाले गिरिधारी आप मेरी प्रतिष्ठा की रक्षा करो। जिस प्रकार सुदर्शन

चक्र लेकर अर्जुन की प्रतिष्ठा बचायी है, वैसे ही मेरे लिए भी करें। हे प्रभु! आपने गीध, गणिका, अजमिल, गौतम और नारी अहल्या का उद्धार किया है। सभा के बीच में द्रोपदी की लाज बचा दी है।

द्रोपदी विलाप करती है– हे श्याम! मैं हाथ जोड़कर तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ। मेरी पुकार सुनो। दुष्ट दुशासन मेरी साड़ी खींच रहा है। उसे थोड़ी सी शर्म नहीं आ रही है। मेरे पाँचों पति मौन बैठे हुए हैं। उनके शीश झुके हैं। हे मुरली वाले मोहन! आकर मेरी लाज बचाओ।

नारदी

नैना तुमसे लागे प्यारो
तुम चलत बटोही ना मारो

आड़– *लै कजरौटी काजर पारै*
रूचि रूचि नैना ता ही संभारो

चलावनी– *बांके नैना कटारी ना मारो*
संग सिरोही धरो, नैना लागे प्यारो

होली– *काहे बैठी हो मत मारे री*
गोरी नैना संभारो
कर सिंगार पलंग चढ़ि बैठै
सुन्दर नार नगीना
चोली के बन्द तड़ातड़ टूटै
पोछत जात पसीना
गोरी चलत बटोही ना मारो

दहका– *नैन तुम्हारे रसीले गोरिया*
तुम जइहा काहू के बाग गोरिया॥

कोई रसिक कहता है कि गोरी हमारी– तुम्हारी आँख मिल गई है। चलते पथिक को पीड़ित मत करो। कजरौटे के काजल को बड़े ही सलीके से आँखों में लगा लिया है। तुम अपने रसीले नयनों के कटाक्ष से मुझे मत सताओ। गोरी तुम उदास क्यों बैठी हो? अपनी आँखों का श्रृँगार करो। सुन्दरी श्रृँगार करके पलंग पर चढ़ो चटककर टूट रहा है। काम के ताप से उसकी देह से पसीना टपकता है। वह बार–बार पसीना पोछती है। सुन्दरी तुम्हारे नेत्र रसदार है। तुम किसके बगीचे में जाओगी।

नारदी

भोलानाथ दिगंबर या दुख दूर करो

चलावनी– *जाय भरो हरि द्वारे मा कामर*
भैरव पार करो, हो भोलानाथ दिगंबर

होली– *खेलो सखी संग होरी हो*
बृज राज दुलारे
इतसे निकरी नवल राधिका उतसे कुंअर कन्हाई
खेलत फाग कदम हरि बैठे
सोभा बरनि ना जाई। बृजराज दुलारे

दहका– *मन मोहे तीनों लोका*
या दिन आये महादेव बाबा

दिशाओं का वस्त्र धारण करने वाले भोले नाथ शंकर कष्ट को दूर करो। विष्णु के द्वार जाकर जल की कामर भरो। भैरव कष्ट को दूर करो। ब्रजराज दुलारे कन्हैया सखियों के साथ होली खेलते हैं। इधर से नई नवेली राधा निकलती हैं और दूसरी ओर से कन्हैया आते हैं। होली खेलते हुए कन्हैया कदम की डाल पर चढ़ जाते हैं। इस फाग खेल की शोभा का वर्णन करते नहीं बनता। सलोना रूप मन को बाँध लेता है।

नारदी

फाग– *कागा बोलन लागे पिया के आँगना*

आड़– *उड़हु तू काग जाऊ दक्खिन का*
खबर ले आओ मोरे बलमा की।

चलावनी– *कब आयेंगे सैयां मोर परदेसा से बालम*

होली– *टूटै बरा कय डार हो प्यारी*
पानी का अब तुम ना जा
छीकत गोरी पानी का निकरी
बोलय कागा, कीता फूटै तोर धइलना हो
हो टूटे बरा की डार हो गोरी पानी का ना जा

दहका– *मोरी बाटी से उड़जा रे कागा तै*
मोरी बारी से उड़ जा रे कागा॥

प्रियतम के आँगन में कौआ बोलने लगा। नायिका आग्रह करती है कि काग तुम दक्षिण दिशा की ओर जाओ और मेरे प्रियतम का समाचार ले आओ। मेरे परदेसी प्रियतम घर कब आयेंगे? प्यारी अब तुम पानी भरने मत जाना। बरगद की डाल टूटेगी। नायिका छींकती हुई यानी अशुभ संकेत देती हुई पानी भरने चली। अपशकुन का अर्थ निकाला गया कि या तो पानी का घड़ा फूटेगा या बरगद की डाल टूटेगी। नायिका खीझ कर कहती है कि कौवे तू मेरी बाड़ से उड़ जा।

नारदी

फाग– *मोरी टेर सुनो बनवारी मुरारी*
टेर सुनो बनवारी।

आड़– *द्रुपद सुता की टेर सुनी करूणा निधि*
तुरतय चीर बढ़ायो

चलावनी– *भीष्म, द्रोण मौन होई बइठे*
पाँचो पती सिर धरी हमारी टेर सुनो

होली– *टेर सुनो बनवारी, लाज राखो गिरधारी*
कान झनक जब परी कृष्ण के
जरा ना देर लगी
द्रुपद सुता के लाज बचायी
साड़ी दई बढ़ाई॥ लाज रखी.....

दहका– *साड़ी दई बढ़ाई मुरारी साड़ी दई बढ़ाई।*
टेर सुनी बनवारी मुरारी राखी लाज हमारी॥

बनवारी मुरारी मेरी पुकार सुनो। हे करूणा निधान! आपने द्रोपदी की आर्त पुकार सुनकर तुरन्त उनकी लाज की साड़ी बढ़ाई है। भीष्म, द्रोण और द्रोपदी के पाँचों पतियों ने अनीति का विरोध नहीं किया। चुपचाप बैठे रहे। कृष्ण ने जब द्रोपदी की पुकार सुनी तो किंचिंत भी विलम्ब नहीं किया। साड़ी बढ़ाकर द्रोपदी की लाज बचा लिया। मेरी पुकार सुनो मुरारी।

नारदी

फाग– *मोहन आज भयो, मोहन आज भयो।*
सखियां सब आके मिलें, मोहन आज भयो।

आड़– *बहुतै दिनन में आये हो मोहन*
खेलत राधा प्यारी संग।

चलाउनी– *काली दह में कूद परो मथुरा में शोर भयो*
हमारे मोहन आज भयो सखियां सब आन मिली

होली– *अपनें पिया की दुलारी हो स्याम*
मो सों खेलो ना होरी
जाय कहो तुम नन्द बाबा से
इतनी है अरज हमारी
सास ननद मोहि जाने ना देहैं
देइहैं हजारन गारी
श्याम मो सों होरी ना खेलो।

दहका– *जमुना जी मा नैया डराबा*
कालिन्दी गहिल गै

ब्रज की सखियाँ कृष्ण को पाकर कहती हैं कि आप बहुत दिनों बाद मिले हैं। हम लोग राधा के साथ तुम्हें खोज रहे थे। जब तुम यमुना की काली धार में कूद गये थे तो मथुरा में कोलाहल मच गया था। हे श्याम! मैं अपने पति की बहुत प्यारी हूँ। मुझसे होली मत खेलो। नन्दबाबा से जाकर बताओ, मेरी यह विनती है। मेरी सास और ननद मुझे घर के भीतर नहीं जाने देगी और हजारों गालियाँ देंगी। यमुना नदी में नाव चलवाओ, वह बहुत गहरी हो गई है।

नारदी

फाग– *जननी मै ना जिअब बिन राम*
आड़– *तुम रघुवंश दीन बन आगी*
नहीं वर सोच मातु घर भागी

चलावनी– *राम लखन दोऊ वन का गये हैं*
पिता गये सुरधाम
जननी मैं ना जियब बिन राम।

होली– *बाजत अनद बधाई, अवध आये रघुराई*
सरयू के तीरे अयोध्या नगरी
सुन्दर सरल सुहाई
उड़त विमान अटा के ऊपर
देखत लोग लोगाई, अवध आये रघुराई॥

दहका– *दसरथ के चारिऊ लाल मिल के*
सतरंग होरी खेलै॥

भरत जी अपनी माता कैकेयी से कहते हैं कि मैं राम के बिना जीवित नहीं रहूँगा। तुमने रघुकुल में आग लगा दी है। सोच–समझकर वरदान नहीं माँगा। राम–लक्ष्मण दोनों भाई वन चले गये, जिसके वियोग में पिता जी ने अपने प्राण त्याग दिये।

वनवास काल पूरा कर जब राम अयोध्या वापस आये तो आनन्द की बधाई बजने लगी। सरयू तट पर बसी अयोध्या नगरी सुहावन हो गई। महलों की ऊँची अट्टालिका के ऊपर राम का विमान मडराने लगा जिसे नगर के नर–नारी आनन्द विभोर होकर देखने लगे। दशरथ के चारों राजकुमार राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न सतरंगी होली खेलने लगे।

नारदी

फाग– *मो पर डारो ना टोना, रंग सोहै श्याम सलोना*

आड़– *माता जसोदा राई नोन उतारैं*
कोऊ ना डार्या जादू टोना

चलावनी– *सो बृज राज गले मोरे लगना*
कृष्ण रूप मन मोहे
मो पर डारो ना टोना हो मो पर डारो ना टोना

होली– *छोड़ो बांह हमारी श्याम बृजराज बिहारी*
कौ बृजराज बिरज सिगरे की
यह छबि की हरि ग्वारी
वन तन पर रार श्याम मय कीन्हो
तुम सम ही मद भारी श्याम बृजराज बिहारी

दहका– *कुंजन मा होरी होय रे*
सवेरे चला, जहां कन्हैया खेलै होरी।

श्याम के सलोने रूप पर टोना मत डालो। माता यशोदा श्याम के लिए जादू-टोना दूर करने वाला अभिचार राई लोन उतारती है। ब्रज के राजा आपके यश में मेरा मन मोहित है। मुझे अपने गले से लगा लो। मानिनी ग्वालिन कहती है कि ब्रज में विहार करने वाले मेरी बाँह छोड़ो। क्या मैं सारे ब्रजवासियों की नायिका हूँ? श्याम सारा ब्रजमण्डल आपके रंग में रंगा है। मैं भी तुम्हारी ही तरह उन्मत्त हूँ। कुंजन वन में कन्हैया होली खेल रहे हैं। बड़े सुबह वहाँ पहुँचा जाय।

नारदी

फाग- *पिया बिना फागुन लागे कैसे, धीर धरे ना*

आड़- *हाथे लिहे बैसाखी के नाई*
ठेगत ठेगत या प्रभु आये

चलावनी- *बिरही बिनु वायु बयार बहै*
बिन आगी अंग जलै मोरा
पिया बिन फागुन लागै कैसे, धीर धरी।

होली- *या फगुआ की बहार पिया संग खेलब होरी*
उतरै कातिक लागै अगहन आवै पूष महीना
माधौ में पिया आवन कहिगें
फागुन मस्त महीना, पिया संग खेलब होरी

दहका- *फागनु मा बीता जाय रे*
हमारो बालम बिना॥

नायिका बताती है- प्रियतम के बिना फागुन महीना कैसा लगता है? बैशाखी की सहायता से मेरे प्रभु आये। प्रियतमा के बिना चारों ओर से तप्त वायु चल रही है। मेरी देह आग बिना भी जल रही है। प्रियतम के बिना फागुन महीने में कैसे धीरज धारण करूँ।

फगुआ के वातावरण में प्रियतम के साथ होली खेलने की चाह थी। कार्तिक, अगहन और पौष माह बीत गये। माघ महीने में मेरे प्रिय ने आने के लिए कहा है। फागुन के मस्त महीने में प्रियतम के साथ होली खेलने की चाह है। प्रियतम के बिना फागुन माह बीता जा रहा है।

आली कैसे मिलेंगे रघुवंशी और अहीर

आड़- *दीन दयाल विरद संभारी हरहु नाथ मम संकट भारी*

चलावनी- *राम श्याम दोनों ढुरकत आवै*
उड़त गुलाल अबीर
कैसे मिलेंगे रघुवंशी और अहीर

होली- *बाजत अनंद बधाई हो आये रघुराई*

अंतरा- *चन्दा को घेरे कारी बदरिया*
लंका घेरे हनुमान
सोरह सौ सखियाँ घेरे कन्हइया
मागे दही का दान, अरे आए रघुराई

सखी सन्देह करती है कि रघुवंशी राम और ग्वाल श्याम कैसे आपस में मिलेंगे? दीन-दुखियों पर दया करने वाले हे नाथ! मेरा संकट दूर करो। राम और श्याम दोनों प्रसन्नता से लड़खड़ाते हुए आये और गुलाल-अबीर उड़ाया। रघुराई राम के आने पर आनन्द-बधाई बजने लगी। चाँद को काले-काले वीर हनुमान घेरे हैं। कान्हा को सोलह सौ सखियाँ घेरे हैं जिनसे कान्हा दही का दान माँगते हैं।

नारदी

नैना नींद ना आवै, हम देखेन हैं सपना

आड़- *जब से गयो मोरी सुधहि ना लीनी*
नहि लिख भेजा संदेश

चलावनी- *आज की रैन सपन (सपना) हम देखेन*
सइयाँ सेज परे हो, नैना नींद ना आवै

होली- *लै कजरउटी काजर पारै*
रूचि रूचि नैन बनावै॥

लोक नायिका बताती है कि मैंने स्वप्न देखा है। मेरी आँखों में नींद नहीं आती। मेरे प्रिय जबसे परदेश गये, मेरा स्मरण नहीं किया और पत्र भी नहीं भेजा। आज की रात मैंने स्वप्न देखा कि मेरे प्रिय मेरे साथ सेज पर लेटे हैं। मैंने अपनी आँखों की कोरों को काजल से रूचिपूर्वक संवारा है।

दहका

आल्हा का बीना बाजै
हो मलखे का सितार
घोड़ा बेदुलिया नाचै
उदल असवार

वीर आल्हा की वीणा बज रही है ओर मलखान की सितारा ऊदल वीर बेदुलियां घोड़े पर सवार हैं।

दहका

अमरइया मा कोइली बोलै
कहै सुन सुअना रे
रंग भरी देहिया
गमना कई दया मोर

आम के घने बगीचे में बोलने वाली कोयल तोते से प्रस्ताव करती है कि मेरी देह में यौवन का रंग आ गया है। मेरा गवना कर दिया जाय यानी पति के घर जाने दिया जाय।

नारदी

स्थायी– *होरी खेलैं मतवाला योगी डमरू वाला*

दादरा– *डूँड़ा बैल शेश लपटाये, गले मुण्डन की माला*

अन्तरा– *अक्षत चारू बेल की पाती*
रीझत गाल बजाय या डमरूवाला।
शशि ललाट सुन्दर सिर गंगा
अंग भभूती रमाये
नयन तीन सुग्रीव भुजंगा शेषनाग लपटाये।
सदाशिव के गुण गाये मनवाँछित फल पाये
अक्षत बिल्ब पत्र युत जल के, जो कोई आय चढ़ावे
ता पर शिव प्रसन्न हो जावें, मनवाँछित फल पावे

होरी– *होरी खेलैं मतवाला सदासिव होरी खेलैं मतवाला*
मोगिया डमरूवाला सदासिव॥

डमरूवाला मतवाला योगी शिव होली खेल रहा है। शिव एक सींग वाले बैल पर सवार हैं। शेष नाग लिपटाये हुए हैं और गले में मुण्ड–माला पहने हैं। अक्षत और बेल की पत्ती अर्पित करने पर डमरूवाला शिव प्रसन्न होता है। ललाट पर सुन्दर चन्द्रमा है। शीश से गंगा की धार बह रही है और शरीर पर भस्म धारण किये हुए हैं। उनके तीन नेत्र हैं और गले में काला नाग लिपटाये हैं सदाशिव का गुणगान करने पर मनचाहा फल मिलता है।

बुंदेली

जियरा धरै ना धीर
बिना देखे उठत करेजवा से पीर॥
जब सुधि आवै हँसन बोलन की
उठत करेजवा से पीर॥
सूर श्याम ललिता उठि बोली
आखिर जात अहीर॥

श्याम से प्रीति करने वाली ललिता उलाहना देती है कि श्याम को देखे बिना मन अधीर रहता है। श्याम के उठने–बैठने, हँसने–बोलने की जब भी याद आती है तो हृदय में पीड़ा उठती है। सूरदास के शब्दों में ललिता कहती हैं कि श्याम आखिरकार जाति का अहीर ही तो है।

नारदी

स्थायी– *नहि आये श्याम हमारे हो परदेसी बालम*

दादरा– *जब से गये मोरी सुधहूं ना लीनी*
लिख चिठिया ना पठाये

अन्तरा– *उड़ि जा कागा तोही मारत हैं*
कब आवै श्याम हमारे परदेसी बालमा
ओई द्रुमलता ओई वन कुन्जन
ओई तरवर ओई पात
जब से बिछुड़ गये यदुनन्दन

नहि कोऊ आवत जात,
कहै ना काऊ परदेसी की बात

दहका– *गोपाला गली मा गावै सखी गोपाला गली मा गावै*
गाय गाय बीना बजावै सखी गोपाला गली मा गावै॥

मेरे परदेशी प्रियतम श्याम नहीं आये। मुझसे अलग हो जबसे परदेश गये, मेरी सुधि नहीं लिया। पत्र भी लिखकर नहीं भेजा। कौवे तुम उड़कर जाओ और सन्देश लाओ। मेरे परदेशी प्रियतम श्याम कब आयेंगे? कुंज वन वही है लतायें भी वही हैं। वृक्ष और डालियाँ भी वही हैं। किन्तु कुछ भी सुहाने नहीं लगते। यदुनन्दन श्याम जबसे बिछुड़े हैं उधर से कोई पथिक भी नहीं आता–जाता कि परदेशी की कुछ खबर मिले। अरे? सखी! गोपाल वीणा बजाकर गलियों में गाते फिर रहे हैं।

मैं ना खेलौं ऐसी होरी साँवरिया
मो पर डारे अबीर और रोरी
वृन्दावन की सांकर खोरी निकरी सखी बांह जोरी
सिर पर लीन्हे गगरिया बरसाने मां जाय समानी साँवरिया॥
अरी ऐ नंद का लाला रस रंगा हम पर डाला
कान्हा मारे पिचकारी, मोरी भीजै कुसुम रंग सारी साँवरिया॥
मुख गोरे हैं लाल पनहियां, सिर मोतिन के ओढ़े ओढ़नियाँ
गले बैजंती माला कहावै, नंद का लाला साँवरिया॥

सखियाँ कहती हैं– श्याम मैं इस प्रकार की होली नहीं खेलूँगी। तुम मेरे ऊपर रंग–अबीर डालते हो। वृन्दावन के रास्ते सकरे हैं, जिससे आते–जाते समय सखियों से श्याम की देह छू जाती है। एक सखी सिर पर गागर लेकर वृन्दावन पहुँच गई। नन्द के लाल श्याम ने सखी पर रंग डाल दिया। श्याम की पिचकारी से निकले रंग से गोरी की कुसुम रंग की सड़ी भीग गई। गोरे मुख वाली लाल साड़ी पहने हैं। दूसरी ओर नन्दलाल श्याम गले में वैजयन्ती माला पहने हैं।

काहै मचाय आये सोर पपिहवा
मोर पिया गये परदेस पपिहवा
काहे मचाय आये सोर॥
नदी किनारे सारिस बोलै
वन मा बोले मोर। काहे मचाय आये सोर॥

आधी रात पपीहा बोलै
मैं जानू पिया मोर। पपिहवा काहे मचाय आये सोर॥

पपीहे तू क्यों शोर मचा रहे हो? मेरे प्रियतम परदेश में हैं, नदी के किनारे सारस बोल रहा है। वन में मोर शोर मचा रहा है। अर्द्ध रात्रि में पपीहा बोल उठा। विरहिणी नायिका को लगा कि उसका परदेशी पति बोल रहा है।

दहका

रामै अनंदा भजो रामै अनंदा
करि जैहे जनम के फंदा, भजो मन रामै अनंदा॥
अवध पुरी निज धामा, जहां जनम लिहिन श्री रामा।
उत्तर सरयू बहै नीरा, जहां पाप ना रहे सरीरा॥

रे मन! आनन्द देने वाले राम का भजन करो। भजन से जन्म बन्ध कट जायेंगे। अवधपुरी में श्रीराम ने जन्म लिया है। उत्तर की ओर सरयू नदी बहती हैं।

दहका

राम लखन दोऊ बारे, गढ़ लंका का होइगै तैयारी
टोरि के सब नष्ट कीना, राज विभीषण दीना॥

राम-लक्ष्मण दोनों वीरों ने रावण की लंका पर चढ़ाई करके नष्ट कर दिया और लंका का राज्य विभीषण को सौंप दिया।

दहका

महावीर हनुमंता कदू पड़े गढ़ लंका
लंका जारि कै आये, वही जानि मुदरिया लाये॥

महावीर हनुमान रावण की लंका जलाकर आ गये और साथ में पहचान के लिए चूड़ामणि ले आये हैं।

दहका

माथै ना दें दहिया मोर ओइसै कन्हाई लेय रे॥
कऊने काठ की बनी मथनिया काहेन नेता लागे
कउन सखी दहिया बगरावैं कउन कुंअर के साथ॥
चंदन काठ की बनी मथनिया रेसम नेता लागे
राधा सखी दहिया बगरावैं कृष्ण कुंअर के साथ॥
मथै मथनियाँ दधि बगरावै कर से नेता ले
फिटिका दही जामुन दह गिरिगा
हँसि के कन्हइया लेय रे। माथै ना दें दहिया

यशोदा माता! मेरी दही कन्हैया मथने नहीं देता, वह जबरन ही छीनकर ले जाता है। दधि मथने की मथनी किस लकड़ी की बनी है और उसे खींचने के लिए रस्सी कैसी है? कौन-सी सखी दहि फैलाती है? और कौन कुँवर दहि खाता है? मथनी चन्दन काष्ठ की है और रस्सी रेशम की है। राधा रानी दधि फैलाती हैं और कान्हा दधि खाते हैं। कान्हा ने दधि की मटकी यमुना में फेंक दिया। राधा शिकायत करती है कि कान्हा दधि नहीं मथने दे रहे हैं।

बही जाय एक धारा हो नदिया बही जाय एक धारा
सब सन्तन पार उतारा हो, नदिया बही जाय एक धारा
भव सागर एक नदी बही है लख चौरासी धारा
पुण्यी पुण्यी पार उतरिगे पाप बहै मजधारा॥ हो नदिया.......
जैसे सती चढ़ी सत ऊपर, पुरुष वचन नहि टारा
आप तरी औरों को तारी, तारी कुल परिवारा॥ हो नदिया.......
जैसे सूर चढ़े रन खातिर बांधि सकल हथियारा
जिनके ताव रहा लड़िगें को भीम सेन ललकारा॥

संसार सागर में नदी की एक प्रबल धार बह रही है। संत जन अपने पुण्य कर्म से नदी को पार कर गये। दुष्ट आत्माएँ बीच धार में ही डूब गई। अपने कुल परिवार के उद्धार के लिए, वाणी की रक्षा के बहुतों ने बलिदान किया। जिस प्रकार सूरमा अस्त्र-शस्त्र लेकर रण में कूदते हैं। भीमसेन की ललकार पर युद्ध करते हैं।

बैसवारा

अरी ए सुमिर दुर्गा का जो मन होय रे
जेहि सुमिरे से सिद्धि होय सुमिर दुर्गा का।
ध्वजा सुपाड़ी हाथ नारियल मन्दिर का पग धारे
भीतर से जगदम्बा बोली जो मागै सो पावै। सुमिर दुर्गा का......

दुर्गा देवी का स्मरण करो, जिसके स्मरण से कार्य की सिद्धि होती है। पताका, सुपाड़ी और नारियल साथ लेकर मन्दिर में प्रवेश करो। मन्दिर के भीतर से दुर्गा देवी ने कहा कि–जो कुछ माँगोगे वह मिलेगा।

बैसवारा

अरी ए मिला नंदलाला कुंजन वन मा
दधि माखन चुराने वाला मिला नंदलाला।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल गले वैजन्ती माला
पीत बसन घनश्याम मनोहर पांव मा घुँघरू वाला।
होरी खेलै नन्द लाला बिरज मा
गलियन उड़ै गुलाला। बिरज मा॥

माखनचोर नंदलाल से कुंजवन में भेंट हुई। नंदलाल के शीश पर मुकुट है। कानों में मकराकृत कुण्डल लटक रहा है। गले में बैजन्ती माला है। पीत वस्त्र धारण करने वाले घनश्याम के सुन्दर पावों में घुँघरू बँधा है। नन्दलाल ब्रज में होली खेल रहे है। रंग और अबीर उड़ रहा है।

लेजम

अरी ए राधिका झूलैं, झुलावै सब सखियाँ
संगे सखी राधिका झूलै॥
झूला झूलन गयी राधिका, केशर डाल ओनाई
डार टूट अखियन मां आई, चोली अँचल फहराई।
राधिका झूलै॥

सखियों के साथ राधा रानी झूला झूल रही हैं। झूलते समय केशर की डालें टूटकर आँखों में आ गई। राधा की चोली और आँचल फहराने लगा।

लेजम

अब के गये कब अइहै हो रघुबर वन से
सीता सहित अनुज संगै लई के चौदह बरस बितावैं
चरण कमल पग धरत सेज पर, कुशा का सेज बनावैं।
अब के गये कब अइहै हो रघुबर वन से। कब अइहै....... ॥

राम आप बनवास से वापस कब आयोगे? सीता और लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष तक वन में निवास करना है। आपके कमल जैसे चरण फूलों की सेज पर रहते हैं। वन में कुश की सेज पर सोना पड़ेगा।

श्याम बजाय के बीना हमें वश कीना॥
अन्न बिना जैसे प्राण दुखित भये
जल बिन जैसे मीना।
पुरुष बिना जैसे नारि दुखित भयी
दिन दिन होत मलीना॥
अट पट ताल देत वंसिन में
मधुरी शबद सुनावै
पलंग सेजरिया नींद ना आवै
घर अंगना ना सोहावै॥
हमें वश कीना श्याम बजाय के बीना॥

प्रेम बावरी नायिका कहती है कि श्याम ने वीणा बजाकर मुझे अपने वश में कर लिया है। अन्न के बिना प्राणी दुखी होते हैं और पानी के बिना मछली। पति के बिना दुखी पत्नी दिन प्रतिदिन मलिन होती रहती है। मेरी भी दशा ऐसी ही है। वंशी पर अद्‌भुत ताल बजाकर मधुर स्वर निकलता है जिसके कारण मुझे अपनी सेज पर नींद नहीं आती और घर-आँगन अच्छा नहीं लगता।

दहका

अरे हां, राम के कलगी सोहै माथे मा
दोनों कुण्डल सोहै काने मा, राम के कलगी सोहै

राम के मस्तक पर कलंगी और कानों में कुण्डल शोभायमान है।

दहका

अरे हां, राधिका तोरे बिलरी के कारन
होइगे मोर कन्हैया चोर बिलरी के कारन॥

राधा! तुम्हारी बिल्ली के कारण मेरा कान्हा चोर माना जाने लगा।

दहका

अरे हां, रोहिनिया में अनहद बाजा बजत है
शिव भोले का होत बियाह। रोहिनिया में.......

रोहिणी अनहद नाद बज रहा है। शंकरजी का ब्याह हो रहा है।

दहका

केशर का उड़त फुहारा कदम तर
भींजत सांवलि मूरति।
कै मन केसर बोई बिरज में
कै मन उड़त फुहारा
कदम तर भीजत सांवलि मूरति॥
नौ मन केसर बोई बिरज में
दस मन उड़त फुहारा
कदम तर भींजत सांवलि मूरति॥

कदम वृक्ष के नीचे केशर उड़ रहा है जिसमें श्याम भीग गये हैं। कितने मन केशर ब्रज में बोया गया है और कितने मन फुहारा उड़ रहा है? नौ मन केशर बोया है और दस मन फुहारा उड़ रहा है।

दहका

फूलन से कुम्हलानी सेजरिया, फूलन से कुम्हलानी।
पूरब दिसा ना जा मोरे स्वामी, पूरब लागन पानी।
पानी पी के तुम मरि जइहा, हम धना होब बिरानी।
पश्चिम दिशा ना जा मोरे स्वामी, पश्चिम की नारि सयानी।

रोज सोवै वे रंगा महल मा, तुमसे भरावै पानी।
उत्तर दिसा ना जा मोरे स्वामी, उत्तर अयोध्या धामी।
डलियन डलियन फूल चढ़त है, लोटियन लोटियन पानी॥
दक्षिण दिसा ना जा मोरे स्वामी, दक्षिण द्वारिका धामी।
जाय द्वारिका छाप लै अइहै, पितर ना पावैं पानी॥

फूलों की सेज कुम्हला गई है। मेरे स्वामी पूर्व दिशा में मत जाना। वहाँ का पानी हानिकारक है। पानी पीकर मर जाओगे तो मैं परायी हो जाऊँगी। पश्चिम दिशा में मत जाना। वहाँ की स्त्रियाँ चतुर हैं वे रंग महल में सोती हैं। तुमसे पानी भरायेगी। उत्तर दिशा में अयोध्या का राज है। जहाँ हर डाल में फूल खिलते हैं। लोटे-लोटे भर पानी है। दक्षिण दिशा मत जाना स्वामी। पितर गण तुम्हारे हाथ का पानी नहीं लेंगे।

दहका

कलगी सोहै माथे राम के, कलगी सोहे माथे मा।
दोऊ कुण्डल झलके काने राम के, कलगी सोहै माथे मा।

राम के मस्तक पर कलंगी और दोनों कानों में कुंडल शोभा देता है।

दहका

खेला फाग बरसाने कन्हैया, खेला फाग बरसने मां
बरसाने की सुन्दर नार कन्हैया, खेला फाग बरसाने मां

बरसाने की स्त्रियाँ सुन्दर हैं। कन्हैया बरसाने में फाग खेलो।

दहका

चली पनिया भरन शिव नारी आज
सागर से उतारै गागर
रूप देख के सागर पूछै, कौन पिता महतारी।
कौन देस की रहने वाली, कौन पुरुष की नारी।
राजा हिमांचल पिता हमारे, मैनावती महतारी।
भूप नगर की रहने वाली, शिव जी पती हमारे।

पार्वती समुद्र से पानी भरने पहुँची। पार्वती की सुन्दरता देखकर समुद्र पूछता है-तुम्हारे माता-पिता कौन है? किस देश में रहती हो? पति कौन है? पार्वती उत्तर देती हैं- हिमाचल मेरे पिता हैं और मैना माता हैं। भूप नगर की रहने वाली मैं शिव की पत्नी हूँ।

डग्गा

काशी जी के कुंजन में विशेषर खेलैं होरी।
नागफनी तोरे सिर पर सोहे, चन्द्र सोहै लिलार।
माथे जाके गंगा सोहावन, हाथ लिए तिरशूल। खेलैं होरी..... ॥

काशी के बाग में विश्व के ईश्वर यानी शिवजी होली खेलते हैं। शिव के गले में नाग लिपटा है और ललाट पर चन्द्रमा है। मस्तक से गंगा बह रही हैं और हाथ में त्रिशूल है।

त्रिताला

चारि खूँट का कुउना हो
जल हवै पुरान
चारै सखी गयी पानी का, गली गयी भुलाय
भूली भंवर बगिया में
कोऊ लावा बुलाय॥

चारों ओर से बँधे पुराने कुँए और पानी में चार सखियाँ पानी भरने गई, जो रास्ता भटक गई। कोई जाकर उन्हें बुला लाओ।

लेजम

कुँअनमा है बड़ी भीर
भरबै हम ना पानी
सांकर कुइयां झिलमिल पानी
ओहू में काला नाग
भरब ना पानी॥

कुँए पर बहुत भीड़ है। कुँआ बहुत कम चौड़ा है। एक तो कुँए में काला नाग है, मैं इसमें पानी न भरूँगी।

सुखशीला कहै समुझाय ,द्वारिका जैहा हमारे बालमा।
नारि धाय कपड़ा लई, कि तन्दुल दीनो बाँध।
चले सुदामा द्वारिका, घर से कीन्ह पयान।
सिंह जबर के द्वार, बात करत है सुन्दर।
कहै जबरिया सुनो विप्र महाराज।
हम अब जाये रंग महल मा, सोइ कहवै हाल सुनाय।
कहवै हाल सुनाय, विप्र एक द्वारे ठाढ़ो
लेत सुदामा नाम, प्रेम पुलकाबालि बाढ़ो
सुनत कृपा निधि आतुर धायो, सोई गृह कारण विसराय।
देख मित्र के हाल, श्याम के दृग भरि आयो
बहुतक शक्ति रही ना, प्रेम से हृदय लगायो
हाथ पकड़ करूणाकर स्वामी, ले गये भवन लेवाय
दोऊ कर कमलन द्वारा सोई धोये दुजन के पांव
सोई धोये दुजन के पांव, प्रेम से पलंग बैठायो
कहे श्याम घनश्याम, सुनो तुम रूक्मिनि रानी
आपै मित्र उदार प्राण मम अन्तरयामी
रच्यो जाय ज्योनार श्री रूक्मिनि रानी
श्री कृष्ण पंखा कर सोई परसै रूक्मिनी रानी
प्रेम सहित खायो, कीनो बारम्बार बखान॥

सुखशीला अपने पति सुदामा को द्वारका जाने के लिए कहती है। वह दौड़कर कपड़े में चावल बाँध ले आई है। सुदामा अपने घर से चलकर द्वारका के महल के सम्मुख पहुँचे। महल का द्वारपाल कृष्ण से कहता है कि दरवाजे पर सुदामा नाम का विप्र आया है। सुदमा का नाम सुनते ही कृपा निधि कृष्ण सब काम छोड़कर स्वागत के लिए दौड़ पड़े। मित्र की दुर्दशा देखकर कृष्ण की आँखें भर आई। सुदामा को गले से लगा लिया। महल के भीतर ले गये। अपने कोमल हाथों से सुदामा के चरण धोये और पलंग में बैठाया। कृष्ण ने रूक्मिणी से बताया कि ये मेरे अतरंग मित्र हैं। इनके लिए स्वादिष्ट भोजन तैयार करो। रूक्मिणी भोजन परोसती हैं और कृष्ण पंखा डुलाते हैं। सुदामा ने प्रेमपूर्वक भोजन किया और बार-बार स्वाद का बखान किया।

ऊधो श्याम बने मधुबनियाँ।
वा दिन की सुधि भूल गयी हरि गोद खिलायो कनिया॥
गुहि गुहि देत नन्द बाबा जी, हरे काँच की मनिया॥
जबसे जाय बसे मधुबन में, बिसर गयी नन्द रनियाँ ॥
अब गोकुल काहे को आवत, पावत नव जोगनियाँ॥

गोपियाँ कहती है कि– सुनो ऊधौ! श्याम अब मधुबन के हो गये। वे अब उन दिनों को भूल गये जब हमने उन्हें गोद में खिलाया था। हरे काँच के मणि की माला गूंथकर पहनाया था। मधुबन जाकर नन्दरानी भूल गई। अब गोकुल क्यों आयेंगे? उन्हें तो नई जोगनियाँ मिल गई हैं।

कीट मुकुट माथे पर सोहे
कुण्डल की छबि न्यारी
मोहन माल गले बिच सोहे
सुन्दर कुन्ज बिहारी
या छबि की बलिहारी

कुँज बिहारी कृष्ण के माथे पर मुकुट और कान में कुण्डल तथा गले में मोहन माल शोभित है।

तोड़ पिनाक तड़ाक,
रानी सीता जयमाला डारै।
अरे राजा मन झाकै,
या साधारन बर नाहीं॥

शिव के धनुष को राम ने तड़ाक से तोड़ दिया। सीता ने राम के गले में जयमाला डाल दी। राजा ने कहा, यह साधारण दूल्हा नहीं है।

तीन धार एक ठौर भई,
त्रिवेणी नाम परयो।
गंगा जल पावन अमरित
जग तारन आयी॥

तीन धारायें मिलकर त्रिवेणी बन गई। गंगा का जल अमृत है। जगत का उद्धार करता है।

गोकुल बृज केमार खुले, बसुदेव की बेड़ी कटी।
अरे पियरी पट वाले, तोसे नेह लगी॥

गोकुल और ब्रज के द्वार खुल गये। वसुदेव की बेड़ियाँ कट गई। पीताम्बरधारी तुमसे प्रीति लगी है।

खम्भा लागि पतंग सी डोलै,
कहि बोलै अमरित बानी।
सैंया मोरे अब सेज चलो,
मोरी अखियाँ अलसानी॥

खम्भे से जुड़ी पतंग की तरह हिल रही हूँ। मेरे प्रिय मैं अलसा रही हूँ। सेज पर चलो।

ऐसी चतुर बृज नारि दै दे लंगर दान
कब से मोहन तुम भये दानी
कब कब दीन्हे दान
नन्द बाबा की गौयें चराबै
मोसे ना कीन्हे समान॥

ब्रज की चतुर नारी मुझे दान दे दो। मोहन तुम कब से दानी हुए? नन्द बाबा की गाय चराते हो। मुझसे मुकाबला मत करो।

आयी पिया की चोरी हो, मोपे रंगा ना डारो
माघ महीना मकर नहायो, चैत वदी तक कीन्हा
जाके पिया परदेस गये हैं, सूनी सेज मलीना
मोपे रंगा ना डारो, आयो पिया की चोरी

मैं अपने पति की चोरी में आयी हूँ। मुझ पर रंग मत डालो। माघ महीने मकर स्नान किया और चैत्र में दीपक जलाया है। नायिका का पति परदेश में है। सेज सूनी है।

ए काहू के लागि जइहैं, ये नैना तेरो सुंदर बने हैं
ये नन्दलाल दुलारे बनै हैं, देखन को नित अइहैं
प्रीतम पंकज जोरि के, पट खोलि के अंजन देहैं
ये नैना तेरो सुन्दर बने है काहू के लगि जइहै॥

तुम्हारी सुन्दर आँखें किसी को लग जायेंगी। नन्द के लाल नित्य देखने आयेंगे। घूँघट खोलकर अंजन लगायेंगे।

अचरज भयो मोरे आंगन बोलत, कागा मोरे पिया से मिलन को।
उड़ कागा मैं तोरी जो पिया आवै मोर
दूध दही में तीहि खबउबै जो पिया घर आवे मोर
अचरच भयो मोरे आंगन, बोलत कागा मोरे पिया से मिलन को।

आश्चर्य की बात है, मेरे आँगन में कौआ पिया मिलन का संदेश लाया है। कौवे में तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ यदि मेरे पिया घर आ जायेंगे तो मैं तुम्हें दूध-दही खिलाऊँगी।

या बृज कुन्जन जाऊं मनाय, लाओ नन्द को लाला
कोऊ सखी पग नेवर बांधे, कोऊ लिहै करतार
कोऊ सखी मुख से नहि बोलै, ओढ़े लाल दुशाला
मनाय लाओ नन्द को लाला॥

ब्रज के कुंजन में जाकर नंदलाल श्याम को मना लाओ। कोई सखी पाँव में नूपुर बाँध ले और कोई करताल ले लो। कोई सखी चुपचाप दुशाला ओढ़े खड़ी हैं।

या फगुआ की बहार चलो सखी खेलन होरी
अपनें अपनें मंदिर से निकली कोऊ स्यामल कोऊ गोरी
हिल मिल फाग परस्पर खेलैं सोभा बरनि ना जायी
या फगुआ की बहार चलो सखि खेलन होरी॥

फागुन की मस्ती की बहार है। सखी चलो होली खेली जाय। साँवली और गोरे रंग की सखियाँ अपने घरों से निकलकर होली खेलने लगी, जिसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

बेसरिया मा झकझोरा पिया झुलनी मा दरेरा लागै
ये झुलकी मोरे मइके से आयी, बेसर गुंज ना पहिरब पिया
झुलनी मा देरा लागै, बेसरिया ना झकझोरा पिया...।

नायिका अपने पति से कहती है कि बेसर को मत झकझोरो। इससे झुलनी में धक्का लगेगा। यह झुलनी मेरे मायके की है। मैं बेसर गुंज नहीं पहनूँगी।

गढ़ लंका लड़ै हनुमान लछिमन तुमता
बजाय रह्या बाजा
कैसे के टूटे या गढ़ लंका
कैसे के टूटे किंबार
लछिमन तुमता बजाय रह्या बाजा॥

हनुमान ने रावण की लंका पर चढ़ाई किया है और लक्ष्मण विजय का डंका बजा रहे हैं। लंका के किवाड़े किस तरह से टूटें?

सीता हरि लइगा रावण
जोगी का बेस बनाय के रावण
परण कुटी मा आबा
पकड़ि हाँथ सीता का जबरन
रथ माही बैठाया
सीता हरि लइगा रावण

जोगी का रूप बनाकर रावण सीता को चुरा ले गया। पर्णकुटी से सीता का हाथ जबरन पकड़कर रथ में बैठा लिया।

मोर सोवत उचाट नींदा
बँसुरिया काहे बजाये मोहन
हरे बाँस की हरी बँसुरिया।

मोहन ने हरे बाँस की वंशी क्यों बजायी। मेरी नींद उचट गई।

मोरी गगरी ना डूबै हो देवर
इहै गाँव मा दुई दुई कुआं है

कौने मा पनिया का जाऊँ हो
देवर मोरी गगरी ना डूबे हो॥

इस गाँव में दो-दो कुँए है। देवर कुँए के पानी में मेरी गगरी नहीं डूबती। पानी के लिए कहाँ जाऊँ?

चुनरी रंग भीजै सावन मां
ए पार गंगा ओ पार जमुना
मोर कैसे के आवैं साजना
चुनरी रंग भीजै सावन मां॥

सावन की वर्षा से मेरी चुनरी का रंग भीग रहा है। इधर गंगा उधर यमुना है। मेरे प्रियतम कैसे घर आये?

गौरा गणेश मना लेइयो पहिले हो
सब देवन शीश नबइयो पहिले हो

सर्वप्रथम गौरी और गणेश की मनौती कर सब देवताओं को शीश झुका लो।

राम नाम धन खेती हो हमरे
उपजै हीरा मोती हो हमरे। राम नाम.......

मैं राम के नाम की खेती करता हूँ, जिससे हीरा-मोती पैदा होते हैं।

राम नाम ना जाने रे मन तू
करि-करि पाप अघाने रे मन तू। राम नाम ......

रे मन? तुमने राम के नाम का स्मरण नहीं किया। पाप कर्म के सन्तुष्ट रहा।

भव भीर हरो मोरी कैलाशी
गिरजा पति हे अविनाशी। भव भीर..........

पार्वती के पति कैलाशवाशी अविनाशी शिव मेरी भव-बाधा हरण करो।

जय बोलो विजय बजरंगी की
राम लखन सिय संगी की। जय बोलो........

राम-लक्ष्मण-सीता के साथ रहने वाले बजरंग बली की जय बोलो।

कलंगी सोहै माथे रामके हो
दोनों कुण्डल सोहे कान राम के हो। कलंगी सोहै.......

राम के मस्तक पर कलंगी और कानों में कुण्डल शोभा देते हैं।

टूटै न धनुष मोरी गोइयाँ
राम लखन की लड़िकइयाँ। टूटै न धनुष.......

राम-लक्ष्मण अभी बच्चे हैं। सखी उनसे कठोर धनुष नहीं टूटेगा।

कनक मृगा बनि आयो रे बैरी
हरण जानकी आयो रे बैरी। कनक मृगा.......

वैरी निशाचर सीता का हरण करने के लिए सोने का मृग बनकर आया।

कहां पाये महवीरा ये मुंदरी
सीय के सोच शरीरा ये मुंदरी। कहां पाये........

सीता शंका करती हैं कि महावीर तुम्हें यह मुंदरी कहाँ मिली?

आज बसो एहि रेता दया निधि आज बसो एहि रेता मां।
भिनसारे उतारब पार हो दया निधि -आज बसो........

केवट कहता है कि- हे दयानिधि राम! आज गंगा की रेत में निवास करो। प्रात:काल पार उतारूँगा।

रामै भजु रावण अभिमानी
कहत मन्दोदरी सुन स्वामी। रामै भजु.........

मंदोदरी कहती है कि अभिमानी रावण राम के नाम का भजन करो।

आदर से बैठइयो हो सबको
पान सुपारी लौंग लइचिया, बंगला पान खबइयो
सबका हो, आदर से बैठइयो लाल॥

सबको सम्मान पूर्वक बैठाओ। बंगला पान-सुपारी-लौंग और इलायची खिलाओ।

ॠतु ललित बसंती आने लगे
हरे पेड़ पियराने लगे। ॠतु ललित......

वसन्त ॠतु का आगमन है। हरे पत्ते पीले होने लगे।

चला चली हरियरे खेत बलम
सुऊना दुइ-दुइ बाली लैगें॥

प्रियतम हरे भरे खेल में चलो। सुगना फसल की दो-दो बाली चुग ले गये।

मदमाती कोयलिया डार-डार
अँगना मोरे बोलत बार-बार। मदमाती कोयलिया......

मतवाली कोयल बार-बार मेरे आँगन में बोलती है।

नींदा न लागै पिंजड़े सुआ का हो
कोयलिया या गदरत आम
सुआ का हो नींदा न लागै

सुआ को पिजड़े में नींद नहीं आती। कोयल आम का फल काटती है।

सिर बांधे मुकुट खेलैं होरी
राम लखन सुन्दर जोरी। सिर बांधे मुकुट.......

राम–लक्ष्मण की सुन्दर जोड़ी सिर पर मुकुट बाँधकर होली खेल रही है।

अलगरजी मेले बागा मां अबै
मैं कैसे के पनियाँ जाऊ रे ऊबै। अलगरजी मेले.......

बगीचे में मनचले लोग आये हैं। मैं पानी भरने कैसे जाऊँ?

पलँगा पर अरझ करैं प्यारी
हमैं लै दे बालम हरियर सारी। पलँगा पर अरझ.......

पलंग पर चढ़ी प्यारी पति से हरे रंग की साड़ी खरीदने की विनती करती है।

बजत जमुन के तीरा रे बसिया
जीया धरत नहिं धीरा रे बसिया। बजत जमुन के........

यमुना किनारे वंशी बज रही है। मेरा मन अधीर हो रहा है।

झनक परी है मोरे काने मां मुरलिया कै
मोही घर आँगन न सुहाय रे
मुरलिया कै–झनक परी

वंशी का स्वर मेरे कान में पड़ा है। मुझे घर–आँगन अच्छा नहीं लगता है।

चली तै गैंद गिरधर कीरे सनना
राधे और रमण कीरे सनना। चली तै गैंद

राधा और कृष्ण के गेंदे सनसना कर चली हैं।

आरे हां, हमका हो काली चुनरिया लै आये
सबती का लाये लाल
औ हमका हो काली चुनरिया लै आयै॥

सौत को लाल और ब्याही को काली चुनरी लाये हो।

अपने बलम कै यारी बताबा गोरी
गोरी-गोरी बहियाँ की हरी-हरी चूड़िया हो
ककनन केरि खारी
बताबा गोरी अपने बलम की........

गोरी बाहों में हरी चूड़ियों वाली, अपने प्रियतम की प्रीति बताओ।

पकड़ो न बहियाँ हमार कन्हैया हो जाय ननदिया कहि देइहै।
मोहिं घर से देइहै निकार कन्हैया हो, जाय ननदिया कहि देइहै॥

कन्हा मेरी बाँह मत पकड़ो। ननद घर में बता देगी और मुझे घर से बाहर कर दिया जायेगा।

आरे हां, हमका हो नेवर लै दे बालमा।
पलँगा मां छमाछम होय।
हमका हो नेवर लै दे बालमा॥

मेरे प्रियतम! मुझे घुँघरू ले दो, जो सेज पर झम-झम बाजेगा।

ब्रज फाग मची है खोरिन-खोरी
राधे श्याम खेलै होरी।
ब्रज फाग मची है

राधा और श्याम ब्रज की गलियों में होरी खेल रहे हैं।

खेलत नवल किशोरी रे होरी
वृन्दावन की खोरी रे होरी
खेलत नवल किशोरी.....

वृन्दावन की गलियों में नयी गोरी होली खेल रही है।

जमुना तट सजनी चट चल री
जहं खेलत राधेश्याम फाग, मिल जमुना तट वंशीवट री

जमुना तट सजनी चट चल री॥

राधा और श्याम यमुना के किनारे होरी खेल रहे हैं। सखी हम लोग वहाँ तत्काल चलें।

जमुना तट सजनी चट चल री
जहं आज कन्हैया रहस करे री
जमुना तट चल सजनी

यमुना के किनारे कन्हैया रास करेंगे। सखी वहाँ तत्काल चलो।

झूलि रहे मन भावा रे झूला
पच कुंजन मां गड़ा रे हिंडोलना
मोरबा बोलत सुहावा रे
झूला झूलि रहे मन भावना॥

कुंज वन में हिंडोला झूल रहे हैं। मनभावन और मोर सुहबानी बोली बोल रहे हैं।

बजत पैजना बांको रे हरि को
एड़िया धरत ठमाको रे हरि को,
बजत पैजना बांको लाल

धमाके से पाँव रखने पर पायल से बाँके बोल निकलते हैं। मथुरा से एक ग्वालिन सिर पर मटकी रखकर आ रही है।

मथुरा से एक गुजरिया चली आवै
सिर पर धरे है मटकिया चली आवै। मथुरा से एक

मथुरा से एक ग्वालिन सिर पर मटकी रखकर आ रही है।

गरे डरे आवै श्याम मोहन माला
माथे मुकुट काने बाला।
गरे डरे आवै श्याम

माथे में मुकुट, कानों में कुण्डल और गले में मोहन माला पहनकर श्याम आ रहे हैं।

हैं बेपीर कन्हाइ रे ऊधौ
प्रीत लगाय तोड़ि गये तृण सम
फेरिन दरश दिखाई रे ऊधौ

ऊधौ! कन्हा बहुत बेदर्दी है। हम लोगों से प्रीति जोड़कर घास के समान तोड़ दिया। कभी मुँह नहीं दिखाया।

सिर सोहे मुकुट गिरधारी के
नक बेसर राधा प्यारी के
सिर सोहे मुकुट

गिरधारी श्याम के सिर पर मुकुट और राधा प्यारी के नाक में झुलनी शोभा देती है।

दहका

मोरौ दीन दधि खाइले समलिया
का जानी कबै होई भेंट समलिया
मोरौ दीन........

श्याम मेरी दी हुई दधि खा लो। पता नहीं कब भेंट होती है।

मैं आंगने भीर भारी जनक के
सब सखियाँ करैं तैयारी जनक के। मैं अंगने भीर.....
उठ आये उतै से भान इतै से लै दधि निकली ग्वालन
कमला के कटीली डार एक दिन रामा रहे कमलातर
सदा आनंदा रहैं एहिं द्वारे मोहन खेलैं होरी॥

राजा जनक के आँगन में भीड़ एकत्र है। सखियाँ विवाह की तैयारी कर रही हैं। इधर सूर्योदय हुआ, उधर से ग्वालिन दही बेचने निकली। कमल वृक्ष की कटीली डाल के नीचे एक रात्रि राम ने विश्राम किया। इस द्वार पर सभी प्रकार के आनन्द हों और मोहन होली खेलें।

धीरे झुलाइ दे पलना यशोदा हो
श्री कृष्ण उलटि ना जाँय यशोदा हो धीरे

सोते हुए कृष्ण कहीं उठ न जायें? यशोदा पालना धीरे-धीरे झुलाओ।

जमुना जी मां नइया उरबा कन्हैया कालिन्दी गहली भइ।
मिलै–मिलै बड़े दानी का दरशन जगन्नाथ स्वाम॥

यमुना नदी गहरी हैं। कन्हैया उसमें नाव डलवा दो।

त्रिताला

मथुरा का पेड़ा मीठा लगै गोकुला का दही
मांगै श्याम ललिता से हमैं दे दे दही

मथुरा का पेड़ा और गोकुल का दही स्वादिष्ट लगता है। श्याम, ललिता से दही माँगते हैं।

शीश मुकुट मकराकृत कुण्डल गल बैजन्ती का माल
नयन लालन लगे चित्तौ टरै ना टारे नयन
लालन से लगे चित्तौ......

मोर मुकुट, मकराकृत कुण्डल, वैजन्ती माला और काले लाल से नयन वाले कृष्ण से नयन लग गये, जो हट नहीं रहे।

त्रिताला

बनि आये हैं गोपीनाथ बगल मां झोरी लिहे।
देखै सखिन की नारी– ऊं ता बैदा बने

गोपीनाथ कृष्ण बगल में झोली लटकाकर वैद्य बने हैं। सखियों की नाड़ी देखते हैं।

राधा कै सहेली जान कन्हैया, करा ना बारजोरी
जो सुनि पैहें राधा रानी, लैइहै पीत पट छोरी। कन्हैया करा न........

राधा की सहेली समझकर कान्हा मुझसे छीना–छपटी मत करो। राधा को पता चलेगा तो तुम्हारा पीला वस्त्र उतार लेगी।

दै राखा चीर हमारी मुरारी
लेकर चीर कदम चढ़ि बैठै, मैं जल मांझ उघार मुरारी। दै राखा.......

मोरिउचीर तूं दै दे मुरारी, हम दैवे हजारन गारी।
तोहरिउ चीर जबै हम देवै,जल से होइह न्यारी मुरारी। दै........
पुरइन पात पहिन राधा निकली, कृष्ण हँसै दै तारी मुरारी। दै.........

कान्हा चीर चुराकर कदम पर चढ़ गये। गोपियाँ कहती हैं कि मैं जल में नग्न हूँ। मेरी चीर दे दो नही तो मैं हजारों गलियाँ दूँगी। कृष्ण कहते हैं कि जल से बाहर आओ चीर दूँगा। राधा कमल पत्र पहनकर बाहर आई और कृष्ण ताली बाजाकर हँसने लगे।

मारन गये कारी कोयली पिया
हाँथे मां धनुष लिये बान पिया
कारी कोयली मत मारिये बाग सून होइ जाय
मारे का चाही हरियर सुअना जो कतरन गादर आम॥ पिया......
हरियर सुअना मत मारिये जा कतरत गादर आम
मारै का चाही काला कौआ जो कांव-कांव चिल्लाय। पिया.......
काला कौआ मत मारिये संदेशा लै जाय
मारै का चाही छैल चिकनियाँ
छैल चिकनियाँ मत मारिये नहिं गांव सून होइ जाय।
मारै का चाही गांव के रंडुआ लै भागे पराई नारि॥ पिया.......

प्रियतम! धनुष बाण लेकर काली कोयल गये। कोयल मत मारो, बगीचा सूना हो जायेगा। मारना हो तो तोते को मारो जो आम काटता है। तोतो को मत मारो कौआ मत मारो वह संदेश ले जाता है। युवक को मत मारो, गाँव सूना होगा। विधुर को मारो जो दूसरे की औरतें भगा ले जाता है।

अलसाने नयन पिया चल सोई
नाहक नींद क्यों खोई
अलसाने नयन

प्रियतम! नींद आ रही है, चलो सोया जाय।

मालवी फाग

श्रीमती कृष्णा वर्मा

उज्जण गाम रा गोयरे रे ललना
श्री कृष्ण खेले होली, फांगा हो सांवरिया
म्हारी अंखियन में रंग लाख्यो ...

केसर भरियो बाटका रे ललना
थाल भरी ने गुलाल रे, म्हारा सांवरिया
म्हारी अंखियन में रंग लाख्यो ...

युं मत जाणे काना बगर नाम की
राधा रंगीली म्हारो नाम रे, म्हारा सांवरिया
म्हारी अंखियन में रंग लाख्यो ...

युं मत जाणे काना बगर गाम की
बरसाणो नन्दगाव रे, म्हारा सांवरिया
म्हारी अंखियन में रंग लाख्यो ...

उज्जैन गाँव के किनारे ललना श्री कृष्ण होली खेल रहे हैं। केशर का कटोरा भरा है, थाली गुलाल से भरी है, मेरे सांवरे ने मेरी आँखों में रंग डाला। यह मत समझना कन्हैया मैं अकेली आई हूँ, सात सहेलियाँ मेरे साथ हैं। राधा रंगीली मेरा नाम है, यह मत समझना कन्हैया की मेरा कोई गाँव नही, मेरा गाँव नन्दगाव है।

हाँ रे लिला चुड़ा वाली नार
सुवो पाल्यो लिला चुड़ा वाली

हे उड़ रे सुवो वाका माथा पे बैठो
हो भम्मर को रस कस सुवे लिदो
लिला चुड़ा वाली ......

हे उड़ रे सुवो वाका हाता पे बैठो
हो चुड़ला रो रस कस सुवे लिदो
लिला चुड़ा वाली ......

हे उड़ रे सुवो वाकी कम्मर पे बैठो
हो कन्दौरा को रस कस सुवे लियो
लिला चुड़ा वाली ......

हे उड़ रे सुवो वाका पांवा पे बैठो
हो आयल को रस कस सुवे लियो
लिला चुड़ा वाली ......

हे चूड़े वाली महिला! मिठू पाला है। मिठू उसके सिर पर बैठा, भम्मर (सिर का गहना) की सुन्दरता में मिठू ने चार चाँद लगा दिये। मिठू उसके हाथों पर बैठा, चूड़ियों की सुन्दरता में मिठू ने चार चाँद लगा दिये। मिठू उसकी कमर पर बैठा, करधौने की सुन्दरता में चार चाँद लगा दिये। मिठू उसके पैरों पर बैठा, आयल (पैर का गहना) की सुन्दरता में चार चाँद लगा दिये हैं।

मुख मुरली बजावे म्हारो नन्दलाला
मुख मुरली बजावे, हां रे मुख मुरली

कायन की तो बणी हे मुरलिया
कायन को जड्यो हे जड़ाव रे
मुख मुरली ....

हरिया बांस की बनी हे मुरलिया
हिरा मोती को जड्यो हे जड़ाव रे
मुख मुरली ....

मुरली की धुन सुन राधाजी आई
राधाजी आई सबका मन भाई
मुख मुरली........

ब्रम्हाजी आया संग विष्णु जी लाया
लक्ष्मी जी आई सबका मन भाई
मुख मुरली ....

राम जी आया संग लखन के लाया
सीता जी आई सबका मन भाई
मुख मुरली.........

मुख से मुरली बजाता है, मेरा नन्दलाल। मुरली किस चीज की बनी है? उसमें क्या कारीगरी है? मुरली हरे बाँस की बनी है, हीरे-मोतियों की उसमें कारीगरी की है। मुरली की धुन सुनकर राधा जी आई, ब्रम्हाजी आये, संग विष्णु जी को लाये, लक्ष्मी जी आई सबके मन भाई। रामजी आये, संग लक्ष्मण को लाये, सीताजी आई सबके मन भाई।

छज्जे चढ़ी कई बैठी हो भावज
चौखंडी में अई जावो
रंग रंगीली होली आई, रंग लगवई जा वो
भाबी अई जावो ....

रंग सा नखराला देवर हम तो पेलांज चमकोर
झूमा झटकी में दूर जावेगा, म्हारा झेला झूमका रे
देवर न आवां, हाँ रे देवर नई आवां
म्हारा झेला झूका टूट जावेगा ....

छज्जे चढ़ी कई बैठा हो भावज
चौखंडी में अई जावो
रगं रंगीली होली आई, रंग लगवई जा वो
भाबी अई जावो ....

रंग सा नखराला देवर हम तो पेलांज चमकोर
झूमा झटकी में टूट जावेगा म्हारा टोटी बून्दा रे
देवर नई आवां, हाँ रे देवर नई आवां
म्हारा टोटी बून्दा टूट जावेगा ....

छत पर चढ़कर क्यों बैठी हो भाभी? आँगन में आ जाओ। रंग रंगीली होली आई, रंग तो लगवा जाओ, भाभी आ जाओ। रंग जैसे रंगीले और इतराने वाले देवर हम इस रंग से पहले ही डरते हैं और झूमा झटकी होगी तो मेरे कान में पहने झेला और झूमके दूर जा गिरेंगे। देवर मैं नहीं

आती, मेरे झेले झूमके टूट जावेंगे। हम तो इस रंग से पहले ही डरते हैं और झूमा झटकी में मेरे टोटी और बून्दे टूट जावेंगे।

सिसी लायो रे गन्दी को छोरो अन्तर की
सिसी लायो रे, हाँ रे सिसी लायो रे
गंदी को छोरो अन्तर की ....

जदे रे गन्दी को छोरो कांकड़ आयो रे
कांकड़ उबी छोरी मतवाली, सिसी लायो रे
हाँ रे सिसी लायो रे ....

जदे रे गन्दी को छोरो गोया में आयो रे
गोया में उबी छोरी मतवाली, सिसी लायो रे
हाँ रे सिसी लायो रे ....

जदे रे गन्दी को छोरो खेता में आयो रे
खेता में उबी छोरी मतवाली, सिसी लायो रे
हाँ रे सिसी लायो रे ....

जदे रे गन्दी को छोरो पनघट पे आयो रे
पनघट पे उबी छोरी मतवाली, सिसी लायो रे
हाँ रे सिसी लायो रे...........

सुगंधी का लड़का इत्र की शीशी लाया है। सुगन्धी का लड़का गाँव किनारे आया, तब गाँव किनारे लड़की खड़ी थी। जब सुगन्धी का लड़का खलिहान में आया तो खलिहान में चंचल लड़की खड़ी थी। जब सुगन्धी का लड़का खेत में आया तो खेत में मतवाली लड़की खड़ी थी। जब सुगन्धी का लड़का पनघट पर आया तो पनघट पर चंचल लड़की खड़ी थी।

बैसाख मईनो लाग्यो सुवा रामजी नी आया
तो टबक-टबक सीता नेण झुरे
कद आवेगा हो, कद आवेगा

जेठ मईनो लाग्यो सुवा रामजी नी आया
तो टबक-टबक सीता नेण झुरे,

कद आवेगा .... बैसाख मईनो ....

असाड़ मईनो लाग्यो सुवा रामजी नी आया
तो टबक-टबक सीता नेण झुरे
कद आवेगा .... बैसाख ....

सावण मईनो लाग्यो सुवा रामजी नी आया
तो टबक-टबक सीता नेण झुरे
कद आवेगा .... बैसाख..........

मिठ्ठू बैशाख महिना लग गया, रामजी अभी तक नहीं आये। सीताजी की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे हैं, कब आयेंगे? ज्येष्ठ महिना लग गया, रामजी अभी तक नही आये। सीताजी की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे हैं, कब आयेंगे? आषाढ़ महिना लग गया, रामजी अभी तक नहीं आये। सीताजी की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे हैं, कब आयेंगे? श्रावण महिना लग गया है, रामजी अभी तक नहीं आये, सीताजी की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे हैं, कब आयेंगे?

झांज ने मंजीरा माता होली आगे बाजे रे
धेरा रो धणगोर धमेरो, मंडल में बाजे रे
देखण चालो हो, हाँ देखण चालो हो
सासुजी थारो जायो नाचे रे .... देखण

झांज ने मंजीरा ननदिया होली आगे बाजे रे
धेरा रो धणगोर धमेरो, मंडल में बाजे रे
देखण चालो हो, नणदलीया थारो बीरो नाचे रे

झांज ने मंजीरा मामी होली आगे बाजे रे
धेरा रो धणगोर धमेरो, मंडल में बाजे रे
देखण चालो हो, हाँ देखण चालो हो
मामीजी थारो भाणेज नाचे रे .... देखण

झांज ने मंजीरा सोकड़ होली आगे बाजे रे
धेरा रो धणगोर धमेरो, मंडल में बाजे रे
देखण चालो हो, हाँ देखण चालो हो
सोकड़ीया म्हारो रायचन्द नाचे रे .... देखण

झांझ और मंजीरे माँ होलिका के आगे बज रहे हैं। चंग की आवाज भी मंडली से आ रही है। देखने चलो सासुजी, आपका बेटा नाच रहा है। झांझ और मंजीरे बहन होली के आगे बज रहे हैं। चंग की आवाज भी मंडली से आ रही है। देखने चलो ननद बाई, तुम्हारा भाई नाच रहा है। झांझ और मंजीरे मामी होली के आगे बज रहे हैं। धेरे की आवाज भी मंडली से आ रही है, देखने चलो मामीजी, आपका भान्जा नाच रहा है। झांझ और मंजीरे सौतन होली के आगे बज रहे हैं। धेरे की आवाज भी मंडली से आ रही है, देखने चलो सौतन, मेरा पिया नाच रहा है।

दिल्ली द्वारका में रामजी रमे रे होली
दिल्ली द्वारका में, हाँ रे दिल्ली द्वारका
राम जी रमे रे होली ....

राम जी बी रमिया ने लछमन बी रमिया
सीता रे मैंया उनका संग रमिया
दिल्ली द्वारका में ....

पांडव बी रमिया ने कौरव बी रमिया
कुन्ता रे मैया उनका संग रमिया
दिल्ली द्वारका में................

चांद बी रमिया ने सुरज बी रमिया
नवलख तारा उनका सांते रमिया
दिल्ली द्वारका में ....

संकर बी रमिया पारबती बी रमिया
नानो गणपत उनका सांते रमिया
दिल्ली द्वारका में ....

दिल्ली सी द्वारका में राम जी होली खेल रहे हैं। रामजी साथ में लक्ष्मण जी खेल रहे हैं, सीता माता उनके साथ खेल रही हैं। पाँडव भी खेल रहे हैं, कौरव भी खेल रहे हैं, कुन्ती माता उनके साथ खेल रही हैं। चाँद भी खेल रहे हैं, कौरव भी खेल रहे हैं, बड़े-बड़े तारे उनके साथ खेल रहे हैं। शंकरजी भी खेल रहे हैं, पार्वती भी खेल रही हैं, छोटे से गणेश जी भी उनके साथ खेल रहे हैं।

सालुड़ो ओड़ी ने छोरी होली तापण चाली रे
आगे म्हारा छेल भंवरजी होली तापे रे
लाजा मरगई रे, हां रे लाजा मरगई रे
म्हारा घुगटीया में गरमी छा गई रे
होली तापणे ....

भम्मरियो पेरी ने छोरी होली तापण चाली रे
आगे म्हारा छेल भंवरजी होली तापे रे
लाजा मरगी रे, हाँ रे लाजा मरगी रे
म्हारा घुगटीया में गरमी छा गई रे
होली तापणे ....

हंसली पेरी ने छोरी होली तापण चाली रे
आगे म्हारा छेल भंवरजी होली तापे रे
लाजा मरगी रे, हाँ रे लाजा मरगी रे
म्हारा घुगटीया में, गरमी छा गई रे .... होली तापणे

कड़िया पेरी ने छोरी होली तापण चाली रे
आगे म्हारा छेल भंवरजी होली तापे रे
लाजा मरगी रे, हाँ रे लाजा मरगी रे
म्हारा घुगटीया में गरमी छा गई रे
होली तापणे ....

साड़ी पहनकर लड़की होली तापने चली है, वहाँ देखा पहले से ही पति होली ताप रहे थे। उनको देखकर मैं लाज के मारे शर्म से घूँघट में लाल हो गई, उस लाली से मेरे घूँघट में गरमी सी छा गई। गले की हंसली पहनकर लड़की होली तापने चली, वहाँ देखा पहले से ही उसके पति होली ताप रहे थे। उनको वहाँ देखकर शर्म के मारे घूँघट में लाल हो गई, उस लाली से मेरे घूँघट में गरमी सी छा गई। पैरों की कड़ियाँ पहनकर लड़की होली तापने चली, वहाँ देखा पहले ही पति होली ताप रहे थे। उनको वहाँ देखकर मैं लाज से घूँघट में लाल हो गई, उस लाली से मेरे घूँघट में गरमी सी छा गई।

होली खेलण दो सासुजी म्हारो जीव ललचे
होली खेलण दो, हाँ रे होली खेलण दो
सासुजी म्हारो ....

सालुड़ो मोलइदे सासु कुण म्हारे नरखे
देवरियों नादान म्हारा, पिव परगांम
होली खेलण दो .... हाँ रे होली ....

भम्मरियो धड़इदे सासु कुण म्हारे नरखे
देवरियों नादान म्हारा, पिव परगांम
होली खेलण दो .... हाँ रे ....

हंसज धड़ईदे सासु कुण म्हारे नरखे
देवरियों नादान म्हारा, पिव परगांम
होली खेलण दो, ... हाँ रे ....

कन्दौरो धड़ईदे सासु कुण म्हारे नरखे
देवरियों नादान म्हारा, पिव परगांम
होली खेलण दो .... हाँ रे होली ....

सासुजी मेरा होली खेलने को मन ललचा रहा है मुझे होली खेलने दो। अच्छी सी साड़ी सासूजी लेकर दो, मैं पहनकर जाऊँगी, ताकि वहाँ सब मुझे ही देखें। देवर मेरा छोटा है, मेरे पिया भी परदेश में है। सिर पर पहनने का टीका मुझे ला दो, मैं पहनकर निकलूँगी, नहीं तो मेरी तरफ कोई नही देखेगा। देवर मेरा छोटा है, मेरे पिया भी परदेश में है। गले का हार मुझे ला दे सासु, मैं पहनकर निकलूँगी, नहीं तो मेरी तरफ कोई नही देखेगा। कमर में पहनने का करदोना मुझे लाकर दो, मैं पहनकर निकलूँगी, नहीं तो मेरी ओर कोई नही देखेगा।

चलणो होय तो चाल वो गोठन बागा में
रथ उतर्यो भगवान को

यो तो सामे उबो हे चौकीदार
किस बिद मिलना होय ....
चलणो होय तो चाल वो गोठन .... रथ उतर्यो

यो तो सामे उबो रे पेरादार
किस बिद मिलना होय ....
चलणो होय तो चाल वो गोठन .... रथ उतर्यो

यो तो सामे उबोरे थानेदार
किस बिद मिलना होय

चलणो होय तो चाल वो गोठन .... रथ उतर्यो

यो तो सामे उबोरे सूबेदार
किस बिद मिलना होय
चलणो होय तो चाल वो गोठन .... रथ उतर्यो

चलना हो तो चल सहेली, बगीचे में भगवान का रथ उतरा है, यह सामने खड़ा है। चौकीदार! कैसे भगवान से मेरा मिलना होगा? रथ उतरा है। सामने खड़ा है, पहरेदार! कैसे भगवान से मेरा मिलना होगा। रथ उतरा है, सामने खड़ा है। थानेदार! कैसे भगवान से मेरा मिलना होगा? रथ उतरा है, सामने खड़ा है। सुबेदार! कैसे भगवान से मेरा मिलना होगा?

बणजारी थारो डेरो नरबदा में
बणजारी थारो, हां रे बणजारी
थारो डेरो नरबदा में ....

जद रे नरबदा पंजे पंजे आई
चुटकी हिलौला में खोई गई रे
बणजारी थारो ....

जद रे नरबदा गुड़गी गुड़गी आई
कड़िया हिलौला में खोय गई रे
बणजारी थारो ....

जद रे नरबदा कम्मर-कम्मर आई
कन्दौरो हिलौला में खोय गयो रे
बणजारी थारो ....

जद रे नरबदा छाती-छाती आई
हंसज हिलौला में खोय गयो रे
बणजारी थारो ....

जद रे नरबदा माथे-माथे आई
भम्मर हिलौला में खोय गयो रे
बणजारी थारो ....

बन्जारी तेरा घर नर्मदा में है। जब नर्मदा का पानी पंजों तक आया, छोटी सी लहर में मैं

खो गई थी। जब नर्मदा का पानी घुटनों तक आया, कड़ियाँ मेरी लहर में खो गई है। जब नर्मदा का पानी कमर तक आया, करदोना मेरा लहर में खो गया है। जब नर्मदा सीने तक आई, हार मेरा लहर में खो गया है। जब नर्मदा सिर तक आई, टीका मेरा लहर में खो गया है।

सीता परणे रामजी जनकपुर में
सीता परणे, हां रे सीता परणे
रामजी जनकपुर में ....

गांम का बामण बीरा तू हे म्हारो भायलो
घड़ी दोय लगन लगावों, हां सीता परणे
हां रे सीता परणे ....

गांम का नावी बीरा तू हे म्हारो भायलो
घड़ी दोय मुसाल जलावो रे, सीता परणे
हां रे सीता परणे ....

गांम का ढोली बीरा तू हे म्हारो भायलो
घड़ी दोय ढोल बजावो रे, सीता परणे
हां रे सीता परणे ....

गांम की गोठण बेन्या तू हे म्हारी भायलो
घड़ी दोय मेंदी रचाव रे, सीता परणे
हां रे सीता परणे ....

गांम का म्हावत बीरा तू हे म्हारो भायलो
घड़ी दोय बिदा तो करावो रे, सीता परणे
हां रे सीता परणे ....

सीता की शादी रामजी के साथ जनकपुर हो रही है। गाँव के ब्राम्हण तुम मेरे भाई हो–चटपट लगन लगा दो। गाँव के नाई तुम मेरे भाई हो, चटपट मशाल जलाओ। गाँव के ढोली तुम मेरे भाई हो, चटपट थोड़ी देर ढोल बजाओ। गाँव की सहेलियाँ तुम मेरी बहना हो, चटपट मेंहदी लगाओ। गाँव के महावत तुम मेरे भाई हो, चटपट हाथी पर बिठाकर विदा करा दो। आज सीता का विवाह हो रहा है।

डाबी लइदे रे बाण्या का छोरा जयपुर से
डाबी लइदे रे, हां रे डाबी लइदे ....

विनी तो डाबी में म्हारो सुरमो धरूवां
सुरमो सारी ने हुं करू लटको
डाबी लइदे रे .... हां रे ....

विनी तो डाबी में म्हारी पाजेब धरूवां
पाजेब पेरी ने हुं करू लटको
डाबी लईदे रे .... हाँ रे ....

विनी तो डाबी में म्हारो बाजूबन्द धरूवां
बाजूबन्द बांध करूवा लटको
डाबी लईदे रे, ... हां रे ....

विनी तो डाबी में म्हारी कड़ियां धरूवां
कड़ियां पेर हुँ करूवा लटको
डाबी लइदे रे, हां रे ....

डाबी लईदे रे बाण्या का छोरा जयपुर से
डाबी लइदे रे ....

बनिये के लड़के! जयपुर से डिबिया लाकर दे। उस डिबिया में आँखों को लगाने वाला सुरमा रखूँगी। सुरमा आँखों में लगाकर मैं बहुत इतराउँगी। उस डिबिया में मेरी पायल रखूँगी, पायल पहनकर मैं बहुत इतराउँगी। उस डिबिया में बाहों में पहनने वाला बाजूबन्द रखूँगी, बाजूबन्द पहनकर मैं बहुत इतराउँगी। उस डिबिया में मेरे पैरों की कड़ियाँ रखूँगी, कड़ियाँ पहनकर मैं बहुत इतराउँगी। डिबिया लाकर दे बनिये के लड़के, जयपुर से डिबिया लाकर दे।

झूलो थोब रे हजारी, म्हारो मन ललचे
झूलो थोब रे, हां रे झूलो थोब रे
काजलियो आर्जी ने छोरी झूलो झुलवा चाली रे
जोर को झपहो झूलो भारे चड़ग्यो रे ....

बजही पेरी ने छोरी झूलो झूलवा ने चाली रे
जोर को झपहो झूलो भारे चड़ग्यो रे ....

भम्मरियो पेरी ने छोरी झूलो झुलवा ने चाली रे
जोर को झपहो झूलो भारे चड़ग्यो रे

झूलो थोब रे हजारी झूलो म्हारो मन ललचे
झूलो थोब रे, हां रे झूलो थोब रे

कन्दौरो पेरी ने छोरी झूलो झुलवा चाली रे
जोरी को झपहो झूलो भोर चड़ग्यो रे

झूले को रोको पिया, मेरा मन ललचा रहा है, झूलने के लिये। काजल आँखों में लगाकर लड़की झूला झूलने चली। जोर से झुला दिया, तो झूला बहुत ऊँचा चढ़ गया। गले में बजही पहनकर लड़की झूला-झूलने चली। सिर पर टीका लगाकर लड़की झूला झूलने चली। कमर में करदौना पहनकर लड़की झूला झूलने चली है। जोर से झुला दिया तो झूला बहुत ऊँचा चढ़ गया।

कान्हा धरोरे मुकट हम खेलां होली
कान्हा धरोरे मुकट हम खेलां होली

होली खेलो तो कान्हा जमना तट पे आजो रे
सखियाँ रा संग तम खेलो होली .... कान्हा

होली खेलो तो कान्हा नन्दगांव आजो रे
नन्द बाबा का संग खेलो होली .... कान्हा

होली खेलो तो कान्हा बरसाणा में आजो रे
राधा रानी का संग खेलो होली .... कान्हा

होली खेलो तो कान्हा मधुबन में आजो रे
ग्वाल बाल संग खेलो होली .... कान्हा

होली खेलो तो कान्हा द्वारका में आजो रे
परजा का संग तम खेलो होली .... कान्हा

हां रे कान्हा धरोरे मुकट हम खेलां होली
कान्हा धरोरे..........

कन्हैया! तुम अपना मुकुट निकाल कर रखो, हम होली खेलेंगे। होली खेलना हो तो जमुना के किनारे आना और सहेलियों के साथ तुम खेलना। होली खेलना हो तो कन्हैया नन्दबाबा

के गांव आना, नन्दबाबा के संग तुम खेलना। होली खेलना हो तो बरसाने गांव में आना, राधा रानी के संग तुम खेलना। होली खेलना हो तो कन्हैया मधुबन में आना, ग्वालबाल के साथ तुम खेलना। होली खेलना हो तो कन्हैया द्वारकापुरी में आना, प्रजा के संग तुम खेलना। कन्हैया तुम अपना मुकुट निकाल कर रखो, हम होली खेलेंगे।

परणीयो कदी मरे म्हारा यार की
जवानी ढल गई रे, परणीयो कदी मरे

परणीयो तो लायो खोपरो, धरणीयो लायो गोल रे
आगो बालु खोपरो, मीठो लागे गोल .... परणीयो

परणीयो तो ऐसो उबो, खेत माय खेजड़ लीयो
धरणीयां जी ऐसा उबा, जाने सुरज निकल्यो .... परणीयो

परणीयो लायो तुम्बकड़ो, धरण्यो लायो पीली
आगे बालु तुम्बकड़ो, हुं तो पिली ओडु रे .... परणीयो

परणीयो कदी मरे म्हारा यार की
जवानी ढल गई रे, परण्यो कदी मरे

हां रे परणीयो कदी मरे, म्हारा यार की
जवानी ढल गई रे, परण्यो कदी मरे

मेरे पति कब मरेंगे, मेरे प्रियतम की जवानी ढलती जा रही है। मेरे पति लाये खोपरा, प्रियतम लाये गुड़। खोपरा मैं फेंक दूँगी, गुड़ मीठा लगता है। मेरे पति ऐसे खड़े हैं जैसे खेत के अन्दर खेजड़ा खड़ा हो। प्रियतम मेरे ऐसे खड़े हैं जैसे सूरज निकलता है। मेरे पति पानी पीने की तुम्बी लाये, प्रियतम पीली साड़ी लाये। तुम्बी मैं फेंक दूँगी, पीली साड़ी ओढूँगी। मेरे पति कब मरेंगे, मेरे प्रियतम की जवानी ढलती जा रही है। हां रे! मेरे पति कब मरेंगे? मेरे प्रिय की जवानी ढलती जा रही है।

सुमरे क्यो नी याद भवानी
कौन देव तेरे रतन चले
अरे कौन करे अगवानी
सुमरे क्यो नी याद भवानी ...

चाँद सुरज वा के रतन चले
सुमरे क्यो नी याद भवानी
अरे करे हनुमान अगवानी
सुमरो क्यो नी याद भवानी ...

कौन देव वा की रसोई करे
कौन भरे जल पानी
सुमरो क्यो नी याद भवानी

अरे बे माता के रसोई करे
सुमरो क्यो नी याद भवानी
अरे इन्दर देव भरे पानी
सुमरो क्यो नी याद भवानी

अराधना क्यों नही करते भवानी की? कौन अगवानी करते हैं? चाँद-सूरज और उसके हीरे मोती भवानी के लाल हैं। भवानी की हनुमान अगवानी करें। कौन देवता उनकी रसोई बनाता है और कौन भरे उनका जल पानी? इन्द्र देवता जल पानी भरें, याद करो भवानी की।

अलगुंजो मेरे श्याम बणोया
अलगुंजो मेरे श्याम बणोया
दशरथ तेरो लाल खेलत होली...

कायन को तेरो बण्यो अलगुंजो
कायन को कलप चड़ोया
दशरथ तेरो लाल खेलत होली ...

हरियां बांस को बण्यो अलगुंजो
सोहन कलप चड़ायो
दशरथ तेरो लाल खेलत होली

हो अलगुंजो तो धर्यो ताक में
वा के राधा के हाथ मंगायो
दशरथ तेरो लाल खेलत होली

अलगुंजा मेरा कृष्ण ने बनाया। दशरथ जी आपके पुत्र होली खेल रहे हैं। किस चीज का तुम्हारा बना अलगुंजा तथा काहे की उसमें रंगों की कारीगरी की गई है? दशरथ जी आपके पुत्र

होली खेल रहे हैं। हरे (कच्चे) बाँस का बना अलगुंजा लाल रंग से ऊपर कारीगरी की गई है। दशरथ जी आपके पुत्र होली खेल रहें हैं। अलगुंजा खुली दीवार की अलमति में रखा है, राधा जी के हाथ मंगवाया, दशरथ जी आपके पुत्र होली खेल रहे हैं।

लाडुला की छाब ढोलो, घर पछवाड़े लायो रे
तो पछवाड़ा से डोकरी खंकारा मोर रे
पाछो फरी जा, हाँ पाछो फरी जा
थारा खला में खाडर सुनी पड़ी रे .... पाछो ..

जलेबी की छाब ढोलो, घर पछवाड़े लायो रे
तो पछवाड़ा से डोकरी खंकारा मोर रे
पाछो फरी जा, हाँ पाछो फरी जा
थारा खला में खाडर सुनी पड़ी रे .... पाछो

सिरणी की छाब ढोलो, घर पछवाड़े लायो रे
तो पछवाड़ा से डोकरी खंकारा मोर रे
पाछो फरी जा, हाँ पाछो फरी जा
थारा खला में खाडर सुनी पड़ी रे .... पाछो

घेवर की छाब ढोलो, घर पछवाड़े लायो रे
तो पछवाड़ा से डोकरी खंकारा मारे रे
पाछो फरी जा, हाँ पाछो फरी जा
थारा खला में खाडर सुनी पड़ी रे

लड्डुओं की टोकरी पिया चुपचाप घर पीछे से लाया। घर पीछे डोकरी माँ खांस रही थी, वापस पलट जा। तेरे खलिहान में अनाज सूना पड़ा है। जलेबी की टोकरी पिया चुपचाप घर पीछे से लाया। मेवा-मिष्ठान की टोकरी पिया चुपचाप घर पीछे से लाया। घेवर की टोकरी पिया चुपचाप घर पीछे से लाया।

हाँ वो मुंडो ढाँकी ले वो लाल टीकी वाली
मुंडो ढाकी ले, हाँ मुंडो ढाकी ले वो
लाल टीकी वाली ....

थारा वो घुंगट मांय से टीकि भलका मारे वो

भम्मर देखी म्हारो मन हरके, मुंडो ढांकी ले
हाँ मुंडो ढांकी ले ....

थारा वो घुंगट मांय से झालाज भलका मोखो
झुमणा देखी म्हारो मन हरके, मुंडो ढांकी ले
हाँ मुंडो ढांकी ले ....

थारा वो घुंगट मांय से नथनी हाले डोले वो
मोती देखी म्हारो मन हरके, मुंडो ढांकी ले
हाँ मुंडो ढांकी ले ....

थारा वो घुंगट मांय से आख्यां भलका मारे वो
तिरछा नैन देखी मन हरेक, मुंडो ढांकी ले
हाँ वो मुंडो ढाकी ....

लाल बिन्दिया वाली, मुँह को ढँक ले। तेरे घूँघट में से बिन्दिया चमक रही है। बिन्दिया को देखने में तेरा सिर पर पहना भम्मर भी दिख रहा है, उस भम्मर को देखकर मेरा मन भाव विभोर हो रहा है। कान में पहने झाले चमक रहे हैं, उसमें लटके झुमके को देखकर मेरा मन भाव विभोर हो रहा है। नाक में पहनी नथनी झोले खा रही है उसमें गुंथे हुए मोती देखकर मेरा मन भाव विभोर हो रहा है। तेरे घूँघट में से आँखें चमक रही हैं, तेरे तिरछे नयन देखकर मेरा मन भाव विभोर हो रहा है।

किशन जी पोंची तो पेरांव
म्हारा रंग से भर्या दोई हात

माथा गुंथे रे भम्मर सोवे
तो टीको रतन जड़ाव
किशन जी पोंची तो पेराव
म्हारा रंग से भर्या दोई हात ....

काना गुंथे रे झालज सोवे
तो झूमणा रतन जड़ाव
किशन जी पोंची तो पेराव
म्हारा रंग से भर्या दोई हात .....

बैंय्या गुंथे रे बाजुबंद सोवे

तो चुड़लो रतन जड़ाव
किशन जी पोंची तो पेराव
म्हारा रंग से भर्या दोई हात ....

पांवा गुंथे रे अणवट सोवे
तो आयल रतन जड़ाव
किशन जी पोंची तो पेराव
म्हारा रंग से भर्या दोई हात

कृष्ण कन्हैया मेरी कोहनी के ऊपर पोची पहना दो। मेरे दोनों हाथ रंग से भरे हैं। सिर पर भम्मर पहना है। कृष्ण कन्हैया मेरे हाथ रंग से भरे हैं, इसलिये मेरे हाथों में पोची पहना दो। कानों को मेरे झालज, बाहों में चूड़ियाँ और पांव में मेरे अनवट पहना दें। मेरी आयल के घुँघरू में हीरे-मोती लगवाओ, कन्हैया मेरी बाहों मे पोंची पहना दो, मेरे दोनों हाथ रंग से भरे हैं।

हाँ रे देवर म्हारो रे
यो हरिया रूमाल वालों रे
देवर म्हारो रे .... हाँ रे देवर म्हारो रे

पियु परदेस में देवर म्हारो छोटो रे
मैं किनका सांत खेलुं होली
देवर म्हारो रे .... हाँ रे .... देवर म्हारो

भम्मर घड़ईदे देवर, घर में थारो सारो
भम्मर पैर करूंवा लटको
देवर म्हारो रे .... हाँ रे .... देवर म्हारो रे

हंसज घड़ई दे देवर, घर में थारो सारो रे
हंसज पेर करूंवा लटको, देवर म्हारो रे
हाँ रे देवर म्हारो रे................

कड़ियां मोलई दे देवर घर में थारो सारो रे
कड़ियां पेर करूंवा लटको
देवर म्हारो रे .... हाँ रे देवर

यह जो हरे रूमाल वाला है, मेरा देवर है। पियाजी परदेश में हैं, देवर मेरा छोटा है, मैं किनके संग होली खेलूँगी। देवर मेरा सिर पर पहनने का भम्मर बनवा दे। घर में मुझे तेरा ही

सहारा है, उस भम्मर को पहनकर में बहुत इतराउँगी। गले में पहनने का हंसज बनवा दे, पावों में पहनने की कड़ियाँ बनवा दे। घर में तेरा ही सहारा है, उन कड़ियों को पहनकर मैं बहुत इतराउँगी।

हाँ रे फाँगण आयो रे रमींला
म्हारो मन हरेस, फागण आयो रे

घेरा रो घमेरो मैं तो पाणी भरता सुणीयो रे
तो पाणी भरता म्हारो मन हंसियो
के म्हारो दिल हंसियो, चंग धीरो रे
हाँ रे चंग धीरो रे बजा, दुसमन रसिया
चंग धीरो रे ....

कड़ियां तो पेर छोरी रावला में चाली रे
तो रावला का डावड़ा नजर लगी जाय
छोरी उबी रे, हाँ छोरी उबी रे
के बात करां मन की, छोरी उबी रे, ... हाँ रे फांगण

कन्दौरो तो पेर छोरी, खेंता में चाली रे
तो पांणत करता म्हारो मन हंसियो
म्हारो दिल हंसियो, चंग धीरो रे
हाँ चंग धीरो रे, बजा दुसमन रसिया .....

चुड़लो तो पेर छोरी, सेर्या में चाली रे
तो सेर्या का डावड़ा नजर लगी जाय
छोरी उबी रे, हाँ रे छोरी उबी रे
के बात करां मन की, छोरी उबी रे

रंगीले पियाजी फागुन मास आ गया है। मेरा मन पुलकित हो रहा है। घेरा (बाघ) की आवाज मैंने पानी भरते समय सुनी है। पानी भरते–भरते मेरा मन हँसा। मेरे दुश्मन पिया चंग को धीरे बजाओ, मैं अपने आपको रोक नहीं पा रही। कड़ियों को पहनकर लड़की चौक में से निकली, चौक के लड़कों की नजर न लग जाय। लड़की ठहर जा, अपन मिलकर बातचीत करेंगे। करदौना पहनकर लड़की खेतों में चली है। चूड़ियाँ पहनकर लड़की सड़कों पर चली है। किसी की नजर ना लग जाये।

शिव के मन मांय बसी रे कासी
शिव के मन मांय, हाँ रे शिव के
मन मांय बसी रे कासी ....

आदि कासी में बामण-बामणिया
आदि कासी में सादु संन्यासी
शिव का मन मांय, हाँ रे
शिव का मन मांय बसी रे कासी ....

कुण काम का बामण-बामणिया
कुण काम सादु संन्यासी
शिव का मन हाँ रे
शिव का मन मांय बसी रे कासी ....

नेम धरम का बामण-बामणिया
तप करवा के सादु संन्यासी
शिव का मन हाँ रे
शिव का मन मांय बसी रे कासी

शिवजी के मन में काशी बसी है। आधी काशी में ब्राह्मण और ब्राह्मणी हैं, आधी काशी में साधु-संन्यासी बसे हैं। किस काम के बामन-बामनियाँ और किस काम के साधु-संन्यासी? नियम-धर्म के हैं बामन-बामनियाँ और तप करने को साधु-संन्यासी हैं।

हाँ रे मेरे लाल माथा ने भम्मर घड़ावजो
उकी टिलड़ी रतन जड़ाव
मसक मईनो फांगण को

हाँ रे मेरे लाल गोकुल मथुरा सब डुंडी मार्या
कईंनी लाद्यो भोलो कन्हैया
छः मण केसर नौमण उड़े रे गुलाल
मसक मईनो फांगण को ....

दारी भेराजी वाली घट्टी वा
गड़ पर पिसण जाय, कंई नी लाद्यो
भोलो कन्हैयो

छ: मण केसर नौमण उड़े रे गुलाल
मसक मई नो फांगण को ....

दारी मांगीलाल जी वाली वा
गढ़ पर पिसण जाय, कंई नी लाद्यो
भोलो कन्हैयो
छ: मण केसर नौमण उड़े रे गुलाल
मसक मईनो फांगण को ....

हाँ मेरे प्रिय! मुझे सिर के लिये भम्मर बनवा दो, उसमें गोल बिंदी जैसा रत्न जड़वाओ। मस्त महिना फागुन का है। मेरे प्रिय गोकुल मथुरा सब तलाश कर लिया, कहीं भी कन्हैया नहीं मिला। एक सौ बीस किलो केसर घुली है और एक सौ अस्सी किलो गुलाल उड़ायेंगे। भेराजी की पत्नि घट्टी गढ़ के ऊपर पीसने जा रही है। कहीं भी कन्हैया नहीं मिला। मांगीलाल की पत्नि घट्टी गढ़ के ऊपर पीसने जा रही है। कहीं भी कन्हैया नहीं मिला।

सुवो जी ने भेराजी दोई झगड़े हो लाग्या
या जोरू तेरी के मेरी रसिया
सुवा बोले मती, हाँ सुवा बोले मती
रावला में न्याव नही ...... सुवा बोले मती

रात की तेरी ने दिन की मेरी
जनम-जनम जोरू गेरीया की
सुवा बोले मती, हाँ सुवा बोले मती
रावला में न्याव नही ...... सुवा बोले

मिठ्ठू और भेराजी दोनों झगड़ने लगे। यह पत्नि तेरी की मेरी। मिठ्ठू मत बोलो, इस चौक में न्याय नहीं मिलेगा। रात को तेरी, दिन में मेरी। मिठ्ठू और कान्हा जी दोनों झगड़ने लगे।

रंग होली रे गुलाल खेलां होली
घरे आवो सांवरिया खेलां होली
घरे आवो नी ....

माथा ने भम्मर घड़ावो रसिया
उकी टिलड़ी रतन जड़ावो रसिया

घरे आवो सांवरिया .... खेलां होली
रंग होली रे गुलाल रसिया ....

गला ने हंसज घड़ावो रसिया
उका हिरा मोती लाल जड़ावो रसिया
घरे आवो सांवरिया .... खेलां होली
रंग होली रे गुलाल रसिया ....

पांवा ने पायल घड़ावो रसिया
उका घुगरू रतन जड़ावो रसिया
घरे आवो सांवरिया .... खेलां होली
रंग होली रे गुलाल रसिया ....

रंग, गुलाल से खेलेंगे होली, घर आओ मेरे पिया। सिर का मेरे भम्मर बनवाओ पिया, उसमें बिन्दी बराबर का रत्न जड़वाओ। मेरे गले के लिये हंसज बनवाओ पिया, उसमें लाल। हीरे-मोती जड़वाना। पाबों को मेरे पायल बनवाओ पिया, उसके घुँघरू में रत्न जड़वाना।

नणद बाई बरजो मती
बंसी वाला से खेलांगा फाग
नानी बाई बरजो मती
मुरलीवाला से खेलांगा फाग

उँई मुरलीवालों ने उँई बंसीवालों
तो उँई म्हारा जीव को आधार
नणद बाई बरजो मती
बंसीवाला से खेलांगा फाग

भर पिचकारी वाका सनमुख डाली
तो भींज गई राधा प्यारी
नणद बाई बरजो मती
बंसीवाला से खेलांगा फाग

गौरी-गौरी बैंया हरी-हरी चूड़ियां
तो राधे श्याम मन भाई
नणद बाई बरजो मती
बंसीवाला से खेलांगा फाग

ननद जी आप नाराज मत होना, मैं बंशी वाले कन्हैया से होली खेलूँगी। छोटी ननदजी नाराज मत होना, मुरली बजाने वाले कन्हैया से होली खेलूँगी। बंशीवाला मेरे जीवन का आधार है। पिचकारी भरकर उसके सामने मुँह पर डाली, प्यारी राधा जी पूरी गीली हो गई। गोरी-गोरी बहियाँ और हरी-हरी चूड़ियाँ राधे जी श्याम के मन भा गई।

भम्मर पेरूं तो म्हारी सासू लड़े
पनघट पे रसियो धूम करे
धूम करे ने ठठा बाजी करे
पनघट पे रसियो धूम करे

टीको पेरूं तो म्हारी सासू लड़े
पनघट पे रसियो धूम करे
धूम करे ने ठठा बाजी करे
पनघट पे रसियो धूम करे

हंसज पेरूं तो म्हारी सासू लड़े
पनघट पे रसियो धूम करे
धूम करे ने ठठा बाजी करे
पनघट पे रसियो धूम करे

चूड़लो पेरूं तो म्हारी सासू लड़े
पनघट पे रसियो धूम करे
धूम करे ठठा बाजी करे
पनघट पे रसियो धूम करे

सिर पर भम्मर पहनती हूँ तो मेरी सास लड़ती है। पनघट पर मेरे पिया मस्ती कर रहे हैं। धूम, मस्ती के साथ-साथ ठिठोली भी कर रहे हैं। टीका पहनती हूँ तो मेरी सास लड़ती है। गले में हंसज पहनती हूँ तो मेरी सास लड़ती है। लाख का चूड़ा पहनती हूँ तो मेरी सास लड़ती है।

माथा ने भम्मर घड़ावजो हो रसिया
टीको रतन जड़ाव, सुणोजी म्हारी
खेलतड़ा बिन्दली गमी हो रसिया

बिन्दली-बिन्दली करो वो गोरी

बिन्दली घड़ई दां दोय चार
सुणोजी म्हारी, खेलतड़ा बिन्दली गमी
हो रसिया ....

काली डाबी कांच की हो रसिया
जिमे कमल को फुल,
सुणोजी म्हारी, खेलतड़ा बिन्दली गमी
हो रसिया ....

गला ने हंसज घड़ावजो हो रसिया
माला रतन जड़ाव, सुणोजी म्हारी
खेलतड़ा बिन्दली गमी हो रसिया

हंसज-हंसज कंई करो वो गोरी
हंसज घड़ईदां दोय चार,
सुणोजी म्हारी, खेलतड़ा बिन्दली गमी
हो रसिया ....

मेरे सिर के लिये भम्मर बनवाओ पिया, मेरे टीके को रत्नों से जड़वाओ। मेरी बात सुनो-खेलते-खेलते मेरी बिन्दली गुम गई है। प्रिये! बिन्दली-बिन्दली क्यों करती हो? मेरी प्रिया बिन्दली तुमको दो-चार बनवा दूँगा। काली डिबिया कांच की है प्रियतम, जिसमें अन्दर कमल का फूल है। गले में पहनने के लिये हंसज बनवाओ प्रियतम, मेरी भाल के मोतियों में रत्नों को जड़वाना। हंसज-हंसज क्यों करती हो मेरी प्रिये? हंसज तुमको दो-चार बनवा दूँगा।

नणद भौजांया दोई भेले माथो धोवे रे
नणद भौजांया दोई भेले माथो धोवे रे
नणद चली सासेर, भौजांया रोवे रे
लीलो तरबूजो, हाँ लीला तरबूजा री
बेल छज्जा पर चढ़गी रे .... लीलो तरबूजो

देराणी जेठाणी दोई भेले माथो धोवे रे
नणद चाली सासेर, देराणी-जेठाणी रोवे रे
लीलो तरबूजो, हाँ लीला तरबूजा री
बेल छज्जा पर चढ़गी रे .... लीलो तरबूजो

नणद भौजांया दोई भेले माथो धोवे रे
नणद चाली पीयरीये, सायब जी रोवे वे
लीलो तरबूजो, हाँ लीला तरबूजा री
बेल छज्जा पर चढ़गी रे .... लीलो तरबूजो

ननद और भाभी दोनों साथ में सिर धो रही हैं। ननद चली सुसराल, भाभी रो रही है। हरे तरबूज की बेल छत पर चढ़ गई है। देवरानी और जेठानी दोनों साथ सिर धो रही हैं। ननद और भाभी दोनों साथ में सिर धो रही हैं। ननद चली मायके पति रोता है।

नरबदा रंग से भरी, होली खेलेगा श्री भगवान
नरबदा रंग से भरी, होली खेलेगा श्री भगवान

बड़ा-बड़ा ऊँट खजाना से भरिया
बेड़े चली राधा प्यारी .... नरबदा
गौरी-गौरी बैंया हरि लिलि चूड़ीया
तो पेरे राधा प्यारी .... नरबदा

माथा गुंथे रे भम्मर सोवे
तो झुमणा की छब न्यारी
नरबदा रंग से भरी, होली खेलेगा ....

अंगल्या गुंथे रे बिछिया सोवे
तो अणवट की छब न्यारी
नरबदा रंग से भरी, होली खेलेगा

नर्मदा मैया रंग से भरी हैं, होली खेलेंगे श्रीकृष्ण भगवान, नर्मदा रंग से भरी हैं। बड़े-बड़े ऊँटों पर खजाना रखा है, राधा प्यारी पानी भरने चली। गोरी-गोरी कलाईयाँ, हरी-पीली चूड़ियाँ, सिर पर भम्मर अच्छा लगता है, उसके झुमके की सुन्दरता, पावों के अंगुली की बिछिया अच्छी लगती है, उसके अनबट की सुन्दरता बहुत प्यारी है।

मथुरा का भोला कान्ह पाणिड़ो भरवा दे
गोकुल का भोला कान्ह पाणिड़ो भरवा दे

तू मती जाणे कान्हा आई रे एकली

म्हारे संग की सहेल्यां रो सांत
पाणिड़ो भरवा दे .... मथुरा का भोला ....

तू मती जाणे कान्हा बिगर नाम की
राधा रंगीली म्हारो नाम
पाणिड़ो भरवा दे .... मथुरा का भोला

तू मती जाणे कान्हा बिना रे गांम की
बरसाणो म्हारो गांम
पाणिड़ो भरवा दे .... मथुरा का भोला

तू मती जाणे कान्हा अखण्ड कुंवारी
म्हने वर पायो गोपाल
पाणिड़ो भरवा दे .... मथुरा का भोला

मथुरा के रहने वाले सरल स्वभाव के कृष्ण मुझे पानी भरने दे। गोकुल के रहने वाले सरल स्वभाव के कन्हैया मुझे पानी भरने दे, छेड़खानी मत कर। तू यह मत सोचना की मैं अकेली पानी भरने आई हूँ, मुझे मेरी सहेलियों का साथ है, पानी भरने दे। यह मत सोचना की मेरा कोई नाम नही है, राधा रंगीली मेरा नाम है। तू यह मत सोचना की मेरा कोई गाँव नहीं, बरसाने गाँव की हूँ, वही मेरा गाँव है। तू यह मत सोचना की मैं हमेशा से क्वांरी हूँ, मेरा वर गोपाल है। पानी भरने दे।

भम्मर घड़ावा वालो उज्जण इंदौर फेर रे
दाम चुकावा वालो, घर में सुतो रे
कुंची दईजा रे, म्हाजन का बेटा
नवी हवेलो को धूसों झाड़ा रे .... कुंची ...

सीरा की सीरावणी करती, काचा दूद पीती रे
घी सक्कर का बाटका, सवेरे खाती रे
कुंची दईजा रे, म्हाजन का बेटा
नवी हवेली को धूंसों झाड़ा रे .... कुंची

हंसज घड़ावा वालो उज्जण इंदौर फेर रे
दाम चुकावा वालो, घर में सुतो रे
कुंची दई जा रे, म्हाजन का बेटा
नवी हवेली को धूंसों झाड़ा रे .... कुंची

जिसने भम्मर बनवाकर दिया वह उज्जैन और इन्दौर में घूम रहे हैं, जिसको कीमत चुकाना है वह घर के अन्दर सोया पड़ा है। चाबी देकर जा महाजन के बेटे, नई हवेली जो बनवाई है उसकी वहाँ मैं धुल झाडूँगी। हलवे का नाश्ता करती, कच्चा दूध पीती है। घी में शक्कर मिलाकर कटोरे भरकर खाती है। हंसज बनवाने वाला उज्जैन, इन्दौर घूम फिर रहे हैं, जिसको कीमत चुकाना है, वह घर के अन्दर सोया पड़ा है।

दन उगे ने कान्हो झालज घड़ावे रे
सांज पड़े ने बेंडो आफु लुम्बा जाय
बेंडो बावलो, हाँ रे बेंडो बावलो
भाबीजी म्हारो जीव लेगा .... बेंडो बावलो

दन उगे ने कान्हो भम्मर घड़ावे रे
सांज पड़े ने बेंडो आफु लुम्बा जाय
बेंडो बावलो, हाँ रे बेंडो बावलो
भाबीजी म्हारो जीव लेगा .... बेंडो बावलो

दन उगे ने कान्हो हंसज घड़ावे रे
सांज पड़े ने बेंडो आफु लुम्बा जाय
बेंडो बाबलो, हाँ रे बेंडो बावलो
भाबीजी म्हारो जीव लेगा .... बेंडो बावलो

दन उगे ने कान्हो बाजूबन्द घड़ावे रे
सांज पड़े ने बेंडो आफु लुम्बा जाय
बेंडो बावलो, हाँ रे बेंडो बावलो
भाबीजी म्हारो जीव लेगा .... बेंडो बावलो

दिन निकलता है, कन्हैया मुझे झाले (कान के) बनवाकर देता है। शाम होते ही पागल फूल तोड़ने जाता है। भाभी यह बावला मेरी जान ले लेगा। दिन निकलता है कन्हैया मुझे भम्मर (सिर का) बनवाकर देता है। भाभी यह बावला मेरी जान ले लेगा। गले का हार बनवाकर देता है। कन्हैया मुझे बाजूबंद बनवाकर देता है।

रोटी तो हम घरे खई आया
पाणी तो हम यां पीवांगा

डरपो मती, हाँ रे डरपो मती
मैं तो म्हारा घर जास्यां .... डरपो मती

जलेबी तो हम घरे खई आया
पाणी तो हम यां पीवांगा
डरपो मती, हाँ डरपो मती
मैं तो म्हारा घर जास्यां .... डरपो मती

पेड़ा तो हम घरे खई आया
पाणी तो हम यां पीवांगा
डरपो मती, हाँ डरपो मती
मैं तो म्हारा घर जास्यां .... डरपो मती

खिचड़ो तो हम घरे खई आया
पाणी तो हम यां पीवांगा
डरपो मती, हाँ डरपो मती
मैं तो म्हारा घर जास्यां .... डरपो मती

खाना तो हम घर खाकर आये हैं, पानी हम यही पियेगें, डरना नहीं। जलेबी तो हम घर खाकर आये हैं, पानी हम यहीं पियेंगे, डरना नहीं। पेड़े तो हम घर खाकर आये हैं, पानी हम यहीं पियेंगे, डरना नहीं। खिचड़ी तो हम घर खाकर आये हैं, पानी हम यहीं पियेंगे, डरना नहीं।

कुवला पे बैठी छोरी भम्मर धोवे रे
भम्मर धोवे झकझोला रे
डोरो दईजा रे हाँ डोरो दईजा रे
सोनी का छोरा सुन्ना को ...... डोरो दईजा

कुवला पे बैठी छोरी झालज धोवे रे
झालज धोवे झकझोला से
झुमणा दईजा रे हां झुमणा दईजा रे
सोनी का छोरा सुन्ना को ..... डोरो दईजा

कुवला पे बैठी छोरी हंसज धोवे रे
हंसज धोवे झकझोला से
माला दईजा रे, हां माला दईजा रे
माली का बेटा फुलड़ा की ...... माला

कुवला पे बैठी छोरी बाजूबंद धोवे रे
बाजूबंद धोवे झकझोला से
चुड़लो दईजा रे, हाँ रे चुड़लो दईजा रे
लखारा का बेटा नगीना को ...... चुड़ला

कुवला पे बैठी छोरी सालूड़ो धोवे रे
सालुड़ो धोवे झकझोला से
चुनड़ी दईजा रे, हाँ चुनड़ी दईजा रे
बजाजी का बेटा रेसम की ...... चुनड़ी

कुँऐ पर बैठी लड़की अपना भम्मर धो रही है, खूब झोले खाकर धो रही है। मुझे चेन देकर जा सोनी के बेटे, सोने का चेन दे जा रे। कुँऐ पर बैठी लड़की अपना झालज धो रही है, खूब झोले खाकर धो रही है। मुझे उसके नीचे लगने वाली झालज दे जा सोनी के बेटे। कुँऐ पर बैठी लड़की अपना हंसज धो रही है, खूब झोले खाकर धो रही है। मुझे उसके साथ पहनने वाली माला दे जा माली के बेटे। कुँऐ पर बैठी लड़की अपना बाजूबंद धो रही है, खूब झोले खाकर धो रही है, मुझे हाथों में पहनने वाला चुड़ा दे जा लखारा के बेटे। कुँऐ पर बैठी लड़की अपनी साड़ी धो रही, खूब झोले खाकर। चुनड़ी दे जा रे बजाजी के बेटे, चुनरी दे जा रेशम की चुनड़ी।

रंग मत डाले रे कन्हैया
म्हारी भींजे चुनड़ी ...... रंग मत डाले

घरे रे जाऊँ तो म्हारा सुसराजी लड़ेगा
सासु जी लड़ेगा म्हारे बोले मसला
रंग मत डाले रे ...... हाँ रंग मत डाले ......

बीच बजार कानो पकड़े रे कलैंया
पकड़े रे कलैंया, म्हारे लाज आवे रे
रंग मत डालो रे .... हां रंग मत डाले ...

चुनड़ तो ओड़ी ने गोरी आंगण में आई रे
हरक हरक गोरी पांव लागे रे ....
रंग मत डालो रे .... हां रंग मत डालो

घरे रे जाऊँ तो म्हारा जेठजी लड़ेगा

जेठाणी लड़ेगा, म्हारे बोले मसला
रंग मत डालो रे .... हां रंग मत डालो ....

रंग मत डालो कन्हैया, मेरी चुनरी गीली हो जायेगी। गीली चुनरी पहनकर घर जाऊँगी तो मेरे ससुरजी लड़ेगे, सास मुझे ताने देगी। बीच बाजार में कन्हैया मेरी कलाइयाँ पकड़े तो मुझे शर्म आती है। चुनरी पहनकर सुन्दरी आंगन में आईं। झुक-झुककर सुन्दरी धोग देती। गीली चुनरी पहनकर घर जाऊँगी तो मेरे जेठजी लड़ेगे, जेठानी मुझे ताने देगी।

सीता छिड़कत केसर क्यारी
अरे के क्यारी केसर की बनी
के मांय लोग सुपारी
सीता छिड़कत केसर क्यारी ....

अरे नौ क्यारी केसर की बनी
अरे दस मांय लौंग सुपारी
सीता छिड़कत केसर क्यारी ....

हनुमान चढ़े गढ़ लंका पे
कायका नौबत नगाड़ा डंका
सीता छिड़कत केसर क्यारी ....

अरे चाँदी सोना के नौबत नगाड़ा
अरे रतन जड़त दोई डंका
सीता छिड़कत केसर क्यारी ....

सीताजी केशर की क्यारियों में पानी छिड़क रही हैं। कितनी क्यारी केशर की है और कितनी क्यारी लौंग सुपारी की है? नौ क्यारी केशर की बनी, दस क्यारी लौंग सुपारी की। सीता केशर की क्यारियों में पानी छिड़क रही हैं। हनुमान ने लंका पर चढ़ाई की। काहे के नौबत और नगाड़े बने हैं? चाँदी और सोने के नौबत, नगाड़े हैं, जो रत्नों से जड़े हैं।

कर दरसण चिंतामण को
अरे जैसिंग पुरो जैसिंग राजा
कर दरसण ....

अरे निरमल जल बेवे शिप्रा को

कर दरसण चिंतामण को, अरे
जैसिंग पुरो जैसिंग राजा .... कर दरसण

सुरज सामे बण्यो दरवाजो
गणगौर दरवाजा की बहार, अरे
कर दरसण ....

अरे अजब बहार पनघट की
पणियारणी की बहार, अरे
कर दरसण ....

अरे अजब बहार गोया की
हालीड़ा की बहार .... अरे
कर दरसण ....

चिंतामण गणेश के दर्शन करो, जयसिंह पुरा के जयसिंह राजा। क्षिप्रा का शुद्ध जल बह रहा है, सूर्य के सामन बने गणगौर दरवाजे की सुन्दरता अपार है। पनघट की पनिहारिनों की बहार गजब है। खलिहान की बहार गजब है।

होली आई रे कानुड़ा थारी दुर नगरी
होली आई रे, हाँ रे होली आई रे
कानुड़ा थारी दुर नगरी .... होली आई रे

म्हारी रे जोड़ी की सैंय्या दो दो भम्मर पेरे रे
हूँ कंई पेरू थारा हाड़ रसिया
होली आई रे ....

म्हारी रे जोड़ी की सैंय्या दो-दो झूमणा पेरे रे
हूं कई पेरू थारा हाड़ा रसिया
होली आई रे ....

म्हारी रे जोड़ी की सैंय्या दो-दो हंसज पेरे रे
हुं कंई पेरू थारा हाड़ रसिया
होली आई रे ....

म्हारी रे जोड़ी की सैंय्या दो-दो कड़ियां पेरे रे

हुं कंई पेरू थारा हाड़ रसिया
होली आई रे ....

होली आ गई है, कन्हैया तेरा गाँव दूर है। मेरे साथ वाली सहेलियाँ दो-दो भम्मर पहनती हैं और मैं क्या पहनूँ मेरी साथ वाली सहेलियाँ दो-दो झूमके पहने हैं, मैं क्या पहनूँ? मेरे साथ वाली सहेलियाँ दो-दो हंसज पहनती हैं, मैं क्या पहनूँ? मेरे साथ की सहेलियाँ दो-दो कड़ियाँ पहनती हैं, मैं क्या पहनूँ? होली आई है।

माथा कुं तेरे भम्मर सोवे, काना कुं तेरे झालज सोवे
टोटी रतन जड़ाव, नणद बाई, गेरा मती बरजो
सेल्या वाला से खेलुँगी फाग
पेंचा वाला से खेलुँगी फाग ....

बोई सेल्या वालो ने बोई मुरली वालो
तो वोई म्हारो प्राण आधार
नणद बाई गेरा मती बरजो
सेल्या वाला से खेलुँगी फाग, पेचां वाला से खेलुँगी फाग

हईड़ा को तेरे हंसज सोवे, अंग कुं तेरे सालु सोवे
तो केसर्या कोर लगाव, नणद बाई, गेरा मती बरजो
सेल्या वाला से खेलुँगी फाग
पेंचा वाला से खेलुँगी फाग ....

भर पिचकारी उका मुख पे डाली
तो भींज गई गुल साड़ी
वोई सेल्या वालो ने वोई मेल्या वालो
तो वोई मेरे जीव को आधार
नणद बाई .... सेल्या वाला से

सिर पर तुम्हारे भम्मर अच्छा लगता है। कानों को तुम्हारे झालज अच्छे लगते हैं। टोटी में रतन जड़ाओ, ननद बहन गुस्सा नहीं करना, साफे वाले से खेलूँगी फाग। आटेदार पेंच लगाता साफे में, उससे खेलूँगी फाग। वही पेंच वाला वही मुरली वाला वही मेरे जी का सहारा ननद बाई ज्यादा गुस्सा मत करना, साफे वाले से खेलूँगी। दिल को तेरे हंसज अच्छा लगता है, शरीर को तेरे साड़ी सुन्दर लगती है। केशर रंग का गोटा लगवाओ, ननद बाई ज्यादा गुस्सा मत करना। पिचकारी भरकर उसके मुँह पर डाली, सुन्दर साड़ी गीली हो गई।

सुरज सामे पणिया नी जऊँ
म्हारी चुनड़ी को रंग उड़ जाय

उचीं-उचीं मेडी ने लाल किमाड़ी
तो ब्यायजी वाली के पोड़ाव
सुरज सामे पणिया ....

उदां-उदां सालु जरद किनारी
तो गंगाराम वाली ने ओड़ाव
सुरज सामे पणिया ....

गोरी-गोरी बइंय्या ने हरी पिली चुड़ीया
तो नाथु जी वाली ने पेराव
सुरज सामे पणिया ....

मखना सो हाती उपर अम्बावाड़ी
तो भेराजी वाली ने बैठाव
सुरज सामे पणिया ....

दिन निकल आया है। सूरज चढ़ रहा है। मैं पानी भरने नही जाऊँगी, क्योंकि धूप में मेरी चुनरी का रंग उड़ जायेगा। ऊँची-ऊँची छत है, लाल रंग का दरवाजा उस छत पर समधिन को बिठाओ। मैं पानी भरने नहीं जाऊँगी, मेरी चुनरी का रंग उड़ जायेगा। सुन्दर-सुन्दर साड़ी और चाँदी का गोटा लगा है, गंगाराम की पत्नि को पहनाओ। गोरी-गोरी कलाइयाँ हरी, पीली चूड़ियाँ नाथुजी की पत्नि को पहनाओ। मस्त हाथी को इतना सुन्दर पालकी रखकर सजाया है भेराजी की पत्नि को उसपर बैठाओ। सूरज निकल आया है, मैं पानी भरने नही जाऊँगी।

पाणी का पनघट पे जाता, मोहन माला लादी रे
मोहनमाला तोकता, बिच्छू ने काट्यो रे
बिच्छू जेरीलो, हाँ रे बिच्छू जेरीलो
भाबी का देवर झाड़ी दीजो रे .... बिच्छू जेरीलो

पाणी की पांणत करता, मोहनमाला लादी रे
मोहनमाला तोकता, बिच्छू ने काट्यो रे
बिच्छू जेरीलो, हाँ रे बिच्छू जेरीलो
भाबी का जेठजी झाड़ी दीजो रे .... बिच्छू जेरीलो

खेतां में पाणी फेरतां, मोहनमाला लादी रे
मोहनमाला तोकता, बिच्छू ने काट्यो रे
बिच्छू जेरीलो, हाँ रे बिच्छू जेरीलो
भाबी का सुसराजी झाड़ी दीजो रे .... बिच्छू जेरीलो

सिरा की सिरावणी करते, मोहनमाला लादी रे
मोहनमाला तोकता, बिच्छू ने काट्यो रे
बिच्छू जेरीलो, हाँ रे बिच्छू जेरीलो
भाबी का सायब झाड़ी दीजो रे .... बिच्छू जेरीलो

पानी के पनघट पर पहुँचते ही मोहन माला मिली। मोहन माला उठाते ही, बिच्छू ने काट खाया। बिच्छू जहरीला था। भाभी के देवर जंतर-मंतर से बिच्छू की झाड़ फूँक कर दो। बिच्छू उतर जायेगा, खेत में क्यारियों को पानी देते समय मोहन माला मिली। मोहनमाला उठाते ही बिच्छू ने काट खाया, बिच्छू जहरीला था। भाभी के जेठजी झाड़ फूँक कर दो, बिच्छू उतर जायेगा। खेतों को पानी पिलाते समय मोहनमाला मिली, मोहनमाला उठाते ही बिच्छू ने काट खाया, बिच्छू जहरीला था। भाभी के ससुर जी झाड़ फूँक करके, बिच्छू उतार दो। हलवे का नाश्ता करते समय मोहनमाला मिली, मोहनमाला उठाते ही बिच्छू ने काट खाया, बिच्छू जहरीला था। भाभी के प्रियतम झाड़ फूँक करके बिच्छू उतार दो।

गांजो पीले रे सदाशिव
भोला आमली .... गांजो पीले रे

कायसे धोऊँ कली गांजा की
कायसे धोऊँ भोला आमली
गांजो पीले रे सदाशिव ....

दुध से धोऊँ कली गांजा की
दुद से धोऊँ भोला आमली
गांजो पीले रे सदाशिव ....

कुण तो पीवे गो कली गांजा की
कुण तो पिवे भोला आमली
गांजो पीले रे सदाशिव ....

भोला तो पीवे कली गांजा की

डमरू वाला पिवे आमली
गांजो पीले रे सदाशिव

शंकर जी गांजा पी लो, भोले इमली पी लो। काहे से धोऊँ कली गांजे की, काहे से धोऊँ भोले शंकर इमली? दूध से धोऊँ कली गांजे की, दूध से धोऊँ भोले इमली। कौन पियेगा शंकर कली गांजे की, कौन पियेगा भोले इमली? भोला शंकर पियेंगे कली गांजे की, डमरू वाला पियेगा इमली।

कांकड़ माथे पिपली रे, पीलो गोड़ आम्बा रो
अरे बिछिया घड़इदे जिणमे भेल ताम्बा रो
ताम्बो बापरियो,
हाँ रे ताम्बो बापरियो, सोनीड़ा थारो नास
जाजे रे.......................... ताम्बो बापरियो

कांकड़ माथे पिपली ने पीलो गोड़ आंबा रो
कड़िया घड़इदे जिणमे भेल ताम्बा रो
ताम्बो बापरियो,
हाँ रे ताम्बो बापरियो, सोनीड़ा थारो नास
जाजे रे.......................... ताम्बो बापरियो

कांकड़ माथे पिपली ने पीलो गोड़ आम्बा रो
कन्दौरो घड़ई जिणमे भेल ताम्बा रो
ताम्बो बापरियो,
हाँ ताम्बो बापरियो, सोनीड़ा थारो नास
जाजे रे.......................... ताम्बो बापरियो

गाँव के बीच में पीपल का पेड़ है। पीला पौधा आम का है। मुझे बिछिया बनवा दे, जिसमें मिलावट ताम्बे की है। तांबा मैंने वापरा है, सोनी तेरा सत्यानाश हो जाय, तूने ताम्बा मिलावट कर बिछिये बनाये हैं। मुझे कड़ियाँ बनवा दे, जिसमें मिलावट ताम्बे की है, मुझे करधोंना बनवा दे, जिसमें मिलावट ताम्बे की है, ताम्बा मैंने वापरा है, सोनी तेरा सत्यानाश हो जाय, तूने ताम्बे की मिलावट की है।

रंग लाख्यो रे सुवा पे
रतनारि मैना रे जादू डाल्यो

रंग लाख्यो रे ....

किणजी तो पाल्यो थारो हरियो सूवरियो
किणजी तो पाली रतनारि मैंना
जादू डाल्यो रे ....

कान जी तो पाल्यो म्हारो हरियो रे सूवरियो
राधा जी तो पाली रतनागिरी मैना रे
जादू डाल्यो रे ....

कांई रे खवावे हरियो सुवरियो
कांई जी खवावे रतनारि मैना रे
जादू डाल्यो रे ....

मिरची खवावे हरियो सुवरियो
हिरा मोती चुगें रतनारि मैना रे
जादू डाल्यो रे ....

मिठ्ठू पर सुन्दर रत्नागिरी मैना ने जादू डाला। रंग डाला। किसने हरे मिठ्ठू को पाला है किसने पाली रत्नागिरी मैंना? कान्हा जी ने पाला मेरा हरा मिठ्ठू राधा जी ने पाली रत्नागिरी मैना। क्या खाता है हरा मिठ्ठू और क्या खाती है रत्नागिरी मैंना? मिठ्ठू मिर्ची खाता है, मोती चुगती है रत्नागिरी मैना।

हाँ रे काना माथा ने भम्मर घड़ावजो
म्हारे टिको रतन जड़ऊँ रे
बिरज में भुले पड्यो
भोलो कन्हैयो .... हाँ रे काना

हाँ रे काना बैंय्या ने बाजूबंद घड़ावजो
म्हारे फूंदा रतन जड़ऊँ रे
बिरज में भुले पड्यो
भोलो कन्हैयो .... हाँ रे काना

हाँ रे काना गला ने हंसज घड़ावजो
म्हारे माला रतन जड़ऊँ रे
बिरज में भुले पड्यो

भोलो कन्हैयो .... हाँ रे काना

हाँ रे काना अंगल्या ने बिछिया घड़ावजो
म्हारे आयल रतन जड़ऊँ रे
बिरज में भुले पड़्यो
भोलो कन्हैयो .... हाँ रे काना

कन्हैया जी सिर के लिये भम्मर बनवा दो, मेरा टीका रत्नों से जड़वा दो। ब्रज में भोला कन्हैया गुम हो गया। कन्हैया बाहों के लिये बाजूबंद उसमें फूंदा, फूंदे में रत्न जड़वा दो। गले के लिये हंसज, माला में रत्न जड़वा दो। ब्रज में भोला कन्हैया गुम हो गया। अँगुलियों के लिये बिछिया बनवा दो, मेरी आयल में रत्न जड़वा दो।

लचको काटूं रे ढोला, लचको काटूं रे
पूलो बंदू एकली, मैं लचको काटूं रे

पांणत करूँ रे रायचंद, पाणत करूँ रे
ने कंडो फोडू एकली, मैं पांणत करूँ रे

गऊँड़ा काटूं रे ढोला, म्हारा गउंड़ा काटूं रे
पुलो बांदू एकली, मैं पुलो बादूं रे

गउँड़ा बीणु रे ढोला म्हारा, गउंड़ा बीणु रे
गउँड़ा झाडू एकली, मैं गउँड़ा झाडू रे

पाणी भरूं रे ढोला, म्हारा पानी भरूं रे
पाणी खेंचू रे एकली, मैं पाणी खेंचू रे

लचको काटूं रे ढोला लचको काटूं रे
पुलो बादूं एकली, मैं लचको काटूं रे

हरा घास काटूँ, पिया घास काटूँ। गठरी बाधूँ अकेली, घास काटूँ। क्यारियों में पानी फेरना पिया। कंडा के टुकड़े करूँ अकेली, घास काटूँ, गेंहू काटूँ पिया। गेहूँ की बीनाई, सफाई करूँ पिया, गेहूँ से कचड़ा (सुकला) निकालूँ, अकेली पानी लाऊँ पिया।

मोरियो मारी ने अलीजा पनघट घाटे ढालियो
आती जाती पणियारी उबी रोवे रे

किने मारियो, हाँ रे किने मारियो बन का राजा रे
किने मारियो .... मेवाड़ी बोले रे

आज म्हारो मोरियो आबां की डाल बैठो रे
आती जाती पणियारी उबी रोवे रे
किने मारियो, हाँ रे किने मारियो बन का राजा रे
किने मारियो .... मेवाड़ी बोले रे

आज म्हारो मोरियो चम्पा की डाल बैठो रे
आती जाती पणियारी उबी रोवे रे
किने मारियो, हाँ रे किने मारियो बन का राजा रे
किने मारियो .... मेवाड़ी बोले रे

मोर को मारकर पिया पनघट के घाट पर पटक दिया। पानी भरने वाली मोर देखकर रो रही हैं। किसने मारा मोर, वन के राजा को? मीठी बोली बोले रे, आज मेरा मोर आम की डाल पर बैठा। पानी भरने वाली आते-जाते देखकर रो रही हैं। आज मेरा मोर चम्पा की डाल पर बैठा है। आती-जाती पनिहारी देख खड़ी रो रही हैं, किसने मारा वन के राजा को।

कान्हा बोलो रे म्हारे पियरीया में जावा दो रे
कान्हा बोलो रे, हाँ रे कान्हा बोलो रे म्हारे
पियरीया में जावा दो रे ....

पियरीया में जाऊँ कान्हा
झांजर पेरी आऊँ रे, झांजर पेरी आऊँ कान्हा
पाछी आऊँ रे .... कान्हा बोलो रे

पियरीया में जाऊँ कान्हा
लेगों पेरी आऊँ रे, लेगों पेरी आऊँ कान्हा
पाछी आऊँ रे .... कान्हा बोलो रे

पियरीया में जाऊँ कान्हा
सालुड़ो पेरी आऊँ रे, सालुड़ो पेरी आऊँ कान्हा
पाछी आऊँ रे .... कान्हा बोलो रे

पियरीया में जाऊँ कान्हा

हंसज पेरी आऊँ रे, हंसज पेरी आऊँ कान्हा
पाछी आऊँ रे .... कान्हा बोलो रे

कन्हैया मुझे मायके जाने दो। मायके मैं जाऊँ कन्हैया तो पायल पहनकर आऊँ। कान्हा! जल्दी वापस आऊँगी। मायके मैं जाऊँ तो लहंगा पहनकर आऊँ। मायके मैं जाऊँ तो सुन्दर साड़ी पहनकर आऊँ। मायके मैं जाऊँ तो हंसज पहनकर आऊँ।

माथा कुं तेरे भम्मर सोवे, टीका री छब न्यारी
काणा कुं तेरे झालज सोवे, झुमणा की छब न्यारी
जावोजी–जावो मेरे आंगण से, मैं पत राखूं तमारी
हाओ लाल मैं पत राखूं तमारी ....

कायन को तो रंग बणायो, कायन की पिचकारी
काची केसर को रंग बणायो, कंचन की पिचकारी
जावोजी–जावो मेरे आंगण से, मैं पत राखूं तमारी
हाओ लाल मैं पत राखूं तमारी ....

कितने बरस के कुंवर कन्हैया, किता बरस राधा प्यारी
बारा बरस का कुंवर कन्हैया, भर जोबन राधा प्यारी
जावोजी–जावो मेरे आंगण से, मैं पत राखूं तमारी

पगल्या कुं तेरे कड़ियां सोवे, बिछिया री छब न्यारी
अंग कुं तेरे सालु सोवे, केसर्यारी छब न्यारी
घर तेरा दुर गागर सीर भारी, भारे मरे राधा प्यारी
जावोजी, जावो मेरे अंगणा से, मैं पत राखूं तमारी

सिर का तुम्हारे भम्मर अच्छा लगता है, लेकिन टीके की सुन्दरता देखते नहीं बनती। कानों का तुम्हारे झालज अच्छा लगता है, झुमको की सुन्दरता देखते नहीं बनती। जाओ जी–जाओ मेरे आंगन से, मैं तुम्हारा मान–सम्मान रख रही हूँ। काहे का रंग बनाया, काहे की बनाई पिचकारी? कच्ची केशर का रंग बनाया और सोने की पिचकारी। कितने साल के कुंवर कन्हैया, कितने वर्ष की राधा प्यारी हैं? बारह वर्ष के कृष्ण कन्हैया हैं, जवान हैं राधा प्यारी। पावों को तुम्हारे कड़ियाँ अच्छी लगती हैं, बिछिया की सुन्दरता देखते नहीं बनती। बदन को तुम्हारे साड़ी अच्छी लगती है। केशर रंग की सुन्दरता देखते ही बनती है।

काजलियो कांडू वो सासू, नैणा हम तैरांवगा
देवरियो नादान, म्हारो ढोलो परदेस
होली खेलांगा ...... मल मल होली खेलांगा
सासूड़ी म्हारो जीव तरसे, होली खेलांगा
काजलियो कांडू ....

साड़ी दो यो रूमाल, सासू ऐकली मैं जावांगा
देवरियो नादान, म्हारो ढोलो परदेस
होली खेलांगा ...... मल मल होली खेलांगा
सासूड़ी म्हारो जीव तरसे, होली खेलांगा
काजलियो कांडू ....

नणद भौजाया दोई, मल-मल माथो न्हावे रे
नणदल चाली सासरे, भौजाया रोवे दारी
जोड़ी बिछड़ गई, हाँ रे जोड़ी बिछड़ गई
नणदोई रा बीरा पाछी लावो रे
होली खेलांगा .... काजलियो

मेले तो ठेले जाजो रे भम्मर जी
म्हारे कांई लाजो रे, म्हारे लाजो
पानड़ी टीली देवा ने, वर-वर टीली
देवा ने, नणदोई का बीरा
पाछी लावो रे .... जोड़ी बिछड़ गई

आँख में काजलियो सारी, मैं तो जावां रमवा ने
काजलिया री डाबी आँख, देखी राम, झीणा घुँगट में
हाँ रे झीणा घुंगट में, सासूड़ी म्हारो जीव तरसे
होली खेलांगा

काजल लगाकर सासू मैं नयन लड़ाने जाऊँगी। देवर मेरा छोटा है, पिया मेरे परदेश में है, मैं होली खेलूँगी। मस्ती से होली खेलूँगी, सासूजी मेरा जी ललचा रहा है, मैं होली खेलूँगी। साड़ी और रूमाल दो सासू, अकेली मैं जाऊँगी। ननद और भाभी दोनों मसल-मसलकर सिर नहा रही हैं। ननद चली ससुराल, भाभी रो रही है। दोनों की जोड़ी बिछड़ गई है, ननदोई के भाई ननद को वापस ले आओ। होली खेलेंगे। मेले में जाना मेरे लिये कुछ लाना, पान पत्ते सी बिन्दी लाना, मैं बार-बार लगाती हूँ। ननदोई के भाई, ननद को वापस ले आओ। आँख में काजल लगाकर मैं

खेलने जाऊँगी। बाई आँख मेरी बारीक घूँघट से दीख रही थी, सासूजी मेरा मन ललचा रहा है, मैं होली खेलूँगी।

उठ मिल लो राम लखन आया रे
उठ मिल लो, हाँ रे उठ मिल लो
राम लखन ....
राम जी बी आया सांते लछमन के लाया
तो सीता रे माता के संग लाया
उठ मिल लो ....

उठ मिल लो भोला संकर आया रे
उठ मिल लो, हाँ रे उठ मिल लो
भोला संकर ....
संकर जी बी आया सांते बिष्णू के लाया
तो पारबती माता के संग लाया ...... उठ
तो लछमी माता के संग लाया ...... उठ

उठ मिल लो किशन कन्हैया आया रे
उठ मिल लो, हाँ रे उठ मिल लो
कृष्ण जी बी आया सांते रूखमा के लाया
तो राधा प्यारी ने संग लाया .... उठ

उठो मिल लो गले। राम जी आये हैं, साथ में लक्ष्मण जी हैं, सीता जी को भी साथ में लाये हैं। शंकर जी आये हैं,विष्णु जी को लाये हैं और साथ में माता पार्वती और माता लक्ष्मी को लाये हैं। कृष्ण जी आये हैं साथ में रूक्मिणी को लाये हैं, राधा प्यारी को भी साथ लाये है, उठो मिल लो।

मांथा कुं तेरे भम्मर सोवे
काना कुं तेरे झालज सोवे
टीको रतन जड़ाव, चलो होली बागां में खेलां
झुमणा में लाल लगवावो, चलो होली बागां में खेलां

उदा-उदा सालु ने जरद किनारी
मोती लाल जी वाली ने ओड़ाव

मखनासा हाती उपे अम्बा वाड़ी सोबा
रामजी वाली ने बैठाव ...... चलो होली बागां ....

केल्या कुं तेरे सालु सोवे
केसरीया कोर लगाव
झीणा-झीणा तार झिणाव
कस्तूरचन्द वाली ने पेरांव ...... चलो होली बागां ....

गोरी-गोरी बैय्यां, ने हरी पिली चूड़ियां
हिरा, मोती, लाल लगावो
केसरिया कलप चड़ाव
मोती लाल जी वाली ने पेरांव ..... चलो होली बागां

सिर को तेरे भम्मर अच्छा लगता है। कान को तेरे झालज अच्छे लगते हैं। टीके में रत्न जड़ावो, चलो होली बगीचे में खेलें। झुमका में हीरे लगवाओ। सुन्दर-सुन्दर साड़ी में चाँदी की लेस और गोटा लगाओ, मोतीलाल की पत्नि को पहनाओ। मस्त हाथी उसपर सजी पालकी, रामजी की पत्नि को बैठाओ। अंग को तेरे साड़ी अच्छी लगती है, केशर रंग का गोटा लगवाओ। रेशम के तार से साड़ी गुंथवाओ, कस्तूरचन्द की पत्नि को पहनाओ। गोरी-गोरी कलाइयां, हरी-पीली चूड़ियाँ हीरे-मोती-नगीना, लगवाओ और केशर रंग उसपर चढ़वाओ, मोतीलाल की पत्नि को पहनाओ, चलो होली बगीचे में खेंले।

होली रो बड़ो रे तेवार, होली पामणी
बेवइजी तमारी हो नार, कटकी पुतली
दस दन गेर्या के, पाछे आपणी
होली रो बड़ो रे तेवार ....

होली रो बड़ो रे तेवार, होली पामणी
कानाजी तमारी हो नार, कटकी पुतली
दस दन गेर्या के, पाछे आपणी
होली रो बड़ो रे तेवार ....

होली रो बड़ो रे तेवार, होली पामणी
घीसाजी तमारी हो नार, कटकी पुतली
दस गेर्या के पाछे आपणी
होली रो बड़ो रे तेवार ....

होली रो बड़ो रे तेवार, होली पामणी
भेराजी तमारी हो नार, कटकी पुतली
दस दन गेर्या के पाछे आपणी
होली रो बड़ो रे तेवार ....

होली का बड़ा त्यौहार है। समधी जी आपकी पत्नि कठपुतली है, दस दिन में गैर वालों की हो जाती है बाद में अपनी होती है। कानाजी (नाम) आपकी पत्नि कठपुतली है। दस दिन गैर वालों की हो जाती है, बाद में अपनी होती है। घीसाजी आपकी पत्नि कठपुतली है, दस दिन गैर वालों की हो जाती है, बाद में आपकी होती है। भेराजी आपकी पत्नि कठपुतली है, दस दिन गैर वालों की हो जाती है, बाद में आपकी होती है।

मेंले तैयारी वेगी, तिमन्यो रेग्यो ताला में
भम्मर जी री धोती, बल्डारा रा डाला में
मैं गेलड़ वेगी हो, युं के गेलड़ होगी रे
मेंले तैयारी वेगी ....

मेंले तैयारी वेगी, बाजूबन्द रेग्यो ताला में
सायब जी री धोती, अम्बा रा डाला में
मैं गेलड़ होगी वो, युं के गेलड़ होगी रे .... मेंले

मेंले तैयारी वेगी, टोटी रेग्यी ताला में
रायचन्द जी री धोती, आमली रा डाला में
मैं गेलड़ होगी वो, युं के गेलड़ होगी रे
मेंले तैयारी वेगी ....

मेंले तैयारी वेगी, सांकला रेग्या ताला में
म्हारा मोल्या री धोती, पीपल रा डाला में
मैं गेलड़ होगी वो, युं के गेलड़ होगी रे
मेंले तैयारी वेगी ....

मेले में जाने की तैयारी हो गई, घर में ताला लगा दिया। गले में पहनने का जेवर तिमन्या अन्दर ही ताले में रह गया। मेरे पिया की धोती, छोटी पहाड़ी के पेड़ पर रह गई, मैं पागल जैसी हो गई। मेरी बाहों में पहनने का जेवर अन्दर ही ताले में रह गया, मेरे पिया धोती आम की डाल पर अटक गई, मैं पागल सी हो गई। कानों में पहनने का गहना टोटी ताले के अन्दर ही रह गया,

मेरे पिया की धोती इमली की डाल पर अटक गई, मैं पागल सी हो गई। मेरे पावों में पहनने का गहना सांकला ताले में ही रह गया, मेरे पिया की धोती पीपल की डाली पर अटक गई, मैं पागल सी हो गई।

मारवाड़ मेवाड़ बीच मांय लम्बी सड़का राली हो
लम्बी सड़का राली ने, चलाई गाड़ी वो
बिना बलद्या की, हाँ रे बिना बलद्या की
मारवाड़ मेवाड़ बीच ....

अंबुजी रा पाला में अंगरेज उतर्यो
लीली टोपी रो, युं को लीली टोपी रा
अंगरेज थारो हुनर भारी यो
बिना बलद्या की .... मारवाड़ मेवाड़

जामण रा बागां में अंगरेज उतर्यो
लीली टोपी रो, लीली टोपी रा
अंगरेज थारो हुनर भारी यो
बिना बलद्या की .... मारवाड़ मेवाड़

जीराजी रा बागां में अंगरेज उतर्यो
काला कोटा रे, युं को काला कोटा रा
अंगरेज थारो हुनर भारी यो
बिना बलद्या की .... मारवाड़ मेवाड़

मारवाड़ और मेवाड़ के बीच जाने हेतु लम्बी सड़क बनाई और गाड़ी चलाई, बगैर बैल की गाड़ी। आम के बगीचे में अंग्रेज उतरा नीली टोपी वाला, नीली टोपी वाले अंग्रेज तेरी योग्यता बहुत बड़ी है। जामुन के बगीचे में अंग्रेज आया नीली टोपी वाला, नीली टोपी वाले अंग्रेज तेरी योग्यता बहुत बड़ी है। जारे के खेत में अंग्रेज उतरा है काला कोट वाला, काले कोट वाले अंग्रेज तेरी योग्यता बहुत बड़ी है, बगैर बैल की गाड़ी चला दी, मारवाड़ और मेवाड़ में।

मुरली वाले ने घेर लई, अकेली पनियां गई
बंसी वाले ने घेर लई, अकेली पनियां गई

सिर पर घड़ा घड़े पर गागर, गागर म्हारी फोड़ दी

अकेली पनियां गई .... मुरली वाले ने..........

हार म्हारो भिन्ज्यो सिंगार म्हारो भिंज्यो
चुनड़ी म्हारी भीग गई, अकेली पनियां गई
मुरली वाले ने ....

गोरे-गोरे हाथों में हरी पिली चूड़ियां
मोतीयन मांग भरी, अकेली पनियां गई
मुरली वाले ने ....

सासू म्हारी पूछे, नणद ललकारे
विका घर कायके गई, अकेली पनियां गई
मुरली वाले ने ....

चाय सासु मारो नणद ललकारो
उसे म्हारी प्रीत होई, अकेली पनियां गई
मुरली वाले ने ....

संग की गोठन म्हासे यो मत पूछो
जमना पे रपट पड़ी, अकेली पनियां गई
मुरली वोले ने ....

मैं अकेली पानी भरने गई, वहाँ मुरलीवाले ने मुझे घेर लिया। मेरे सिर पर घड़ा था, घड़े के ऊपर गगरी थी, गगरी मेरी फोड़ दी। गगरी फूटने से पानी गिरा, उससे मेरे कपड़े गीले हो गये। गोरे-गोरे हाथों में हरी-पीली चूड़ियाँ पहनी थी, मोतियों से मैंने मांग भरी थी। सासजी पूछ रही हैं, ननद ललकार रही है, उसके घर क्यों गई? चाहे सासजी मारो या ननद ललकारो उससे मुझे प्रीत हुई है। सहेलियाँ मुझसे कुछ मत पूछो। मैं जमुना नदी पर गई थी, जहाँ पैर फिसला तो रपट पड़ी।

भायेला म्हारा पनघट आजो
पाणी भरूं अकेली, पपैयो बोल्यो रे
फांगण आयो सा, म्हारा पियु गया परदेस
फांगण आयो।

भायेली म्हारी किस बिद आवा परणी केर लड़ाई रे
परणी केर लड़ाई, पपैयो बोल्यो रे

फांगण आयो सा म्हारा पियु गया परदेस
फांगण आयो।

भायेला थारी परणी मरजो म्हारी प्रीत तोड़ाई रे
म्हारी प्रीत तोड़ाई, पपैयो बोल्यो रे
फांगण आयो सा, म्हारा पियु गया परदेस
फांगण आयो।

भायेली म्हारी तू मर जावे परनी बंस बड़ावे
परनी बंस बड़ावे, पपैयो बोल्यो रे
फांगण आयो सा म्हारा पियु गया परदेस
फांगण आयो।

भायेला म्हारा बागां आजो फुलड़ा बिणु अकेली
फुलड़ा बिणु अकेली, पपैयो बोल्यो रे
फांगण आयो सा म्हारा पियु गया परदेस
फांगण आयो।

प्रियतम मेरे! तुम पनघट पर आ जाना, मैं अकेली पानी भर रही हूँ। कोयल बोल रही है फागुन आया है, मेरे पियाजी परदेश गये हैं। प्रिय मेरी! मैं कैसे आ सकता हूँ मेरी विवाहिता औरत लड़ाई करती है। प्रियतम! तेरी शादी वाली औरत मर जाये, मेरी प्रीत तुड़वाना चाहती है। प्रिय मेरी! तुम मर जाना, मेरी औरत मेरा वंश बढ़ाती है। प्रियतम मेरे! तुम बगीचे में आना, मैं अकेली फूल तोड़ रही हूँ, कोयल बोली है, फागुन आया है, मेरे पिया परदेश गये हैं।

होली खेलो भरतार, रंग रसिया
म्हारा हिवड़ा का हार मजलसिया

अरज सुणो ये म्हारा बीरा का बेनोई
म्हारी भावज का नणदोई
नानी नणदल का बीरा, मैं थांकी नार
मजलसिया, होली खेलो ....

रंग केसरिया घोलो हो भंवर जी
या हे म्हारी अरजी के फांगण का दन दोय चार
मजलसिया, होली खेलो ....

कंचन की पिचकारी हातन में, या हे म्हारा मन में
के रंग भर उड़े रे गुलाल, मजलसिया
होली खेलो ....

भर-भर रंग की मारो हो पिचकारी
होली खेलो हो हजारी, थांकी पांगा तो भिंजे जरतार
मजलसिया .... होली खेलो

माथा की चूनर भिंजेगी हमारी
पिया चोली की किनारी
म्हारो बिगड़ेगा सब सिणगार, मजलसीया
होली खेलो ....

अबीर गुलाल की भरो तम झोली
पिया करो क्यो ठिठोली
तम खेलो अबे मारूणी की लार
मजलसिया..... होली खेलो......

होली खेलो पिया, रंग के रसिया, मेरे दिल के हार, मेरे पिया, मेरी बात सुनो। मेरे भाई के बहनोई, मेरी भाभी के ननदोई मेरी छोटी सी ननद के भाई, मैं तुम्हारी पत्नि। मेरे पिया रंग केशरिया घोल लो, यह मेरी अर्ज है। फागुन के दो-चार दिन हैं पिया। कंचन सी सुन्दर पिचकारी मेरे हाथों में और मेरे मन में इतनी उमंग है कि रंग भर-भर कर गुलाल उड़ाँऊ। सिर की चुनरी मेरी गीली होगी, चोली की किनारी भी गीली हो जावेगी और मेरा सब श्रृँगार बिगड़ जावेगा। अबीर और गुलाल की तुम झोली भरो पिया, अब ठिठोली मत करो, खेलो मेरे पियाजी होली।

मती मारो रे मोहन पिचकारी
मती मारो रे मोहन पिचकारी

भर पिचकारी म्हारा सालूड़ा पे न्हाकी
हाँ रे म्हारा सालूड़ा री सोय बिगाड़ी
मती मारो रे मोहन पिचकारी .... हाँ रे

भर पिचकारी म्हारा लेगंवा पे न्हाकी
म्हारा लेगंवा री सोय बिगाड़ी
मती मारो रे मोहन पिचकारी .... हाँ रे

भर पिचकारी म्हारा कंचुवा पे न्हाकी
म्हारा कंचुवा की भात बिगाड़ी
मती मारो रे मोहन पिचकारी .... हाँ रे

भर पिचकारी म्हारा मुखड़ा पे न्हाकी
म्हारा मुंडा री सोभा बिगाड़ी
हाँ रे म्हारा मुंडा री सोय बिगाड़ी
मती मारो रे मोहन पिचकारी .... हाँ रे

कृष्णजी पिचकारी भरकर रंग मत डालो। रंग पिचकारी मेरी साड़ी पर डाली, मेरी साड़ी की शोभा बिगाड़ दी। रंग भरी पिचकारी मेरे लहंगवा पर डाली, मेरे लहंगवा की शोभा बिगाड़ दी। रंग भरी पिचकारी मेरे ब्लाउज पर डाली, मेरे ब्लाउज की शोभा बिगाड़ दी। पिचकारी भर कर मेरे मुख पर डाली, मेरे मुँह की शोभा बिगाड़ दी।

ले ले वो कलालण म्हारो हंसलो गिरवे राखले
छेल भम्मर जी आवे वीने दारू दिजे रे
दारू दाखां रो कलालण थारो मोल लाखां रो
दारू दाखां रो ....

ले ले वो कलालण म्हारो सालू गिरवे राखले
सालूड़ा रे मेल चलाऊँ करजो, दारू दाखां रो
हाँ दारू दाखां रो कलालण थारो जोबन लाखां रो
दारू दाखां रो ....

दारूड़ी से दागो म्हारा लेगां उपर लागो रे
लेगां केरी भाँत बिगाड़ी, लेगों लाखां रो
हाँ लेगो लाखां रो, कलालण थारो मोल लाखां रो
दारू दाखां रो ....

ले ले वो कलालण म्हारा कड़ला गिरवे राख ले
कड़ला रे मेल चुकाऊँ करजो, दारू दाखां रो
हाँ रे दारू दाखां रो कलालण थारो मोल लाखां रो
दारू दाखां रो ....

कलारन (दारू बेचने वाली जाति) मेरी हंसली गिरवी रख ले, मेरे पिया आयेंगे उनको

दारू पीने को दे देना। तेरी दारू दाख से बनी है, जो उन्हें बहुत पसन्द है लेकिन कलारन तेरा मूल्य तो लाखों में एक है। कलारन ले मेरी साड़ी रहन रख ले। साड़ी रहन रखकर उन रूपयों से मैं करजा चुकाऊँगी। तेरी दारू दाख की है, तेरी जवानी लाखों में एक हैं। दारू का दाग मेरे लहंगवा पर लग गया है। जिसने लहंगे की शोभा बिगाड़ दी। मेरा लहंगा लाखों का है लेकिन कलारन तेरा मूल्य लाखों में एक है। कलारन मेरे हाथों की चूड़ी (कड़े) रहन रख ले। कड़े रहन रख कर मैं करजा चुकाउँगी। दारू दाख की है, कलारन तेरा मूल्य लाखों में एक है।

ऐलके फांगणिये म्हारा देवर सा बी आया यो
देवर सा री लार बेरी जाय बला से
लगते फांगणिये, होली का दनड़ा में
नूर गमायो रे लगते फांगण में .... हाँ रे

दुसरे फांगणिये म्हारा सुसरा जी बी आया यो
सुसरा जी री लार बेरी जाय बला से
लगते फांगणिये, होली का दनड़ा में
नूर गमायो रे लगते फांगण में .... हाँ रे

तीसरा आणे म्हारा परणीया बी आया रे
परणीया री लार हुं तो काल की तैयार
लगता फांगणिये, फागणिया दनड़ा में नूर गमायो रे,
लगते फांगण में .... हाँ रे

मोर भाँत मोरड़ी मोरा रे बीच कागो रे
कड़िया वाली छोरी, पीली पड़गी रे
उबे मोरा रे, हाँ रे उबे मोरा रे फांगण में
नूर गमायो रे .... हाँ रे

इस बार फागुन में मेरा देवर लेने आया है, देवर के साथ मैं नहीं जाउँगी। होली के दिनों में बगैर पिया के यह दिन गंवाये हैं। दूसरी बार मेरे ससुरजी लेने आये हैं। ससुर जी के साथ नहीं जाऊँगी। बगैर पिया के यह दिन गंवाये हैं, मेरी शकल उतर गई है। तीसरी बार मेरे पिया मुझे लेने आये हैं, पियाजी के साथ जाने को मैं तैयार हूँ। मेरी हालत ऐसी हो गई है बगैर पिया के जैसे मोर के बीच मोरनी और उनके बीच कौवा मेरे मोर पीली पड़ गई हूँ। जिस लड़की ने कड़ियाँ पहन रखी है फागुन के दिनों में, बगैर पिया के दिन गवांये हैं, मेरी शक्ल भी उतर गई है।

फांगण आयो रे सब मिली के रंग गुलाल खेलो रे
फांगण आयो रे। हाँ रे फांगण आयो रे

पांच तीन ई भेला हुई के दौड़म दौड़ लगाई रे
लाल गुलाल हात में लइके, मुड़ा उपर लगायो रे
फांगण आयो रे। हाँ रे फांगण आयो रे

राधा खेले रूकमा खेले सखीया रास रचावे
जमनाजी का घाट पे बैठो कान्हो नाचे रे
फांगण आयो रे। हाँ रे फांगण आयो रे

सौती सी नींद भड़क कर जागी, बंसी सोर मचायो रे
ग्वाल बाल सब मिली के भेला हुई गीत सुणावे रे
फांगण आयो रे। हाँ रे फांगण आयो रे

फागुन आया है सब मिलकर रंग गुलाल खेलो। सब इकट्ठे होकर भगदड़ मचाई है। लाल रंग का गुलाल हाथों में लेकर मुख पर लगाया है। राधाजी और रुक्मिणी जी होली खेल रही हैं। सखियाँ सारी रास रचा रही हैं। यमुना के घाट किनारे बैठे कन्हैया नाच रहे हैं। नींद में सोई थी, बंशी का शोर सुनकर एकदम चमककर भागी। ग्वाल-बाल सब मिलकर एक साथ गीत गा रहे हैं।

पाणीड़ो भरवा दे नन्दजी का लाल
पाणीड़ो भरवा दे, हां रे पाणीड़ो भरवा दे

कायन का थारा घड़ा बेवड़ा
कायन की लम्बी नेज
पाणीड़ो भरवा दे, नन्दजी का लाल

ताम्बा पित्तल का म्हारा घड़ा बेवड़ा
रेसम लम्बी नेज, पाणीड़ो भरवा दे
नन्दजी का लाल, पाणीड़ो भरवा दे

कुण गांम की रेणे वाली, कंई तमारो नाम
बरसाणा की रेणे वाली, राधा रंगीली
म्हारो नाम, पाणीड़ो भरवा दे
नन्दजी का लाल पाणीड़ो भरवा दे

तु मती जाणे काना आवी हूं एकली
सांत सहेल्या म्हारा संग, पाणीड़ो भरवा दे
भरवा दे, नन्दजी का लाल
पाणीड़ो भरवा दे।

नन्द बाबा के पुत्र मुझे पानी भरने दे। तुम्हारा घड़ा किस चीज का बना है और काहे की डोर बनी है? ताम्बा और पीतल के मेरे घड़े-बेवड़े है। रेशम की डोर बनी है। नन्दजी के पुत्र पानी भरने दे। कौन से गांव की तुम रहने वाली हो, क्या तुम्हारा नाम है? बरसाणा गांव की मैं रहने वाली हूँ, राधा रंगीली मेरा नाम है। कृष्ण तुम यह मत समझना कि मैं अकेली हूँ, सात सहेलियाँ मेरे संग हैं, पानी भरने दे।

अलगल उणालो रे आणो जाणो खोटो
ऐ बाट में मसाण रे भूता रो वासो रे
ऐ डरजो मती, हाँ रे डरजो मती
अलगल उणालो ....

ऐ हतेली में कंकू ले में चेरा मांडू रे
मुंडे बोले तो, हाँ रे मुंडे बोले तो
चेरा मांडू रे, डरजो मती
अलगल उणालो ....

लाल थारो घागरो असमानी उकी भांत रे
ऐं कंई थारा डील में सुराक लाग्यो रे
म्हाने के दीजे, युं के म्हाने के दीजे
जेपुर रो घाड़ायत लाऊं रे, डरजो मती
अलगल उणालो ....

ऐं पीली थारी कंचुकी लीली उकी भांत रे
ऐं कंई थारा डील में सुराक लाग्यो रे
म्हाने के दीजे, युं के म्हाने के दीजे
जेपुर रो घाड़ायत लाऊँ रे, डरजो मती
अलगल ने उनालो ....

भर गर्मी में कहीं भी आना-जाना अच्छा नहीं। रास्ते में श्मशान पड़ता है, वहाँ भूत रहते हैं, डरना नहीं। हथेली में कंकू लेकर मैं चेहरा भूत जैसा बना दूँ। लाल तेरा लहंगा, आसमानी

उसपर डिजाईन है। क्या तुम्हारे बदन में भूत लगा है, मुझे बता देना। मैं जयपुर से जादूगर ले आउँगा, जो तुम्हारा भूत निकाल देगा। पीले रंग का तेरा ब्लाउज, हरे रंग की डिजाईन है, क्या तुम्हारे बदन में भूत लगा है? मुझे बता देना, मैं जयपुर से जादूगर ले आउँगा, जो तुम्हारा भूत निकाल देगा।

नदी किनारे पाल बसई रे, कागा उड़ उड़ जावे रे
रस पिवे लांगरियो, दो-दो जोगण रा बीच
अकेलो खेले लांगरियो

म्हारा सायब रो रूमाल, गली बीच रेग्यो रसिया
दो दन ढल जाये जवानी, जोबन लूट लेवा दे
दो-दो जोगण का बीच मांय खेले लांगरियो

जेपुर जई ने साड़ी लाजो, नगन जड़ीयो रसिया
थारी म्हारी होगी रे बदनामी, थारे घरे राख ले लांगरिया,
दो-दो जोगण का बीच मांय खेले लांगरियो

तपती रेत की लंका में जय-जय बोले लांगरियो
थारी म्हारी होगी रे, बदनामी थारे घरे राख ले
लांगरिया .... दो दो जोगिया ....

नदी किनारे पाल बनाई, जिससे कौवे उड़कर जा रहे हैं। पियाजी दो-दो औरतों के बीच मजा लूट रहे हैं। दोनों के बीच तमाशा कर रहे हैं। मेरे सायब का रूमाल दोनों के बीच रह गया। दो-दो औरतों के बीच अकेला खेल रहा है। यह जवानी दो दिन की है ढल जावेगी, लेकिन मजा तो लूट लेने दो। मेरे पिया का रूमाल गली में गुम हो गया है। जयपुर जाकर साड़ी लाना नगों से जड़ी हुई। तेरी-मेरी बदनामी होगी। मुझे अपने घर में रख ले।

लोग लुगांया रो आयो रे धड़ेलो
अबे इना ब्यायजी की छती फाटी रे
डरपो मती, हाँ डरपो मती
मैं तो म्हारे घर जांस्या .... डरपो मती

रोटी तो म्हे जीमी ने आया
पाणी नरबदा जाई पीस्यां, डरपो मती

हाँ डरपो मती, म्हे म्हारे घर जांस्या
डरपो मती ....

रोटी तो म्हे जिमी चुठी आया
पाणी सीपरा जई पिस्यां, डरपो मती
हाँ रे डरपो मती मैं म्हारे घर जांस्या
डरपो मती ....

रोटी तो म्हे जिमी चुठी आया
पाणी जमना जई पिस्यां, डरपो मती
हाँ डरपो मती, म्हे म्हारे घर जांस्या
डरपो मती ....

आदमी–औरत की भीड़ आई है, यह देखकर समधी धक से रह गया। डरो नही समधी, हम हमारे घर जायेंगे। खाना तो हम अपने यहाँ खाकर आये हैं, पानी हम नर्मदा जी में जाकर पियेंगे। खाना तो हम अपने यहाँ खाकर आये हैं, पानी हम क्षिप्रा जाकर पियेंगे। खाना तो हम अपने यहाँ खाकर आये हैं, पानी हम जमुना जी में जाकर पियेंगे। डरना नहीं समधी जी, हम अपने घर जा रहे हैं।

नरबदा रंग से भरी, होली खेलेगा नन्दजी का लाल
नरबदा रंग से भरी, होली खेलेगा श्री नन्दलाल

कां से तो आया कुंवर कन्हैया
तो कां से आई राधा प्यारी
नरबदा रंग से ....

गोकल से आया कुंवर कन्हैया
तो बरसाणा से आई राधा नार
नरबदा रंग से ....

कित्ता बरस का कुंवर कन्हईया
तो कित्ता बरस राधा नार
नरबदा रंग से ....

पांच बरस का कुंवर कन्हईया
तो बारा बरस राधा नार

नरबदा रंग से ....

बारा बरस का कुंवर कन्हैया
तो भर जोबन राधा नार
नरबदा रंग से ....

नर्मदा नदी का पानी रंगों जैसा हो गया है। होली नन्दबाबा के पुत्र खेलेंगे। कहाँ से आये कुंवर कन्हैया, कहाँ से आयी राधे प्यारी? गोकुल से आये हैं कृष्ण कन्हैया, बरसाना से आयी राधे नार। कितने वर्ष के कृष्ण कन्हैया, कितने वर्ष की राधे नार? पांच वर्ष के कृष्ण कन्हैया, बारह वर्ष की राधे नार।

मुख मुरली बजावे, म्हारो नन्दलाला
मुख मुरली, हाँ रे मुख मुरली
बजावे म्हारो नन्दलाला।

कायकी थारी बणी रे मुरलिया
कायन को जड्यो रे जड़ाव रे
मुख मुरली ....

हरिया बांस की बणी रे मुरलिया
रत्ना रो जड्यो रे जड़ाव
मुख मुरली ....

मुरली की धुन सुन राधा जी आई
राधा जी आई सबका मन भाई
मुख मुरली ....

रामजी बी आया लछमन बी आया
सीता रे माता उका संग आई
मुख मुरली ....

मुख से मुरली बजा रहे हैं कृष्ण। किस चीज की तुम्हारी मुरली बनी है और काहे का उसमें जड़ाव किया गया है? हरे बांस की मुरली बनी है, हीरे–मोती रत्नों का उसमें जड़ाव है। मुरली की धुन सुनकर राधा जी आई। राधा जी सबके मन को भा गईं हैं। रामजी भी आये साथ में लक्ष्मण को लाये, सीता जी को भी साथ लाये।

केसर केरो रंग बणायो, तम आवो नी कृष्ण कन्हाई
होली खेलो कृष्ण कन्हाई, हाँ रे होली खेलो ....

हमने फूलाँ सेज बिछाई, तम पोड़ो नी कृष्ण कन्हाई
हाँ रे पोड़ो नी कृष्ण कन्हाई, म्हने केसर रंग बणाई
होली खेलो ....

तम झटपट खोलो किमाड़ी, होली खेलो कृष्ण कन्हाई
म्हने चूड़ी म्हारी बजाई, नई खोली फिर बी किमाड़ी
होली खेलो ....

राधा खेले रूकमा खेले, संग में खेले कन्हाई
चन्द्र सखी ब्रज बाल की सोभा बरणी ना जाई
होली खेलो ....

रात इन्दारी या रेण, अरज सुणी घर आवो कन्हाई
बाट जोवे राधा प्यारी, तम आवो नी कन्हाई
होली खेलो ....

केशर (टेसू) का रंग बनाया, श्री कृष्ण जी होली खेलो। मैंने फूलों की सेज बनाई है, आप जल्दी से दरवाजा खोलो, कृष्ण जी होली खेलने आये हैं। मैंने चूड़ियाँ भी बजाई, लेकिन दरवाजा नहीं खोला। राधा भी खेल रही, रूक्मिणी भी खेल रही हैं। संग में खेल रहे हैं श्री कृष्ण। सखियों की और बृज के बाल-गोपाल की शोभा कहते नही बनती है। रात अन्धेरी है, मेरी बात सुनो, घर आओ कन्हाई, राधा प्यारी तुम्हारी राह देख रही हैं।

घर में दो-दो नार बलम एकलो
घर में, हाँ रे घर में दो-दो
नार बलम एकलो

मोटकी तो केवे म्हारे लेंगो मोलई दो
तो छोटकी लड़कां ने मांड्यो झगड़ो
घर में दो-दो ....

मोटकी तो केवे म्हारे सालुड़ो मोलई दो
छोटकी लडकां ने मांड्यो झगड़ो
घर में दो-दो ....

मोटकी तो केवे म्हारे टोटी झुमका लई दो
छोटकी लड़कां ने मांड्यो झगड़ो
घर में दो-दो ....

मोटकी तो केवे म्हारे कड़ियां मोलई दो
छोटकी लड़कां ने मांड्यो झगड़ो
घर में दो-दो ....

घर के अन्दर दो-दो पत्नि हैं, पति बिचारा अकेला। बड़ी पत्नी कहती है, मुझे लहंगा लाकर दो, छोटी पत्नि जो लड़ाकू है उसने झगड़ा कर लिया। बड़ी पत्नि कहती है मुझे साड़ी लाकर दो, यह सुन छोटी पत्नि ने घर में कलह मचा दी। बड़ी पत्नि कहती है कानों के टोटी झुमके ला दो, यह सुन छोटी पत्नि ने घर में कलह मचा दी। बड़ी पत्नि कहती है मुझे पावों के लिए कड़ियाँ ला दो, यह सुन छोटी पत्नि ने घर मे कलह मचाई कि मुझे भी लाकर दो।

भांग रंगी भांग चंगी, भांग मीठी लागे
भांग पीने बेवइजी, ओटले सुता
पूंद मारीग्या गाम का गेल्या
कंई तो लख्खण ले रे गेर्या .... भांग रंगी

भांग रंगी भांग चंगी, भांग मीठी लागे
भांग पीने आत्माराम बेवई, ओटले सूता
पूंद मारीग्या गांम का गेल्या
कंई तो लख्खण ले रे गेर्या .... भांग रंगी

भांग रंगी भांग चंगी, भांग मीठी लागे
भांग पीने बद्री बेवई, ओटले सुता
पूंद मारीग्या गांम का गेल्या
कंई तो लख्खण ले रे गेर्या .... भांग रंगी

भांग रंगी भांग चंगी, भांग मीठी लागे
भांग पीने मांगू बेवई, ओटले सूता
पूंद मारीग्या गांम का गेल्या
कंई तो लख्खण ले रे गेर्या .... भांग रंगी

भांग रंगीन है, मस्त है, मीठी लगती है। भांग पीकर समधी जी आंगन में सो गये। पागल

गांव का उनकी पोंद पर मार गया। अच्छी आदतें ले ले झुंड में जाने वाले। भांग पीकर आत्माराम समधी आंगन में सो गये, गांव का एक पागल सोते में उनकी पोंद पर मार गया। भांग पीकर बद्री समधी आंगन में सो गये, गांव का एक पागल सोते में उनकी पोंद पर मार गया। भांग पीकर मागूं समधी आंगन में सो गये, गांव का एक पागल सोते में उनकी पोंद पर मार गया, अच्छी आदतें सीख लो, झुंड में जाने वालों।

फांगण आयो हे पियूजी परदेस बसे रे
फांगण आयो हे, हाँ रे फांगण आयो हे
पियुजी परदेस बसे रे ....

पियुजी का कारण म्हने रंग बणायो
गांठ भरी ने केसर घोल्यो रे
फांगण आयो हे ....

पियुजी का कारणे घर आंगण लिप्या
अबीर गुलाल भरी हे झोली रे
फांगण आयो हे ....

पियुजी आवे तो पकवान बणांवा
भातं केसरीया पूरण-पोली रे
फांगण आयो हे ....

बेगा-बेगा आजो म्हारा छेल भंवरजी
आम्बा की डाल कोयल बोले रे
फांगण आयो हे ....

लिख-लिख पाती पियुजी के भेजी
नार सुवागण मन की भोली रे
फांगण आयो हे ....

किन संग भर-भर मारा पिचकारी
किन संग फांग खेलां होली रे
फांगण आयो हे ....

किन संग हंस हंस बात करांगा

किन से करांगा में तो रंग रोली रे
फांगण आयो हे ....

मेरे पिया परदेश में हैं, फागुन आया है। पिया जी के लिये मैंने रंग बनाया। गठरी भरकर केशर घोली है। पियाजी के कारण मैंने घर आंगन लीपा है, अबीर और गुलाल से झोली भर दी है। मेरे पिया आयें तो मैं भोजन बनाउँगी। जल्दी आओ मेरे पियाजी, आम की डाल पर कोयल बोल रही है। मैंने चिठ्ठी लिख-लिख कर पियाजी को भेजा, मैं सुहागिन स्त्री मन की बहुत भोली हूँ। किसको पिचकारी भरकर रंग डालूँगी, किसके साथ होली खेलूँगी? किससे हँसकर बातें करूँगी, किससे ठिठोली करूँगी?

रामजी ये मन्दरिये सोना रा पाट जड़िया रे
ठाकुर जी ये मन्दरिये जीरो का जड़िया रे
दरसण करवा दो, हाँ रे दरसण करवा दो
दरसण का सा बेला हो ग्या रे .... दरसण

रामजी का सिंगासण में हिरा मोती जड़िया रे
ठाकुर जी का मन्दरिये रत्ना रा खम्बा मड़िया रे
दरसण करवा दो, हाँ रे दरसण करवा दो
दरसण का सा बेला हो ग्या रे .... दरसण

रामजी का मन्दरिये नौबत नगाड़ा बाजे रे
ठाकुर जी के मन्दरिये झीणा बाजा बाजे रे
दरसण करवा दो, हाँ रे दरसण करवा दो
दरसण का सा बेला हो ग्या रे .... दरसण

रामजी के मन्दिर में सोने के पाट (पिल्लर) जड़े हुए हैं। ठाकुर जी (कन्हैया) के मन्दिर में चाँदी के जड़े हैं। दर्शन करने दो, मुझे प्रबल इच्छा हो रही है। रामजी के सिंहासन में हीरे-मोती जड़े हैं । ठाकुर जी के मन्दिर में नीलम मढ़े हैं। रामजी के मन्दिर में नौबत और नगाड़े बज रहे हैं, कृष्ण जी के मन्दिर में मध्यम आवाज में बाजे बज रहे हैं।

इनके कोई बरजो नी माई
बन चल्या रघुराई, इनके कोई बरजो ....

आगे-आगे राम चल्या हे, पाछे हे लछमन भाई
जिनका बीच मांय चली जानकी
सोबा घणी रे समाई .... इनके कोई बरजो

राम बिना म्हारी सूनी अजोद्या
लछमन बिना ठकुराई
सीता बिना म्हारी सूनी रसोई
कुण केर चतुराई, इनके कोई बरजो ....

सावण गरजे भादव बरसे
पवन चले पुरवाई
कौन कुटि का नीचे भींजे
राम लखन सीता माई, इनके कोई बरजो ....

इन्हें कोई रोको। आगे-आगे राम पीछे लक्ष्मण भाई जिनके बीच में सीता चली हैं। इतना सुन्दर लग रहा है कि कुछ बयान नहीं कर सकते। राम के बिना अयोध्या सूनी है, लक्ष्मण के बिना अधिकार, सीता के बिना रसोई सूनी है। सावन गरजते हैं, भाद्रपद बरसते हैं, हवा आड़ी-टेढ़ी चलती है। कौन सी कुटिया के नीचे गीले हो रहे होंगे, राम-लक्ष्मण और सीता-मैया? इन्हें कोई रोको।

हाँ वो सीतला माता
इना खेड़ा उपर ठण्डी रीजे वो
माता सीतला ....

लांगरिया की जोड़ माता
सीतला ने सोवे रे
रूपा जड़ियो कांगसियो
गुणा के सोवे रे .... माता सीतला

बाजुबंद की जोड़ माता
सीतला ने सोवे रे
रूपा जड़ियो कांगसियो
गुणा के सोवे रे .... माता सीतला

खंगाली की जोड़ माता

सीतला ने सोवे रे
रूपा जड़ियो कांगसियो
गुणा के सोवे रे .... माता सीतला

कड़ियां की जोड़ माता
सीतला ने सोवे रे
रूपा जड़ियो कांगसियो
गुणा के सोवे रे .... माता सीतला

शीतला माता जी आप अपने ठिकाने पर ठण्डी रहना। माता शीतला की जोड़ माता को पहनाते हैं, सुन्दर हीरे जड़ाव से जड़ी कांगली (कंघी) गुणाबाप (देवता का नाम) चढ़ाते हैं। बाजूबंद की जोड़ माता शीतला को चढ़ाते हैं। खंगाली की जोड़ शीतला माता को चढ़ाते है। कड़ियों की जोड़ माता को चढ़ाते हैं।

मोल्या मरी जा रे पाप कटे रे भारी
मोल्या मरी जा रे, हाँ रे मोल्या
मरी जा रे पाप कटे ....

म्हारी रे जोड़ी की गोंठण
दो दो भम्मर पेरे रे
हूं कंई पेरूं थारा हाड़ रसिया
मोल्या मरी जाजे ....

म्हारी रे जोड़ी की गोंठण
दो-दो रमाड़े रे
हूँ कंई रमाडू थारा हाड़ रसिया
मोल्या मरी जाजे ....

म्हारी रे जोड़ी की गोंठण
दो-दो बाजूबन्द पेरे रे
हूँ कंई पेरूं थारा हाड़ रसिया
मोल्या मरी जा रे ....

पिया! तुम मर जाओ तो पाप कटेगा। मेरे साथ वाली सहेलियाँ दो-दो भम्मर पहनती हैं, मैं क्या पहनूँ? तेरे हड्डे पिया। मेरे साथ वाली सहेलियाँ दो-दो बच्चे खिलाती हैं, मैं क्या खिलाऊँ?

तेरे हड्डे पिया। तुम मर जाओ, मुझे दुःख नहीं होगा। मेरे साथ वाली सहेलियाँ दो-दो बाजूबंद पहनती हैं, मैं क्या पहनूँ? तेरे हड्डे पिया। तुम मर जाओ, मुझे दुःख नहीं होगा।

सांवरा आवजो थाने जगत पियारा भगत बुलावे रे
कान्हा आवजो, हाँ रे कान्हा आवजो

थारा नाम की कथा सुणावे नगदी दाम चुकावे रे
वेद पुराण सब छोड़ देवे, युं भुरमावे रे
कान्हा आवजो ....

थारा बंस का छतरी हुईने झटका का अन्यायी
नेम धरम सब छोड़ दियो, बणे कसाई रे
कान्हा आवजो ....

तीन लोक की सेवा करणो, लोग ने छोड़या
तलाब किनारे मछली मारे, ग्यान बतावे रे

भक्ता रो थारे कंई सुणावां, म्हारे आवे लाज रे
नेम धरम सब छोड़ दिया, युं भरमावे रे
कान्हा ....

सांवरिया आ जाओ, तुमको भक्त बुला रहे हैं। कृष्ण आ जाओ, दुनिया के प्यारे भक्त बुला रहे हैं। तेरे नाम की कथा सुनाकर नगद कमाते हैं। वेद पुराण सब छोड़ दिये, गलत बात बताते हैं, कृष्ण आओ। तेरे वंश के होकर अन्याय करते हैं। नियम धर्म सब छोड़ दिया हैं, कसाई बन रहे हैं, कृष्ण आओ। तीनों लोक की सेवा करना लोगों ने छोड़ दिया। तालाब किनारे मछली मारते, बस यही ज्ञान बताते हैं। भक्त लोगों के किस्से तुम्हें क्या सुनायें, भगवान मुझे शर्म आती है।

लाल केर्स्यो लई के हात आयो होली को तेवार
होली खेलो आखा चौक में।

लाल केर्स्या ले तु नाथुलाल वाली क्यां जाजे रे
उँ सारंगी बजावे सारा सेर में .... लाल

वा तो न्हाई धोई रे वा तो सुती रे नचीत रे

म्हारा टोटु काका थारा भरोसे उके गेर्या लई उड्या
लाल ....

तू तो एक दमड़ी रा डाबी डबल्या लावे रे
म्हारा टोटु काका आदी दमड़ी रा, लाजे हिंगलु
लाल ....

तु तो मोतीलाल जी वाली की मांग भरांव
म्हारा टोटु काका बलल–बलल हिंगलु करे
लाल ....

लाल केर्स्या ले तु पुनमचन्द वाली क्यां जाजे रे
उँ सारंगी बजावे सारा सेर में .... लाल

वा तो न्हाई धोई सुत्ती रे नचीत रे
म्हारा टोटु काका थारा भरोसे गेर्या लह उड्या
लाल.........

लाल रंग हाथ में ले लो। होली का त्यौहार आया है, होली खेलो। लाल रंग लेकर तुम नाथूलाल की पत्नि के यहाँ जाना। नाथूलाल सारंगी बजाता पूरे शहर में फिर रहा है। वह तो नहा–धोकर निश्चित होकर सोई है। मेरे टोटु काका तुम्हारे भरोसे होली खेलने वाले उसे उठाकर ले गये हैं। तुम तो एक पैसे के डिब्बे लाते हो, मेरे टोटु काका तुम आधे पैसे की कीमत वाले तुम्हारी पत्नि लाज शरम से घड़ी हो रही है। तुम तो मोती लाल जी की पत्नि की मांग भर आओ। मेरे टोटू काका जल्दी–जल्दी लाल रंग लेकर तुम पूनमचन्द की पत्नि के यहाँ जाना।

कुंवा में कबूतर बोले बयड़े बोले मोरियो
म्हारा बेटा रांगड़िया बन्दूक मारी रे
मोरियो मार्यो रे
हाँ रे मोरियो मार्यो राजाजी थारो नास
जाजेरे .... मोर्यो मारियो

मोरियो मारी ने राजा पनघट मांय फेक्यो रे
आती जाती पणियारी सराप देवे रे
मोरियो मारियो, राजाजी थारो नास
जाजे रे .... मोरियो मारियो

मोरियो मारी ने राजा, गोया मांय फेक्यो रे
आती जाती हालिड़न सराप देवे रे
मोरियो मार्यो, राजाजी थारो नास
जाजे रे .... मोरियो मारियो

मोर मारी ने राजा ठेल मांय फेक्यो रे
आती जाती गाय भैस्यां सराप देवे रे
मोरियो मार्यो, राजाजी थारो नास जाजे रे
मोरियो ....

कुँऐ में कबूतर बोले। मेरे तीसमारखाँ पति ने बन्दूक चलाकर मोर को मार डाला। राजा तेरा सत्यानाश हो, जो मोर को मार डाला। मोर को मारकर राजा ने कुँऐ में फेंक दिया। आती-जाती पनिहारी श्राप देती हैं। मोर मारकर राजा ने खलिहान में फेंक दिया। आती-जाती काम करने वाली महिलायें श्राप देती हैं। मोर मारकर राजा ने तालाब में फेंक दिया। आती-जाती गाय, भैंस श्राप देती हैं।

सालुड़ो ओड़ी ने छोरी होली तापण चाली रे
कामड़ी मारी रे छोरा कामण की
मती मारे, हाँ मती मारे हु छोरी
म्हाजन की .... होली तापण

खंगाली पेरी ने छोरी होली तापण चाली रे
कामड़ी मारी रे छोरा कामण की
मती मारे, हाँ मती मारे हु छोरी
म्हाजन की .... होली तापण

कन्दौरो पेरी ने छोरी होली तापण चाली रे
कामड़ी मारी रे छोरा कामण की
मती मारे, हाँ मती मारे हु छोरी
म्हाजन की .... होली तापण

कड़ियां पेरी ने छोरी होली तापण चाली रे
कामड़ी मारी रे छोरा कामण की
मती मारे, हाँ मती मारे हु छोरी
म्हाजन की .... होली तापण

साड़ी पहनकर लड़की होली तापने चली है। एक लड़के ने अनार की डंडी लड़की को मार दी। मत मार लड़के, मैं महाजन की लड़की हूँ। खंगाली पहनकर लड़की होली तापने चली, लड़के ने अनार की किमड़ी मारी। करधोना पहनकर लड़की होली तापने चली, लड़के ने अनार की किमड़ी मारी। कड़ियाँ पहनकर लड़की होली तापने चली, लड़के ने अनार की किमड़ी मारी।

किजो जाट का के साडढ़ली सणगारी लावे रे
किजो जाट का के साडढ़ली सणगारा लावे रे

पेलां आणे म्हारा सुसरा जी आया
सुसरा रा सांते म्हारी जाय बला से हाँ रे
किजो जाट का के साडढ़ली सणगारी लावे रे

दुसरा आणा म्हारा जेठजी आया
जेठ जी रा सांते म्हारी जाय बला से हाँ रे
किजो जाट का के साडढ़ली ....

तीसरा आणा म्हारा नणदोई जी आया
नणदोई का सांते म्हारी जाय बला से हाँ रे
किजो जाट का के ....

चौथा आणे म्हारा सायबजी आया
सायब जी रां सांते हुं तो काल की तैयार हाँ रे
किजो जाट का के ....

मेरे पति से जाकर कहो की ऊँट को श्रृँगार करके मुझे लेने आ जावें। ऊँट पर बिठाकर मुझे ले जावें। सबसे पहले मेरे ससुर जी लेने आये, ससुर जी के साथ मैं नहीं जाऊँगी। दूसरी बार मेरे जेठ जी लेने आये, जेठजी के साथ मैं नही जाऊँगी। तीसरी बार मेरे ननदोई जी आये, ननदोई जी के साथ मैं नही जाऊँगी। चौथी बार मेरे पति लेने आये, राजाजी के साथ जाने को मैं कल से ही तैयार हूँ।

पेली सुमरा देव गजानन रे पेली सुमरा
हां रे पेली सुमरा देव गजानन रे पेली सुमरा

मोटाजो जो कंइये थारा पांव गजानन
देवल खम्ब बणेगा भारी
पेली सुमरा ....

मोटी जो कंइये थारा सीस गजानन
सवा मण सिन्दूर चड़ेला भारी
पेली सुमरा ....

मोटा जो कंइये थारा कान गजानन
सक्ति रा सुपड़ा बणेला भारी
पेली सुमरा ....

मोटा जो कंइये थारो पेट गजानन
सवा मण मलीदो चड़ेला भारी
पेली सुमरा ....

मोटी जो कंइये थारी पूंछ गजानन
चारी खुंणे चंवर ढुले भारी
पेली सुमरा ....

मोटी जो कंइये थारी आंख गजानन
झबलक दिवला बले भारी
पेली सुमरा ....

सबसे पहले गजानन देवता को पूजते हैं। गणपति के पाँव खम्भे के समान भारी हैं। तुम्हारे बड़े सिर में सवा मन सिन्दूर चढ़ता है। मोटे तुम्हारे कान से शक्ति मिलती है। तुम्हारे पेट में सवा मन चूरमा चढ़ता है। तुम्हारी पूँछ चारों दिशाओं में जैसी घूम रही है। तुम्हारी आँख ऐसी है जैसे मोटी लौ वाले दिये जल उठते हैं।

भई रे फर्णाजी थारो, मेल अजब बण्यो रे
फर्णाजी थारो मेल अजब बण्यो रे ....

कांई ने चड़ावे थारे लोग जात्री
बकरा चड़ावे राणो उदेपर को
फर्नाजी थारो मेल अजब बण्यो रे ....

कांई ने चड़ावे थारे लोग जात्री
छत्तर चड़ावे राणो उदेपर को
फर्नाजी थारो मेल अजब बण्यो रे

कांई रे चड़ावे थारे लोग जात्री
फुलड़ा चड़ावे राणो उदेपर को
फर्नाजी थारो मेल अजब बण्यो रे

सुरदास प्रभु तुम्हारे मिलन को
अवसर आयो खेलां होली
फर्नाजी थारो मेल अजब बण्यो रे

भाई फर्नाजी (देवता का नाम) तुम्हारा महल गजब का बना हुआ है। तुमको यात्री लोग क्या चढ़ाते हैं? किस तरह पूजा करते हैं? बकरा चढ़ाकर पूजा करते हैं। राणा उदयपुर के फर्नाजी तुम्हारा महल गजब बना है। क्या चढ़ाकर पूजा करते है यात्री लोग? छत्र चढ़ाकर पूजा करते हैं। फूल चढ़ाकर पूजा करते हैं। सूरदास कहते हैं कि प्रभु तुम्हारे मिलने का यही रास्ता, यही मौका है। आओ होली खेलेंगे।

म्हारा होलीरा खेलइयां, म्हाके झुलो बांदण दे
म्हारा साँवरा कन्हैया, म्हाके झुलो बांदण दे

झुलो तो बादूं डाल कदम की
झुले है कृष्ण कन्हैया रे
म्हारा होली रा खेलईयां

एक रे हात ये रंग का रे घड़वा
दुजा हात पिचकारी
भर पिचकारी वेरा मुख पे डाली
भीग गई तन सारी रे
म्हारा होली रा खेलईयां

रंग केसरियो घोले सखियां सारी
डाल दियो रंग सारी रे
भीज गई गुल क्यांरी रे
म्हारा होली रा खेलइयां

खेलत-खेलत निसयो ललना
खुल रई गुल क्यारी
चन्द्रसखी ब्रजबाल की शोभा वरणी ना जाई
म्हारा होली रा खेलईयां

मेरे होली खेलने वाले श्याम! मुझे झूला बाँधने दे। झूला कदम डाल पर बाँधू, जिसमें कृष्ण कन्हैया झुलेंगे। होली खेलने वाले एक हाथ में रंग तथा दूसरे हाथ में पिचकारी लिये हैं। पिचकारी उसके मुख पर डाली, जिससे सारा तन गीला हो गया। केशरिया रंग सब सहेलियाँ बना रही हैं। वही रंग साड़ी पर डाल दिया। राधा पूरी गीली हो गई। होली खेलते-खेलते कन्हैया निकले। सखियाँ संग राधा इतनी खुश हुई कि ब्रज की शोभा का वर्णन नहीं कर सकते।

चड़ी आयो पवन सुत गढ़ लंका में चड़ी आयो
हां रे चड़ी आयो पवन सुत गढ़ लंका में चड़ी आयो

रामजी के चड़वा ने मकनो सो हाती
लछमन के चड़वा ने घोड़ी हंसली
चड़ी आयो ....

कंई ने जीमे म्हारो मकनो सो हाती
कंई ने जीमे थारी घोड़ी हंसली
चड़ी आयो ....

लाडूला जीमे म्हारो मकनो सो हाती
चंदी चारो चूगे म्हारी घोड़ी हंसली
चड़ी आयो ....

राम जी आया पिरभू लछमन आया
सीता मैया के लोर लाया
चड़ी आयो ....

सूरदास पिरभू तुम्हारे मिलन को
हरिचरण गुण गाये रे
चड़ी आयो ....

हनुमानजी लंका पर चढ़ाई कर गये। रामजी को चढ़ने के लिये ऐरावत मस्त हाथी, लक्ष्मण को चढ़ने के लिये जवान घोड़ी है। रामजी का ऐरावत हाथी क्या खाता है? क्या खाती है

जवान घोड़ी? लड्डू खाता है ऐरावत हाथी रामजी का, चंदी घास खाती है घोड़ी। प्रभु रामजी आये, लक्ष्मण को लाये साथ में सीता माता को लाये। सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलने को हरि के चरण में गुण गाते हैं।

हाँ रे मेंदी रेलाणी भम्मर जी थारी अमर हेलाणी
हाँ रे मेंदी रेलाणी भम्मर जी थारी अमर हेलाणी

अणी रे मेंदी रा वाला पांचा लगत है
पांचा वालो हात म्हारा हिवड़े राखूं रे
मेंदी रेलाणी, हाँ रे मेंदी रेलाणी ....

अणी रे मेंदी रा वाला लेरिया लगत हे
लेरिया वालो हात म्हारा हिवड़े राखूं रे
मेंदी रेलाणी, हाँ रे मेंदी रेलाणी ....

अणी रे मेंदी रा वाला रायला लगत है
रायला वालो हात म्हारा हिवड़े राखूं रे
मेंदी रेलाणी, हां रे मेंदी रेलाणी ....

अणी रे मेंदी रा वाली चोपड़ लगत है
चोपड़ वालो हात म्हारा हिवड़े राखूं रे
मेंदी रेलाणी, हाँ रे मेंदी रेलाणी ....

पिया मेंहदी इतनी रची है कि गहरा रंग हाथों में चढ़ता है। यही रंग तुम्हारे प्रेम की निशानी है। इस मेंहदी से हाथों में पाँच पांचे लगते हैं। पांचे वाला हाथ मैं अपने दिल पर रखूँगी। मेंहदी इतनी रची है। इस मेंहदी से हाथों में लहरिया लगाते हैं। लहरिया वाला हाथ मैं अपने दिल पर रखूँगी। इस मेंहदी से हाथों में चौपड़ बनाते हैं। चौपड़ वाला हाथ अपने दिल पर रखूँगी, मेंहदी इतनी रची है।

नहीं माने यशोदा माँ देख थारो नन्दलाला
नन्दलाला थारो नन्दलाला, नहीं माने यशोदा माँ

मिल सखियाँ सारी न्हावा जावां
चिर चुरई लईग्यो मुरारी

यो तो बैठो कदम की डाल
देख थारो नन्दलाला ....

जावां बजरिया रस्तो रोके
रोके डगरिया म्होर सतोव
यो तो बैठो उधम मचाय
देख थारो नन्दलाला ....

जावां पनघटिया रस्तो रोके
रोके डगरिया म्होर सतोव
यो तो बाट मांय उधम मचाय
देख थारो नन्दलाला ....

यशोदा मैया! तेरा नन्दलाल नहीं मानता है, परेशान करता है। सब सहेलियों के साथ नहाने गई थी, हमारे कपड़े चुराकर ले गया और कदम की डाल पर बैठ गया। बाजार जाती हूँ तो रास्ता रोक लेता है। रास्ता रोककर सताता है। मुझे देखकर ऊधम मचाता है। पानी भरने जाती हूँ तो रास्ता रोक लेता है, रास्ता रोककर सताता है। मुझे रास्ते में बैठाकर ऊधम मचाता है।

कान्हो भोलो रे द्वारका रो नाथ धणी कान्हो भोलो
कान्हो भोलो रे द्वारका रो नाथ धणी कान्हो भोलो

कान्हा थारी गोपियां ने बिन्दली बी सोवें
कानजी ने सोवे डोरो रेसम को रे
कान्हो भोलो रे ....

कान्हा थारी गोपियां ने भंमरिया बी सोवे
कानजी ने सोवे डोरो रेसम को रे
कान्हो भोलो रे ....

कान्हा थारी गोपियां ने नथनी बी सोवे
कानजी ने सोवे डोरो रेसम को रे
कान्हो भोलो रे ....

कान्हा थारी गोपियां ने हंसली बी सोवे
कान जी ने सोवे डोरो रेसम को रे
कान्हो भोलो रे ....

कृष्ण कन्हैया द्वारकापुरी के राजा हैं। भोला कन्हैया तेरी गोपियाँ बिन्दली (सिर का जेवर) पहनती हैं। कृष्ण रेशम की डोरी पहनते हैं। कृष्ण सीधा सरल स्वभाव का है। कृष्ण तेरी गोपियाँ भम्मर पहनती हैं। कृष्ण तेरी गोपियाँ नाक में नथनी पहनती हैं। कृष्ण तेरी गोपियाँ हँसली पहनती हैं।

तम लईलो रे नगर का वासी
कन्हैया माखनड़ो जी म्हारो मईडो रे

कोरी कोरी मटकी में माखनड़ो जमायो
पाणां नी लाख्यो एक बूँद हो
कन्हैया प्यारे माखनड़ो जी म्हारो मईडो रे

गोकुल बेच्यो म्हेन वृंदावन बेच्यो
बेच्यो जी नन्दजी का गांम रे
कन्हैया प्यारे माखनड़ो रे.........

मैं हु ब्रजभान गुजरिया
तम हो नंदजी का लाल हो
कन्हैया प्यारे माखनड़ो रे.........

चन्द्रसखी की सुणो कान्हा बिनती
तम जीत्या मैं हारी हो कन्हैया
प्यारे माखनड़ो रे ....

शहर के रहने वाले कन्हैया मेरा माखन खरीद लो। नई कोरी मटकी में दही जमाया है। पानी की एक बूँद भी नहीं डाली। मैंने माखन गोकुल में बेचा, वृंदावन में बेचा, नन्दजी के गाँव में भी बेचा। कन्हैया ले लो मेरा माखन। मैं ब्रज की गुजरी हूँ, आप नन्दजी के लाल हो। सखी की बिनती सुनो, कन्हैया आप जीते, मैं हारी। कन्हैया प्रिय माखन ले लो।

भई रे चालो बदावा ने मोती डारी थाल भरी ने
चालो बदावा, हाँ रे चालो बदावा

एलके सासुजी म्हने सांचो सपनो आयो रे
थारो बेटो द्वारका परसी ने आयो रे

चालो बदावा ने मोती डारी थाल भरी ने

एलके सासुजी म्हने सांचो सपनो आयो रे
थारो बेटो जगदीश जी परसी ने आयो रे
चालो बदावा ने मोती डारी थाल भरी ने

एलके सासुजी म्हने सांचो सपनो आयो रे
थारो बेटो गंगाजी परसी ने आयो रे
चालो बदावा ने मोती डारी थाल भरी ने

एलके सासुजी म्हने सांचो सपनो आयो रे
थारो बेटो सिपरा जी परसी ने आयो रे
चालो बदावा ने मोती डारी थाल भरी ने

चलो मोतियों की थाल भरकर बधाइयाँ देने चलो। इस बार सासुजी मुझे सच्चा सपना आया है, तुम्हारा बेटा द्वारका जी के दर्शन कर आया है। इस बार सासुजी मुझे सच्चा सपना आया है, तुम्हारा बेटा जगदीश्वर जी के दर्शन कर आया है। इस बार सासुजी मुझे सच्चा सपना आया है, तुम्हारा बेटा गंगाजी के दर्शन कर आया है। इस बार सासुजी मुझे सच्चा सपना आया है, तुम्हारा बेटा क्षिप्रा जी के दर्शन कर आया है। चलो मोतियों की थाल भरकर बधाइयाँ देंगे।

होली आई रे कानुड़ा म्हारा रंग रसिया
होली आई रे,
हां होली आई रे सांवरिया म्हारा गिरधारी
होली आई रे

बांगा में खेला बगीचा बीच खेला
तो खेला झरोका रा बीच मांय रे
होली आई रे .... हां होली आई रे
कानुड़ा म्हारा रंग रसिया .... होली आई

गोकुल में खेला मथरा में खेला
तो बरसाणा में हम खेला होली
होली आई रे .... हां होली आई रे
कानुड़ा म्हारा मजलसिया .... होली आई

जमना में खेला नरबदा में खेला
तो मधुबन रा बीच हम खेला होली
होली आई रे .... हां होली आई रे
कानुड़ा म्हारा मजलसिया .... होली आई

राधा संग खेला हम रूखमा संग खेला
तो प्यारी गुजरण संग खेला होली
होली आई रे .... हां होली आई रे
कानुड़ा म्हारा गिरधारी होली आई

होली आ गई है, कृष्ण रंग के रसिया होली आ गई है। मेरे गिरधारी! होली बागों, बगीचों के बीच में खेलेंगे और झरोखे के बीच में खेलेंगे। कृष्ण रंग के रसिया गोकुल में खेलेंगे, मथुरा में खेलेंगे और बरसाने में हम खेलेंगे। कृष्ण मेरे प्रियतम यमुना पर खेलें, नर्मदा पर खेलेंगे, मधुबन के बीच हम खेलेंगे। कृष्ण मेरे प्रियतम राधा संग खेलें, रूक्मिणी संग खेलें, तो प्रिय गूजरी के संग खेलेंगे।

होली आई रे गिरधारी थारी दूर नगरी
होली आई रे, हाँ रे होली आई रे
कानुड़ा थारी दुर नगरी .... होली आई रे

होली खेलो तो कानुड़ा बरसाणा में आजो रे
गुजरी का संग खेलागां होली
कान्हा आजो रे .... होली आई रे

होली खेलो तो कानुड़ा द्वारका में आजो रे
गुजरी का संग खेलागां होली
कान्हा आजो रे .... होली आई रे

होली खेलो तो कानुड़ा नन्दगांव आजो रे
गुजरी का संग खेलागां होली
कान्हा आजो रे .... होली आई रे

होली आई रे गिरधारी थारी दुर नगरी
होली आई रे, हां रे होली आई रे ....

कृष्ण तेरा शहर दूर है, होली आई है। होली खेलना हो कृष्ण तो तुम्हें बरसाने में आना

पड़ेगा। गूजरी के संग खेलेंगे होली। होली खेलना हो तो कृष्ण द्वारका में आना पड़ेगा। गूजरी के संग खेलेंगे होली, कृष्ण आना। होली खेलना हो तो कृष्ण नन्दजी के गाँव आना पड़ेगा, गूजरी के संग खेलेंगे होली, कृष्ण आना।

माथा कुं मेरे भम्मर सोवे
काना कुं मेरे झुमणा सोवे
तो टोटी री जोड़ गमाई
सायब जी रीस का रीसालू
म्हाने टोटी री जोड़ गमाई ....

थोड़ा थोड़ा देखां, छाने छाने देखां
सुसराजी रा जाया बाजुबंद कोनी
सब रस गेणो बाजूबंद कोनी
सायब जी रीस का रीसालू
म्हाने टोटी री जोड़ गमाई ....

बाईजी रा बीरा पूछो छाने छाने
जीजा बईरां बीरा देखो छाने-छाने
सब रस गेणो बाजूबन्द कोनी
सायबजी रीस का रीसालू
म्हाने टोटी री जोड़ गमाई ....

झटपट लावो, बेगी बेगी लावो
मरी जऊँ म्हारे क्यों बिलमावो
सब रस गेणो बाजूबन्द कोनी
सायब जी रीस का रीसालू
म्हाने टोटी री जोड़ गमाई ....

सिर में मुझे भम्मर पहनना अच्छा लगता है। कानों को मेरे झुमके पहनना अच्छा लगता है। टोटी (कान में पहनने का आभूषण) जो मेरे से गुम गई है, पिया मेरे गुस्सैल हैं, धीरे से देखते हैं। ससुरजी के पुत्र बाजूबंद (बाहों का गहना) मेरे पास नही है, सब तरह के गहने हैं परंतु बाजूबन्द नहीं है। ननदजी के भाई धीरे-धीरे मेरे पास सब तरह के गहने हैं लेकिन बाजूबन्द नहीं है। पिया मेरे गुस्सैल हैं, मेरे हाथों से टोटी की जोड़ गुम गई है। जल्दी से लाओ, मैं मर जाऊँगी। मुझे बहलाओ मत, सब तरह के गहने हैं लेकिन बाजूबन्द नहीं है।

हां रे मेरे लाल माथा ने भम्मर घड़ावजो
उकी टिलड़ी रतन जड़ाव
मसक मईनो फागण को

हां रे मेरे लाल गोकुल मथरा सब ढुड़ी मार्या
कंई नी लाद्यो भोलो कन्हैयो
छ: मण केसर नौमण उड़े रे गुलाल
मसक मईनो फागण को ....

दारी भेराजी वाली घट्टी गड़ पे पिसण जाय
कंई नी लाद्यो भोलो कन्हैयो
छ: मण केसर नौमण उड़े रे गुलाल
मसक मईनो फागण को ....

हां रे मेरे लाल जमना नरबदा सब ढुड़ी मार्या
कंई नी लाद्यो भोलो कन्हैयो
छ: मण केसर नौमण उड़े रे गुलाल
मसक मईनो फागण को ....

दारी पूनमचंद वाली घट्टी गड़ पे पिसण जाय
कंई नी लाद्यो भोलो कन्हैयो
छ: मण केसर नौमण उड़े रे गुलाल
मसक मईनो फागण को ....

मेरे प्रिय! सिर के लिये मुझे भम्मर बनवा दो, उसमें हीरे–मोती जड़वा दो। मस्त महीना फागुन का है। मेरे प्रिय! गोकुल–मथुरा सब दूर पता किया, कहीं नहीं मिला भोला कन्हैया। छः मन केशर, नौ मन गुलाल उड़ाने के लिये फागुन का मस्त महीना आया है। भेराजी की पत्नि गढ़ के ऊपर घट्टी में आटा पीसने जाती है। मेरे प्रिय! जमुना, नर्मदा सब जगह पता किया, कहीं नहीं मिला भोला कन्हैया। बुरी औरत पूनमचन्द की पत्नि गढ़ के ऊपर घट्टी में आटा पीसने जाती है।

होली आज ने काल होली चाली वो
गेर्या होली चाली रे,
होली खेलो सब लोग लुगायां
रंग गुलाल घणा खेलो होली, गेर्या होली चाली रे

बाटका मांय मेंदी घोली झीणी उड़े रे गुलाल
भूरा भई थारी धोती समाल, झूलता झोला खोंय
घणा मनखां खेले रे, झीणी उड़े रे गुलाल
झीणी उड़े रे गुलाल .... होली आज ने

बाटका मांय मेंदी घोली, झीणी उड़े रे गुलाल
दादा थारी पागड़ी समाल, थारो माथो झोला खाय
घणा मनखां खेले रे, झीणी उड़े रे गुलाल
झीणी उड़े रे गुलाल .... होली आज ने

बाटका मांय मेंदी घोली, झीणी उड़े रे गुलाल
धूता भई थारी पन्नी समाल, थारा पगल्या झोला खाय
घणा मनखां खेले रे, झीणी उड़े रे गुलाल
झीणी उड़े रे गुलाल .... होली आज ने

बाटका मांय मेंदी घोली, झीणी उड़े रे गुलाल
पूना भई थारी बइरां समाल, थारी बईरां झोला खाय
घणा मनखां खेले रे, झीणी उड़े रे गुलाल
झीणी उड़े रे गुलाल .... होली

होली आज भी है, कल भी है, चलो होली खेलें। झुंड के साथ चलो होली खेलो। सब आदमी और औरतें रंग-गुलाल से खेलो। कटोरे में मेंहदी घोली है, गुलाल हल्की सी उड़ रही है। भूरे भैया तेरी धोती झोले खा रही है, कहीं खुल ना जाय। कटोरे में मेंहदी घोली, हल्की सी उड़ रही गुलाल। पदम भाई तेरी पगड़ी सम्भाल, तेरा सिर नहीं घूम जाय। कटोरे में मेंहदी घोली, हल्की सी उड़ रही गुलाल। धुता भाई तेरी जूती सम्भाल, कहीं पैर ना लचक जाय। पूना भाई अपनी औरत को सम्भाल, कहीं वह गैर वालों के साथ न चली जाय।

सांवरा को चरित सुणो रे
एक का सामे एक बृज की सब सखीना
केवे होली रे होली ....

मंजन करवा धंसी जमना में
कोई सांवली कोई गोरी
करती फिरे जल में झिंजोरी
सांवरा को चरित सुणो ....

थोड़ी देर में अई पोच्यों सांवरो
लईने चीर कदम पे चड्यो नन्दकिशोर
बंसी की धुन में खोई गई गोपी
मन आनन्द हुवो
सांवरा को चरित सुणो ....

कृष्ण के चरित्र की बात सुनो। एक के सामने एक सब सहेलियाँ कहती हैं। मंजन करने जमुना में उतरी गोपियाँ कोई गोरी कोई सांवली, पानी में मस्ती कर रही है। थोड़ी ही देर में कृष्ण वहाँ पहुँच गये, गोपियों के कपड़े लेकर कदम के पेड़ पर चढ़कर बैठ गये। बंशी की धुन से सब गोपियों को आनन्दित कर दिया। सांवरिया का चरित्र सुनो।

हुं फाग खेलवा आई सा
म्हारी जीजा बई ने लोर लाई सा
हुं फाग खेलवा आई सा।

म्हारा सुरज किरण नणदोई सा
हुं फाग खेलवा आई सा
मोल्या फेंटो बाधो रे
थारी पेंचा पर सुरज उगो रे
म्हारा सुरज किरण नणदोई रे
हुं फाग खेलवा ....

हुं फाग खेलवा आई रे
म्हारी देराणी ने लोर लाई रे
हुं फाग खेलवा आई रे।

म्हारा सुरज किरण देवर रे
हुं फाग खेलवा आई रे
मोल्या फेंटो बांधो रे

थारी पेचां उपर वारी रे
म्हारा सुरज किरण नणदोई रे
हुं फाग खेलवा आई रे

मैं फाग खेलने आई हूँ। ननद बहन को साथ लेकर मैं फाग खेलने आई। मेरे ननदोई सूरज की किरण जैसे हैं। पिया तुम साफा बाँधो, साफा बाँधने से सुन्दर दिखाई देते हो। मैं फाग खेलने आई हूँ, मेरी देवरानी को साथ लाई हूँ, मेरा देवर सूरज की किरन जैसा हैं। पिया तुम साफा बाँधो, तुम्हारे साफे के आटों पर मैं मर मिटूँ। मेरे सूरज किरण ननदोई हैं, मैं फाग खेलने आई हूँ।

निमाड़ी फाग

डॉ. श्रीराम परिहार

अनुवाद

वसंत निरगुणे

केशव फूल्या अति भार न, फागुण आयो, न फागुण आयो,
केसरिया की भरी पिचकारी, गुलाल उड़ायो।
मधुबन म खेली रह्यो ख्याल, जसोदा को लाल जसोदा को लाल,
जे न सखा सखी संग मांड्यो होळई को ख्याल।
घनघोर बाजी रह्यो ढोल, चंग पर ताळ चंग पर ताळ,
मुखड़ा चमाचम चमकऽ न लालम लाल।
खूब उड़ायो गुलाल, अंधारो छायो अंधारो छायो।
सारी सखी न एकठी हुई, बणाई टोळई, बणाई टोळई,
राधा न कान्हा ख पकड्यो, रंग में दियो बोळई।
भीगी अंगिया साड़ी, भीगी गई चोळई भीगी गई चोळई,
राधा का साथ म प्रभु, खेली रह्या होळई।
रंग को मची गयो कीच, गगन म छायो, गगन म छायो।
ग्वाल्या न कान्हा का साथ, भरी पिचकारी, भरी पिचकारी,
ब्रज म मची गयो सोर, उड़ऽ गुलख्यारी।
वारे वारे जसोदा को लाल, बण्यो गिरधारी, बण्यो गिरधारी,
सारी सखी न न तूखऽ घेर्यो, रंग्यो तूखऽ भारी।
भीमसिंह लिखऽ, लावणी आनंद मनायो आनंद मनायो।

(श्री दादू सिंह, पोखर खुर्द)

बसंत ऋतु आ गयी है। केशू (पलाश) के वृक्ष फूलों के भार से झुक गये हैं। फागुन का महीना आ गया है। टेसू के फूलों से बने केसरिया रंग से पिचकारी भर ली है। चारों ओर गुलाल उड़ाया जा रहा है। यशोदा का लाल श्रीकृष्ण मधुवन में होली खेल रहा है, जिसने ग्वाल-बालों

और गोपियों के साथ होली का खेल रचाया है। ढोल जोर–जोर से बज रहा है और चंग पर ताल दी जा रही है। सभी के मुखों पर लाल रंग चमक रहा है। गुलाल इतनी मात्रा में उड़ाया गया है कि सूर्य छिप गया और अँधेरा छा गया है। सारी सखियों ने इकट्ठा होकर समूह बना लिया है और उन्होंने कान्हा को पकड़कर रंग में डुबो दिया है। रंग में साड़ी भींग गयी। अंगिया–चोली भी भींग गयी है। राधाजी के साथ प्रभु होली खेल रहे हैं। रंग के कारण कीचड़ मच गया और आकाश में भी रंग छा गया है। ग्वालों के साथ श्रीकृष्ण भर–भर पिचकारी होली खेल रहे हैं। ब्रज में शोर मच गया है और सभी गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। वाह रे यशोदा के पुत्र! तू गिरिधारी बन गया है। सारी सखियों ने तुझे घेरकर रंग में खूब रंग दिया है। भीमसिंह इस लावणी को लिखकर आनन्दित हो रहे हैं।

आयो ग्वाल बाल म्हारी संग म, राधा ख रंगूँगा रंग म।
नाव म्हारो छे कृष्ण कन्हाई, बठी न कदम पर बंसी बजाई,
राधा ललिता सलिता आई, श्याम देखी न मन हरसाई।
माता यसोदा को हाऊँ छे लाड़लो, बंसी बजाऊँ मधुबन म।
फाग खेळण ख आया मुरारी, ब्रज की आई सगळी नारी,
भरी भरी न मारऽ पिचकारी, भीगी अंगिया ग्वालन सारी।
वृन्दावन म धूम मची गई, मस्त हुया सब भंग म।
श्याम वरण म रंगो मुरारी, जाय छूटी न दुनिया सारी,
गुरु गुण लेऊँ आज बिचारी, राखो चरण म मखऽ मुरारी।
जनम जनम की हऊँ छे दासी, राखो तुम्हारी संग म।

श्रीकृष्ण कहते हैं– मेरे साथ अनेक ग्वाल–बाल आये हैं, मैं राधा को रंग में रंग दूँगा। मेरा नाम कृष्ण–कन्हैया है। मैं कदम्ब की डाली पर बैठकर वंशी बजाता हूँ। इतने में राधा आ गयी। ललिता आ गयी। श्याम को देखकर सबका मन हर्षित हो गया। कृष्ण कहते हैं– मैं माता यशोदा का लाड़ला हूँ। मैं मधुबन में वंशी बजाता हूँ। इतना कहकर श्रीकृष्ण फाग खेलने के लिए वृन्दावन की गलियों में आ जाते हैं। ब्रज की सारी स्त्रियाँ भी आ जाती हैं। श्रीकृष्ण पिचकारी भर–भरकर उन पर मार रहे हैं। ग्वालनों की सारी अंगिया (चोली) भींग जाती है। वृन्दावन में धूम मच गयी है और सब भाँग पीकर मस्त हो गये हैं। उन्हीं में से एक सखी (संभवत: राधा) कृष्ण से कहती है– हे श्रीकृष्ण! मुझे श्याम रंग (अपने रंग) में रंग दो। यह दुनिया छूट जाए तो भले ही छूट जाए। मैं आज गुरू के वचन पर विचार कर गुण ग्रहण करना चाहती हूँ। हे मुरारी! मुझे अपने चरणों में स्थान दो। मैं जन्म–जन्म से तुम्हारी दासी हूँ, मुझे अपने साथ रख लीजिए। मुझे अपना सान्निध्य दे दीजिए।

होळई जळी गई फाग उड़ाओ रसिया, होळई जली गई।
जब म्हारो रसियो काकड़ म आयो, काकड़ ठुमको देय रसिया। होळई जली गई
जब म्हारो रसियो घोया पर आयो, घोया पर ठुमको देय रसिया। होळई जली गई
जब म्हारो रसियो अंगणा म आयो, अंगणो ठुमको देय रसिया। होळई जली गई

होली जल गयी है। हे रसिक श्रीकृष्ण (प्रिय)! अब फाग उड़ायो। अर्थात् रंग खेलना प्रारंभ करो। जब मेरा प्रियतम काकड़ (सिवान) पर आया, तो काकड़ भी आनन्दित होकर ठुमका देने लगा अर्थात् खुशी से नाचने लगा। जब मेरा प्रियतम गोया में आया, तो गोया (दो खेतों के बीच का आम गाड़ी रास्ता) भी नृत्य करने लगा। जब मेरा प्रियतम आँगन में आया तो प्रसन्नता से आँगन भी नाचने लगा। प्रियतम के आने से सारा वातावरण प्रफुल्लित हो उठा है।

होळिका अग्नि अस्नान करऽ, लई राम भक्त खऽ खोला म।
भगवान पधार्‌या वैकुण्ठ सी, चढ़ आया पवन हिंडोळा म।
वरदानी चूंदड़ ओढ़ती, अजमावती वरदान ख,
प्रह्लाद जलावण राक्षणी, फिकर पड़ी भगवान ख।
पवन वेग सी दौड़्या, कर तेज गरूड़यान ख,
होळिका की होळई करी, जळई दियो अभिमान ख।
प्रह्लाद भक्त बालक प्यारो, भगवान बस्या मन भोळा म।
हत्यारी स्वयं जळई गई, घमंड गळयो महाराज को,
भक्त प्रह्लाद बची गयो, आनन्द दिन हुयो आज को।
सपनों झूठो हुई गयो, दैत्य दानव राज का,
सर पकड़ी न रोई रह्यो, भान हो सरताज का।
जब सोर मची रहयो रोणा को, गम छायो असुर बोळ म।
माता कृपाधु दौड़ी न, लई लियो गोदी म लाल ख,
प्रह्लाद बेटा राम थारो, दूर भगाड़ काळ ख ।
पिता बचन तूनऽ टाल्यो तो, भोग दुख जंजाळ ख,
दूध उजवळ करी दियो, त्यागी न मायाजाळ ख।
सागर म तूखऽ फेक्यो बेटा, तट फेक्यो झवर हिरोळा म।
खम्ब तपायो आग से, भेटण चल्यो प्रह्लाद रे,
हाथ येन खम्ब लियो, बाप खड़्यो जल्लाद रे।
खम्ब फाड़ नरसिंग प्रगट्या, करण लग्यो सिंहनाद रे,
फाड़्यो, हिरणाकुश ख, कर्‌यो दुष्ट ख बरबाद रे।
कहे ताराचन्द आनन्द राम, वही गयो पाप का रोळा म।

(श्री जयराम परिहार, फेफरिया)

यह सुन्दर गीत होलिका दहन की कथा पर आधारित है। लोक स्वर में इसकी इस प्रकार अभिव्यक्ति हुई है- रामभक्त प्रहलाद को गोद में लेकर होलिका अग्नि-स्नान कर रही है। भक्त प्रहलाद की रक्षार्थ भगवान विष्णु स्वयं पृथ्वी पर तुरंत हिंडोले में बैठकर पधारते हैं। होलिका ने वरदानी चूनर ओढ़कर प्रहलाद को गोदी में लेकर अपने वरदान को अजमाने (परीक्षा) के लिए अग्नि में प्रवेश किया, ताकि प्रहलाद जल जाए। भक्त के साथ यह अनिष्ट होता जानकर भगवान को चिन्ता हुई और वे गरूड़वाहन पर सवार होकर तुरंत दौड़ पड़ते हैं। ईश्वर के प्रभाव से होलिका की स्वयं होली जल गयी अर्थात् होलिका जल गयी और इसका अभिमान भी जल गया। प्रहलाद सुन्दर बालक हैं। वह भगवान का भक्त है। उसके भोले मन में भगवान बस गये हैं। हत्यारी होलिका स्वयं जल गयी। भक्त प्रहलाद बच गया। महाराज हिरणाकश्यप का अभिमान भी गल गया। भक्त प्रहलाद बच गया, आज का दिन आनन्द से भर गया। दैत्यों और दानवों के राजा हरिणाकश्यप का स्वप्न झूठा हो गया। वह सिर पकड़कर रो रहा है। जब रोने की आवाजें दूर-दूर तक फैली तो असुर-दल में शोक छा गया। प्रहलाद की माता कृपाधु ने प्रहलाद को गोद में उठा लिया। वह कहने लगी- हे बेटा! तेरे राम ने काल को दूर भगाकर तुझे बचा लिया। पिता का अनुचित कहना तूने नहीं माना। परिणाम में तूने अनेक दु:ख -जंजाल भोगना स्वीकार लिया। हे बेटा! तूने माता का दूध उज्जवल कर दिया। तूने मायाजाल को त्याग दिया। हे बेटा! तेरे पिता ने मुझे समुद्र में फेंका, लेकिन समुद्र ने अपनी झबरों और हिलोरों के द्वारा तुझे किनारे पर छोड़ दिया। लोह-खम्भ को तपाकर प्रहलाद को उससे चिपकने के लिए कहा गया। पिता जल्लाद की तरह खड़ा रहा। इतने में खम्भ फाड़कर नृसिंह प्रगट हो गये और सिंहनाद करने लगे। हिरणाकुश को उन्होंने फाड़कर मृत्यु को प्राप्त कराया। यह कथा ताराचन्द आनन्दराम गा रहे हैं। वे कह रहे हैं कि इस तरह वह पाप का रेला बह गया। भक्त प्रहलाद बच गया। दुनिया ने रंग-गुलाल खेलकर खुशियाँ मनायी।

होळई खेलऽ नंद को लाल कृष्ण महाराजऽ
गोकुळ म मची रही धूम मुरलिया बाजऽ
संग लिये बाल गोपाळ हाथ म लोटा,
श्री किसन के ऊपर उड़े रंग का लोटा।
घरऽ घूमऽ कि छप्पर डोलऽ, फिरऽ नव खण्ड मऽ,
पाताल नाग झुकी रह्यो बंसी की धुन मऽ।
बंसी की राग सुहाणी धुन सुहाणी,
धुन गई मथुरा मऽ कंस राय घबराणी।
पूनम की होळई जळऽ दीन अरू रातऽ,
प्रहलाद कुँवर ख आग लगी नी दागऽ।

बाबा नन्द के लाल महाराज श्रीकृष्ण होली खेल रहे हैं। गोकुल में होली की धूम मची हुई है। मुरली की धुन सुनाई दे रही है। श्रीकृष्ण अपने साथ ग्वाल-बालों को लेकर होली खेलने निकले हैं, उनके हाथ में रंग का भरा हुआ लोटा है। श्रीकृष्ण के ऊपर रंग का लोटा उड़ेल दिया गया है। होली की मस्ती और मुरली की धुन में सब मदमस्त हैं। मस्ती इस सीमा तक है कि घर घूमते हुए, छप्पर डोलते हुए और नवखण्ड पृथ्वी फिरती हुई प्रतीत हो रही है। पाताल में बसने वाला वासुकी नाग भी वंशी की धुन सुन रहा है। झूम रहा है। श्रीकृष्ण की वंशी की राग और धुन बहुत ही सुहानी है। वंशी की धुन मथुरा तक सुनाई पड़ रही है, जिसे सुनकर राजा कंस घबरा गया। फागुन सुदी पूर्णिमा को होली जल रही है। दिन-रात जल रही है। भक्त प्रहलाद को न आग लग पायी और न ही आग का दाग (छींटा) लग सका।

गरूड़ पंख म आसण मांड़ी बठ्या मुकुटधारी,
चलो सारी सखियाँ आज होळई खेलाँ गिरधारी।
केसरिया रंग घोळाँ सखी री अतर भी घोलाँ,
खईची ख मारऽ गुलाल हाथ म कंचन की पिचकारी।
कर सोळा सिन्गार सामनऽ आई खड़ी गोरी,
हुई गई गरदम गरद खेली रह्या होळई।
नयन चलावऽ चोट चलावऽ नई खेलाँ होळई,
मखऽ गेंद क्यों मारी म्हारी गागर दई फोड़ी।

श्रीकृष्ण गिरधारी गरूड़ के पंखों से बने सिंहासन पर बैठे हैं या गरूड़ पंख पर आसन मारकर मोर मुकुटधारी बैठे हैं। हे सखी! चलो आज सारी सखियाँ चलकर गिरधारी के साथ होली खेलें। हे सखी! हम केसरिया रंग घोलें और उसमें इत्र भी मिलाएँ। खींचकर मुट्ठी भर गुलाल मारें और हाथ में कंचन की पिचकारी भरकर कृष्ण पर डालें। ऐसा विचारकर सोलह श्रृँगार करके राधा गोरी सामने आकर खड़ी हो गयी। श्रीकृष्ण, राधा और सखियों के बीच फाग की धूम मच गयी है और गरदम-गरद हो गयी है। गोपियाँ खेल-खेल में शिकायत करती है कि तुम नैन भी चलाते हो, उसी से चोट मारते हो, हम तुम्हारे साथ होली नहीं खेलेंगे। तुमने मुझे गेंद क्यों मारी? गेंद मारकर तुमने मेरी गागर फोड़ दी।

काई बदली गई श्रीमान राधिका गोरी,
हम खेलाँगा मनमोहन स होळई।
राधा रूखमा सबई गुवालन आई,
गोकुळ मथुरा बीच धूम मचाई।

भर भर मटका रंग केसरिया घोळ्यो,
राधा न गुलाल मन मोहन प डाल्यो।
कान्हा न डाल्यो हाथ करऽ ठठोळई,
म्हारा भुज का छूट्या बंध लटक गई चोळई।

क्या राधा गोरी ने होली खेलने का इरादा बदल लिया है? हम तो मनमोहन के साथ होली खेलेंगी। ऐसा निश्चय कर राधा-रूखमा सभी गोपियाँ इकट्ठी हो गयी। गोकुल और मथुरा के बीच के स्थान पर होली की धूम मचायी। मटके भर-भरकर केसरिया रंग घोला गया। राधा ने मनमोहन पर गुलाल डाला है। कान्हा राधिका के हाथ में हाथ देकर ठिठोली कर रहे हैं। राधा कहती हैं कि मेरे भुजबन्ध छूट गये हैं और चोली लटक गयी है। अर्थात् मेरा शरीर शिथिल हो चला है।

कान्हा मत जाओ परदेस सामनऽ होळई,
एक छोटी सी नादान नार असी बोली।
मनऽ रंग कर्‌यो तैयार कराँ छपोळई,
मनऽ पेर्‌यो शक्कर को हार करां ठठोळई।

प्रेम में विभोर एक अबोध सामान्य-सी गोपी (नारी) श्रीकृष्ण से कहती है- हे कान्हा! होली का त्यौहार निकट है, तुम परदेश मत जाओ। हे कृष्ण! तुमसे होली खेलने के लिए मैंने रंग तैयार किया है। हे कृष्ण! हम मिलकर उस रंग में छपोली (छपाक-छप) करते हैं। मैंने गले में शक्कर का हार पहन रखा है, हम आपस में ठिठोली करते हैं। तुम परदेश मत जाओ।

गुवालन कहती जशोदा स रे गुवालन कहती जशोदा स,
समाळ अपणा गोकुल कान्हा बिलमी रह्यो हम सऽ।
महल का ऊपर महल म्हारो, सोई थी भर नींद मऽ,
उधर से आयो किसन थारो, झपटी ख पकड़्यो चीर म्हारो।
जशोदा कहती गुवालन स जशोदा कहती गुवालन स,
बारो छे म्हारो कुंवर कन्हैयो गुना माफ हम सऽ।

गोपी यशोदा माँ से शिकायत करते हुई कहती है कि हे माँ! यह कान्हा हमसे घुल-मिल गया है, हमारे साथ ही रहता है, इसे अपने पास सँभालकर रखो। महल के ऊपर मेरा कक्ष है और उस शयनकक्ष में मैं भर नींद सोई थी। उधर से तुम्हारा कृष्ण आया और मेरा झपट कर चीर

(वस्त्र) पकड़ लिया। यह सुनकर माँ यशोदा ग्वालन से कहती है कि हे ग्वालन! मेरा श्रीकृष्ण (कान्हा) छोटी उमर का है, नादान है, उसका गुनाह माफ कर दो।

कान्हा धरो मुकुट खेळाँ होळई,
खेळाँ होळई न बरा जोरी कान्हा। कान्हा धरो...।
कहाँ सी लाऊँ अम्बो न गेड़ी,
कहाँ से लाऊँ लम्बी छड़ी। कान्हा धरो...।
कजलीवन लाऊँ अम्बो न गेड़ी,
कासवन लाऊँ लम्बी छड़ी। कान्हा घरो...।
कांय सी काटू अम्बो न गेड़ी,
कांय सी काटू लम्बी छड़ी। कान्हा धरो...।
तंग्या सी काँटू अम्बो न गेड़ी,
कुल्हाड़ा सी काँटू लम्बी छड़ी। कान्हा धरो...।
कांय पर लाऊँ लम्बी छड़ी। कान्हा धरो...।
गाड़ी पर लाऊँ अम्बो न गेड़ी,
छकड़ा पर लाऊँ लम्बी छड़ी। कान्हा धरो...।
कहाँ उतारूँ अम्बो न गेड़ी,
कहाँ उतारूँ लम्बी छड़ी। कान्हा धरो...।
होळई उतारूँ अम्बो न गेड़ी,
झेंड़ा उतारूँ लम्बी छड़ी। कान्हा धरो...।

(श्रीमती साधना उपाध्याय, खण्डवा)

लोकगीतों में जनमानस अपने परिवेश से प्रतीक और बिम्ब लेकर भावों की अभिव्यक्ति करता है। प्रस्तुत गीत में कन्हैया केवल गीत की टेक में हैं। शेष गीत में जनसामान्य के व्यवहार में आने वाली वस्तुओं के माध्यम से गीतकार उनसे श्रीकृष्ण का संबंध जोड़ते हुए अपने मनोभावों को प्रकट करता है। हे कन्हैया! तुम सिर पर मुकुट धारण करो, हम तुमसे होली खेलना चाहते हैं। होली भी खेलना है और बरजोरी भी करना है, अत: कान्हा सिर पर मुकुट धारण करो। कहाँ से अम्बा (आम) और गेड़ी लेकर आऊँ और कहाँ से लम्बी छड़ी लाऊँ? कजलीवन से आम और गेड़ी लेकर आऊँ और काँसवन से लम्बी छड़ी लेकर आऊँ। अम्बा और गेड़ी किससे काटूँ और लम्बी छड़ी किससे काटूँ? कुल्हाड़ी से आम और गेड़ी काटूँ और कुल्हाड़ा से लम्बी छड़ी काटूँ। आम और गेड़ी को किसपर लादकर लाऊँ और लम्बी छड़ी को किस पर रखकर लाऊँ? गाड़ी पर लादकर आम और गेड़ी को लाऊँ और छकड़ा पर रखकर

लम्बी छड़ी को लाऊँ। लाकर अम्बा और गेड़ी को कहाँ उतारूँ? और लम्बी छड़ी को कहाँ उतारूँ? होली के पास अम्बा और गेड़ी को उतारूँ और झेण्डा के पास लम्बी छड़ी को उतारूँ। हे कान्हा! मुकुट धारण करो, हम तुमसे होली खेलेंगे।

श्याम सुन्दर म्हारी रंगी देओ चूनरिया।
कृष्ण कन्हैया म्हारी रंगी देओ चूनरिया।
असी जो रंगजो कान्हा, रंग नहीं छूटऽ,
धोबी जो धोवऽ ओखऽ सारी उमरिया।
तू मत जाणऽ कान्हा, हऊँ छे अकेली,
सात सहेली म्हारा संग छे साँवरियाँ।
चूंदड़ पेरी न राधा पाणी ख निसरी,
श्याम सुन्दरजी की लागी नजरिया।
तू मत जाणऽ कान्हा, हऊँ छे कुँवारी,
सिरी जो कृष्ण म्हारा वर छे सांवरिया।
बिना रंगाया हऊँ घर नहीं जाऊँ,
बीती जो जाय म्हारी सारी उमरिया।

लौकिक भावभूमि पर मुखरित होता हुआ यह गीत अलौकिकता के अन्तरिक्ष को स्पर्श करता है। हे श्याम सुन्दर! मेरी चुनरिया रंग दो। हे कृष्ण-कन्हैया! मेरी चुनरिया रंग दो। हे कान्हा! मेरी चूनर को ऐसी रंगना कि रंग छूटने ना पाए। भले ही धोबी उसे सारी उमरिया (उम्र) धोता रहे। अर्थात् इस जीवन रूपी चूनर पर हे कृष्ण! तुम्हारे प्रेम का रंग ऐसा चढ़े कि वह उम्र भर छूटने न पाए। हे कृष्ण! तुम यह मत समझो कि मैं अकेली हूँ, सात सहेली मेरे साथ में हैं। चूनर को पहनकर राधा पानी भरने के लिए निकली है और श्याम सुन्दर श्रीकृष्ण की नजर राधा पर पड़ती है। राधा कहती है- हे कन्हैया! तुम यह मत समझो कि मैं कुँवारी हूँ, श्रीकृष्ण ही मेरा पति है और साँवरिया है। मैं अपनी चूनरी को रंगाये बिना घर नहीं जाऊँगी, भले ही मेरी सारी उम्र बीत जाए। भले ही जीवन समाप्त हो जाए। जब तक तुम्हारा प्रेम-भक्ति का रंग चढ़ नहीं जाता तब तक मैं अपने वास्तविक घर (ब्रह्मा के पास) नहीं जाऊँगी।

गुलाल की ओ रनुबाई भरी ओ परात, रंग की भरी पिचकारी।
पेरी ओड़ी न ओ रनुबाई गया सासुजी पास, देओ हुकुम खेलाँ होरी,
तुम्हारा धणीयर राजा तप का छे लोभी, ओ नहीं खेलगा होरी।
एतरो सुनी न धनियर जी महल म आया, बैयाँ पकड़ खेलऽ होरी। गुलाल की...

पेरी ओड़ी न ओ सईतबाई गया सासुजी पास, देओ हुकुम खेलाँ होरी,
तुम्हारा ब्रह्मा राजा तप का छे लोभी, ओ नहीं खेलगा होरी।
एतरो सुणी न ब्रह्माजी महल म आया, बैयाँ पकड़ खेलऽ होरी। गुलाल की..
पेरी ओड़ी न ओ लक्ष्मीबाई गया सासुजी पास, देओ हुकुम खेलाँ होरी,
तुम्हारा विष्णुजी तप का छे लोभी, ओ नहीं खेलगा होरी।
एतरो सुणी न विष्णुजी महल म आया, बैयाँ पकड़ खेलऽ होरी । गुलाल की...

गणगौर पर्व पर गाया जाने वाला यह बहुत ही सुन्दर होली गीत है। हे रनुबाई! गुलाल से परात (थाली) भरी हुई है। रंग से पिचकारी भरी हुई है। रनुबाई ने बुचका (पोटली) खोलकर उसमें से चूनर निकालकर पहन ली है। उन्होंने रत्न-जड़ित आभूषण पहने हैं। रनुबाई पहन-ओढ़कर सासूजी के पास गयी और कहती है कि- हे सासूजी! हमें होली खेलने की अनुमति दो। सासूजी कहती है कि तुम्हारा धणीयर (पति) तपस्यारत है, वह होली नहीं खेलेगा। इतना सुनकर रनुबाई धणीयर के पास जाती है और उनकी बाँह पकड़कर होली खेलने का आग्रह करती है। धणीयर होली खेलने लगते हैं। बुचका खोलकर गौरा चूनर पहनी हैं। रत्न-जड़ित आभूषण पहनती हैं। पहन-ओढ़कर सासूजी के पास होली खेलने की आज्ञा लेने जाती है। सास कहती है, हे गौरा! तेरा ईश्वर तप का लोभी है, वह होली नहीं खेलेगा। इतना सुनकर गौरा शिव के पास जाती है और हाथ पकड़कर होली खेलने का आग्रह करती है। शिव-गौरी के साथ होली खेलने लगते हैं। बुचका (पोटली) से सईतबाई ने चूनर निकालकर पहनी और रत्न-जड़ित आभूषण पहनकर सासूजी के पास होली खेलने की अनुमति लेने जाती है। सासूजी कहती है कि तेरा ब्रह्मा तप का लालची है, वह होली नहीं खेलेगा। इतना सुनकर सईतबाई (सरस्वती) ब्रह्मा के पास जाती हैं और हाथ पकड़कर होली खेलने का आग्रह करती है। ब्रह्मा जी होली खेलने चल देते हैं। इस प्रकार सभी देवता तपस्या को स्थगित कर देवियों के साथ होली खेलते हैं।

रंग की डिब्बी खोलो नणदबाई, महिनो आयो फागुण को।
बिन्दी तो म्हारी जूनी पुराणी, टिको नयो घड़ाओ नणदबाई, महिनो आयो... ।
झुमको तो म्हारो जूनो पुराणो, टाप्स नवा घड़ाओ नणदबाई, महिनो आयो... ।
तुस्सी तो म्हारी जूनी पुरानी, हार नवो घड़ाओ नणदबाई, महिनो आयो... ।
चूड़ी तो म्हारी जूनी पुराणी, मूंदी नवी छड़ाओ नणदबाई, महिना आयो.... ।
चंपक तो म्हारा जूना पुराणा, मच्छी नवी घड़ाओ नणदबाई, महिनो आयो... ।
साड़ी तो म्हारी जूनी पुराणी, चूंदड़ी नवी बुलाओ नणदबाई, महिनो आयो... ।
रंग की डिब्बी खोलो नणदबाई, महिनो आयो फागुण को।

भौजाई ननद से कहती है- हे ननद बाई! रंग की डिबिया को खोल दो, फागुन का महीना

आ गया है। हे ननद बाई! बिन्दी तो मेरी पुरानी है, मुझे नया टीका घड़वा दो। झुमका मेरा पुराना हो गया है, मुझे टाप्स नये बनवा दीजिये, मेरी हँसली पुरानी है, मुझे नया हार बनवा दीजिये। मेरी चूड़ियाँ पुरानी है, मुझे अँगूठी नयी घड़वा (बनवा) दीजिये। मेरी पायल पुरानी हो गयी है, मुझे बिछिया नयी बनवा दीजिए। मेरी साड़ी पुरानी हो चली है, मुझे नयी चूनरी मँगवा दीजिये। हे ननद बाई! रंग की डिबिया खोलो, फागुन का महीना आ गया है, भौजाई श्रृँगार करना चाहती है तथा श्रृँगार करके वह होली खेलना चाहती है।

फागुण को महिनो आयो, मूंडो नी मनऽ धोयो।
की मन म्हारो धड़कऽ हरकऽ, हऊँ जाऊँगा होळई खेलण ख।
म्हारा स्वामीजी भरी लाया पिचकारी, मनऽ पेरी ली जूनी साड़ी,
एक बठेल छे कड़ी, दूसरो कड़ी, तीसरो बड़-बड़ सरकऽ। फागुण को...।
फागुण को महिनो आयो, मनऽ भंग का ग्यारह लड्डू खाया,
दस पापड़ दड़ा दड़ चाया, हऊँ तेरह दोना पी गई कड़ी। फागुण को...।

होली गीतों में हास्य-वृत्ति भी दृष्टिगत होती है। एक नायिका की अभिव्यक्ति इस गीत में हास्य उत्पन्न कर रही है। फागुन का महीना आ गया है और मैंने अभी तक मुँह नहीं धोया है, मेरा हृदय धड़क रहा है। हर्षित भी हो रहा है। मैं होली खेलने जाऊँगी। मेरे पतिदेव पिचकारी भर लाये हैं। मैंने पुरानी साड़ी पहन ली है। मेरी एक ओर की गोदी में एक बालक दूसरी ओर की कड़ी (बाँह के नीचे कमर का ऊपरी भाग) पर दूसरा बालक बैठा है। तीसरा बालक जमीन पर सरक-सरककर आगे बढ़ रहा है। फागुन का महीना आ गया है और मैंने भाँग युक्त ग्यारह लड्डू खा लिये हैं। दस पापड़ दड़-दड़ चबा गयी हूँ। मैं तेरह दोना कढ़ी पी गयी हूँ। इस तरह वह नायिका पूरी तरह फागुनी रंग में रंग गयी है।

माथा बांधा हो मुकुट खेलाँ होरी।
पहली होळई कैलाश म खेली, शंकर अरू गौराँ की थी जोड़ी । माथा बांधा...।
दूसरी होळई अवधिया म खेली, राम अरू सीता की थी जोड़ी। माथा बांधा...।
तीसरी होळई बिरजिया म खेली, कृष्ण अरू राधा की थी जोड़ी। माथा बांधा...।

हे श्रीकृष्ण! माथे पर मुकुट बाँध लो। तुमसे होली खेलना है। पहली होली अर्थात् सृष्टि रचना के बाद सृष्टि की पहली होली शिव-पार्वती की जोड़ी ने कैलाश पर्वत पर खेली। दूसरी होली राम-सीता की जोड़ी ने अयोध्या में खेली। तीसरी होली राधा-कृष्ण की जोड़ी ने ब्रज में खेली है। हे कान्हा! सिर पर मुकुट बाँध लो, होली खेलना है।

श्री कृष्णजी खेलऽ होरी, नरबदा रंग सी भरी।
कायन को तो रंग बणायो, न कायन की पिचकारी। नरबदा रंग सी ..।
केसर को तो रंग बणायो, न कंचन की पिचकारी। नरबदा रंग सी ...।
सासू हठीली नणद चुगेली, तो देवर दीसे गाळई। नरबदा रंग सी ...।
गोरी गोरी बैयां न हरी पीली चूड़ियां, चूड़िला सी छंद लगाय। नरबदा रंग सी ...।
भर पिचकारी म्हारा सनसुख, तो भींज गई राधा प्यारी। नरबदा रंग सी ...।

(श्रीमती कान्ता जोशी, खण्डवा)

नर्मदा रंग से भरी हुई हैं श्रीकृष्ण जी होली खेल रहे हैं। किस चीज़ का रंग बनाया है और किस धातु की पिचकारी बनायी है? केसर का रंग बनाया है। सोने की पिचकारी बनायी है। मेरी सासू हठीली है और ननद चुगलखोर है। मेरा देवर मुझे गालियाँ देगा। मेरी गोरी-गोरी बाँहों में हरी-हरी चूड़ियाँ हैं और चूड़िला में बंद लगाया है। श्रीकृष्ण ने पिचकारी भरकर सम्मुख खड़ी राधा पर डाली, जिससे राधा प्यारी भींग गयी। हे कृष्ण जी! होली खेलो, नर्मदा रंग से भरी हुई हैं।

छोरा रँगरेज का रंगीला रंगीला।
सीता जी की चूंदड़िया, म्हारी राधाजी की चूंदड़िया,
म्हारी अम्बाजी की चूंदड़िया, म्हारा हरा पल्लव की चूंदड़िया,
म्हारा उदा पल्लव की चूंदड़िया, ओका पल्लव जड़िया पांदड़िया। छोरा रंगरेज...
म्हारा माथा न बिन्दी लावजो, म्हारा टीका ख रतन जड़ई दीजो जी। छोरा रंगरेज....
म्हारा कानन झूमका लावजो, म्हारी टोटी ख रतन जड़इ दीजो जी। छोरा रंगरेज...
म्हारी गळा न माळा लावजो, म्हारी तुस्सी ख रतन जड़ई दीजो जी। छोरा रंगरेज...
म्हारा हाथ न गजरा लावजो, म्हारी कावळई ख रतन जड़ई दीजो जी। छोरा रंगरेज...
म्हारा पायन तोड़ा लावजो, म्हारा रमझोळ ख रतन जड़ई दीजो जी। छोरा रंगरेज...

हे रंगरेज के रंगीले छोरे (पुत्र)! तुम चुनर रंग दो। मेरी सीता जी की चुनरिया, मेरी राधिका जी की चुनरिया, मेरी अम्बा माताजी की चुनरिया, हे रंगरेज के बालक! तुम रंग दो। मेरे हरे पल्ले की चुनरिया, मेरे उदे पल्ले की चुनरिया, रंग दो और उसके पल्ले में मोती जड़ दो। हे रंगरेज के रसिक पुत्र! तुम मेरे माथे पर लगाने के लिए बिन्दी लाना। मेरे टीके में रत्न जड़वा देना। मेरे गले में पहनने की माला लाना। मेरी तुस्सी (हँसली) में रत्न जड़वा देना। मेरे हाथों में पहनने के लिए गजरा लाना, मेरी चूड़ियों में रत्न जड़वा देना। मेरे पाँवों में पहनने के लिए तोड़ा लाना, मेरी रमझोल में रत्न जड़वा देना। हे रंगरेज के रंगीले पुत्र! मेरी चूनर रंग देना।

मत मारऽ मोहन लागी जायगा, लागी जायगा हो लिपट जायगा। मत मारऽ... ।
गाँठ गठीली गुलाब की छड़ियाँ, गोरा बदन पर चुभी जायगा। मत मारऽ... ।
सरज की साड़ी दरियाव को घाघरो, मसरू की चोली मसक जायगा। मत मारऽ... ।
मत मारोजी घूँघटा का पट म, नथनी को मोती बिखर जायगा । मत मारऽ... ।
अँगळई पकड़ म्हारो पोयचो पकड़्यो, हरी हरी चूड़ी न तड़क जायगा। मत मारऽ... ।

राधा कहती है-हे मोहन! तुम गाँठ-गठीली गुलाब की छड़ी मत मारो। यह मेरे कोमल शरीर में लग जाएगी। यह मेरे गोरे बदन पर लिपट जाएगी। यह गुलाब की छड़ी मेरे गोरे तन पर चुभ जाएगी। मेरी जरी की साड़ी मसरू का घाघरा और चोली मसक जायगी। तुम घूँघट के ओट में छिपी नथनी पर चोट मत मारो, नथनी के मोती बिखर जाएंगे। तुमने पहले मेरी अँगुली पकड़ी फिर कलाई पकड़ ली, कलाई में पहनी हरी-हरी चूड़ियाँ चटक जाएँगी। हे कान्हा! तुम गुलाब की छड़ी मत मारो।

सूरज साम पानिड़ो नी जाऊँ म्हारी चूंदड़ी को रंग उड़ी जाय।
कायन को पिया रंग बणायो, तो कायन की पिचकारी। सूरज साम... ।
केसर को पिया रंग बणायो, तो कंचन की पिचकारी। सूरज साम... ।
भर पिचकारी म्हारा सनमुख डाली, तो भींज गई राधा प्यारी। सूरज साम... ।
उदा उदा सालू न जरद किनारी, तो अंगिया सी कोर लगाय। सूरज साम... ।
बड़ी-बड़ी अंखियाँ न पतळो सो काजळ, नैना सी सेन लगाय। सूरज साम... ।
गोरी गोरी बैयाँ न हरी पीली चूंड़ियाँ, तो चूड़िला सी छंद लगाय। सूरज साम... ।

मैं सूरज के धूप में पानी भरने नहीं जाऊँगी, मेरी चुनरी का रंग उड़ जाएगा। हे प्रिय! किसका रंग बनाया है? काहे की पिचकारी बनायी है? हे प्रिया! केसर का रंग बनाया है। कंचन की पिचकारी बनायी है। पिचकारी भरकर सामने डाली तो प्रिय राधा भींग गयी। उदा-उदा (गुलाबी) सालू पहना है, उसमें पीली किनारी लगायी है और अंगिया (कंचुकी) की कोर लगायी है। बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखों में बारीक-सा काजल लगाया है, कृष्ण और राधा के नैन आपस में मिल रहे हैं। राधा जी की गोरी कलाइयों में हरी-पीली चूँड़ियाँ हैं और चूड़िला में बंद लगा हुआ है। मैं सूरज की धूप में पानी भरने नहीं जाऊँगी, मेरी चूनर का रंग उड़ जाएगा।

किसन जी पोयची तो पेराओ, म्हारा रंग भऱ्या दुई हाथ।
उदा उदा सालू न जरद किनारी, कोर ख अतर लगाय। किसन जी... ।
गोरा गोरा मुखड़ा पर उजली बत्तीसी, पान की छे भरमार। किसन जी... ।

केतरा बरस का कुँवर कन्हैया, केतरा बरस राधा प्यारी। किसन जी... ।
बारह बरस का कुँवर कन्हैया, भर यौवन राधा प्यारी। किसन जी... ।
फागुण का दिन चार कन्हैया, खेली लेओ रंग पिचकारी। किसन जी... ।

हे श्रीकृष्ण जी! मुझे हाथों में पोयची तो पहना दो। (पोयची–हाथों में पहना जाने वाला आभूषण।) क्योंकि मेरे दोनों हाथ रंग से भरे हुए हैं। उदा–उदा (रंग विशेष) सालू पहना है। पीली जरद उसकी किनारी है। उसकी किनारी में इत्र छिड़का हुआ है। राधा जी के गोरे–गोरे मुख पर उजली दंत पंक्ति है। पान की पीक से उन पर छायी ललाई सुन्दर लग रही है। कितने वर्ष के कुँवर–कन्हैया हैं और कितने वर्ष की प्रिया राधिका हैं? बारह वर्ष के कान्हा हैं और राधा पूरे यौवन को प्राप्त कर चुकी हैं। राधिका कहती है– हे कन्हैया! फागुन केवल चार दिनों का है, तुम रंग और पिचकारी का खेल–खेल लो।

बसंत ऋतु आई रे सुण ओ राधा गोरी,
सुण ओ राधा गोरी, तो सुण ओ भोळी भाळी। बसंत ऋतु... ।
रंग बिरंगी कळई न खिली रे, झाड़ रूख की पत्ती न झड़ी रे,
नद्दी न नाव उमंग की होळई, भौरा गुंजन धौरी। बसंत ऋतु... ।
ठंडा गुलाबी गीत सुणाव, अंबा प कसो मोर लहलहाव,
थोड़ा दिन म आव होळई, चालो ब्रजभान की छोरी। बसंत ऋतु... ।
म्हारा साथ चलोगा बोलो, पेरी लेओ बसंती चोली,
तू खेलेगा सबसी होळई, राधा करगा झपटा झोरी। बसंत ऋतु... ।
सारी सखी न गीत गावाँगा, ग्वाला सब माखण खावांगा,
तू कर आपस म होळई, राधा करऽ थारी चोरी। बसंत ऋतु... ।

हे राधिका गोरी! सुनो। वसंत ऋतु आ गयी है। सुन राधा गोरी। सुन राधा भोली। रंग–बिरंगी कलियाँ खिल उठी हैं। वृक्षों की पत्तियाँ झड़ गयी हैं। नदी–नाव उमंग से भर गये हैं। वन–उपवन गूँजने लगे हैं। आमों में बौर लहलहा उठे हैं। सुहाने गीत सुनाई देने लगे हैं। थोड़े ही दिनों में होली आने वाली है। हे वृषभानु की बेटी राधा! तुम हमारे साथ चलो होली खेलने। बोलो मेरे साथ चलोगी? श्रीकृष्ण कहते हैं कि राधा तुम बासंती चोला (वस्त्र) पहन लो। तू सबसे होली खेलना और राधा तुमसे मैं झपटा–झोरी करूँगा। सारी सखी मिलकर गीत गाएँगी। सारे ग्वाल मिलकर माखन खाएँगे। सब आपस में होली खेलेंगे। होली के खेल–खेल में ही राधा–कृष्ण का मन चुरा लेती है।

नरबदा रंग से भरी, होळई खेलो हो नन्दलाल।
वरण वरण का रंग बणाया, तो कंचन की पिचकारी।
बड़ी बड़ी अखियाँ म पतला, सा सूरमा, तो नैन स नैन मिळावो,
गोरी गोरी बैयाँ म हरी हरी चूड़ियाँ,तो चूड़िला म चोप लगाओ।
मकणों सो हाथी जरद किवाड़ी, तो अंकुश दई दई चलाओ,
हसळो सो घोड़ो मोती वरण्यो, तो चाबुक दई दई चलाओ।
भर पिचकारी तन पर डारी, तो भींज गई राधा नारी,
उड़त गुलाल लाल हुय्या बादळ, रंग की उड़त फुहारी।
चंद्र सखी भज बाळ कृष्ण छवि, होलई खेलत बनवारी,
नरबदा रंग से भरी होळई खेलो हो नन्दलाल।

(श्रीमती शीला गीते, खण्डवा)

हे नन्दलाल! होली खेलो, नर्मदा रंग से भरी हुई हैं। अलग-अलग वर्ण (रंग) का रंग बनाया है। सोने की पिचकारी है। पिचकारी भरकर तन पर रंग डाल दिया, तो रंग में राधा नारी भींग गयी है। उस राधा नारी की बड़ी-बड़ी आँखों में बारीक-सा सुरमा आँजा हुआ है। हे नन्दलाल! उन नेत्रों से नेत्र मिलाकर प्रेम को सार्थक करो। गोरी-गोरी बाँहों में हरी-हरी चूड़ियाँ पहनी हुई है, उन चूड़ियों के बीच में जो चूड़िला पहना हुआ है, उसमें चोप लगाओ। उसमें मोती जड़वा दो। ब्रज की गलियों में गुलाल उड़ रहा है, जिससे बादल लाल हो गये हैं और रंग की फुहारें उड़ रही हैं। चन्द्रसखी कहती हैं कि बालकृष्ण की सुन्दर छवि का स्मरण करो। बनवारी होली खेल रहे हैं।

इस गीत का सौन्दर्य यह है कि होली के अवसर पर पूरी नर्मदा रंग से भर जाती है। कहाँ ब्रज और कहाँ नर्मदा? पर निमाड़ी लोकगायक यमुना की जगह नर्मदा को रंग से भरी हुई बताकर श्रीकृष्ण को होली खेलने का आमंत्रण देता है। लोक भूगोल क्षेत्र की सीमा को पार खड़ा होकर गाता है।

जरा जूड़ो बाँधण देवो रे, होळई के खिलैया रे।
होळई के खिलैया अनऽ फागुण का रसिया, तो करी लेवां सोळा सिंगार।
बरस दिनम का बारही महीना, तो फागुन म खेलांगा फाग,
बड़ी बड़ी अखियन म कजरो सो डाल्यो तो बिंदी झळकत भाल।
रंग बिरंगी चूंदड़ ओढ़ी, तो पायळ करऽ झणकार,
नाक में बेसर कान म झूमका, तो गळा म नव सर्‌यो हार।
गोरी गोरी बैयाँ म हरी हरी चूड़ियाँ, तो चोळई छे बूटादार,

केसर घोळई रंग बणायो, तो कंचन बणी पिचकारी।
अस्सी कळई को घाघरो पेर्‌यो, तो चूंदड़ चमकदार,
भर पिचकारी तन पर डाळई, काजळ म घाळयो गुलाल।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि, का रंग म रंगी गई सारी,
जरा जूड़ो बाँधण देवो रे, होळई के खिलैया रे।

श्रीकृष्ण होली खेलने के लिए उतावले हो रहे हैं। राधिका जी उन्हें बरजते हुए कहती हैं– हे होली खेलने वाले कृष्ण! मुझे जरा जूड़ा बाँध लेने दो। हे होली खेलने वाले और फागुनी रंग में रंगे हुए रसिया! जरा सोलह श्रृंगार तो कर लेने दो। साल भर के बारह महीने होते हैं, उसमें एक महीना फागुन का होता है, उसी में फाग खेलेंगे। ऐसा कहते हुए राधिका जी श्रृँगार करने लगती हैं। उन्होंने बड़ी-बड़ी आँखों में सुरमा आँज लिया है। उनके भाल पर बिन्दी चमक रही है। उन्होंने रंग-बिरंगी चूनर ओढ़ी है। पाँवों में पायल झनकार कर रही है। उन्होंने नाक में बेसर पहन ली है। कानों में झुमके पहने हैं। गले में नौ सर का हार पहना है। गोरी-गोरी कलाइयों में हरी-हरी चूड़ियाँ पहनी हैं। उनकी चोली (कंचुकी) बूटेदार है। उन्होंने अस्सी कली का घाघरा पहना हुआ है और चूनर चमकदार है। उधर राधिका जी सोलह श्रृँगार करती हैं और इधर श्रीकृष्ण ने केसर घोलकर रंग बनाया है। उनके हाथों में सोने की पिचकारी है। उन्होंने पिचकारी भरकर राधा जी के तन पर डाली तो उनके काजल में गुलाल घुल गया और रंग में उनकी पूरी साड़ी रंग गयी। चन्द्रसखी कहती हैं कि बालकृष्ण की उस छवि का स्मरण करने का आनन्द अपूर्व है।

होळई खेलण आयो श्याम, आज एखऽ रंग म बोळो रे।
कोरी कोरी नव दस मटकी मंगाड़ो, नव मण इनमऽ केसर घोलो,
अबीर गुलाल उड़ाओ रे–
सब सखियन मिल श्याम ख पकड़ो, मुख पर कान्हा का केसर रगड़ो,
करी देओ काळा सी गोरो रे।
पितांबर कान्हा को लेओ छुड़ाई, इनख चूंदड़ी देओ पेराई,
बंसी ख देओ तोड़ी रे–
ताळई दई दई कान्हा ख नचाड़ो, हाय खाई जब हाथ जोड़से,
तब जाई एखऽ छोड़ो रे।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण की, नाचत गावत छवि निहारू,
इन पर बलि बलि जाऊँ रे–
होळई खेलण आयो श्याम, आज एखऽ रंग म बोलो रे।

फागुन का महीना है। होली का त्यौहार है। श्रीकृष्ण को होली खेलने के लिए आया हुआ

देखकर सारी सखियाँ आपस में कहती हैं- श्याम होली खेलने आया हुआ है, आज इसे रंग में डुबो दो। कोरी-कोरी नौ-दस मटकियाँ मँगाओ और उनमें नौ मन केसर घोलकर रंग बनाओ और अबीर-गुलाल उड़ाओ। सभी सखियाँ मिलकर श्याम को पकड़ लो और उसके मुख पर खूब केसर रगड़ दो और इतना रगड़ो कि श्याम काले से गोरा हो जाए। इतना ही नहीं कन्हैया का पीताम्बर छीन लो और उसे चूनर पहना दो। और उसकी बाँसुरी को तोड़ डालो। गोपियाँ आगे कहती हैं कि ताली बजा-बजाकर कान्हा को नचाओ तथा जब वह परेशान होकर या परास्त होकर हाथ जोड़ने लगे, तब जाकर इसे छोड़ो। गोपियाँ ऐसा ही करती हैं। चन्द्रसखी कहती हैं कि गोपियों के साथ नाचते-गाते हुए श्रीकृष्ण की सुन्दर छवि को देखकर इन पर बलिहारी जाती हूँ।

होळई खेलण आवजे श्याम, आज बरसाणा म।
मस्त महीनो फागुण को, सुण रसिया नन्द कुमार,
थारो म्हारो हेत घणो रे, छाया धूप को साथ।
बहुत दिनन तक माखण खायो, चोरी करी करी श्याम,
होळई का दिन थारी ताकत, देखूँ गोपी न का साथ।
हरो पीळो लाल गुलाबी, रंग डालूँगी थारा पर श्याम,
भर पिचकारी मारूँगी थारा ख, अरू उड़ाऊँ गुलाल।
फगवा चकावण बरसाणा आवजे, सबका प्यारा घनश्याम
तू सब गोप न ख लई न आवजे, राधा का प्यारा श्याम।

मधुर भावनाओं से परिपूर्ण राधा श्याम को बरसाने में होली खेलने का आमंत्रण देती है। एक तरह से मनुहार करती है। हे श्याम! तुम बरसाने में आज होली खेलने आना। हे नन्द कुमार, रसिया, श्रीकृष्ण! सुनो- यह फागुण का मस्त महीना है। तुम्हारा और मेरा प्रेम बहुत गहरा और घना है। तुम्हारा मेरा साथ छाया-धूप जैसा अटूट और अभिन्न है। हे श्याम! तुमने बहुत दिनों से चोरी करके माखन खाया है। होली के दिन गोपियों के साथ तुम्हारी ताकत देखूँगी। अर्थात् होली के दिन जब सब गोपियाँ मेरे साथ होंगी, उस दिन तुम्हारी शक्ति की परीक्षा होगी। हरा, पीला, लाल, गुलाबी रंग मैं तुझ पर डालूँगी। पिचकारी भर-भरकर तुझे मारूँगी और तुझ पर खूब गुलाल उड़ाऊँगी। अंत में राधा कहती है- हे सबके प्यारे घनश्याम! तुम फाग खेलने बरसाने में आना और अपने साथ अपने सखा सब गोप-ग्वालों को लेकर आना। हे श्याम! तुम राधा (मेरे) के प्यारे हो, तुम होली खेलने बरसाने में जरूर आना।

देख सखी होळई खेलऽ गिरधारी,
सुण सखी होळई खेलऽ गिरधारी।

मुरली चंग बजऽ ढप न्यारो, संग म राधा प्यारी,
चन्दन केसर छिटकऽ सखी न पर, अपणा हाथ बिहारी।
छैल छबीला सुन्दर कन्हैया, संग म राधा प्यारी,
गावत गीत धमार राग म, दई दई ताळ बिहारी।

राधा-कृष्ण होली खेल रहे हैं, उन्हें देखकर एक सखी अन्य सखियों से कहती है- हे सखी! देखो गिरिधारी होली खेल रहे हैं। मुरली, चंग और ढप न्यारी-न्यारी बज रही है और श्याम के संग में राधा प्यारी है। वृन्दावन बिहारी कृष्ण अपने हाथों से सखियों के ऊपर चन्दन और केसर छिड़क रहे हैं। छैल-छबीले-सुन्दर-कन्हैया के संग में प्रिय राधा हैं। ब्रज बिहारी श्रीकृष्ण ताल दे-देकर राग धमार में गीत गा रहे हैं। देखो सखी! गिरधारी होली खेल रहे हैं।

सजी आयो रे कन्हैया होळई खेलण ख।
बणी आयो रे रसिया होळई खेलण ख।
सुन्दर सालोणो रूप बणायो, फेटो बाँध्यो रे पंचरग्यो,
कांधा पर सुन्दर उपरणा सोहे, फेटा पर सोहे मौर पंखी रे।
पेलो पीताम्बर कम्मर पर सोहे, मोतियन की कर धनिया रे,
मस्तक सुन्दर तिलक बिराजे, बड़ी बड़ी अखियाॅ मटकावे रे,
हाथ म लई रंग पिचकारी, कृष्ण ख गोपी न घेरो रे।

कन्हैया होली खेलने के लिए सज-धजकर आ गया है। वह होली खेलने के लिए रसिया बनकर आ गया है। उसने सुन्दर-सलोना रूप बनाया है और पचरंगा (पाँच रंगों) फेटा (साफा-पगड़ी) सिर पर बाँध आया है। उसके काँधे पर सुन्दर उत्तरीय शोभायमान है और साफे के ऊपर मोरपंख सुशोभित हो रहा है। उसकी कमर में पीला पीताम्बर है और मोतियों की करधनी (कंदोरा) सुन्दर लग रही है। उसके उन्नत मस्तक पर सुन्दर तिलक विराजित है। कन्हैया अपनी बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखों को मटका रहा है। सखी कहती है कि यह गोपाल कृष्ण सबका लाड़ला है तथा पूरे ब्रज की आँख का तारा है, सभी गोपियों ने हाथों में पिचकारियाँ लेकर कृष्ण को घेर लिया है।

फागुण फूल्यो रसिया, बसंत आयो रे रसिया,
आई जा मन बसिया, बसंत आयो रे।
आमराई म मौर फूल्या, म्हारो मन अटक्यो,
कोयल की कूक सुणी, म्हारो मन भटक्यो,

सूखा पेड़ पर कोयल छाई रसिया, आई जा मन बसिया, फागुण आयो रे।
केतकी गुलाब डाळ फूल सी लदी गई,
सरसो न पेळई साड़ी फहराई,
जूही चम्पक पर भवरो मंडरायो रसिया, आई जा मन बसिया, फागुण आयो रे।
जंगल में देखो पिहूँजी पळास छे फूल्यो,
रंग रंगीला फूल बगीचो छे महक्यो,
नशीला फाग की मस्ती छाई रसिया, आई जा मन बसिया, फागुण आयो रे।
रसीलो बसंत आयो पियो परदेश,
पिया जी की वाट निहारू दिन रैन,
थारा मिलन ख जीव म्हारो तरस रसिया, आई जा मन बसिया, फागण आयो रे।

नायिका का पति परदेश गया है। फागुन का महीना आ गया है। प्रकृति में उल्लास छाने लगा है। वनस्पति फूलने लगी है। वसंत ऋतु आ गयी है। वसंत नायिका के प्रेम को उद्दीप्त करता है। बासंती वातावरण को देखकर नायिका कहती है- हे रसिया! फागुन फूल गया है। वसंत आ गया है। हे मेरे मन में निवास करने वाले प्रियतम! तुम आ जाओ। अमराई में बौर आ गये हैं, जिन्हें देखकर मेरा मन भटक गया है। कोयल की सुहावनी कूक सुनकर मेरा मन इधर-उधर तुम्हारी याद में भटक रहा है। सूखे पेड़ पर कोपल आ गयी है। अर्थात् वसंत के आगमन से निपात पेड़ में कोपलें फूट आयी हैं, अत: मेरे निराश और उदास जीवन में फिर से प्रसन्नता भरने के लिए प्रियतम तुम लौट आओ, फागुन आ गया है। केतकी और गुलाबों की डालियाँ फूलों से लद गयी हैं। सरसों ने पीली साड़ी पहन ली है। जूही और चम्पा पर भँवरा मँडराने लगा है, अत: हे प्रियतम! वन में देखो, पलाश फूल उठा है। रंग-रंगीला फूलों का बाग भी महक उठा है। चारों ओर मदमाते फाग की मस्ती छायी हुई है। अत: हे प्रियतम! अब भी लौट आओ। नायिका कहती है- रसमय वसंत आ गया है और प्रियतम परदेश में हैं। मैं प्रियतम की राह दिन-रात जोहती रहती हूँ। हे प्रिय! तुम्हारे मिलन को मेरा मन तरस रहा है, तुम परदेश से लौट आओ। फागुन आ गया है।

आई आई रे बसंत ऋतु भवरो डोलऽ,
कहीं अमुआ की डाळपर कोयळ बोळऽ ।
हरो हरो घाघरो पेरी सरसों इतराई रे,
पेळई पेळई साड़ी वो न हरा म फहराई रे,
जूही की बेल देखो कसी महकऽ ।
बगीचा म केतकी गुलाब छे फूल्यो,
रंग बिरंगा फूल सी बगीचो महक्यो,

फूल फूल पर देखो भवरो डोळऽ ।
पात पात पर मौर छे फूल्या, घणा घणा देखी किरसाण हरक्या,
हरा हरा गहुंड़ा पर बाळई होळऽ।

वसंत ऋतु आ गयी है और फूलों पर भँवरे मँडराने लगे हैं। आम के वृक्ष की डाली पर कोयल बोल रही है। हरा घाघरा पहनकर खेतों में सरसों इतराने लगी है। वह पीली साड़ी को खेतों में फहरा रही है। जूही की लता देखो कैसी महक रही है। बाग में केतकी और गुलाब फूल उठे हैं। रंग-बिरंगे फूलों से बगीचा महक उठा है। प्रत्येक फूल पर भँवरा मँडराने लगा है। पत्ते-पत्ते से मौर (बौर) झाँकने लगे हैं। खेत में चने की अच्छी फसल देखकर किसान का मन प्रसन्न है। हरे-हरे गेहूँ के पौधों पर बालियाँ झूमने लगी हैं।

अरे गोकुळ को लम्बो बजार, जसोदा बिलख रे।
कहाँ गयो म्हारो कन्हैयो, कहाँ गयो बलराम।...जसोदा।
बन म गया थारो कुँवर कन्हैयो, संग म गयो बलराम।...जसोदा।
गाड़ी पर लावो म्हारो कुँवर कन्हैयो, गाडी पर लाओ बलराम।...।
होळई उतारूँ कुँवर कन्हैयो, झेण्ड उतारूँ बलराम।... जसोदा।

(श्री भीकाजी पटेल, ध्वानतपुरा)

श्रीकृष्ण खेलते-खेलते गोकुल की गलियों में दूर तक चले जाते हैं। माँ यशोदा घर में कान्हा को न पाकर बिलखने लगती है। वह कहती है-गोकुल का लम्बा बाजार है, मेरा कुँवर कन्हैया और बलराम कहाँ चले गये? कहते हैं कि तुम्हारा कुँवर कन्हैया वन में गया है और साथ में बलराम भी गये हैं। माँ यशोदा कहती है- मेरे कृष्ण को गाड़ी पर बिठाकर वन से घर को लाओ और गाड़ा पर बैठाकर बलराम को ले आओ। होली के स्थान पर कुँवर कन्हैया को लाकर गाड़ी से उतारूँ और झेण्डा तोड़ने की जगह बलराम को उतारूँ।

अरे खेलऽ कन्हैयो होळई गोकुल म, खेलऽ कन्हैयो होळई रे।
कीन्हा पर फेकूँ अबीर की पड़िया, कीन्हा पर छोड़ूँ पिचकारी।
ललिता पर फेकूँ अबीर की पुड़िया, राधा पर छोड़ूँ पिचकारी।...कन्हैयो।

प्रश्न और उत्तर की शैली अनेक लोकगीतों में होती है। ऐसा ही यह गीत है, जिसमें कहा गया है- श्रीकृष्ण गोकुल में होली खेल रहे हैं। किस पर अबीर की पुड़िया फेकूँ और किस पर पिचकारी छोड़ूँ? ललिता पर अबीर की पुड़िया फेकूँ और राधा पर पिचकारी छोड़ूँ। इस तरह गोकुल में कन्हैया होली खेल रहे हैं।

म्हारी चुदड़ी को रंग लाल, सखी हाऊँ पेरू तो म्हारो मन हरख।
आ वो सखी या किन्ह जो चूदड़ मोल करी वो,
अरे कुण चुकाव दाम।... सखी हाऊँ।
कृष्ण न चूदड़ी मोल करी रे, बाबा नन्द चुकाव दाम।... सखी हाऊँ।
सखी हाऊँ चूदड़ पेरी न निकलई वो, कान्हो मारऽ रंग पिचकारी।...सखी हाऊँ।

हे सखी! मेरी चुनरी का लाल रंग है, इसे पहनकर मेरा मन प्रसन्न होता है। हे सखी! इस चूनर का किसने मोल किया और किसने इसका दाम चुकाया? उत्तर मिलता है- श्रीकृष्ण ने इस चूनर का मोल-भाव किया और बाबा नन्द ने इसकी कीमत चुकायी। हे सखी! उसी चूनर को पहनकर मैं घर से निकली हूँ, उस पर कान्हा रंग से भरी पिचकारी मार रहे हैं। हे सखी! उस चूनर को पहनकर मेरा मन हर्षित होता है।

मस्त एक फाग आयो जी, दिल म खुशी अपार प्रेम को रंग बरसायो जी।
ग्वाल बाल संग कृष्ण कन्हाई, गढ़ गोकुळ म धूम मचाई,
महिमा अद्‌भुत छाई जी।
गढ़ गोकुल की सब ब्रज नारी, घेरी ग्वालन किसन मुरारी,
रंग स कीच मचायो जी।
श्री कृष्ण सखी संग खेलत होळई, देखत मगन भया नर नारी,
भीका जी जस गाव जी।

फागुन के महीने में मदमस्त कर देने वाला फाग का त्यौहार आया है। मन प्रसन्न है। प्रेम का अपार रंग बरस रहा है। ग्वाल-बालों के संग मिलकर कन्हैया ने गढ़ गोकुल में धूम मचायी है। फाग में कृष्ण की महिमा चारों ओर अद्‌भुत रूप से छाई हुई है। गढ़ गोकुल की सभी गोपियाँ एकत्रित हुई हैं तथा उन्होंने (ग्वालनों ने) कृष्ण-मुरारी को घेर लिया है। वे कृष्ण के साथ होली खेल रही हैं, इस कारण रंग का कीच (कीचड़) मच गया है। श्रीकृष्ण सखी राधा के संग होली खेल रहे हैं, जिन्हें देखकर सभी नर-नारी मगन हो गये हैं। भीकाजी श्रीकृष्ण भगवान का यश गाकर स्वयं को धन्य मान रहे हैं।

सुण ब्रज गोकुळ की नारी, नंदा को नंदलाल खेली रह्यो होळई।
मस्त सखी फागुण का महिना, नहीं किसी की याद किसी से कहना,
तुम गढ़ गोकुळ का रवैह्या, कुँवर कन्हैया नन्दलाल,

हम पर मत डालो गुलाल, सख्यिाँ मस्त भई सारी।... नंदा को।
बड़ा बदमस्त कन्हैया लाल, सखी न पर डालो रह्यो गुलाल,
सखियाँ सब मस्त भई सार। ... नंदा को नंदलाल।

हे गोकुल और ब्रज की नारी! सुनो, बाबा नन्द का लाल होली खेल रहा है। हे सखी! फागुन का महीना मदमस्त कर देने वाला है, इसमें किसी की फरियाद किसी से नहीं करना चाहिए। अर्थात् सब कुछ भूलकर होली के रंग में रंग जाने का यह अवसर है। हे कृष्ण! तुम गोकुल के रहने वाले हो। सारी सखियाँ फाग की मस्ती में डूबकर कहती हैं कि हे कृष्ण! हम पर गुलाल मत डालो। मना करने पर भी मदमस्त कन्हैया सखियों के ऊपर गुलाल डाल रहा है। उस क्षण सखियाँ सब कुछ भूलकर फाग की मादकता से सराबोर हो गयी हैं।

रंगरेज श्री करतार चूदड़ म्हारी रंग जो हो एक बार।
तार तार म तारा जड़जो, धड़ पल्ला म लाल,
राधा किसन को नाम लिखाओ, जीवन को उद्धार।
भांति भांति को रंग चढ़ाओ, सुन्दर छवि अपार,
ब्रह्मज्ञान की जोत जगाओ, या चूदड़ की अजप बहार।
चूदड़ नौ दस मास बुणण ते लागियो, प्रभु की लीला अपार,
लख चौरासी भोग भोगी न, चूंदड़ हुई तैयार।
या काया की बणी चूंदड़ी, कीमत छे अनमोल,
चतुर होय कोई भाव करगो,मूरख करऽ विचार।

गोपी कामना करती है कि- हे ईश्वर! तुम रंगरेज बनकर मेरी चूनर को एक बार रंग देना। चूनर के प्रत्येक तागे में तारे जड़ देना और उसके किनारे व पल्ले में लाल जड़ देना। उस चूनर पर राधा-कृष्ण का नाम लिख देना, जिससे जीवन का उद्धार हो जाए। हे प्रभु! उस चूनर पर तरह-तरह का रंग चढ़ा देना, जिससे वह सुन्दर बन सके। उसमें ब्रह्मज्ञान की जोत जलाना। इस तरह से इस चूनर की सुन्दरता अद्‌भुत हो जाएगी। इस चूनरी को बुनने में नौ-दस महीने लगेंगे, प्रभु की लीला अपरम्पार है। चौरासी लाख योनियों में चक्कर काटकर या भोग-भोगकर यह चूनर तैयार हुई है। गीत दार्शनिक और आध्यात्मिक भावभूमि पर उद्‌घोष करता है कि चूनरी इस काया की ही बनी हुई है या यह काया ही चूनर के रूप में प्राप्त हुई है, जो कि अनमोल है। इसकी कीमत किसी भौतिक वस्तु से नहीं आँकी जा सकती। कोई चतुर या ज्ञानी व्यक्ति ही भाव कर सकता है, मूरख तो विचार करने में ही रह जाएगा। अर्थात् ज्ञानी इस काया रूपी चूनरी के माध्यम से साधना करके ईश्वर को प्राप्त कर लेता है।

तू न गोकुल म धूम मचाई रे, जशोदा का लाल फाग खेलऽ ।
सखा सखी संग खेल रचायो, भर भर परात गुलाल उड़ायो,
असी राधा भी दौड़ी चली आई रे।
शंकर भी आया न गवराँ ख लाया, वीणा लई न नारद भी आया,
असो ब्रह्मा को मन हरसाई रे।
आसण छोड़ी न इन्द्र भी आया, इन्द्र अप्सरा नाच नचाया,
असो विष्णु को मन हरसाई रे।
नर नारी सब आनन्द मनाव, बाबा नन्द घर मंगळ आव,
असो मेवा मिठाई बणाई रे।

(श्री बलीराम आशाराम यदुवंशी, खण्डवा)

हे यशोदा के लाल श्रीकृष्ण! तूने फाग खेलते हुए गोकुल में धूम मचायी। तूने सखा-सखियों के साथ खेल रचाया है। परात भर-भरकर गुलाल उड़ाया है। होली का खेल देखकर राधा भी दौड़कर चली आयी है। यह होली का खेल इतना मनमोहक है कि इसमें शामिल होने के लिए शंकर भी आये। गौरा भी आयी। माँ पार्वती को साथ लाये। वीणा हाथ में लेकर नारद भी आये और ब्रह्मा जी का मन हर्षित हुआ। इन्द्रासन छोड़कर इन्द्र भी वृन्दावन-गोकुल की इस अद्‌भुत होली में शामिल होने के लिए आये। इन्द्र ने अप्सराओं का नृत्य भी आयोजित किया। विष्णु भगवान का भी मन हर्षाने लगा। सब स्त्री-पुरुष होली खेलते हुए आनन्द मनाते हैं। बाबा नन्द का घर आनन्द से भर गया है। खूब मेवा-मिष्ठान बन रहे हैं। कृष्ण ने गोकुल में फाग की धूम मचायी है।

कन्हैया म्हारी रंगजो रे रंगदार चुन्दड़ी।
रंगदार चुन्दड़ी रे गोटादार चुन्दड़ी। ...कन्हैया म्हारी।
हाथ की म्हारी चुड़ी फोड़ी, हाथ पकड़ी न बैंय्या मरोड़ी,
जरीदार म्हारी फाड़ी साड़ी।... कन्हैया म्हारी।
चोळई भीजीं चुन्दड़ भींजी, माथा की म्हारी टीकी फेकी,
म्हारी लाल रतन जड़ी साड़ी। ... कन्हैया म्हारी।
गवाल बाल सब सारा बुलाय, सब सखी न ख रंग लगाया,
सब देखी रही जशोदा माड़ी। ...कन्हैया म्हारी।

हे श्रीकृष्ण! मेरी चुनरी को रंगदार तरीके से रंगना। यह रंगदार चुनरी गोटादार है, इसे तुम प्रेम रंग में रंग देना। तुमने मेरा हाथ पकड़कर बैंया मरोड़ी। मेरी चूड़ियाँ फोड़ी और मेरी जरीदार साड़ी को फाड़ दिया। तुमने रंग में मेरी चोली भिगा डाली। चूनर को भिगो दिया। मेरे माथे पर

लगी हुई टीकी को फेंक दिया। मेरी साड़ी लाल रत्नों से जड़ी हुई है। तुमने सारे ग्वाल-बालों को बुला लिया और सब सखियों को रंग लगा दिया है। तुम्हारी करतूतें माँ यशोदा देख रही हैं।

गोकुल में कान्हा होळई खेलऽ,
राधा की नवरंग चुन्दड़ी लाल।
राधा की संग म गोपी न आई, कान्हो सब ख रंगी रह्यो भाई,
रंग म सारी लालम लाल।
सखा सखी संग होळई खेलऽ, बजी रह्या चंग अरू ढोलऽ,
जमुना हुई गई, लाल।

गोकुल में कन्हैया होली खेल रहे हैं। होली के रंग में राधा की नवरंगी चुनरी लाल हो गयी है। राधा के संग में गोपियाँ आयी हैं। कृष्ण सबको रंग रहे हैं। सब रंग में लाल-म-लाल हो रही हैं। श्रीकृष्ण गोप-गोपी संग होली खेल रहे हैं। चंग और ढोल बज रहे हैं। होली के रंग में यमुना का पानी भी लाल हो गया है। कृष्ण के साथ मानव और प्रकृति सब होली खेल रहे हैं।

मारी हो नन्दजी का लाल न रंग पिचकारी।
हऊँ रंग म भींजई गई सारी।
कान्हा तुम ख कहूँ समझाय, म्हारी साथ म सखी न भी आई,
रंगी दी रे जशोदा का लाल न सखियाँ सारी।
सब गुवाल बाल वहाॅ आया, गोपी न ख रंग लगाया,
राधा की नवरंग साड़ी भींजई गई सारी।
सब सखी न मंगळ गाव, देवता फूल बरसाव,
गोकुळ का लोग अरू मथुरा सारी।

हे सखी! बाबा नन्द के लाल ने रंग की पिचकारी मारी मैं सारी की सारी भींग गयी। हे कृष्ण! मैं तुम्हें समझाकर कहती हूँ कि मेरे साथ में सखियाँ भी आयी हैं, इतना कहते ही कृष्ण ने सारी सखियों को भी रंग दिया। इतने में वहाँ सभी ग्वाल-बाल आ गये। गोपियों को उन्होंने रंग लगाया। राधा की नवरंग साड़ी पूरी भींग गयी। गोकुल के सारे लोग और सारी मथुरा नगरी के वासी मंगल गीत गा रहे हैं। देवता पुष्प-वर्षा कर रहे हैं।

आयो फागुण महिनो सुहाणो सखी, हऊँ कृष्ण सी फाग खेलूँगा।
राधा भी आई ललिता भी आई, सारी सखियाँ संग म लाई,

थारा संग म होळई खेलूँगा।
बिदराबन म धूम मचाई, अबीर गुलाल की लाली छाई,
हऊँ बिना रंगे नी जाऊँगा।
गुवाल बाल सारा आया, फाग का वो खेल रचाया,
हऊँ कृष्ण सी होळई खेलूँगा।

हे सखी! फागुन का सुहाना महीना आया है। मैं कृष्ण के साथ फाग खेलूँगी। राधा भी आयी है। ललिता सखी भी आयी है। सारी सखियों को संग लेकर आयी है। हे कृष्ण! मैं तुम संग होली खेलूँगी। अबीर गुलाल की लाली छायी है तथा वृन्दावन में होली की खूब धूम मची है। हे कृष्ण! मैं तुम्हें बिना रंगें नहीं जाऊँगी। सारे ग्वाल-बालों ने आकर फाग का खेल रचाया है। मैं श्रीकृष्ण के साथ होली खेलूँगी। इस प्रकार एक गोपी कृष्ण के संग होली खेलने की अभिलाषा प्रकट करती है।

नाच मोर नचाव मोर गोकुल म कन्हैयो नचाव मोर
कहाँ से लाऊँ काली को लड़ी कहाँ से लाऊँ कलायो मोर
गोकुलम कन्हैयो नचाव मोर
बन सी लाऊँ काली कोयलड़ी
बन सी लाऊँ कलायो मोर । गोकुल म ...
होली उतारूँ काली कोयलड़ी
झेन्डा उतारूँ कलायो मोर। गोकल म...
कन्ईयो नचाव मोर।

मोर नाच रहे हैं। गोकुल में कृष्ण मोर नचा रहे हैं। गोकुल में कहाँ से आई है काली कोयल और कहाँ से आये हैं सुन्दर पिच्छवाले मोर? जिन्हें कृष्ण नचा रहे हैं। आम्रवन से आई हैं काली कोयल और जंगल से मोर आये हैं। होली के रंगीन मौसम में मीठी आवाज निकालने वाली कोयल को उतारेंगे और झेण्डा (एक खेल नृत्य) में सुंदर मयूरों को उतारेंगे, जिन्हें कृष्ण पूरी क्षमता से नचायेंगे।

अरे फाग खेलन को म्हाराज, फाग खेलन को सब ब्रज नारी
कहाँ गये गिरधारी।
कहाँ की छे तू गुवालनी वो काई तुमारो नाव जी,
अरे दान मे लेवंगा लावो ईसी घड़ी । कहां गये गोरधारी...

कहाँ को छे तू दानवई रे, काई तुमारो नावजी
अरे दान नहीं देऊँगा जावो ईसी घड़ी। कहां गये...गिरधारी
बाबा नन्द को दानबई रे, कृष्ण हमारो नाम जी
अरे गढ़ मथुरा की गुवालनी रे राधा हमारो नाम
अरे दान अब देऊँगा लेवो ईसी घड़ी। कहाँ गये...गिरधारी
अरे फाग खेलन को महाराज फाग खेलन को
सब ब्रज नारी कहाँ गये गिरधारी

कृष्ण के साथ सारी गोपियाँ फाग खेलने के लिये निकल पड़ी हैं। उसमें ब्रज की सारी नारियाँ हैं। परन्तु गिरधारी कहाँ खेलने चले गये? गोपियों के सामने कृष्ण आकर कहते हैं- हे ग्वालिनी! तुम कहाँ की रहने वाली हो और तुम्हारा नाम क्या है? चलो पहले मेरा दान (दूध, दही, मक्खन) इसी समय दे दो। गोपियाँ पूँछती हैं- कहाँ तू बड़ा दान मांगने वाला आ गया और तुम्हारा भी नाम क्या है? हम तुम्हें दान नहीं देंगे, तुम इसी समय चले जाओ। कृष्ण कहते हैं- अरे! मैं नंद बाबा का पुत्र हूँ? हम तुम्हें दान नहीं देंगे, तुम इसी समय चले जाओ। तुझे दान लेना हो तो हम तुम्हें दान इसी समय दे देगी। लेकिन हमारे साथ तुम्हें होली खेलना पड़ेगी। हम तो तुम्हारे साथ ही फाग मचाने आई हैं।

विघन हरो गनराज गजानन विघन हरो
रखो सरण म लाज गजानन विघन हरो
रिधी-सिधी के दाता दानी, सनमुख रहे सारदा भवानी
मुसा चढ़ो असवार, गजानन विघन हरो
सिर सेन्दूर का तिलक बिराजे
गले फूलन की माला साजे, रिद-सिद का भरतार।
गजानन विघन हरो।

हे गजानन गणेश! हमारे विघ्न दूर करो। हम आपकी शरण में आये हैं, हमारे दु:ख दूर करो। हे गणपति जी! आप रिद्धि-सिद्धि के दाता और दानी हो, आपके सम्मुख सदैव विद्या की देवी सरस्वती रहती हैं। आपको चूहे की सवारी पसंद है। तुम्हारे सिर पर सिन्दूर का तिलक शोभा देता है और गले में फूलों की माला पड़ी है। आप रिद्धि-सिद्धि के स्वामी हैं। गजानन गणेश आप सबकी विघ्न-बाधाएँ दूर करने वाले देवता हैं।

मस्त एक फाग आयो जी, दिल म खुसी अपार
प्रेम को रंग बरसायो जी।

गुवाल बाल संग कृष्ण कन्हाई गढ़ गोकुलम धूम मचाई
महिमा अदभुत छाई जी, दिल म खुशी अपार
गढ़ गोकुल की सब ब्रज नारी
घेरी गुवालन कृष्ण मुरारी, रंग से कीच मचायो जी
दिल म खुसी अपार, प्रेम को रंग बरसायो जी
भंग जहर जंजाल बनाई बनाई
सब गुवालन को रया पिलाई, नसा म सुद बुद खोई जी
दिल म खुसी अपार, प्रेम को रंग बरसायो जी
सरेआम सखी न संग खेलत होरी
देखत मगन भये नर नारी
भीका जी आरज सुण लीजोजी, दिल म खुसी अपार
प्रेम को रंग बरसायो जी।

फागुन का मदमस्त महीना आ गया है, मन में अपार खुशी है, जैसे प्रेम रंग की बरसात हो रही है। ग्वाल बाल के साथ कृष्ण कन्हैया-गोकुल गाँव में धूम चा रहे हैं। जिसकी महिमा अद्‌भुत छटा बिखेर रही है। गोकुल गाँव की सारी नारियाँ कृष्ण मुरारी को घेरकर रंग गुलाल का कीच मचा रही हैं। गोपियों ने बहुत शानदार भंग बनाई है, जिसे वे सब गोप-ग्वालों को पिला रही हैं। भंग का नशा सब पर चढ़ गया है और सब बेसुध से हो रहे हैं। कृष्ण कन्हैया अब खुलेआम सखियों के साथ होली खेल रहे हैं, जिसे सब स्त्री-पुरुष देखकर आनंद ले रहे हैं। भीकाजी के भी मन में आनन्द छा गया है।

सुण ब्रज गोकुल की नारी, नंदा को नंदलाल
खेली होरी, मस्त सखी फागका महीना
नदी किसी की याद फरियाद किसे कहना
गढ़ गोकुल का रहे, कुंवर कनइयो नंदलाल
मिलई रयो दमपर दम नयना, गुवालन कहेती कन्हैयालाल।
हम पर मत डालो गुलाल,
सखियाँ मस्त भई सारी,
नंदा कौन नंदलाल खेलती
होरी गिरधारी।
बडा़ वह मस्त कन्हैयालाल
सब सखियन को पकड़ पकड़ कर डाल रहा गुलाल।
भंग बनवाया जहर जंजाल सब गोपीय न को

बुलाबुलाकर पीला रहे नंदलाल।
नसे में गर्द भरी बजावे गावे नर नारी,
रंग की उड़ती पिचकारी, नसे में सब सुद खोई जी
नंदा कौन नंदलाल खेलतो होरी।

हे गोकुल की नारियों ! ब्रज में नंदलाल होली खेल रहे हैं। फागुन का मदमस्त महीना है। कोई किसी की याद–फरियाद सुनने वाला नहीं है। सब होली के रंग में बेसुध हैं। नंदलाल बार–बार गोपियों को गुलाल लगा रहे हैं। सखियाँ बार–बार कह रही हैं, हम पर रंग गुलाल मत डालो, फिर भी कृष्ण मान नहीं रहे हैं। सखियाँ मस्त हो रही हैं। नंदलाल पर होली जैसे छा गई है। गोपियों को पकड़–पकड़कर रंग गुलाल डाल रहे हैं। ऊपर से भंग का नशा चढ़ रहा है, जो जी का जंजाल बन गया है। बार–बार गिरधारी गोपियों को बुला–बुलाकर भंग पिला हरे हैं। नशे में रंग गुलाल से भरी सभी नर–नारी गा बजा नाच रहे हैं, रंगीन पिचकारियाँ इधर–उधर से चल रही हैं। सब सुध–बुध खो चुके हैं।

रंगरेज श्रीकरतार चूंदड़ म्हारी रंगजो हो एक बार
तार तार म तारा जड़जो धड़ पल्ला म लाल
राधा कृष्ण को नाम जोलीखजो म्हारा जीवन को आधार।
भात भात को रंग चड़ावो
सुन्दर छवि अपार। ब्रह्मग्यान की जोत जगावो
या चूंदड़ की आजप बहार।
चूंदड़ नौ दस मास बुणणऽ ते लागियो।
प्रभु की लीला अपार।
लख चौरासी भोग भोगिनऽ।
चूंदड़ हुई तई यार।
ये काया की बणी चूंदड़ी कीमत छे अनमोल
चातुर हो कोई भाव करेगो, मूरख करऽ विचार।
चूदंड़ म्हारी रंगजो हो एक बार।
भीकाजी न लिखी चूदंड़ी।
जीवन को एक सार।
या चूंदड़ी का ओढ़न वाला
हुई गया भव से पार, चूंदड म्हारी रंग जो हो एक बार।

(श्री बलीराम आसाराम यदुवंशी)

हे रंगरेज रूपी करतार! मेरी चूनरी एक बार ऐसी रंग देना कि फिर उसका रंग कभी नहीं निकले। रंगने के बाद उसके तार-तार में यानी प्रत्येक धागे में तारे जड़ना और पल्लू में हीरे-पन्ना और लाल जड़ देना। उस चूनड़ी पर राधाकृष्ण का नाम लिख देना। जो मेरे जीवन का आधार है। चूनरी को एक ही रंग में नहीं रंगना, तरह-तरह के रंग उसमें चढ़ाना। जिसकी छवि एकदम सुन्दर निखर आये। यह चूनरी ऐसी हो, जिसके कारण मन में ब्रह्मज्ञान की ज्योति जल उठे और चूनर के ओढ़ने पर सदैव अजपा जाप चलता रहे। यह शरीर रूपी चूनरी ऐसी है, जिसके बुनने में नौ दस महीने लगते हैं, जो ईश्वर की अद्भुत लीला के रूप में प्रकट होती है। यह मनुष्य शरीर चौरासी लाख योनियों में से होते हुए बड़ी कठिनाई से मिलता है। इस काया रूपी चूनरी की कीमत अनमोल है। चतुर यानी समझदार व्यक्ति इस चूनर का मूल्य समझ सकता है, मूर्ख आदमी तो केवल विचार ही करता रहता है। जीवन के सार के रूप में यह चूनरी भीकाजी ने लिखी है, इसे ओढ़ने वाला भव सागर से पार हो जाता है।

कान्हो बान्धो भुगर खेलां होरी
कहाँ सी लाऊँ कुंवर कन्हैयो
कहाँ सी लाउँ राधा प्यारी। कान्हा बांधो...
गोकुल सी लाउँ कुँवर कन्हैयो
बरसाना सी लाऊँ राधा प्यारी। कान्हा बान्धो...
बाबा नन्द को कुँवर कन्हैयो
रंगी नाखी वो गोपी सारी। कान्हा बान्धो
चोलई भींजी चूंदड़ भींजी
राधा की नवरंग साड़ी। कान्हा बान्धो......
गुवाल बाल वो सारा आया
रंग की मारी पिचकारी। कान्हा बान्धो

गोपियाँ कहती हैं- कृष्ण होली खेलने की तैयारी कर लो, सिर पर पगड़ी बाँध लो, सब मिलकर आज होली खेलेंगे। कहाँ से कुंवर कन्हैया और कहाँ से राधा प्यारी आयेंगी? गोकुल से कुँवर कन्हैया और बरसाने से राधा आयी हैं। नंदबाबा के कुँवर कन्हैया ने सारी गोपियों को रंग दिया है। राधा की चोली और चूँदड़ी रंग में भींग गई हैं, साड़ी तो नवरंगों से रंगी गई है। गवाल-बाल सभी आपस में रंग की पिचकारियाँ चला रहे हैं। सारा वातावरण रंगों से सराबोर हो गया है।

गोकुल म कान्हा होळई खेल,
राधा की नवरंग चूंदड़ लाल । गोकुल म...

राधा की संगमऽ गोपी न आइ
कान्हो सबकऽ रंगी दे भाई
रंग म सारी लालम लाल। गोकुल म..
चोळई चून्दड़ भींजी दी सारी
जमुना हुई गई लालम लाल। गोकुल म...
सखा सखी संग होळई को ख्याल
जा बजऽ चंग अरू ढोल
मन मोहन जसोदा को लाल। गोकुल म...

गोकुल में कन्हैया होली खेल रहे हैं। राधा की चूंदड़ी नवरंगों में रंग गई है। राधा के साथ जो गोपियाँ आई हैं, उन सबको भी कृष्ण रंग रहा है। सब कृष्ण के लाल रंग (प्रेम रंग) में रंग गई हैं। गोपियों की चोली चूँदड़ी और साड़ी भींग गई है। पूरी जमुना का पानी लाल हो गया है। सभी सखा-सखी होली का खेल-खेल रहे हैं। जहाँ चंग और ढोल बज रहे हैं, वहाँ जसोदा का लाल सबका मन मोह रहा है।

कारीगर बड़ो होशियार, रंगी दी चूंदड़िया
तार तार म अजब रंगीरे, जग म करियो सकार। रंगी दी चूंदड़िया...
कारीगर करतार तून रंग दियो अपार
समझीन आय तुन रंग दियो अपार
रंग पक्का सी रंगी चूंदड़िया कऽ कर तैयार
कोई गौर वरण कोई स्याम वरण जेकामऽ सकल संसार। रंगी दी चूंदड़िया......

यह रंगरेज कारीगर बहुत होशियार है, जिसने खूबसूरती से इस चूंदड़ को रंग दी है। उसने चूंदड़ी के एक-एक तार को ऐसे अजब-अजब रंगों से रंग दी है कि दुनिया ने स्वीकार कर लिया है। वह करतार अनूठा कारीगर है जिसने सोच समझकर उस चूंदड़ी (शरीर रूपी) को बनाया है और रंगा है। उसका रंग पक्का है, कोई गौर रंग है और कोई श्याम रंग है, इसी में सारा संसार समाया है।

केशव बन फुल्यो नऽ फागुण आयो
केसरिया की भरी पिचकारी गुलाल उड़ायो
मनमोहन चल्या मधुबन म जसोदा को लाल
जेन सखा सखी संग मांड्यो रंग को खेल।

जा चंगबजऽ अरू ढोल ताल चौताल
जेका मुखड़ा चमचम चमक, लाल मलाल
जा अबीर सना सना चलऽ अन्धेरो छायो। केसरिया की ...
होळई की प्रमुख ब्रजभान राधा दुलारी
जसोदा को लाल एक तरफ बनवारी
चली सनन सनन पिचकारी अन्धेरो छायो। केसरिया...

केशु वन यानी टेसू वन फूल गये यानी फागुन आ गया। टेसू के फूलों से बने केशरिया रंग से पिचकारियाँ भरी गई हैं, उनसे केशरिया रंग उड़ाया जा रहा है। जशोदा के पुत्र मनमोहन ने मधुबन में गोप-गोपियों के संग रंग का खेल रचाया है। जहाँ चंग बज रहा है, ढोल पर चौताल ताल बज रही हैं। सबके मुख पर गुलाल मला गया है, सबके मुँह लाल-लाल हैं। अबीर उड़ाया जा रहा है, जिससे अन्धेरा छा गया है। होली की नायिका राधा है तो नायक जशोदा के पुत्र बनवारी हैं, आपस में खूब पिचकारियाँ चल रही हैं।

मारी हो नन्दजी का लाल नऽ रंग पिचकारी
हऊँ रंग मऽ भींजई गइ सारी
काना तूख कहु समझाई
म्हारी सातम सकी नभी आई
रंगी दी रे जसोदा का लाल सखियाँ सारी
सब ग्वाल जल वहां आया
गोपी न रंग लगावऽ
राधा की नवरंग साड़ी, भीजई गई सारी
सब सखी न मंगल गावऽ
देवता फूल बरसावऽ
गोकुल का लोग आया न मथुरा सारी।

नंदजी के लाल कृष्ण कन्हैया ने मुझे रंग से भरी पिचकारी ऐसी मारी कि मैं पूरी तरह भींग गई। कन्हैया तुमने यह ठीक नहीं किया, मेरे साथ मेरी सहेलियाँ भी आई हैं। तुम जशोदा के सच्चे पुत्र हो तो मेरी सारी सहेलियों को रंग दो। यह सुनकर गोपाल कृष्ण के संगी साथी ग्वाल-बाल भी वहाँ आ गये, फिर क्या था, गोपियों ने सबको रंग गुलाल लगाना शुरू कर दिया। राधा की साड़ी नवरंग में रंग गई। होली के रंगों का अद्‌भुत दृश्य उपस्थित हो गया। सारी सखियाँ होली के आनंद में मंगल गीत गाने लगी और इस होली को देख देवता भी आकाश में आ गये हैं और वे आकाश से कृष्ण राधा और गोप-गोपियों पर फूल बरसा रहे हैं। इस दृश्य को देखने के लिये गोकुल और मथुरा के सारे लोग इकट्ठा हो गये हैं।

तूने गोकुल म धूम मचाई रे
जसोदा लाल फाग खेलऽ
सखा सखी संग खेल रचाया
भर भर थाली गुलाल उड़ाया
असी राधा भी दौड़ी चली आई। जसोदा लाल...
शंकर भी आया नऽ गवरा क लाया
वींणा लइनऽ नारद भी आया
असी ब्रह्मा का मन म समाई रे । जसोदा लाल...
आसण छोड़ी नऽ इन्द्र भी आया
इन्द्र अप्सरा नाच नचाया
आस बिसनु का मन म समाइ रे। जसोदा लाल...
नर नारी सब आनन्दमनाव बाबा नन्द घर मंगल गावऽ
आसो मेवा मिठाई बटाई। जसोदा लाल...

हे कृष्ण! तुमने होली खेलकर गोकुल में धूम मचा दी। सब लोग कह रहे हैं कि जशोदा के लाल ने फाग का अद्‌भुत खेल रचाया है। पहले तो भर-भर थाली गुलाल उड़ाया। उसे देखकर राधा भी बरसाने से दौड़ी चली आई। और तो और राधा कृष्ण और गोपियों का यह होली का रंगीन खेल देखने और उसके आनन्द में शामिल होने के लिये शिव स्वयं पार्वती को लेकर आये। नारदमुनि अपनी वीणा लेकर आये। ब्रह्म भी गोकुल की होली देखने आ गये। सिंहासन छोड़कर देवताओं के राजा इन्द्र स्वर्ग की अप्सराएँ लेकर आ गये। अप्सरा ने खूब नाच रचाया। शेष शय्या पर लेटे भगवान विष्णु भी आ गये। गोकुल में बाबा नंद के यहाँ पूरा स्वर्ग उतर आया, सारे स्त्री-पुरुष आनंद से नाच गा रहे हैं, आपस में मेवा-मिष्ठान बाँटकर खा रहे हैं।

आयो फागुण महीनो सुहाणो सखी
हाऊँ कृष्ण सी फाग खेलूँगा
राधा भी आई ललिता भी आई
सारी सखियाँ संग मऽ लाई
थारा संग म होळ्ई खेलूँगा, हाऊँ कृष्ण से फाग खेलूँगा
ब्रन्दावन मऽ धूम मचाई
अबीर गुलाल की लाली छाई
हाऊँ बिना रंग ना जाऊँगा। हाँऊ कृष्ण...
गुवाल बाल सारा आया

फाग का वो खेल रचाया
हाऊँ कृष्ण सी होळई खेलूँगा। हाऊँ कृष्ण...

ए सखी! फागुन का सुहाना महीना आ गया। मैं कृष्ण से फाग खेलूँगी। जिसमें राधा भी आई है और ललिता सखी भी आई है। उनके साथ और भी कई सखियाँ आई हैं। हम दोनों होली खेलेंगे। वृन्दावन में होली की धूम मची है। अबीर रंग गुलाल की लाली छा गई है। मैं भी बिना रंग खेले नहीं जाऊँगी। सारे ग्वाल-बाल फाग खेलने आये हैं। वे कृष्ण से फाग खेलेंगे, मैं भी कृष्ण से फाग खेलूँगा।

जमुणा के नीर तीर गेंद खेली रह्यो
खेली रह्यो कोई नन्दलाला।
एक तरफ तो ग्वाल बाल छे एक तरफ मुरली वाला
पहला टोला मारा गेंद मऽ, गेंद गिरी जमुना धारा
गेंद का कारण कूदे कन्हैया पताल का तोड़ा ताला
कहती नागनी सुनो कन्हैया, यां क्यों आवे नन्दलाला
मेरो नाग सोयो नींद मऽ, बड़ा जहर को प्याला
नाग जगावण चली नागनी, रोकर आँसु डाला
उठा मार फुसकार, बदन साँवरा कर डाला

गेंद लीला के बहाने कृष्ण काले कैसे हुए इस पद में इसका वर्णन है। एक बार कृष्ण जमुना किनारे ग्वाल बालों के साथ गेंद खेल रहे थे। एक तरफ कृष्ण थे और दूसरी तरफ ग्वाल-बाल थे। कृष्ण ने पहली लात गेंद को मारी तो वह जमुना के पानी में चली गई। गेंद के साथ कृष्ण भी उसमें कूद गये। पाताल लोक में पहुँच गये। वहाँ नागिन ने कहा- अभी हमारे विषधर नाग सो रहे हैं, मैं उसे अभी जगाती हूँ। यह कहकर वह रो-रोकर जगाने लगी। शेष नाग भयंकर फुफकार मारकर उठ खड़ा हुआ, नागराज की फुफकार इतनी जहरीली थी कि कृष्ण का शरीर काला हो गया।

ग्वालन कहती जसोदा से समाल अपना
गोकुल कान्हो बिलम रह्यो हमसे
महल के ऊपर महल मेरा, सोई थी भर
नींद में पकड़ा चीर मेरा
इधर से आया किसन तेरा धूमधाम
से छपट के पकड़ा चीर मेरा

जशोदा कहती ग्वालन से बारो है मेरो
कुंवर कन्हैया गुना माफ हमसे।

ग्वालन जशोदा माता से उलाहना देती हैं- अपने कन्हैया को संभाल लो, वह हमें रम रहा है। मैं तो अपने महल के सबसे ऊपर की मंजिल में नींद भरके सोई थी, तभी तुम्हारा कन्हैया मेरे कमरे में आ गया और मेरे कपड़े पकड़ने लगा। झूमा झटकी करने लगा। जसोदा हाथ जोड़कर ग्वालन से कहती हैं- मेरा कुँवर कन्हैया जरा रंगीन मिजाज का आवारा लड़का है, उसका गुनाह माफ देना। वह दिल से बहुत अच्छा है।

बीधना नऽ बणायो जोड़ो, तमारो म्हारो जोड़ो
म्हारा प्राण पति मख एकलड़ी मत छोड़ो
मनऽ तज्यो पुतल्या रो ख्याल, हुई वो हऊँ श्याणी
अलबेला पिता बचन स पदर बदाणी, मनऽ पेरी पिताम्बर साड़ी चूड़ी आसमानी।
अलबेला थारा मण्डप म लाड़ी कहाणी
मखऽ लेणऽ ख आया था लाया था घोड़ो
म्हारा प्राण पति......ऽ
चैत को आणो तुम्हारा घर आवती
अलबेला म्हारी मन की बात नऽ कयती
सासू ननद का बोल कटारी प सयती
अलबेला घूंघट हेड़ी न पाणी हऊँ जाती
या नईया पड़ी मजधार,
मुरवत न मुख मत मोड़ो।

विधाता ने सारे स्त्री-पुरुषों के जोड़े बनाये हैं, तुम्हारा और मेरा भी जोड़ा उसी ने बनाया है। हे मेरे प्राणों के स्वामी! तुम मुझे अकेली मत छोड़ देना। मैंने अभी-अभी बच्चों के खेल-खिलौने खेलना छोड़ा है, मैंने जवानी की दहलीज पर पैर रख दिया है, मैं किशोर हो गई हूँ। पूज्य पिता के कहने पर मैंने पीताम्बरी साड़ी और आसमानी रंग की चूड़ियाँ पहन ली हैं। मेरा विवाह तुमसे सात फेरे लेकर होने वाला है। मेरे अलबेले स्वामी मुझे घोड़े पर बैठकर लेने आयेंगे। चैत के महीने में तुम्हारे घर आऊँगी, अपने मन की सारी बातें बताऊँगी। सास-ननद के धार बोल भी सहूँगी। पनघट पर घूँघट करके पानी लेने भी जाऊँगी। पर मेरी नाव अभी मझधार में पड़ी है, मुझ पर कृपा करें। हे स्वामी! मुझे जल्दी लेने आ जाओ।

तोता तू तो धोखा स उड़ी गयो रे, पक्षी
कहाँ का बन म ढूँढू पंछी अब मिलना नी होयगा रे
प्रेम की राढ़ बढ़ी गयी रे, यार सुता की नार अबला क कसो रड़यी गयो रे।
पंछी यारी रई रे नीसानी हाथ
देखी न झुरनो करूँ दिन रात
दोस्त म्हारी आतमा जलई गयो रे
प्रेम का तीर चलई गयो रे, महल अटारी रहना बालई जोगन बणई गयो रे
कुम्लई गया रे सूनी सेज का फूल, देखी न लगऽ कलेजा म झाल।
यार दर दर की गरी गयो रे।
यार हाऊ कसी मन समझाऊँ, नहीं देखी थारी सूरत थारा बिन हाऊँ कसी हाऊँ।
झेला पक्षी तुम रहो प्राण अधार
मख सपनो देओ एक बार
यार दर दर कि कराई गयो रे।

काया की होली एक आध्यात्मिक पद है। शरीर में प्राण एक तोते पक्षी समान है। शरीर से प्राण पखेल उड़ गया है। शरीर कहता है- अब मैं प्राण रूपी पंछी को कहाँ ढूँढू? जो सदा के लिये उड़ गया है, उससे फिर से मिलना नहीं होगा। शरीर से आत्मा को बहुत प्यार हो गया है। शरीर निर्जीव पड़ा रह गया है और आत्मा रोती रह गई है। उस पंछी की निशानी यानी पहचान ही मेरे हाथ लगी है। उसी पहचान को देख-देखकर मैं झुर रही हूँ। आत्मा याद में जल रही है। प्रेम का तीर ऐसा चलाया है, जिससे मैं महल अटारी छोड़कर प्रेम में जोगन बन गई हूँ। हे दोस्त! तुम्हारी याद में मैं दर-दर भटक रही हूँ। मन को समझाना मुश्किल है। तुम्हारी सूरत देखे बिना मुझे चैन नहीं है। तुम तो शरीर के आधार हो, तुम मुझे सपना दिखाकर चले गये हो, जिससे मैं दर-दर भटक रही हूँ।

कान्हा मत जा ए परदेश सामने होली
एक छुई सी नादान, नार क्या बोली
मन रंग करयो तैयार करें छपोलई
मनऽ पेरयो शकर को हार, करे ठठोलई

हे कन्हैया! परदेश मत जाना, होली का त्यौहार आ रहा है। एक सुकोमल भोली गोपी कृष्ण को होली खेलने का निमंत्रण दे रही हैं। वह कहती हैं- मैंने बड़ी मेहनत से कृष्ण के लिये रंग घोले हैं, उन रंगों में कृष्ण को डुबोना चाहती हूँ। मैंने हँसी-ठिठौली करने के लिये शक्कर के बने हार आदि गहने पहन लिये हैं।

नरबदा रंग से भरी, होळई खेलो न श्री ऊँकार
वरण वरण का रंग बणाया तो कंचन की पिचकारी
बड़ी बड़ी अंखियों में पतला सा सूरमा, तो नैन से नैन मिलावो
गोरी गोरी बैयाँ म हरी हरी चूड़ियाँ, तो चूड़िया ख चोप लगाड़ो
मकनो सो हाथी नऽ जरद किवाड़ी, तो अंकुश दई दई चलावो
हसलो सो घोड़ो मोती वरणयो, तो चाबुक दई दई चलावो
भर पिचकारी तन पर डारी, तो भींज गई गौरा नारी
उड़त गुलाल लाल भये बादल, रंग की उड़त फुहारी
चंद्र सखी भज बाल कृष्ण छवि, होळई खेलत त्रिपुरारी
नरबदा रंग से भरी होळई, खेलो न श्री ऊंकार।

यह चन्द्रसखि का पद है। नर्मदा के समूचे जल में तरह-तरह के रंग घोले गये हैं, होली खेलने का आमंत्रण श्री कृष्ण को दिया गया है। तरह-तरह के रंगों से सोने की पिचकारियाँ भरी रखी हैं। गोपियों की बड़ी-बड़ी आँखों में पतला सा सूरमा लगा है, सूरमे से उनके नैन और भी सुन्दर लग रहे हैं। गोपियों के नैन कृष्ण के नयनों से मिल रहे हैं। गोपियों ने गोरे-गोरे हाथों में हरी-हरी चूड़ियाँ पहनी हैं, उन पर सोने चाँदी की चोप लगी है। यह मन एक मदमस्त हाथी के समान है, उसकी पीठ पर लाल रंग का आसन बिछा है। महावत उस हाथी को अंकुश मार-मारकर चलाता है। यह मन तेज घोड़े के समान है, जिसका रंग श्वेत मोती के समान है, उसे चाबुक लगा-लगाकर चलाया जाता है। झर-झर पिचकारी कृष्ण गोपियों पर डाल रहे हैं। ब्रज की सभी नारियाँ भींग गई हैं। गुलाल उड़ रहा है, बादल सा छा गया है, रंग की फुहारे उड़ रही हैं। कृष्ण खूब-खुशी से होली खेल रहे हैं, पूरी नर्मदा रंग से भरी है, चाहे जितना रंग खेलों। रंग कभी समाप्त नहीं होने वाला है।

जरा जूड़ो बांधण देवो रे, होळई का खिलैया रे
होळई का खिलैया न फागुण का रसिया तो करी लेवां सोला सिंगार
बरस दिनन का बारई महीना, तो फागुण म खेलांगा फाग
बड़ी बड़ी अखियन म कजरा सो डारयो तो बिंदी झलकत भाल
रंग बिरंगी चूंदड़ ओड़ी तो पायल करऽ झणकार
नाक म बेसर कान म झूमका तो गला म नवसरयो हार
गोरी गोरी बैया म हरी हरी चूड़ियां, तो चोळई छे बूटादार
केशर घोळई रंग बणायो तो कंचन बणी पिचकारी
अस्सी कळई को घाघरो पेरी तो चूंदड़ चमकादार
भर पिचकारी तन पर डारी, कजरा म घोल्यो गुलाल

चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण (छबि) का रंग म रंगी गई सारी
जरा जूड़ो बांधण देवो रे, होळई का खिलैया रे।

कृष्ण से सखी कहती है– होली खेलने वाले कृष्ण कन्हैया जरा ठहरो, हमें ठीक से जूड़ा बाँध लेने दो। सोलह–श्रृँगार कर लेने दो। तुम तो होली के रसिया हो, होली के खिलैया हो। वर्ष में बारह महीने होते हैं, लेकिन फागुन के समान कोई महीना नहीं है। होली रंग इसी माह में उड़ते हैं। सखियों ने अपनी बड़ी–बड़ी आँखों में काजल लगा लिया है, माथे पर बिन्दिया शोभा दे रही है। रंग–बिरंगी चूँदड़ी पहनी है, पांवों में पायल की झनकार निकल रही है। नाक में बेसर पहना है, कान में झुमके हैं, गले में नवलड़ियों का हार है। गोरी–गोरी बहियों में हरी–हरी चूड़ियाँ हैं, चोली बूटेदार है। रंग में केशर घोली है, स्वर्ण पिचकारियाँ भरी है। अस्सी कली का घाघरा और चमकदार चूँदरी पहनी है। हे कन्हैया! तूने तन पर ऐसी पिचकारी मारी कि मेरी आँखों का काजल रंग से धुल गया है। कृष्ण ने गुलाल भी उड़ाया है। चन्द्रसखि कहते हैं– सारी सखियाँ कृष्ण के रंग में पूरी तरह रंग गई है।

कन्हैया पिचकारी मत मार, चुनरिया रंग बिरंगी होय।
नई चूंदड़िया तून रंग दीन्ही, केशर किन्ही घोल
फागुण मास आयो दुख दाई, आई शरम नहीं तोय
सास नणदिया पूछेगी कान्हा, कहाँ से लाई भिगोय
सब ग्वालन तो हुये मतवारे, मारग किन्हो रोक
संग ग्वालन तो रीस म कोई, केशर किन्ही घोल
घेर घार हरी को पकड़यो है, रंग म दिन्हो डुबोय
छोड़ दिवी रंग की पिचकारी, सखियन दिन्ही भिगोय
कन्हैया पिचकारी मत मार, चुनरिया रंग बिरंगी होय

गोपियाँ कहती हैं– हे कृष्ण! हम पर पिचकारी मत चलाना। हमारी चुनरियाँ रंग–बिरंगी हो जायेगी। हमारी नई चूनरी केसरिया रंग में रंग जायेगी। यह फागुन का महीना बड़ा दुःखदायी है। तुम्हें तो जरा भी शरम नहीं है। हमारी सास ननद चूनर देखेगी तो पूछेगी कि चूनरी कहाँ से भिगोकर लाई है। सब ग्वाल–बाल होली के रंग और भंग में मतवाले हो गये हैं, वे हमारा रास्ता रोक रहे हैं। साथ की ग्वालिनें भी उनके इस व्यवहार से दुःखी हैं। उन सबको घेरघार करके बहियाँ पकड़–पकड़कर रंग में पूरी तरह डुबो दिया है। ऊपर से कृष्ण ने गहरे रंगों की पिचकारी चला दी है, सारी सखियाँ उस कृष्ण के रंग में भींग गई हैं।

फागुण फूल्यो रसिया, बसंत आयो रसिया
आई जा मन बसिया बसंत आयो रे
अमरई म मौर फूल्या म्हारो मन अटक्यो
कोयल की कूक सुणी, म्हारो मन भटक्यो
सूखा पेड़ पर कोपळ छाई रसिया आई जा मन बसिया । फागुन आयो रे
केतकी गुलाब डाल फूल सी लदी गई
सरसो न पेळई साड़ी फहराई
जूही चम्पक पर भवरो मंडरायो रसिया, आई जा मन बसिया
जंगल म देखो पिहूजी पलास छे फूल्यो
रंग रंगीला फूल बगीचो छे मटक्यो
नशीला फाग की मस्ती छाई रसिया, आई जा मन बसिया
रसीलो बसंत आयो पिया परदेस
पिया जी की वाट निहारूँ दिन रैन
थारा मिलन ख जीव म्हारो तरसऽ रसिया। आई जा मन बसिया

फागुन के महीने में टेसू खिल उठा है, वसन्त ॠतु आ गई है, मेरे मन में बसने वाले स्वामी तुम आ जाओ, आमों पर मौर आ गये हैं, मेरा मन आम के फूलों पर अटक गया है। आम्रकुंजों में कोयल की कुहुक में मेरा मन भटक रहा है। पतझड़ के बाद पेड़ों पर नई कोपले, नये पत्ते फूट पड़े हैं। इससे लगता है फागुन का मदमस्त महीना आ गया है। केतकी, गुलाब की डालें फूलों से लद गई हैं। खेतों में सरसों ने पीली साड़ी पहन ली है। जूही और चम्पा के फूलों पर भँवरे मंडराने लगे हैं। हे स्वामी जी! जंगल में पलाश के पेड़ फूलों से लद गये हैं। बगीचों में तरह-तरह के रंग-रंगीले फूल खिल गये हैं। चारों ओर फाग का नशा सा छा गया है। इधर आनंददायी बसन्त ॠतु के मौसम में प्रियतम परदेश चले गये हैं। उनके आने की बेचैनी से दिन रात राह तक रही हूँ। प्रियतम से मिलने को मन बहुत व्याकुल हो रहा है।

आई आई रे बसंत ॠतु भवरो डोलऽ
कहीं अमुआ की डाल कोयल बोलऽ
हरो हरो घाघरो पेरी सरसो इतराई रे
पेळई पेळई साड़ी वोनऽ हरा म लहराई रे
जूही की बेल देखो कैसी महकऽ। कहीं अमुआ...
बगिया म केतकी गुलाब छे फूल्यो
रंग बिरंगा फूल बगिया छे महक्यो
फूल फूल पर देखो भँवरो डोलऽ

पात पात पर मौर छे फूल्या
घणा चणा देखी किरसाण हरक्यो
हरा हरा गहुंड़ा पर बाळई झूकी
जंगल म देखो पळास छे फूल्यो
हर एक पौधा पर कोपळ छाई
देखो फागुण म फाग मस्ती छाई

बसंत ऋतु आ गई है, फूल खिल गये हैं, फूलों पर भँवरे डोल रहे हैं। कहीं आम की डाल पर कोयल बोल रही है। खेत में सरसों ऐसी लग रही है जैसे हरा-हरा घाघरा और पीली साड़ी पहने इतरा रही हो, लहरा रही है। देखो जूही की बेल कैसे महक रही है। बगीचों में केतकी-गुलाब फूलने लगे हैं। रंग-बिरंगे फूल बगिया में महकने लगे हैं। हर पत्ते के बीच में फूलों की कलियाँ निकल आई है। गेहूँ के पौधों पर बालियाँ लटालूम लगी हैं। जंगल में सर्वत्र पलाश के केशरिया रंग के फूल दहक रहे हैं। हर एक पौधे पर कोपलें फूट रही हैं। देखो फागुन का महीना आ गया है, सर्वत्र फाग की मस्ती छा गई है।

देख सखी होळई खेलत गिरधारी
सुण सखी होळई खेलत गिरधारी
मुरली चंग बजत ढप न्यारो, संग म राधा प्यारी
चन्दन केशर छिटकत मन सब सख्यिन पर अपणा हाथ बिहारी
भरी-भरी मुठी गुलाल लाल, डालत राधा प्यारी
छैल छबीला सुन्दर, नवल कान्ह छे
संग राधा प्राण पियारी, गावत गान धमार राग का, दै दै करतल तारी।

एक सखी कहती है- देखो! सखी गिरधारी ग्वाल-बालों के साथ गोकुल में होली खेल रहे हैं, तुमने सुना कि नहीं। बाँसुरी, चंग, ढप सब बज रहे हैं, साथ में राधा भी है। अपने हाथ से कृष्ण बिहारी सखियों पर चन्दन और केशर का घोल छिटक रहे हैं। अपनी प्यारी राधिका पर कृष्ण मुट्ठी भर-भरकर गुलाल छिटक रहे हैं। देखो कृष्ण कन्हैया छैल-छबीले सुन्दर और एकदम नवल लग रहे हैं। कृष्ण के साथ राधा भी बहुत सुन्दर लग रही हैं, राग धमार में फाग गा रहे हैं, साथ ही हाथ से ताल दे रहे हैं।

सजी आयो रे कन्हैया होळई खेलण खऽ
बणी आयो रे रसिया, होळई खेलण खऽ

सुन्दर सलोनो रूप बणायो, फेटो बन्धो रे पंचरंगी
कांधा पर सुन्दर उपरणा सोहे, फेटा पर मोर पंखी सोहे रे। सजी आयो रे...
मस्तक सुंदर तिलक बिराजे,
वो तो बड़ी बड़ी अंखियाँ मटकावे रे । सजी आयो रे...
गोपाल कृष्ण वो कुंअर लाड़िलो,
सारा ब्रज को आंखों को तारो रे। सजी आयो रे...
हाथ म लीन्ही रंग पिचकारी,
वो तो कृष्ण ख गोपियन न घेर्यो रे। सजी आयो रे...

कृष्ण-कन्हैया सज-धजकर होली खेलने निकल आये हैं। ऐसा लगता है, जैसे कृष्ण होली के रसिया, नायक बनकर होली खेलने आये हैं। कृष्ण ने अपना सुन्दर-सलोना रूप बनाया है। सिर पर पचरंगी फेटा बाँधा है। कन्धे पर सुन्दर दुपट्टा (उपरणा) शोभा दे रहा है। फेटे पर मोर पंख लगा है। मस्तक पर तिलक लगा है। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें इधर-उधर देख रही हैं। गोपाल कृष्ण सबको प्रिय लग रहा है, वह सबका लाड़ला है। सारे ब्रज की आँखों का तारा है। इधर इतने प्रिय कृष्ण कन्हैया को हाथ में रंग भरी पिचकारी लेकर सारी गोपियों ने जबर्दस्ती घेर लिया है।

लायो ग्वाल बाल म्हारी संग म
राधा ख रंगूगा रंग म

1. *नाव म्हारो छे कृष्ण कन्हाई*
बैठ कदम पर बंशी बजाई
राधा ललिता सलिता आई
श्याम देखी न मन हरसाई
माता यसोदा को हाऊँ छे लालड़ो
बंशी बजाऊँ मधुबन म
राधा ख रंगूंगा........
2. *फाग खेलन ख आया मुरारी*
ब्रज की आई सगली नारी
भरी भरी न मारऽ पिचकारी
भीगी अंगिया ग्वालन सारी
ब्रंदावन म धूम मचाई गई
मस्त हुआ सब भंग म
राधा ख रंगूंगा........

3. *श्याम वरण म रंगो मुरारी*
जाय छूटी न दुनिया सारी
गुरु गुण लेऊँ आज बिचारी
राखो चरण म मखऽ मुरारी
जनम जनम को हाऊँ छे दासी
राखो तुम्हारी संग म
राधा ख रंगूगा।

कृष्ण कहते हैं- मैं ग्वाल बालों को राधा को रंगने के लिये साथ में लाया हूँ। राधा के साथ जमकर रंग होली खेलूँगा। मेरा नाम कृष्ण है। राधा को रिझाने के लिये कृष्ण ने पहले बाँसुरी बजायी। बाँसुरी की धुन सुनकर राधा, ललिता, सलिता आदि सभी सखियाँ खींची चली आई। उन्हें देखकर श्याम प्रसन्न हो गये। मन में विचार करने लगे कि मैं माता यशोदा का सच्चा लाड़ला बेटा हूँ, तो आज मधुबन में बाँसुरी बजा रहा हूँ, राधा को आज रंग के ही छोड़ूँगा।

लगता है फाग खेलने आज ब्रज की सारी स्त्रियाँ आई हैं। फिर क्या था कृष्ण ने रंग से भर-भरकर पिचकारी सब पर मारी, जिससे ग्वालनों की सारी अंगिया भींग गई है। वृन्दावन में होली की धूम मच गई हैं। सभी लोग रंग और भंग में मस्त हो गये हैं।

राधा और गोपियाँ कहती हैं- हे श्याम! तुम हमें तुम्हारे असली श्याम रंग में ही रंग दो, ताकि वह रंग कभी नहीं छूटे, भले ही सारी दुनिया छूट जाय। हमने अच्छी तरह सोच समझ लिया है, हम असहायों को अपने चरणों में सदा के लिये जगह दे दो। हम तो तुम्हारी जन्म-जन्मान्तर की दासी हैं। हमें सदैव तुम्हारे साथ रखना न भूलना।

आई आई रे आई रे होळई आई रे
सारी खुशी न लाई रे

1. *फागुण की तो आई पूर्णिमा नाचऽ खुशी को मोर*
गांव का छोरा छोरी मचावऽ गली म शोर
लक्कड़ कंडा सी होळई सजाओ
बात या मन म समाई रे।
आई आई रे...

2. *हरिब गरीब मिलो गळानऽ आसो लगायो प्यार*
नाचो गावो खुशी मनाओ, घर म करो त्योहार

जात पात को भेद मिटाओ
बैर ख दूर भगाओ रे।
आई आई रे...

3. *होली जल गई फाग उड़ायो, खोब उड़ायो गुलाल*
मुखड़ा चमाचम चमकन लाग्या, हुई गया लालमलाल
भरी भरी न मारो पिचकारी
गांव का लोग लुगाई रे।
आई आई रे...

हे सखि! होली आ गई, वह सारी खुशियाँ समेटकर ले आई है। फागुन की पूर्णिमा क्या आई, मन मयूर खुशी के मारे नाच उठा है। गाँव के लड़के-लड़की गली में शोर मचा रहे हैं, होली आ गई है। होली का डांडा गड़ गया है, उसे कण्डे, लकड़ी आदि से खूब सजाओ, सबके मन में एक ही बात है।

होली में गरीब-अमीर का भेद मिट गया है, खुशी से एक दूसरे के गले मिल रहे हैं, आपस में भाईचारा और प्यार दिखा रहे हैं। नाच-गा रहे हैं, सबके घर में त्यौहार मन रहा है। जात-पात का भेद जैसे मिट गया है, सब घर में त्यौहार मन रहा है। फागुन पूर्णिमा की होली जल गई है। खूब फाग खेलो, रंग गुलाल उड़ाओ, सबके मुख रंगों से चमकने लगें। रंग गुलाल से सबके मुँह लाल हो गये हैं। गाँव के सारे स्त्री-पुरुष होली के रंगों में सराबोर हो गये हैं।

टेक- *तू रंग दे चुनर मेरी रंगदार रे रंगरेजवा*
मेरी कोरी चुनरिया रंग दे रंग रंगा रही रंगरेजवा

मिलान- *चुनर मेरी ऐसी रंग दे जो कभी न होवे जाय*
चूनर के चारों खूंट पे बसा दे चारों धाम

टेक- *मेरे तन में चुनरिया साजे, जरीदार रे रंग रेजवा*

मिलान- *चूनर हो ऐसी मेरी-चूनर में रत्ना तार हो।*
चूनर के बीच देना तुम श्री करतार हो

टेक- *मैं पहन चूनर जब आई हरिद्वार रे रंगरेजवा*

मिलान- *चूनर कहे गुरु मुरली दास, चूनर में निखार हो*
जो हरि से ध्यान लगाते है उसका बेड़ा पार है

राधेश्याम चूनर गीत गाये ललकार रे रंगरेजवा

हे रंगरेज! (कृष्ण को सम्बोधित) तू मेरी आज चूनर रंग देना, मेरी चूनर एकदम कोरी है, उस पर तरह-तरह के रंग चढ़ा दे। मेरी चूनर कुछ ऐसी रंग दे, जिसका रंग कभी न जाय, उस चूनर के चारों पल्लुओं पर चारों तीर्थधाम बसा दे, तभी मेरे तन पर यह चूनर शोभा देगी। चूनर सुनहरी तारों से बुनी गई हो, जिसके बीच में मुरलीधर की मूरत हो, उस चूनर को पहनकर मैं हरिद्वार जाऊँगी। मुरलीधर कहते हैं, वह ऐसा चमकदार हो कि जिसके पहनने पर केवल हरि में ध्यान लगा रहे, जिसके ओढ़ने से भव सागर से बेड़ा पार हो जाये। इस गीत को कलगी गायक राधेश्याम गा रहे हैं।

सूरज साम पानिड़ो नी जाऊँ
हो सूरज साम पानिड़ो नी जाऊँ
म्हारी चूंदड़ी को रंग उड़ी जाय। सूरज साम...

1. *कायन को पिया रंग बणायो*
   तो कायन की पिचकारी। सूरज साम...

2. *केसर को पिया रंग बणायो*
   तो कंचन की पिचकारी। सूरज साम...

3. *भर पिचकारी म्हारा सम्मुख डाली*
   तो भिंज गई राधे प्यारी। सूरज साम...

4. *उदा उदा सालू न जरद किनारी*
   तो अंगिया सी कोर लगाय। सूरज साम...

5. *बड़ी बड़ी अंखियाँ न पतळो सो काजल*
   नैना सी सेन लगाय। सूरज साम...

6. *गोरी गोरी बैंया न हरी पीली चूड़ियाँ*
   तो चूड़िला सी छन्द लगाय। सूरज साम...

हे स्वामी! भर दोपहर में पानी भरने नहीं जाऊँगी। इससे धूप में मेरी चूँदड़ी का रंग उड़ जायेगा। काहे के रंग और काहे की पिचकारी बनाई है? केशर का रंग घोला है और सोने की पिचकारी बनाई है। राधा को उसी पिचकारी से कृष्ण ने रंग में सराबोर कर दिया है। नीले सालू (साड़ी) पर लाल किनारी सुन्दर लग रही है। उस पर अंगिया की किनारी भी सुन्दर है। राधा ने बड़ी-बड़ी आँखों में पतला सा काजल आंजा है। इन्हीं नैनों से कृष्ण के नयन मिल गये हैं। राधा

को गोरी-गोरी बहियों में हरी-पीली चूड़ियाँ पहनी है। चूड़ियों में लाख का चूड़ा अलग ही चमक रहा है।

किसन जी पोची तो पेरावो, म्हारा रंग भर्या दुई हाथ

अन्तरा- *उदा उदा सालू न जरद किनारी*
कारे ख अतर लगाय। किसन जी...

गोरा गोरा मुखड़ा पर उजली बत्तीसी
पान की छे भरमार। किसन जी...

फागुन का दिन चार कन्हैया
फागुन का दिन चार
गोरी गोरी बैंया न हरा पीला चूड़ला
तो चूड़िला सी छन्द लगाय। किसन जी...

केतरा बरस का कुंवर कन्हैया
केतरा बरस राधे प्यारी। किसन जी...

बारा बरस का कुंवर कन्हैया
भर यौवन राधे प्यारी। किसन जी...

कृष्ण जी मेरे दोनों हाथ रंग से भरे हैं। जरा मेरी पोंहची नीचे खिसक गई है, थोड़ा ऊपर खिसका देना। नीली साड़ी की लाल किनारी उस पर इत्र लगाया गया है। गोरे-गोरे मुख पर उजले दाँत शोभा देते हैं, उस पर पान का बीड़ा खाया है। ओंठ पर ललाई फैली है। फागुन में होली खेलने के दो चार-दिन होते हैं। गोरी-गोरी बहियों में हरी-पीली चूड़ियाँ और चूड़ियों में चमकीले नग जड़े हैं। कितने बरस के कुँवर कन्हैया हैं और कितने बरस की राधा हैं। बारह बरस के कुँवर कन्हैया हैं और यौवन से भरपूर राधा हैं।

बसंत ऋतु आई रे, सुणवो राधा गोरी
सुणवो राधा गोरी, वो सुणवो भोली भाली। बसंत ऋतु...

1. *रंग बिरंगी कळई न खिली रे*
झाड़ रूख की पत्तीन झड़ी रे

नद्दी न गावऽ उमंग की बोली
भौरा गुंजन घौरी। बसंत ऋतु...

2. *ठंडऽ गुलाबी गीत सुणाव*
अंबा प कसो मोर ल्हैलावऽ
थोड़ा दिन म आवऽ होळई
चालो ब्रज भान की छोरी। बसंत ऋतु...

3. *म्हारा साथ चलोगा बोलो*
पेरी लेवो बसंती चोलो
खेलगां सबसी होळई
राधा करगा झपटा झोरी। बसंत ऋतु...

4. *थारी सखिन न गीत गावगा*
ग्वाला सब माखन खावगा
ऊ कर आपस म होली
राधा करऽ थारी चोरी। बसंत ऋतु

कृष्ण राधा से कहते हैं– सुनो राधा! वसन्त ऋतु आ गई है। तुम बहुत ही भोली भाली हो। तुम्हें कुछ भी पता नहीं है। रंग–बिरंगी कलियाँ पौधों की डालियों पर खिल गई हैं। पतझड़ में पेड़ों की पत्तियाँ झड़ गई हैं। नदियाँ गा उठी हैं। भौरें गुन्जार कर रहे हैं। ठण्ड गुलाबी (हल्की ठण्ड) गीत सुना रही है। आम पर मौर लहलहा रहे हैं। बस थोड़े ही दिन में होली आने वाली है, राधा चलो होली खेलने। मेरे साथ होली खेलने चलो तो वसंती रंग (पीले) के कपड़े पहन लेना, सब मिलकर होली खेलेंगे। तुम पर सभी झपट पड़ेंगे। तुम्हारी सखियाँ होली के गीत गायेंगी, ग्वाल–बाल मिलकर मक्खन खायेंगे। ये जब आपस में होली खेल रहे होंगे, इसी बीच में तुम चोरी से मेरे पास आ जाना।

राधा कृष्ण लेनऽ आयो, चलऽ गा नहीं, थारी मटकी दईमा
चखाड़ऽगा कि नहीं, ऐसा, मस्त महीनू फागुण को आयो
कानू हाटेलो पिचकारी भरी लायो, नाखू पिचकारी होरी खेल मा
कि नहीं, थारी मटकी को दईया चखाड़गा कि नहीं
मणियारो बणो कानू, बरसाणा आयो, पनघट पर उनऽ सोर
मचाये हरी नीली चूड़ी राधा पेरऽ गा की। थारी मटकी को
सब सखीयन म स्याम फुलऽ तून वाळा राधा का पास

थारा सब फुल खुल्या, सखीन की संग म राधा बठऽ गाली नहीं
बठऽगा कि नहीं, भरी मटकी को घइयाँ चखाड़गा कि नहीं,
चंद्र सखी न ब्रजभान दुलारी कृष्णा क राधा लगऽ बड़ी प्यारी।
मदुबन लेणऽआयो चल गा कि नहीं। भरी मटकी
तून बचन दिया था याद करि ल अपणा मन म
चतुर मास लगी कन्हैया रमण चलो बिदरावन
पॉय पावड़ी हाथ लाखड़ी मुख धर मुरली का चाला
तटजमुना थारी बाह भारी जो वसा आवसे गाय का रखवाला
भर भादौ की रात इंधारी म्हारी सासु नणद दीसे गाली
अवघड़ घाट बिकट चलना पिटई उडावसे घरवाला
झोलई झुलन्ता लाड़लाडिला मारी पुतना वा स्याणी, क,
कुण भारी चुगली घर हजार मार रौख तूनऽ बिराणी क,
गेंद खेलन्ता गया मकुन्दा, डाल्या नी गहरा पाणी क
नाग झपटऽ थिरी हुई अना थिन, रड़ाई पदमा राणी क,
सैसर फण बिखराल नाग पूरो लपटायो बहई थारा बदन म
चतुर मास लगी गई नाथ रमण चलो बिन्द्रावन

सण सुतर का दौर बणई न छीका बाँध्या उचाईयाँ
पोरयो ऊपर ऐन पोरयो चढ़ायो सारो माखन खाई गया
लुचा लुचा माखण खायो उधमान मचायै म्हारा हद म
कुचा कुचा मामा कंस मार्‍यो जवसी डरा बचा बचा
बात कऊँ तो आवऽ सरम, नायाजवऽ चीर दपड़ाया
कदमम। चतुर मास लगी गयो रे नाथ रमण चलो वन्द्रावन

कृष्ण राधा से कहते हैं– मेरे साथ चलोगी कि नहीं, तुम्हारी मटकी का दही चखाओगी कि नहीं। ऊपर से फागुन का मदमस्त महीना आ गया है। यदि मैं पिचकारी भरकर लाऊँगा तो तुम रंग छींटने दोगी या नहीं। एक बार कृष्ण मणिहार बनकर बरसाने चले जाते हैं, वहाँ भी राधा से पूछते हैं, मेरे हाथ से तुम चूड़ियाँ पहनोगी कि नहीं।

सब सखियों में राधा सबसे सुन्दर लग रही थी, तब कृष्ण पूछते हैं– मेरे साथ तेरा-मेरा मेल होगा कि नहीं। वृन्दावन में घूमने चलोगी कि नहीं, मधुबन में रमने चलोगी कि नहीं, तुम अपना वचन निभाओगी कि नहीं।

हे जमुना तट पर मुरली बजाने वाले! गोवंश की रक्षा करने वाले गोपाल! जरा सोचो, तुम मुझे बुला रहे हो, भादौं की अंधेरी रात हैं और सास ननद दोनों मुझे गाली देगी। घरवाला विपरीत चलने के कारण पिटाई अलग कर देगा। झोली में मेरा छोटा बालक सोया है। तुमने तो बचपन में

ही पूतना को मार डाला था। जमुना में गेंद लाने के बहाने भयंकर काले नाग को वश में कर लिया था, उसकी पद्मा नामक रानी को रूलाया था, सहस्त्रफन वाले नाग की फन पर तुमने नृत्य किया था। तुमने ग्वाल बालों के साथ घर-घर छीके पर चढ़कर माखनचोरी की थी, हाथ नहीं पूरे थे तो एक के ऊपर एक चढ़कर मटकी उतारी थी। गोकुल में खूब धूम मचाई थी। तुमने ब्रजनारियों चीर हरण कर लिया था। आततायी कंस को मार डाला था। हे कृष्ण! तुम्हारी लीला अपरम्पार हैं, जिनका वर्णन करना मुश्किल है।